ओसवाल जाति के शेष खानदान

Remaining families of Oswals

कोठारी

श्री सेठ उदयराजजी हीरालालजी कोठारी, कामठी (सी० पी०)

इस प्रतिष्ठित परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान डीडवाणाके पास दौलतपुरा (मारवाड़) नामक स्थान का है। आप रणधीरोत कोठारी गौत्रके सज्जन हैं। इस परिवारके पूर्व पुरुष कोठारी रणधीरसिंहजी मेवाड़ और मारवाड़के राज घरानोंमें बड़े सम्माननीय सरदार थे। इन रियासतोंकी बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियाँ आपके सुपुर्द थीं। मुगल दरबारमें भी आपका बड़ा सम्मान था। आपका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके कोठारी रणधीरोत गौत्रके इतिहासमें दिया जा चुका है। उपरोक्त परिवार इन्हीं रणधीरसिंहजीका वंशज है। इस परिवारके पुरुष दौलतपुरामे मारवाड़ राज्यकी फौजोंके खजांची थे और आर्थिक स्थिति उत्तम होनेके कारण समय समयपर रियासतको इम्दाद भी देते रहते थे तथा बड़े सम्माननीय और प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। इस परिवारमें आगे चलकर सेठ गुलराजजी हुए। आप मारवाड़से व्यापारके निमित्त लगभग ५० साल पूर्व कामठी आये। आपके भींवराजजी, राजमलजी और उदयराजजी नामक तीन पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ भींवराजजी रणधीरोत कोठारी सेठ सूरजमलजीके नाम पर दत्तक गये हैं। आपके पुत्र माणिकलालजी तथा पन्नालालजी नागपुर सदरमें निवास करते हैं।

सेठ राजमलजीका जन्म संवत् १९१९ की आषाढ़ सुदी ९ तथा सेठ उदयराजजीका संवत् १९२२ की मगसर सुदी १४ को हुआ। जब सेठ गुलराजजी मारवाड़ चले गये तब उनके पश्चात् कारबारको विशेष उन्नति सेठ उदयराजजीने की। आप बड़े व्यवसाय चतुर और अनुभवी पुरुष हैं। आपके हाथोंसे परिवारकी आर्थिक स्थिति एवं सम्मानकी बहुत उन्नति हुई है। मध्यप्रान्त व बरारकी ओसवाल समाजमें आपका परिवार बड़ा गण्य-मान्य समझा जाता है। सेठ राजमलजीके माँगीलालजी, रतनलालजी तथा हीरालालजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें श्री माँगीलालजी और रतनलालजी दोनों बन्धु कामठीमें किरानेका व्यापार करते हैं तथा श्री हीरालालजी सेठ उदयराजजीके नामपर दत्तक गये हैं।

सेठ हीरालालजी कोठारी—आपका जन्म संवत् १९५६ की भादवा वदी ऽऽ को हुआ। आरंभसे ही आप बड़ी तीव्र बुद्धिके और होनहार युवक थे। शिक्षण कार्य्यमें तथा सार्वजनिक व जाति हितके कार्योंमे आप सहयोग लेते एवं बड़े उत्साहके साथ नवीन-नवीन योजनाएं बनानेकी ओर ध्यान देते रहते थे। आपका प्रथम विवाह १९७२ मे वरारमे लूणावतोंके यहाँ एवं द्वितीय विवाह संवत् १९८५ में वरोरामें सीयाणी परिवारमें हुआ। इस समय आपके दो पुत्र और दो कन्याएं विद्यमान हैं। पुत्रोंके नाम कुँवर जेठमलजी एवं कुँवर हेमचन्द्रजी हैं। कुँवर जेठमलजीका जन्म सन् १९२२ के मार्चमें हुआ है। आप आठवीं कक्षामें अध्ययन करते हैं।

हम ऊपर लिख आये हैं कि श्री हीरालालजी कोठारी अपने शिक्षण कालसे ही सार्व-जनिक एवं जाति हितके कामोंमें विशेष दिलचस्पी लेते थे। फलतः वयस्क होनेपर आपमें उन सद्वृत्तियोंकी उत्तम वृद्धि हुई। आपके व्यवहारमें एक विशेषता यह है कि आपका परिवार श्री जैन श्वे० तेरा पंथी सम्प्रदायका अनुयायी होते हुए भी, आप सभी सम्प्रदायकी संस्थाओंमें उदारतापूर्वक प्रमुख रूपसे भाग लेते हैं। इस समय आप कामठीके सनातन धर्मावलम्बियोंकी धर्म सभाके उपसभापति हैं। सनातन धर्मावलम्बी समाजने आपके गुणों-का उचित आदर करके उक्त सम्माननीय पद दिया है। इसके अलावा आप स्थानीय हाई स्कूलके सेक्रेटरी तथा गवर्नमेंट मिडिल स्कूलके मेम्बर हैं। यहाँके सरकारी सर्कलमें आप बड़ी आदरणीय निगाहोंसे देखे जाते हैं। मध्यप्रान्त तथा बरारके ओसवाल युवकों द्वारा होने-वाले प्रत्येक आयोजनमें आप विशेष उत्साहसे भाग लेते हैं, एव इस समय आप मध्यप्रान्त तथा बरार की ओसवाल सभाके सेक्रेटरी हैं। आपके यहाँ बहुतसे मकानात आदि स्थायी सम्पत्ति है, तथा बैङ्किङ्ग और सोना चांदीका व्यापार होता है। आपको पठन-पाठन तथा लेखनका भी बड़ा शौक है। आपने "परमात्मा महावीर" पुस्तक भी लिखी है।

सेठ मिश्रीमलजी सुगनचंदजी कोठारीका खानदान, रेंठी (भोपाल स्टेट)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान मेड़ता (जोधपुर स्टेट) है। आप रण-धीरोत--कोठारी गौत्रके सज्जन हैं। मेड़तासे इस परिवारके पूर्वज सेठ उम्मेदमलजी कोठारी व्यवसायके निमित्त भोपाल स्टेटके रेंहठी नामक स्थानमें आये। आपके सिरेमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ सिरेमलजी कोठारीने इस परिवारके व्यापारकी उन्नति आरम्भ की। संवत् १९९२ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके जुहारमलजी, मिश्रीमलजी, सुगनचंदजी तथा लालचंदजी नामक चार पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ मिश्रीलालजी इस परिवारमें बहुत नामी व मोअज्जिज पुरुष हुए।

सेठ मिश्रीमलजी कोठारी—आपका जन्म संवत् १९४२ में हुआ था। हिन्दी और उर्दू का आपको अच्छा ज्ञान था। आरम्भमें ही आप ऊँचे खयालोंके महानुभाव थे। केवल अठारह सालकी आयुसे ही आप भोपालके सरकारी अफसरों व शाही खानदानके सज्जनोंसे मेलजोल बढ़ाने लगे, और इस कार्य्यमें आप अपनी तीव्र बुद्धिके कारण बहुत सफल हुए। ज्यों-ज्यों आप-की उम्र बढ़ती गई त्यों-त्यों शाही खानदान और नवाब साहबसे आपका मेलजोल अधिका-धिक बढ़ता गया। मौजूदा नवाब साहिबने अपनी तख्त नशीनीके समय आपको राय साहब का खिताब देकर आपकी इज्जत की। साथ ही आपको फर्स्ट क्लास दरबारीकी इज्जत भी इना-यत की। नवाब साहबसे आपका मेलजोल यहाँतक बढ़ गया था कि अनेकों बार मुलाकात-

बाईं ओरसे बैठे हुए—(१) सेठ उदयराजजी कोठारी (२) कुं० जेठमलजी कोठारी (३) कुं० हेमचन्द्र कोठारी (४) सेठ हीरालालजी कोठारी, कामठी
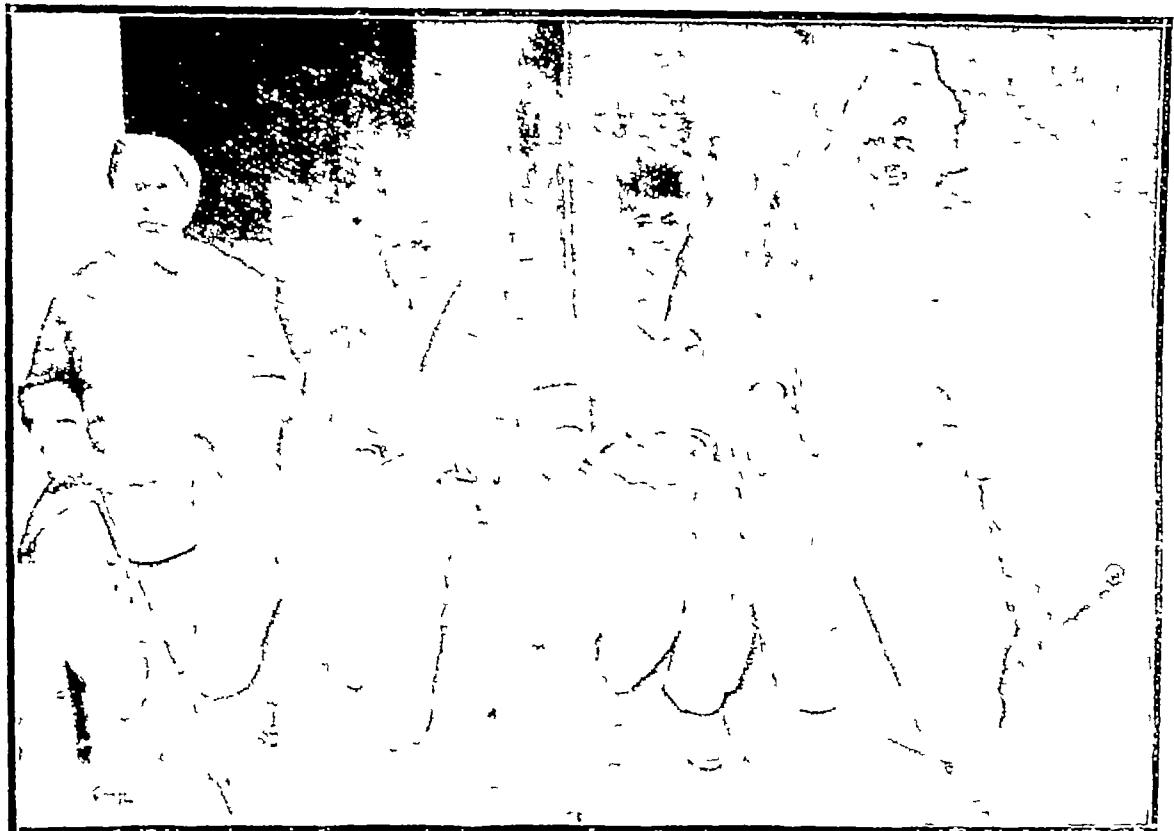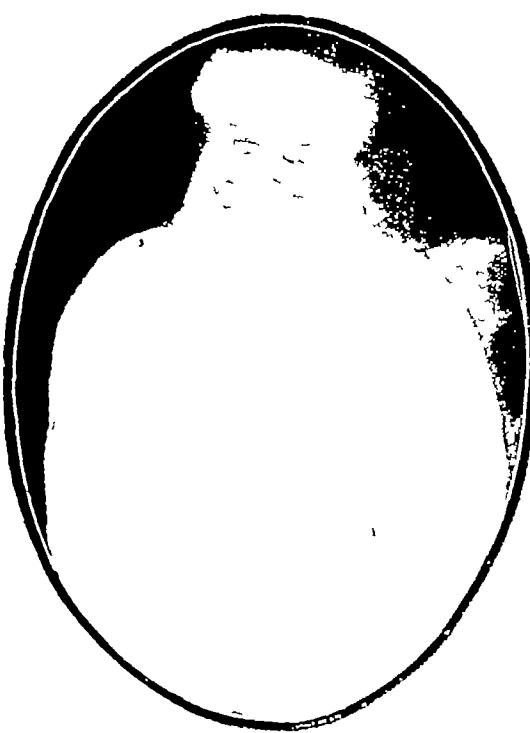
स्व० सेठ रंगलालजी बाठिया, नरसिंहगढ
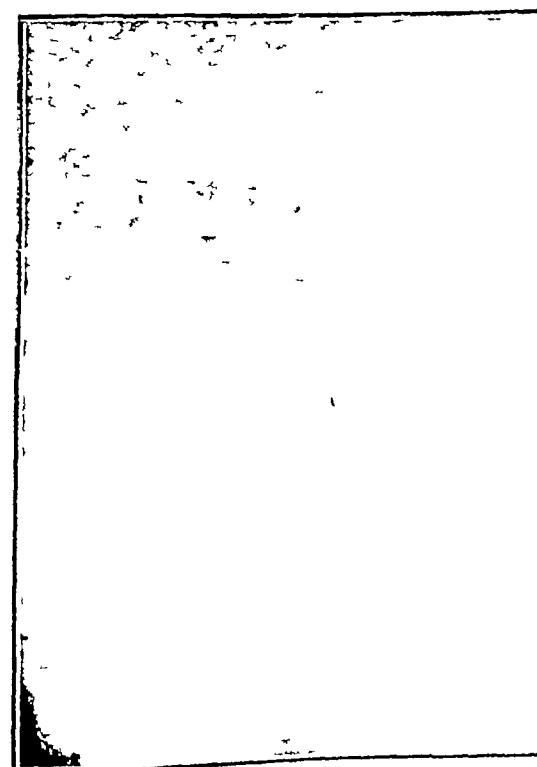
सेठ लालचन्दजी बाठिया, नरसिंहगढ

के लिये आप तार द्वारा बुलवाये जाते थे। रियासतने समय-समयपर आपको जागीरीमें गाँव भी इनायत किये थे। भोपाल स्टेटकी जनता आपसे बहुत परिचित थी तथा बड़ी इज्जतकी निगाहोंसे आपको देखती थी। आपकी रंजिश किसी अदनासे लेकर आला आदमी-से भी नहीं थी। हजारों रुपये आपने समय समयपर दावतों जलसोंमें खर्च किये। यदि आपकी मौजूदगी रहती तो भोपाल स्टेटसे और भी कई तरहकी जागीरें व सम्मान प्राप्त होते, लेकिन ईश्वरकी गति निराली है। तारीख १८ दिसम्बर सन् १६३५ की रातको ६॥ बजे आप अपने मकानके बाहर पलँगपर ओढ़कर सोये हुए थे, कि एकाएक किसी खूनीने आप पर तीन फेर किये, जिससे आप स्वर्गवासी हो गये आपके इस प्रकार निधन होनेका समाचार जब रियासत भरने सुना तो हरएक आदमीको दर्द व रंज हुआ। यहाँ यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं है कि जिस परिवारके ये थे उन्हें कितनी हृदय वेदना हुई होगी, इसे भुक्त भोगी ही जान सकते हैं।

जब राय साहब सेठ मिश्रीमलजीके खून होनेके समाचर नवाब साहब भोपालने सुना, तो उन्होने बड़े ही दर्दभरे १० शब्दोंका एक तार सान्त्वनासूचक आपके पास भेजा, तथा ईदके दिन नवाज पढ़कर मातमपुर्सीके लिये नवाब साहब आपके यहाँ आये और परिवारको दिलासा देकर उस खूनीका पता लगानेके लिये ५ हजार रुपयेका इनाम गजटमें शाया कराया। इस समय आपके पुत्र घेवरचंदजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १६५६ में हुआ है तथा आप अपने तमाम व्यवसाय संचालनमें सहयोग लेते हैं। आपके रतनचंदजी व हरकचंदजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ सुगनचंदजी कोठारी—आपका जन्म संवत् १६४८ में हुआ। आपके बड़े भ्राता राय साहब सेठ मिश्रीमलजी हमेशा राजकीय कामोंमें लगे रहते थे। अतएव आप पर अपने परिवार-की व्यवस्था, व्यापार तथा जमींदारीकी देख-रेखका प्रधान भार रहा। संवत् १६५७ मे आपने बानापुरा स्टेशनपर एक दुकान स्थापित की। इस समय आप ही अपने परिवारमें प्रधान पुरुष हैं तथा समझदार व विचारवान् सज्जन हैं। आपके पुत्र सन्तोषचंदजी २१ सालके हैं व कारबारमें भाग लेते हैं। दूसरे माणिकचंदजी पढ़ते हैं।

श्रीयुत लालचंदजी कोठारीका जन्म संवत् १६५८ में हुआ। आप अपने बड़े बन्धुके साथ व्यापार संचालनमें सहयोग देते हैं। आपके केवलचंदजी नामक एक पुत्र हैं। इस समय आपके यहाँ रेंहटीमें मिश्रीमल घेवरचंदके नामसे जमींदारी, कृषि तथा लेनदेनका कारबार एवं बानापुरामें सुगनचंद कोठारीके नामसे गल्ला व आढ़तका व्यापार होता है।

बांठिया

पनवेलका बांठिया परिवार, पनवेल

इस प्रतिष्ठित परिवारका मूल निवास-स्थान पीपाड़ (मारवाड) का है। वहांसे लगभग १०० वर्ष पूर्व इस परिवारके पूर्वज सेठ इन्द्रभानजी बांठिया व्यापारके निमित्त अहमदनगर तालुकाके मेहकरी नामक गाँवमें आये। थोड़े समय यहां निवास करनेके पश्चात् आप किसी दूसरे उपयुक्त व्यापारिक स्थानकी तलाशमें बम्बईकी ओर रवाना हुए। उस समय पूना, अहमदनगर आदि दूर-दूरके शहरोंका माल पनवेल आता था तथा यहांसे नावों द्वारा बम्बई की ओर रवाना किया जाता था। अतः आपने पनवेलमें अपना छोटे स्केलपर व्यापार प्रारम्भ किया।। थोड़ समयके बाद आपके ज्येष्ठ पुत्र आनन्दरामजी १२ वर्षकी आयुमें अपनी माता-के साथ मेहकरीसे पनवेल आ गये और वहीं निवास करने लगे। तभीसे यह खानदान पनवेलमें निवास कर रहा है। आप दोनों पिता पुत्रोंने साहसके साथ व्यापार प्रारंभ किया। आपको अपने व्यवसायमें बहुत लाभ रहा। आपके आनन्दरामजी, मेघराजजी तथा गुलाबचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे मेघराजजी सेठ जीवराजजी (इन्द्रभानजीके भतीजे) के नामपर दत्तक गये।

सेठ आनन्दरामजीः—आप बड़े व्यापार कुशल, होशियार तथा मिलनसार सज्जन थे। आपने हजारों लाखोंकी सम्पत्ति और बहुत यश कमाया। आपने करीब ३६ सालोंतक बहुत बड़े स्केलपर गाँजेका व्यवसाय किया। भारतके भिन्न-भिन्न स्थानोंके अलावा विदेशोंमें भी आप गांजा भेजते थे। इस व्यवसायमें आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। आपका पनवेल-की जनतामें बड़ा सम्मान था। यहांकी म्यु० के आप बहुत सालोंतक मेम्बर रहे। आप बड़े शुद्ध हृदयके सरल स्वभाव वाले सज्जन थे। आपको अपने स्वर्गवास होनेका समय प्रथम ही मालूम हो गया था जिसकी सूचना आपने अपने कुटुम्बियोंको प्रथम ही दे दी थी। आप प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताते हुए संवत् १६८३ की भादवा वदी ३ को स्वर्गवासी हुए। आपने मृत्यु समय ५०००) का दान पनवेलमें एक स्थानक बनवानेके लिये किया था। तदनुसार यहांपर "आनन्द भवन" नामक स्थान बनवाया गया है जिसमें इस समय भी श्री महावीर जैन लायब्रेरी स्थापित है। आपके भीकमदासजी, केसरचंदजी, भूरचन्दजी, उदयचन्दजी एवं खींवराजजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमेंसे सेठ भीकमदासजी अपने काका सेठ गुलाबचन्द-जीके नामपर दत्तक गये है।

सेठ केसरचन्दजीः—आपका जन्म संवत् १६४२ की माघ सुदी १२ को हुआ। आप इस समय पनवेलकी व्यापारिक समाजमें गण्यमान्य सज्जन हैं। हर एक धार्मिक और शिक्षाके कामोंमें आप उदारतापूर्वक सहायता देते रहते हैं। आप इस समय श्री महावीर जैन वाचना-लयके अध्यक्ष हैं। आपके पन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं।

स्व० सेठ आनन्दरामजी बाठिया, पनवेल (कुलाबा)

सेठ केशरचन्दजी बाठिया, पनवेल
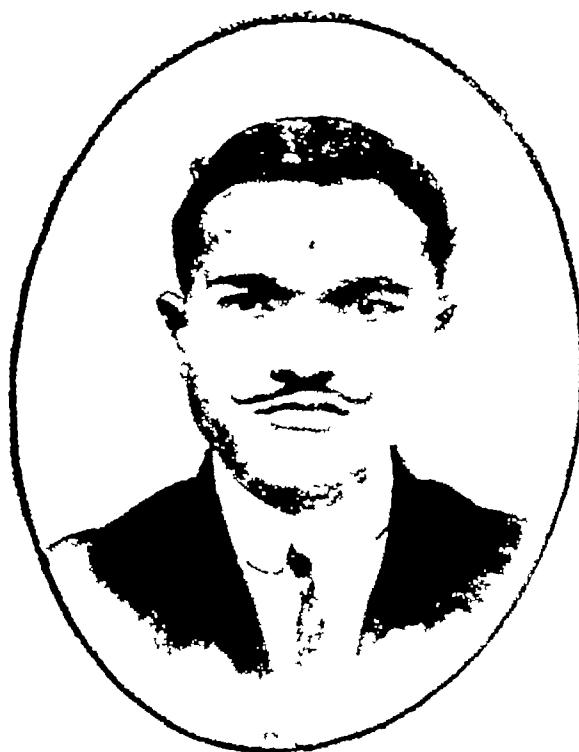
सेठ आसकरणजी मेघराजजी बाठिया, पनवेल

स्व० बाबू [illegible] बाठिया, पनवेल

स्व० सेठ भीकमचन्दजी बाठिया, पनवेल (कुलाबा)

सेठ रतनचन्दजी भीकमचन्दजी बाठिया, पनवेल

शांतिसदन (सेठ रतनचन्द भीकमचन्द) पनवेल
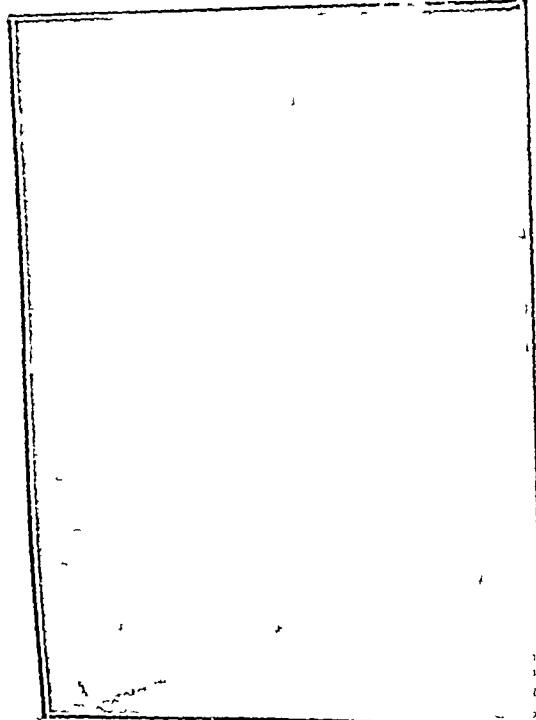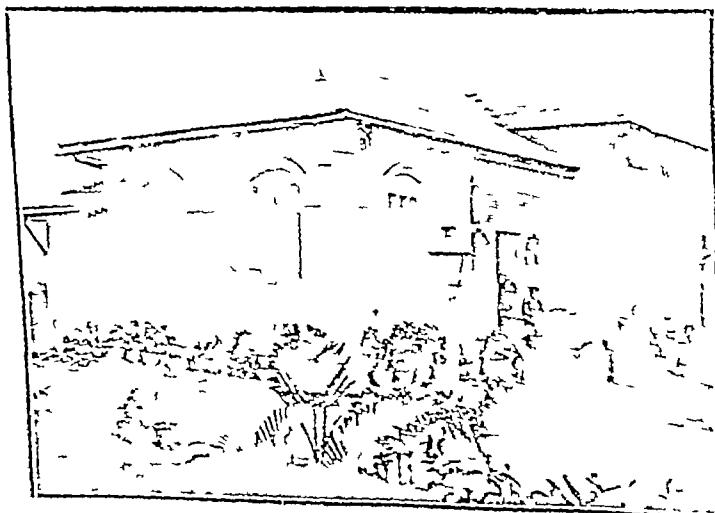
सेठ भूरचंदजीः—आप बड़े साहसी तथा व्यापार कुशल सज्जन थे। आपने लगभग डेढ़ लाख रुपये लगाकर एक मकान अपने नामपर खतम कराया था। आप संवत् १९७५ मे स्वर्गवासी हुए। आपके बिरदीचंदजी तथा फूलचंदजी नामक दो पुत्र हैं। बिरदीचंदजी मेट्रिकमें पढ़ते है। सेठ केसरचंदजी तथा भूरचन्दजीके परिवार वालोका व्यापार "मे० केसरचन्द आनन्दराम" के नामसे होता है। आप लोगोंकी दुकान पनवेलमे अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ उदयचन्दजी तथा उनके पुत्र कुन्दनमलजी "मे० उदयचन्द आनन्दराम" के नामसे तथा सेठ खींवराजी "मे० खींवराज आनन्दराम" के नामसे स्वतन्त्र कारवार करते हैं।

सेठ गुलाबचंदजी बांठियाका परिवारः—सेठ गुलाबचन्दजी अपने बड़े भ्राता सेठ आनन्दरामजीके साथ तमाम कामोंमे सहयोग देते हुए केवल २५ वर्षकी अल्पायुमे ही स्वर्गवासी हुए। अतएव आपके नामपर सेठ आनन्दरामजीके ज्येष्ठ पुत्र भीकमदासजी दत्तक आये।

सेठ भीकमदासजी बांठियाः—आपका जन्म संवत् १९३९ की विजयादशमीको हुआ। संवत् १९६६ मे आपने अपना व्यापार सेठ आनन्दरामजीसे अलग कर लिया। आपने अपनी सराफीके व्यापारमें अच्छी तरक्की की। जनतामे आपका बहुत सम्मान था। संवत् १९८४ की कार्तिक सुदी ६ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके श्री रतनचन्दजी नामक पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ रतनचन्दजी बांठियाः—आपका जन्म संवत् १९६६ की चैत वदी १ को हुआ। आप बड़े शांत, सज्जन एवं निरभिमानी व्यक्ति है। वर्त्तमानमें आप ही अपने सराफीके व्यवसायको बड़ी योग्यतासे संचालित कर रहे हैं। पनवेलकी जनतामे आपका सम्मान है तथा आपकी फर्म बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। हाल हीमें आप जनताकी ओरसे पनवेल म्यु० के मेम्बर चुने गये है। धार्मिक और शिक्षाके कामोंमे आप सहायता देते रहते हैं। गराड़ा चारिटेबल ट्रस्टमें आपने बहुत सहायता दी हैं तथा आप उसके ट्रस्टी भी हैं। इस समय आपके हरकचन्दजी, कांतिलालजी, तथा मोतीलालजी नामक तीन पुत्र हैं। आपके फर्मपर मेसर्स भीकमदास गुलाबचन्दके नामसे व्यापार होता हैं।

सेठ मेघराजजीका परिवारः—सेठ आनन्दरामजीके छोटे बंधु सेठ मेघराजजी अपने काका जीवराजजीके नामपर संवत् १९२४ में पीपाड़मे दत्तक गये। आप संवत् १९५२ मे स्वर्गवासी हुए। आपके आशारामजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ आशारामजीः—आपका जन्म संवत् १९३९ के श्रावणमें हुआ। आप पनवेलके प्रतिष्ठित एवं देशभक्त सज्जन हैं। आप नौ वर्षों तक म्युनिसिपिलिटीके मेम्बर रहे तथा वर्त्तमानमे आप पिंजरापोलके सभापति हैं। कांग्रेसके कार्य्यों मे आप बहुत भाग लेते रहते हैं। आप शुद्ध खद्दर पहनते हैं। सन् १९३० के असहयोग आन्दोलनमें काम करनेके कारण आप १॥ मास कारागारमें रहे और उन्हीं दिनों आपको पनवेलसे बाहर न जानेका हुक्म भी

हुआ था। वर्तमानमे आपकी यहां एक राइस मिल है तथा गल्लेका कारबार होता है। आपके अमोलकचन्दजी तथा जीतमलजी नामक दो पुत्र हैं।

इस खानदानकी ओरसे स्थानीय जैन हाल नामक पब्लिक हालमें ५०००) पाँच हजार रुपयोंकी सहायता दी गई है।

सेठ सूरजमलजी जेठमलजी बांठिया, नरसिंहगढ़

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। लगभग संवत् १८८७ में इस परिवारके पूर्वज सेठ लाहोरीचन्दजी बांठियाके पुत्र सेठ हीराचन्दजी बांठिया किशनगढ़ होते हुए नरसिंहगढ़ आये, और उस समयकी प्रसिद्ध फर्म गणेशदास किशनाजी की भागीदारीमें आपने पोद्दारेका कार्य्य आरम्भ किया। १० सालोंतक आप पोद्दारेका कार्य करते रहे। पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र साहुकारी लेन देन आरम्भ किया। आप बड़े व्यापार चतुर तथा बुद्धिमान पुरुष थे। नरसिंहगढ़ स्टेटमें आपका अच्छा सम्मान था। आपके सूरजमलजी तथा जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयोंने अपने परिवारके मान सम्मान व व्यापारको विशेष उन्नत किया। कपड़ेके व्यापारमें आपने विशेष सम्पत्ति उपार्जित की। आप दोनों बन्धु नरसिंहगढ़ राज्यके सम्मानित व्यापारी और नगरके वजनदार पुरुष माने जाते थे। रियासतके साथ साहुकारी लेनदेनका बहुतसा व्यवहार आपके द्वारा होता था। सेठ सूरजमलजी १९३७ में तथा सेठ जेठमलजी १९४२) में स्वर्गवासी हुए। सेठ सूरजमलजीके मानमलजी एवं सेठ जेठमलजीके रंगलालजी नामक पुत्र हुए।

सेठ रंगलालजी बांठिया—आपने अपने पिता सेठ जेठमलजीके बाद अपने खानदानकी इज्जत व व्यापारको और बढ़ाया। अपने पिताजीकी भांति सरकार व जनतामें आपका अच्छा सम्मान था। आपको दरबारमे प्रथम श्रेणीमें बैठनेका सम्मान प्राप्त था। संवत् १९८५ की अगहन सुदी १५ को ७१ सालकी वयमें आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लालचन्दजी हुए।

सेठ लालचन्दजी बांठिया—आपका जन्म संवत् १९४२ की कार्तिक बदीमें हुआ। यहाँ की जनता व सरकारमें आप भी अच्छे सम्माननीय सज्जन माने जाते हैं। दरबारमें प्रथम श्रेणीमें बैठनेका आपको सम्मान प्राप्त है। आप नरसिंहगढ़ म्युनिसिपेलेटीके मेम्बर व पञ्चायत बोर्ड के सीनियर मेम्बर हैं। आपके यहां इस समय सूरजमल जेठमलके नामसे साहुकारी व्यापार होता है। आपके पार्श्वमलजी तथा विरधमलजी नामक पुत्र हैं। यह परिवार श्री श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय आम्नायका माननेवाला है।

बाबू खींवराजजी बाठिया, पनवेल (कुलाबा)

बाबू बिरदीचन्दजी भूरचन्दजी बाठिया, पनवेल

बाबू फूलचन्दजी [illegible]
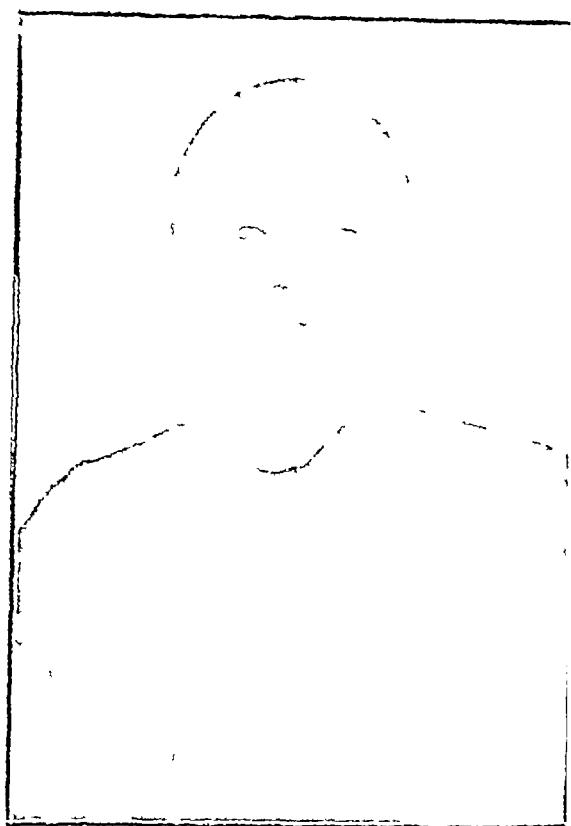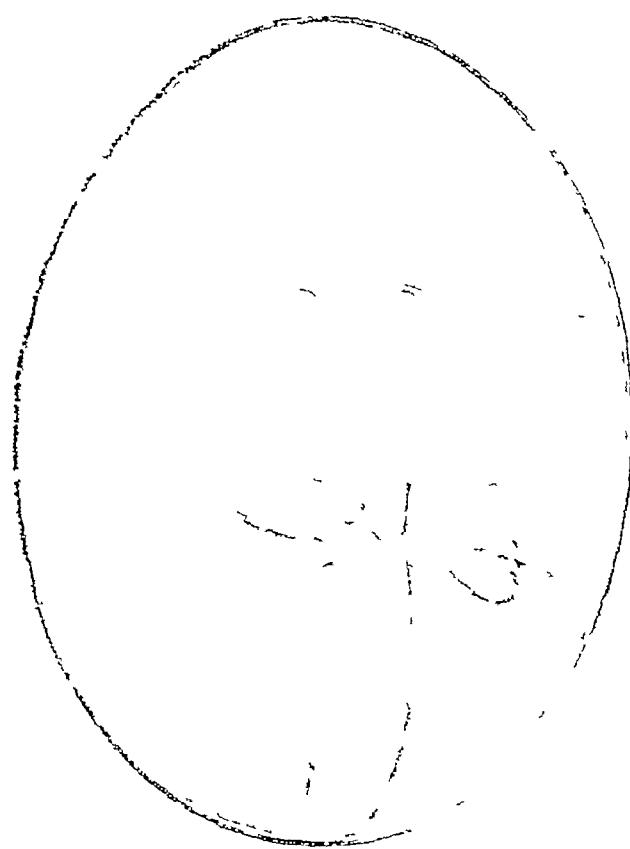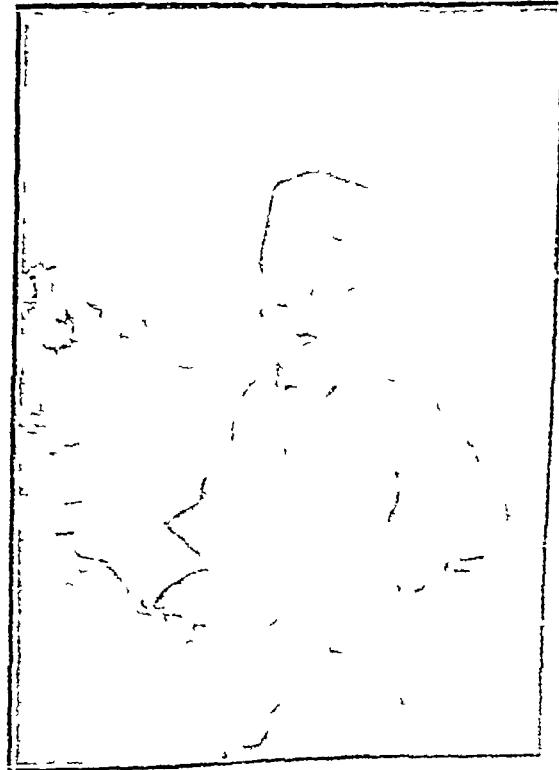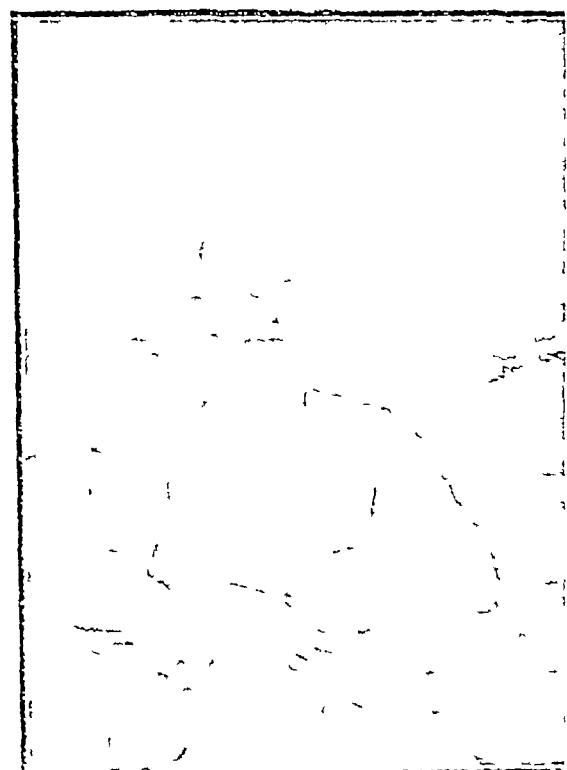
सिंघवी

सिंघवी सेठ फूलचन्दजी हीराचन्दजी का खानदान, कालिन्द्री

इस प्रतिष्ठित परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान सिद्धपुर पाटण गुजरातका है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सिरोही स्टेटके नीवज नामक स्थानपर आकर बसे। उस समय नीबजमें सिरोही दरबारके छोटे बन्धु निवास करते थे। वहाँ इस परिवारके पुरुषोंने नीवज ठिकानेका तमाम राजकाज लगभग १५० सालोंतक ईमानदारी, बुद्धिमानी और बहादुरीके साथ किया और ठिकानेसे नेकनामी प्राप्त की। इस प्रकार डेढ़ सौ सालतक ठिकानेकी सेवा करनेके बाद तत्कालीन राजा साहबसे इस परिवारकी किसी कारण अनबन हो गई। अतएव उस समय जितने घर इस खानदानके वहाँपर थे, वे सब परिवार जालोर, रामसेन, कालिन्द्री और इसके आसपास के स्थानों पर जाकर बस गये। इस परिवारके इस समय कालिन्द्रीमें साठ एवं आस-पासके स्थानोंमें करीब एक सौ घर निवास करते हैं। नीवजसे यहां आनेके कारण आपलोग नीबजिया कहलाते हैं। इस कुटुम्बमें सेठ उमाजी हुए। आप बहुत साधारण स्थितिके पुरुष थे तथा कालिन्द्रीमें ही निवास करते थे। आपके फूलचन्दजी नामक पुत्र हुए।

सेठ फूलचन्दजी सिंघवी—आपका जन्म संवत् १६२१ में हुआ था। आप आरम्भसे ही बहुत होनहार एवं बुद्धिमान मालूम होते थे। आपकी हिम्मत बहुत बढ़ी चढ़ी थी। आप उन महानुभावों में से एक थे जो अपने साहस व बुद्धिमानीके बल पर बहुत साधारण स्थितिसे उठकर अपनी व्यापारिक चातुरीसे विपुल द्रव्य उपार्जित करते हैं एवं उन्हें शुभकार्य्योंमे व्यय करके समाजमें अपनी तथा अपने कुटुम्बकी प्रतिष्ठाको स्थापित करते हैं। लगभग १२ वर्षके अल्प वयमें ही आप पैदल मार्ग द्वारा अहमदाबाद गये तथा वहांसे रेल द्वारा पूना गये। पूनासे पैदल मार्ग द्वारा गोकाक पहुंचे। इसी गोकाक नामक स्थान पर व्यापार करके आपने अपने भीतर छिपे हुए गुणोंको प्रकाशित किया। आरम्भ में आपने गोकाकमें साधारण स्थितिमे नौकरी की। थोड़े ही समयमें आपने अपनी तीव्र बुद्धिके कारण गोकाकके व्यापारिक समाजमें प्रभाव स्थापित कर लिया। धीरे २ आप गोकाक काटन मिलमें मेसर्स फारबस कम्पनीके सूतके एजण्ट मुकर्रर हुए। सूतकी एजंसीके इस व्यापारको आपने खूब चमकाया और इससे आपको अच्छी आमदनी होने लगी। आरम्भमे आपने दोलाजी फूवाजीके नामसे दुकान खोली। इसमें द्रव्य उपार्जित कर आपने एक कपड़ेकी दुकान और खोली और उसपर भगवानजी फूवाजीके नामसे कारबार आरम्भ किया। इसके बाद आपने अपनी स्वतन्त्र मे० ऊमाजी फूलचन्दके नामसे दुकान स्थापित की। अपने व्यापार की वृद्धिके लिये आपने सम्वत् १९४६ मे बम्बईमें किशनाजी फूलचन्दके नामसे एक दुकान और खोली। इस प्रकार हिम्मत, कारगुजारी तथा बुद्धिमानीसे आपने व्यापारमें सम्पत्ति उपार्जित

की। आपका व्यापारिक ज्ञान इतना बढ़ा-चढ़ा था कि उस समय वेलगाँव डिस्ट्रिक्टके व्यापारिक समाजमें आप नामी व्यापारी माने जाते थे। बृटिश सरकारने भी आपको अत्यन्त बुद्धिमान व चतुर समझ कर सम्मानित किया। आप गोकाक म्युनिसिपैलेटीके मेम्बर निर्वाचित हुए थे। इसी तरह गोकाक तथा बेलगांव लोकलवोर्डके आप मेम्बर चुने गये थे। इतना ही नहीं गोकाक म्युनिसिपैलेटीने अपना चेयरमैन बनाकर आपकी कद्र की थी। इस प्रकार व्यापारमें प्रतिष्ठा प्राप्त करके आपने जनताकी सेवा तथा धार्मिक कामोंकी ओर लक्ष दिया।

आपका धार्मिक तथा सामाजिक जीवन—प्रायः देखा जाता है कि हिम्मत व चतुराई से पैसा पैदा करके जो पुण्यशाली जीव होते हैं,—वही शुभ कार्य कर सकते हैं। यही कारण है कि सेठ साहबका जीवन भी शुभ कार्य्योंकी ओर अधिकाधिक प्रवृत्त रहा। सम्वत १९५६ के भयंकर दुर्भिक्षके समय कालिन्द्रीकी जनताकी आपने अन्न व वस्त्रोंसे सहायता की एवं कई वड़ेवड़े परिवारोंको बड़ी-बड़ी रकमें गुप्त रूपसे सहायतार्थ दीं। सम्वत् १९५९ में कालिन्द्रीके जैन मन्दिरमें आपने चार देहरियां वनवाई तथा मन्दिरमें ३ हजारकी लागतसे चांदीका रथ वनवाकर गोकाक कम्पनीकी ओरसे भेट किया। सम्वत् १९६३ मे आप श्रीशत्रुंजयजीकी यात्राके लिये गये और वहां एक विशाल नौकारसी आपने की। इस कार्य्यमे आपने ५।६ हजार रुपये लगाये।

आपने एक संघ भी निकाला था। इस संघमें ८०० श्रावक ५ साधु व २५ साध्वयाँ थीं। यह माघवदी ५ को रवाना हुआ एवं श्री केसरियाजी तक पैदल मार्ग द्वारा गया। बहुत आनन्दके के साथ धर्मलाभ करता हुआ चैत सुदी ५ को २॥ महीनेमें यह संघ वापस कालिन्द्री आया। इस कार्यमें आपने ३८ हजार रुपया खर्च किया। इस संघके उपलक्षमें आपको "संघवी" की उपाधि प्राप्त हुई। इस संघ ने सादड़ी नामक गाँवके जैन संघमें जो ७ तड़ें पड़ी हुई थीं वे मिटाईं। उस समय उनके आपसके रंजोंको मिटाने मे सेठ फूलचन्दजीने बहुत प्रयत्न किया। लगभग सवा लाख रुपयोंकी सम्पत्ति आपने धार्मिक तथा शुभ कार्योंमें लगाई। आपने लगभग १० स्वामिवत्सल तथा ४ नौकारसी उत्सव किये। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन विताते हुए आप संवत् १९६७ की कुँवार वदी ४ को स्वर्गवासी हुए। आपने अपने स्वर्गवासके समय ६ हजार रुपयोंकी रकम धार्मिक कामोंके लिये दी। आपके पुत्र श्री हीराचंदजीकी वय उस समय ९ सालकी थी। सेठ फूलचन्दजीके कोई सन्तान जीवित नहीं रहती थी, अतएव उन्होंने अपने पुत्र शिशु श्री हीराचन्दजीकी ५। सालकी उम्रमें उनके वजनके वरावर १९ रतल केशर १ सहस्र रुपयोंके समेत श्री केसरियानाथके यहाँ चढ़ाई थी।

सेठ हीराचन्दजी सिंघवी—आपका जन्म संवत् १९५८ की मगसर सुदी २ को हुआ। आप इस समय अपने परिवारके प्रतिष्ठित पुरुष हैं। आप योग्य पिताकी योग्य सन्तान हैं तथा अपने पिताजीके समान ही धार्मिक व प्रतिष्ठा पूर्ण कार्य्य करनेकी भावनाएं हमेशा

श्री सेठ हीराचन्दजी सिंघवी, कालिन्द्री

स्व० सेठ लक्ष्मणलालजी चोरड़िया

सेठ चन्दनमलजी रामपुरिया

श्री नथमलजी रामपुरिया [illegible]

आपके दिलमे रहती है। संवत् १६७२ में सेठ हीराचन्दजीने श्री सम्मेद शिखरजीकी यात्रा की तथा वहाँ २ नवकारसीकी। इस यात्रामें आपने ८ हजार रुपये खरच किये। आपकी मातेश्वरी बड़ी उदार हृदयकी तथा धर्मात्मा स्त्री थी। आपने पांच पांच हजार रुपया लगाकर २ नवकारसी श्री शत्रुंजयजीमे की एवं ३ नवकारसी कालिन्द्रीमें करवाईं। संवत् १६८० में सेठ हीराचन्दजी एवं उनकी माताने श्रीशत्रुंजय तीर्थमें एक उपध्यान करवाया जिसमें ३८१ पुरुषोंने भाग लिया। इस कार्य्यमें आपने १६ हजार रुपयोंकी रकम लगाई। सिरोही स्टेटके सारणेश्वरजी नामक तीर्थमें आपने ११ हजार रुपयोंकी लागतसे एक सार्वजनिक धर्मशाला बनवाई। इस धर्मशालाके कारण अब यात्रियोंको बड़ा आराम मिलता है। जब संवत् १६८८ की आषाढ़ वदी १३ को आपकी माताजीका देहावसान हुआ उस समय उन्होंने ३ हजार रुपयोंका दान किया। इधर ४ सालोंसे आप ३ हजार रुपयोंका घास गायोंको डलवाते हैं। आपने कालिन्द्रीके जैन मन्दिरमें भगवानके चांदीकी आंगी व तीन देवियोंके चांदीकी आंगियां बनवाईं। इसी प्रकार केशरियाजीमें भी चांदी सोनेके इन्द्र बनवाये व हमेशा बजनेके लिये इंग्लिश बैंड खरीदकर भिजवाया। कालिन्द्रीके अस्पतालमें ११००) की लागतसे एक क्वार्टर बनवाया व इतनी ही लागतसे साधु-साध्वियोंके लिये एक विद्याशाला बनबाई। इसी तरह कालिन्द्रीके महादेवके मन्दिरमें जीर्णोद्धार करवाया, गोशाला बनी उसमें मदद की। मन्दिरोंके सुधारमे, कालिन्द्रीके पानीके कुएके बनवानेमें भी मदद दी। शिवगंज कन्या पाठशालामें एवं मारवाड़के बंगलेके कार्य्यमें आदि इसी तरहके अनेकों कामोंमें समय समयपर आपने सैकड़ों रुपयोंकी मदद दीं। धार्मिक कामोंमे आप बड़ी उदारतापूर्वक सम्पत्ति खर्च करते हैं।

अभी संवत् १६६० में उदयपुरमें जो केसरियाजीका झगड़ा उग्र रूपसे खड़ा हुआ था तथा पूज्य आचार्य्य सूरि सम्राट् श्री शांतिसूरिजी महाराजने स्वयं वहां पधारनेका निश्चय किया, उस समय महाराज साहबके साथ सेठ हीराचन्दजी तथा चांदाके सेठ चांदकरणजी गोलेछा आदि सज्जन उपस्थित थे। जब आचार्य्य श्री ने मदाग नामक स्थानपर उपवास प्रारम्भ किया तब सारे भारतका जैन समाज विचलित हो गया। दूर दूरसे हजारो जैन गृहस्थ महाराज श्रीकी सातापुराने तथा झगड़ेको शान्ति पूर्वक निपटानेमें मदद करनेके लिये एकत्रित हुए। ऐसे समयमें दस-दस हजार मनुष्योंके आनेकी व्यवस्था एवं बीस-बीस हजार मनुष्योंके लिये ठंडाईकी व्यवस्था आपने बड़े ही सुन्दर ढङ्गसे की। जब महाराणाजीने आचार्य्य महाराजको पालणा करवाया, उस समयमें प्रसन्नता स्वरूप आपने २५००) की गिन्नियां व नगदी महाराज श्रीपर निछावर की व अपनी दृढ़ भक्ति तथा श्रद्धाका परिचय दिया। इस प्रकार अनेकानेक धार्मिक कामोंमें आप उदारता पूर्वक भाग लिया करते हैं। गुप्तदान करनेकी ओर भी आपकी अच्छी अभिरुचि है। लगभग ३ लाख रुपयोंकी बड़ी रकम आप धार्मिक व शुभ कामोंमें खर्च कर चुके हैं।

जिस प्रकार सिंघवी सेठ हीराचन्दजी ने धार्मिक क्षेत्रमें बहुतसे कार्य्य करके मारवाड़में नाम पाया है उसी प्रकार सिरोही स्टेटमें भी आपका अच्छा सम्मान है। आप सिरोही स्टेटकी जैन समाजमें नामी महानुभाव हैं एवं बड़े सम्मानकी निगाहोंसे देखे जाते हैं। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सिरोही दरबार श्री स्वरूपरामसिंहजीने सम्वत् १९८८ के वैसाख मासमें आपको "सेठ" की सम्माननीय उपाधि दी। वैसे तो सम्वत १९८१ से ही दरबारकी ओरसे आपके नामके आगे यह अलकाव लिखा जाता था पर इस पद के पूर्ण योग्य समझ कर आपको परवाना १९८८ में बख्शा गया। सिरोही दरबार आपका अच्छा आदर करते हैं। इसी तरह उदयपुर महाराणाजी एवं शत्रुंजय दरबारसे भी आपका परिचय है। जब सम्वत् १९८३ में आपका विवाह मड़गांवमें हुआ उस समय दरबारकी ओरसे लवाजमा, नगारा निशान व सिरोपाव आपको बख्शा गया। इसी प्रकार आपके पुत्र श्री रिखबदासजी एवं आपकी कन्याके विवाहोंमें भी स्टेटसे नगारा निशान वगैरा प्राप्त हुए।

सेठ हीराचन्दजी सिंघवी बड़े सरल स्वभावके तथा रईस तबियतके महानुभाव हैं। कालिन्द्रीमें आपकी विशाल हवेलियाँ नोहरे आदि बने हुए हैं। मोटर घोड़े आदि रखनेका आपको खास शौक है। कहनेका तात्पर्य यह कि आप सिरोही स्टेटके गण्यमान्य सज्जन हैं। आपके पुत्र श्री रिखबदासजीका जन्म सं० १९७५ की आसोज वदी १ को हुआ।

इस समय आपके यहाँ लगभग ४८ सालोंसे गोकाक मिलकी सूतकी एजंसीका काम होता आ रहा है। यहाँ सेठ फूलचन्द ऊमाजीके नामसे व्यापार होता है। इसके अलावा बम्बईमें सेठ फूलचन्द हीराचन्दके नामसे जौहरीबाजारमें बैङ्किग, हुण्डी चिट्ठी तथा साहुकारी लेन देनका व्यापार होता है। आपकी प्रधान दुकान बम्बईमें है।

चोरड़िया, रामपुरिया

सेठ नेमचन्दजी फूलचन्दजी चोरड़ियाका खानदान, देहली

इस खानदानके पूर्व पुरुषोंका मूल निवासस्थान मारवाड़का था। मगर बहुत वर्षोंसे आपलोगों का परिवार देहलीमें ही निवास कर रहा है। आप चोरड़िया गौत्रके श्री जै० श्वे० स्थानकवासी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें सेठ शामीलालजी हुए। आपके सन्तविहारीजी, सन्तविहारीजीके बूबनामालजी, बूबनामलजीके बरदीचन्दजी तथा बरदीचन्दजीके कन्हैयालालजी नामक पुत्र हुए। इस परिवारमें करीब करीब २०० वर्षोंसे कलाबत्तू का बड़े स्केल पर व्यवसाय चला आ रहा है।

लाला कन्हैयालालजीका जन्म सम्वत् १८८० व स्वर्गवास सम्वत १९४० में हुआ। आपके बसन्तरायजी, रूपचन्दजी, शादीरामजी, नेमचन्दजी, तथा रणजीतसिंहजी नामक पाच पुत्र हुए।

लाला फूलचन्दजी चोरडिया, देहली

लाला कपूरचन्दजी चोरड़िया, देहली

लाला किशनचन्दजी चोरड़िया, देहली

बाबू नौरतनचन्दजी चोरडिया, देहली

सेठ रूपचन्दजीका परिवार—आपके समयमें आपके यहाँ पर कलावत्तूका काम काज होता था। आपका स्वर्गवास संवत् १९६३ में हो गया। आपके खूबचन्दजी एवं गुट्टनमलजी नामक दो पुत्र हुए। लाला खूबचन्दजीका जन्म सं० १९१४ का था। आप सीधे सरल स्वभाव वाले तथा धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आप सज्जन व्यक्ति थे। आप ही ने अपनी फर्म पर जवाहरातका व्यापार शुरू किया था। आपका स्वर्गवास सम्वत १९६४ में हो गया। आपके इन्द्रचन्द्रजी तथा जीतमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें जीतमलजी गुट्टनलालजीके नाम पर गोद चले गये हैं। लाला गुट्टनलालजीने जवाहरातके व्यापारको खूब बढ़ाया था। आपका जन्म सं० १९३२ एवं स्वर्गवास सम्वत १९५९ में हुआ। आपके दत्तक पुत्र जीतमलजीका भी स्वर्गवास हो गया है।

लाला इन्द्रचन्द्रजी—आपका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आप योग्य, मिलनसार तथा देशभक्त सज्जन हैं। खादीसे आपको विशेष प्रेम है तथा आप खादी ही को व्यवहारमें लाते हैं। वर्तमानमें आप ही अपने जवाहरातके व्यापारको योग्यता एवं सफलता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आपका देहलीकी व्यापारिक समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र चम्पालालजी मिलनसार युवक हैं। आपके लाभचन्दजी नामक पुत्र है।

लाला नेमचंदजीका परिवार—लाला नेमचंदजीका जन्म सं० १९०६ में हुआ। आप बड़े सरल, ईमानदार, धर्मात्मा तथा ३२ सूत्रोंके ज्ञाता थे। आपको सरोदा विद्याका भी अच्छा अभ्यास था। आपने अपनी फर्मपर कलाबत्तूके व्यापारको बढ़ाया तथा बहुत सम्पत्ति कमाई व प्रतिष्ठा स्थापित की। आपका स्वर्गवास सं० १९४८ में हो गया। आपके सुगनचंदजी, माणकचंदजी, फूलचंदजी तथा कपूरचंदजी नामक चार पुत्र हुए। इनमेंसे लाला सुगनचंदजी गोद चले गये।

लाला फूलचंदजी—आपका जन्म सं० १९३८ की कार्तिक वदी १३ का है। आप व्यापार कुशल एवं योग्य व्यक्ति हैं। जिस समय आप केवल ८ वर्षके थे उस समय आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था। आपने इस संकटका साहस तथा धीरजके साथ मुकाबिला किया व शान्ति पूर्वक अपने व्यवसायमें हाथ बटाने लगे। एक समय कुछ आपसमें मनमुटाव हो जानेके कारण आप सब भाइयोंसे खाली हाथ अलग हो गये और अपनी व्यापार चातुरी तथा साहससे यह सारा ऐश्वर्य्य पुनः सम्पादित किया।

आपने अपने यहांपर सं० १९६४ से पगड़ीका व्यापार आरम्भ कर बहुत सफलता प्राप्त की। अपने व्यापारको विशेष तरक्कीपर लानेके लिये आपने इन्दौर, उज्जैन, रतलाममें फर्में खोली तथा उनपर सफलता पूर्वक पगड़ीका व्यापार आरम्भ किया। बहुत दूर दूरतक आपके यहाँसे पगड़ियाँ जाती हैं। आपकी फर्म पगड़ीके व्यवसायियोंमें बड़ी मानी जाती है। पगड़ीकी परीक्षामें आप निपुण तथा बारीक दृष्टि रखनेवाले व्यक्ति हैं।

आप मिलनसार एवं परोपकार वृत्तिवाले सज्जन हैं। आज भी आप युवकोंको आश्रय

देते तथा उन्हें धन्धेसे लगाते हैं। अतिथि सत्कारका भी आपको बहुत शौक है। आप उदार तथा योग्य व्यक्ति हैं। युवावस्थामें आप बड़े साहसी तथा हृष्टपुष्ट व्यक्ति थे। आपने महावीर जैन विद्यालय सब्जीमंडी देहलीको ३०००) का दान व एक मकान प्रदान किया। और भी इसी प्रकार सहायता प्रदान करते रहते हैं। आप महावीर जैन विद्यालयके सभापति तथा देहलीकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। इसी प्रकार इन्दौर, उज्जैन आदि स्थानोंपर भी आपका अच्छा सम्मान है।

आपने सेठ ऋधमलजी लोढ़ा किशनगढ़ वालोंके पुत्र कल्याणमलजीके पुत्र नौरतनचन्दजीको गोद लिया है। श्रीकल्याणमलजी मिलनसार तथा लाला फूलचंदजीकी फर्मपर कार्य करते हैं। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध पटवा खानदानके बाबू सुगन्धचन्दजी आपके यहांपर रोकड़िया हैं। बाबू नौरतनचन्दजी मिलनसार नवयुवक हैं। लाला फूलचंदजीके यहांपर बहुतसे मकानात बने हुए हैं।

लाला कपूरचन्दजी—आपका जन्म सं० १९४३ में हुआ। आप मिलनसार तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आपने अपनी फर्मपर सं० १९६६ में पगड़ीका व्यापार शुरू किया। आपने भी सं० १९७० में अपनी एक फर्म इन्दौरमें खोली। इस व्यवसायमें आपको भी बहुत सफलता प्राप्त हुई। वर्त्तमानमें आपही अपनी फर्मके प्रधान सञ्चालक तथा योग्य व्यक्ति हैं। आपका देहलीकी ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके यहांपर बड़े स्केलपर पगड़ीका व्यापार होता है। आपके पुत्र लाला किशनचन्दजीका जन्म सं० १९६५ की भादवा सुदी ३ का है। आप मिलनसार हैं तथा व्यापारमें भाग लेते हैं। आपके महताबचन्दजी नामक एक पुत्र है।

यह सारा खानदान देहलीकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ लछमणलालजी केशरीलालजीका खानदान, जयपुर

इस खानदानवाले बीकानेर निवासी चोरड़िया गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस परिवार वाले करीब १५० वर्षों पूर्व बीकानेरसे जयपुर आये तथा यहांपर जवाहरात एवं बैंकिंगका व्यापार प्रारंभ किया। तभीसे आप लोग यहींपर निवास कर रहे हैं। इस परिवारमें सेठ फतेसिंहजी हुए।

सेठ फतेसिंहजी—आप संगीत कलामें निपुण, एक अच्छे चित्रकार तथा व्यापार कुशल सज्जन थे। आपने अपने जवाहरातके व्यापारको सफलतापूर्वक संचालित किया। आपके [illegible]सिंहजी, बहादुरसिंहजी, भूधरसिंहजी तथा रतनसिंहजी नामक चार पुत्र हुए।

सेठ बहादुरसिंहजी, भूधरसिंहजी दोनों व्यापार-कुशल, जवाहरातके व्यापारमें अनुभवी एवं योग्य सज्जन हो गये हैं। आपने अपने व्यापारको बढ़ाया तथा जयपुरमें अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आज भी आप लोगोंकी हवेली बहादुर भूधरके नामसे मशहूर है। आपने अपनी फर्म की शाखाएँ कोटा, हिंडोण आदि स्थानोंपर खोलकर अपने व्यापारको बढ़ाया था। आप दोनों बन्धुओंमें अच्छा मेल था। सेठ बहादुरसिंहजीके सदासुखजी, तथा लक्ष्मणलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ लक्ष्मणलालजीका जन्म सम्वत १८९९ में हुआ। सं० १९३४ तक आपके परिवार वाले सम्मिलित रूपसे व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् सब अलग अलग हो गये। आपने पहले पहल आगरामें सं० १९३५-३६ में रूईकी आढ़तका सफलता पूर्वक व्यापार किया। वहाँ से आपने मद्रास जाकर जवाहरात व बैंकिङ्ग व्यवसाय किया। आप धार्मिक विचारोंके ज्ञान वान व्यक्ति थे। जयपुरकी समाजमे आपका अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६६ को जेठ बदी ७ को हुआ। आपके केशरीलालजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ केशरीलालजी—आपका जन्म सं० १९२६ की श्रावण बदीमें हुआ। आप व्यापार कुशल, शिक्षित तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। आपको मद्रासमें आपकी ईमानदारी तथा कार्य्य-कुशलताके कई बड़े अंग्रेज अफसरोंने सर्टिफिकेट दिये हैं। अपने फर्म की सारी इंग्लिशकी कार्य्यवाही आप ही किया करते थे। सम्वत १९५२ में मद्रास दुकान बन्दकर आप जयपुर चले आये और यहां पर जवाहरातका व्यापार शुरू किया जिसमें सफलता प्राप्त की। आप यहांके प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप धर्म ध्यान करते हुए शान्ति लाभ कर रहे हैं। आपके पुत्र धनरूपमलजी एवं सरूपचन्दजीका जन्म सं० १९६१ तथा १९६३ में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा आप लोग धनरूपमल सरूपचन्दके नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं। धनरूपमलजीके ज्ञानचन्द्रजी, नेमीचन्दजी एवं सौभागमलजी नामक तीन पुत्र तथा सरूपचन्दजी के गुमानमलजी और उमरावमलजी नामक दो पुत्र हैं।

श्रीभूधरमलजीके प्रपौत्र सेठ सुगनचन्दजी बड़े नामी जौहरी हो गये हैं। आपकी जवाहरातमें बारीक दृष्टि थी। इसमें आप निपुण और साहसी तथा जवाहरातके थोक व्यापारियोंमेंसे एक थे। आपने अपने हाथोंसे बहुत रुपया कमाया तथा खर्च किया। आपके शागीर्द आज भी जयपुरमें अच्छा जवाहरातका व्यापार कर रहे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८७ माह बदी ७ को हुआ।

लाला सुलतानसिंहजी निहालचन्दजीका खानदान, देहली

इस खानदानवाले मारवाड़ निवासी चोरड़िया गौत्रके श्री० जै० श्वे० स्था० सम्प्रदाय को माननेवाले हैं। बहुत वर्षोंसे आप देहलीमें ही निवास कर रहे हैं। इस खानदानमें लाला गंगादासजी हुए जिनके नाम पर हीरालालजी गोद आये। आपने गोटेका व्यवसाय सफलता

पूर्वक किया। आपके छोटी ऊमरमें निःसन्तान गुजर जाने पर आपके नाम पर पालीसे लाला सुल्तानसिंहजी गोद आये।

लाला सुल्तानसिंहजीका जन्म सं० १९२४ में हुआ। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपने बहुतसी धार्मिक संस्थाओंमें भाग लिया था। आप भी गोटेका व्यवसाय करते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९७६ में हो गया। आपके निहालचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। लाला निहालचन्दजीका जन्म सं० १९६४ में हुआ। आपने अपने यहाँ पर सं० १९८०-८१ से जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया। वर्तमानमें आप ही अपने व्यापारके प्रधान संचालक एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आप महावीर जैन पुस्तकालयके भूतपूर्व मन्त्री तथा उसकी प्रबन्धकारिणी सभाके वर्तमानमें सभासद हैं। श्वे० स्था० जैन कन्या पाठशालाकी प्रबन्धकारिणीके मेम्बर, महावीर जैन विद्यालय सब्जी मण्डीकी प्रबन्धकारिणीके मेम्बर आदि हैं। आप उत्साही युवक हैं। आपके सुरेन्द्रकुमार नामक एक पुत्र हैं।

सेठ नथमलजी निहालचन्दजी चोरड़िया, जबलपुर

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान बड़ीपादू (मारवाड़) है। आप लोग श्वे० जैन समाजके तेरापन्थी आम्नायको माननेवाले सज्जन हैं। मारवाड़से व्यापारके लिये इस परिवारके पूर्वज सेठ मूलचन्दजी चोरड़िया ग्वालियर आये और वहाँ आप लेन-देनका व्यापार करते रहे। आपने अपने नाम पर जबलपुरसे सेठ नन्दरामजी पारखके पुत्र श्रीनथमलजी को दत्तक लिया।

सेठ नथमलजी ग्वालियरसे जबलपुर आ गये तथा यहाँ श्री शारदाप्रसादजी खत्रीकी भागीदारीमें नत्थूमल शारदाप्रसादके नामसे व्यापार आरम्भ किया और पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। इस व्यापारमें आपने लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित कर मकान, बँगले आदि खरीद किये। इस प्रकार स्थाई सम्पत्तिकी वृद्धि करनेके साथ साथ सेठ नथमलजीने अपने परिवारके मान सम्मानको अच्छा बढ़ाया। आप जबलपुर तथा आस पासकी जैन समाजमें नामी पुरुष थे। जबलपुर सदरके गोरखपुर मोहल्लेमें आपने एक धर्मशाला बनवाई, तथा सदरमें एक कालीजीका मन्दिर भी बनवाना। जनवरी सन् १९२१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके कोई सन्तान न होनेसे आपने श्री. चन्द्रभानजी पारखके पुत्र श्री निहालचन्दजीको दत्तक लिया।

श्रीनिहालचन्दजी सरल स्वभावके नवयुवक है। आपके यहां श्री नत्थूमल निहालचन्द के नामसे कपड़ेका व्यापार तथा मकानातके किरायेका काम होता है। आपका लेन देन विशेष कर अंग्रेज लोगोंसे रहता है।

सेठ रतनचन्दजी रामपुरियाका खानदान, खुजनेर, छापाहेड़ा, संडावता (नरसिंहपुर)

इस परिवारके मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है। आप श्री श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय व्यक्ति हैं। इस परिवारके पूर्वज सेठ करमचंदजीके रतनचन्दजी तथा जोरावरमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमे सेठ रतनचन्दजी रामपुरियाका परिवार इस समय खुजनेर, छापाहेड़ा तथा संडावतामें निवास करता है एवं सेठ जोरावरमलजीका परिवार इस समय सेठ हजारीमल हीरालाल रामपुरियाके नामसे बीकानेर स्टेटका प्रसिद्ध करोड़पती परिवार है। सेठ रतनचन्दजी तथा जोरावरमलजी दोनो बन्धुओंका स्वर्गवास बीकानेरमें ही हुआ। आप दोनों भाइयोंकी सम्मिलित छत्री बीकानेरमें पाचनसूरिजीके बगीचेमे बनी है। सेठ रतनचन्दजीके पीछे उनके परिवार ने संवत् १६३७ में बीकानेरमे शहरसारिणी की थी।

सेठ रतनचन्दजीके छोगमलजी, पन्नालालजी, मोखमचन्दजी तथा फतेहचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। ये चारों बंधु व्यापारके निमित्त संवत् १६१५ के लगभग नरसिंहगढ़ स्टेटके संडावता नामक गाँवमे आये। थोड़े समय बाद सेठ छोगमलजी और मोखमचन्दजी छापाहेड़ा में और सेठ पन्नालालजी खुजनेर में व्यापार करने लगे। इस प्रकार इन चारों भाइयोंका परिवार दस पाँच मीलके अन्तरपर अपना अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगा।

सेठ छोगमलजी रामपुरियाका परिवार—आपके कोई संतान नही थी। अतः आपके नामपर आपके भतीजे सेठ हमीरमलजी दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १६२२ में हुआ है। आपके यहां हमीरमल भँवरलालके नामसे कपड़ेका व्यापार होता है। सेठ हमीरमलजीके पुत्र भँवरलालजी हैं।

सेठ पन्नालाल जी रामपुरियाका परिवार:—सेठ पन्नालालजी रामपुरियाने संवत् १६५५ में खुजनेरमें अपना निवास बनाया। आपने अपने व्यापारकी अच्छी उन्नति की। साथ ही अपने परिवारके सम्मानको भी बढ़ाया। संवत् १६६७ की जेठ सुदी १२ को ७६ सालकी वयमे आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ बुधमलजी तथा सेठ माणकचन्दजी विद्यमान हैं। सेठ बुधमलजीका जन्म संवत् १६३१ में एवं माणकचन्दजी का १६४५ में हुआ। आपके यहाँ इस समय साहुकारी लेनदेनका व्यापार होता है। आप लोगोंने खुजनेरमें ठाकुरजीके मन्दिरमें ८ आँगियाँ बनवाईं तथा उपाश्रयमें मदद दी। आप दोनों समझदार तथा वजनदार व्यक्ति हैं। आपका व्यापार अलग अलग होता है। बुधमलजीके पुत्र रंगलालजी, दुलीचन्दजी तथा चम्पालालजी एवं माणकचन्दजीके माँगीलालजी तथा जतनलालजी हैं। इन भाइयोंमें रंगलालजी व्यापारमें भाग लेते हैं, दुलीचन्दजी एफ० ए० मे पढ़ते हैं एवं माँगीलालजीने मेट्रिकतक अध्ययन किया है।

सेठ मोखमचन्दजी रामपुरियाका परिवार:—सेठ मोखमचन्दजीने संवत् १६२२ में

छापाहेड़ामें छोगमल हमीरमलके नामसे दुकान स्थापित की तथा अपने हाथोंसे व्यापारमें अच्छी सम्पत्ति उपार्जित कर अपने परिवारके सम्मान व प्रतिष्ठाको विशेष बढ़ाया। सेठ मोखमचन्दजीके हमीरमलजी और हिम्मतमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें हमीरमलजी सेठ छोगमलजीके नामपर दत्तक गये। संवत् १९४२ में सेठ छोगमलजी तथा मोखमचन्दजी का कारबार अलग अलग हो गया। तब से सेठ हिम्मतमलजी अपने पिताजीके साथ "रतनचन्द मोखमचन्द" के नामसे अपना स्वतन्त्र कारबार करने लगे। सेठ मोखमचन्दजी नरसिंहगढ़ रियासतमें तथा बीकानेरकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित महानुभाव थे। संवत् १९७६ की श्रावण वदी अमावस्याको ७५ सालकी वयमें आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र सेठ हिम्मतमलजी आपकी मोजूदगी में ही संवत् १९७२ में केवल ३६ सालकी अल्पायुमें स्वर्गवासी हो गये।

वर्तमानमे सेठ हिम्मतमलजीके पुत्र सेठ नथमलजी मौजूद हैं। आपका जन्म संवत् १९६३ की फागुन सुदी १५ को हुआ है। रियासतकी तरफसे भी आपको समय समयपर सम्मान मिलता रहता है। श्री नथमलजी मिलनसार तथा विवेकशील युवक हैं। आपके यहां इस समय छापाहेड़ामें रतनचन्द मोखमचन्दके नामसे साहुकारी लेनदेनका व्यापार होता है। आपके पुत्र श्रीगंभीरमलजी तथा निर्मलसिंहजी हैं।

सेठ फतेचन्दजी रामपुरियाका परिवारः—हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ फतेचंदजी रामपुरिया आरंभसे ही सडावतामें व्यापार करते रहे। आपने भी नरसिहगढ़ राज्य तथा बीकानेरमें अपने परिवारके मान सम्मान तथा प्रतिष्ठाको बढ़ाया। संवत् १९७१ की चैत सुदी १ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ चंदनमलजी तथा सेठ सागरमलजी इस समय विद्यमान हैं। आप दोनों भाइयोंका जन्म क्रमशः संवत् १९४८ तथा १९५७ में हुआ है। आप दोनों बंधु सयाने, समझदार तथा प्रतिष्ठित महानुभाव हैं। आपके यहाँ इस समय "फतेचन्द चंदनमल" के नामसे व्यापार होता है।

इस समय सेठ चन्दनमलजीके पुत्र सोहनलालजी तथा भीकमचन्दजी व सेठ सागरमलजीके पुत्र मदनमलजी एव सम्पतलालजी हैं। श्री सोहनलालजी ने मेट्रिकतक अध्ययन किया है।

सेठ धनसुखदास जेठमल रेदानीका खानदान, मिर्जापुर

यों तो इस परिवारके सज्जन बड़ीपादू (जोधपुर स्टेट) के निवासी हैं, लेकिन लगभग सवा सौ सालोंसे यह परिवार मिर्जापुरमें निवास कर रहा है। मारवाड़से इस परिवारके पूर्वज सेठ धनसुखदासजी रेदानी कानपुर होते हुए मिर्जापुर आये और यहां आकर आपने

बाईं ओरसे—(१) कुं० आनन्दचन्द्रजी (२) कुं० उदयचन्द्रजी (३) सेठ मिश्रीलालजी रैदानी (४) कुं० ज्ञानेन्द्रचंद्रजी (५) कुं० प्रकाशचंदजी

मेसर्स घनश्यामदास जेठमल रैदानी मिर्जापुर रैदानी पेलेसका दृश्य

गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। आपके फूलचन्दजी और जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए, इनमे श्री फूलचन्दजी छोटी वयमें ही स्वर्गवासी हो गये।

लाला जेठमलजी – आप इस परिवारमें नामांकित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए। आपने अपने गल्लेके व्यापारको उठाकर हुंडीकी दलाली आरम्भ की। आपकी कार्य्य चातुरीसे आप व्यवसायमें बड़े होशियार तथा वजनदार दलाल समझे जाने लगे। अच्छे अच्छे नामांकित व्यापारियोंसे परिचय होनेके कारण आपने गरीब लोगोंको धंधेंसे लगानेमें बहुत मदद दी। धीरे धीरे आपने अपना घरू व्यवसाय आरम्भ किया तथा कलकत्ता, रांची, बलरामपुर, झालदा आदि स्थानोंमे अपनी २०-२५ शाखाएं खोलीं। व्यापारकी उन्नतिके अलावा आपने श्री केसरियाजी तीर्थके हाथीपोलको धर्मशालाएँ कोठरी एवं इलाहाबादके बोर्डिङ्ग हाउसमें कमरे बनवाये। इसी तरह तीर्थयात्रा आदि धार्मिक कामोंमे जीवन बिताते हुए आप संवत् १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आपने अपने स्वर्गवासके समय २५ हजार रुपयोंका दान किया था। इस रकममे कुछ और मिलाकर आपके पुत्र बाबू मिश्रीलालजी रैदानीने बद्रीदासजी बहादुर जौहरीके जैन मन्दिरके समीप एक धर्मशाला बनवाई। सेठ जेठमलजीने अपने मुनीम गुमास्तोंमे जितना लेना था वह सब माफ कर दिया। आपके कोई सन्तान नहीं थी। अतएव आपके नामपर पाली (मारवाड़) से भंसाली गौत्रके श्रीमिश्रीलालजी संवत् १९५२ में दत्तक आये।

बाबू मिश्रीलालजी रेदानी—आपका जन्म सवत् १९४५ में हुआ। आपकी नाबालगीमें लाला जेठमलजीके तमाम कारबारको मुनीम लाला कपूरचंदजी सीपानी तथा हनुमानदासजीने बड़ी योग्यतासे सम्हाला। लाला मिश्रीलालजीने बालिग होनेके बाद अपने व्यापारको सम्हाला तथा अपने बैंङ्किग व चपड़ेके व्यापारकी उन्नति की ओर विशेष लक्ष दिया, तथा अपनी फर्मपर कार्पेटका व्यापार भी आरम्भ किया। आपने शैलक और कार्पेटका इम्पोर्ट विदेशोंसे करनेके लिये कलकत्तेमें मिश्रीलाल एण्ड संसके नामसे एक आफिस खोला। इसके अलावा रंगून से लाख इम्पोर्ट करनेके लिये एक ब्रांच आपने वहां भी खोली। इसके अलावा स्टोन और कंट्राक्टिंगका भी बहुत-सा व्यापार आपने किया। इस प्रकार सम्पत्ति उपार्जन कर आपने अपने परिवार एवं फर्मके सम्मानको विशेष बढ़ाया। आपका स्वभाव बड़ा मिलनसार है। धार्मिक तथा सार्वजनिक कामोंमें आप उत्साहसे काम लेते हैं। आपने देहलीमें दादाजी जिनचन्द्रसूरिजी महाराजकी छत्री बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा करवाई। जयपुरके पास मालपुरा नामक स्थानमें एक छत्री बनवाई। मिर्जापुरमें एक जैन बोर्डिङ्ग तथा श्री मिश्रीलालजी रेदांणी स्कूलके लिये ८४ हजार रुपये लगाकर एक बिल्डिंग बनवाई। इसके ट्रस्टी श्रीलाभचंदजी सेठ, श्री बीजराजजी कोठारी एवं आप हैं। इस संस्थाके स्थायी प्रबन्धके लिये एक लक्ष एक सौ ग्यारह रुपयोंका भारी दान भी देकर आपने अपनी दानशीलताका परिचय दिया था। लेकिन उपर्युक्त रकम ट्रस्टियोंके एक प्रतिष्ठित फर्मपर ब्याज रखी थी,

वह रुपया उस फर्ममें रह जानेसे बोर्डिङ्ग तथा स्कूलका काम अधूरा ही रह गया। वर्तमानमें लालाजी इस ओर फिरसे प्रयत्नशील हैं। कलकत्ते के श्रीसंघने आपको श्री अयोध्या और रतनपुरी तीर्थोंकी सम्भालके लिये ट्रस्टी नियुक्त कर सम्मानित किया है।

धार्मिक तथा व्यापारिक कामोंके अलावा सार्वजनिक क्षेत्रमें भी लाला मिश्रीलालजी अच्छा सहयोग लेते हैं। आप मिर्जापुर म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर एवं ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रह चुके हैं। इस समय आप शैलक एसोसियेशन, रेडपेअर एसोसियेशन तथा बाय काउण्ट एसोसियेशनके व्हाइस प्रेसिडेण्ट हैं एवं स्थानीय सेवासमितिके जन्मदाता हैं। बृटिश आफिसरोंसे भी आपका अच्छा मेल है। मिर्जापुरमें गंगाजीके किनारे पर आपकी एक बहुत सुन्दर एवं रमणीय कोठी है। इसके आसपास ३७ बीघा जमीनमें कई मकानात एवं बगीचा बना हुआ हैं। आपकी कोठी पर यू० पी० गवर्नरने आकर आपको सम्मानित किया था। सिलवर जुबिली आदि उत्सवोंपर आपको कई सार्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं।

लाला मिश्रीलालजीके इस समय ६ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बाबू ज्ञानचंदजी, उदयचंदजी, प्रकाशचंदजी, आनन्दचंदजी, विजयचंदजी एवं वीरेन्द्रचन्द्रजी हैं। बाबू ज्ञानचन्दजीका जन्म सम्वत् १९७० में हुआ। आप शिक्षित युवक हैं, तथा फर्मके व्यापार संचालनमें भाग लेते हैं। बाबू उदयचंदजी कलकत्तेमें B. S. C. में अध्ययन करते हैं तथा शेष बन्धु मिर्जापुरमें शिक्षा लाभ करते हैं। इस समय इस परिवारमें बैङ्किग, शैलक, जमीदारी, एक्सपोर्ट, कारपेट, स्टोन तथा जनरल मर्चेटाइजका व्यापार होता है।

राजा बच्छराजजी नाहठाका खानदान, बनारस

इस खानदान वालोंका मूल निवासस्थान यों तो मारवाडका था, मगर करीब १५० वर्षोंसे आप लोग बनारसमें ही निवास कर रहे हैं। आप लोग नाहटा गौत्रके श्री जै० श्वे० म० मार्गीय व्यक्ति हैं। इस खानदानमें बाबू बच्छराजजी बड़े नामी तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति हुए।

राजा बच्छराजजी—आप इस खानदानमें बड़े प्रतापी, प्रभावशाली तथा ऐश्वर्य्यशाली महानुभाव हो गये हैं। आप कार्यकुशल, चतुर तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले सज्जन थे। आप लखनऊके नवाबके खजांची थे। आपकी योग्यता, व्यवस्थापिका शक्ति तथा विचार शीलतासे प्रसन्न होकर लखऊन के नवाब ने आपको "राजा" का खिताब प्रदान कर सम्मानित किया था। आप बनारस तथा लखनऊमें सम्माननीय व्यक्ति गिने जाते थे। आपका सितारा उस समय पूर्ण उन्नतावस्था पर था।

आप बड़े धार्मिक तथा परोपकारी व्यक्ति थे। आपने भदैनीमें एक सुन्दर मन्दिर तथा एक घाट बनवाया जो आज भी बच्छराज घाटके नामसे मशहूर है। आपने इस प्रकारके कई कार्य्य किये। आपके नामसे यहांपर एक फाटक भी विद्यमान है। आप बनारसकी जनतामें
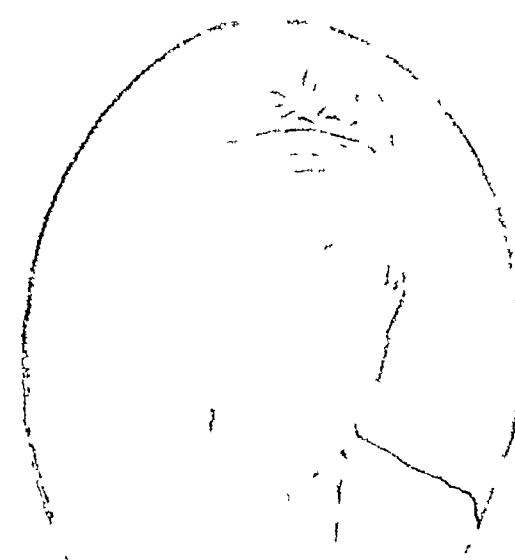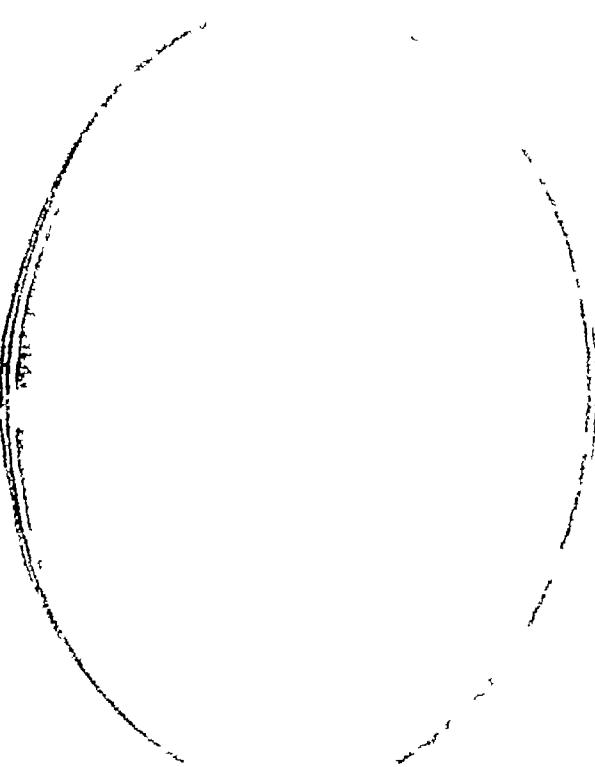
लोकप्रिय, माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपके बनाये हुए मन्दिर तथा घाट आज भी सुन्दर स्थितिमें विद्यमान हैं। आपने बनारसमे अपनी जमीदारी भी बढ़ाई थी। आप इस प्रकार बनारसमे चमकते हुए व्यक्ति हुए। आपके लक्ष्मीचंदजी, अयोध्याप्रसादजी तथा बट्टूजी नामक तीन पुत्र हुए।

बाबू लक्ष्मीपतजीका खानदान—बाबू लक्ष्मीपतजी अपनी जमीदारीके कामको संभालते रहे। आपके पुत्र दीपचन्दजीने सूद टोलामे अपने पिताजीके स्मारकमें एक मन्दिर बनवाया। आपका छोटी उम्रमें ही स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र शिखरचन्दजीका जन्म संवत् १९३९ में हुआ। आप भी अपने मकानात व जमींदारीके कामको करते रहे। आपका स्वर्गवास १९ अप्रैल सन् १९२५ में हो गया। आपके धनपतसिंहजी, अमोलखचन्दजी, प्रतापचन्दजी, विजयचन्दजी, अभयसिंहजी एवं जयचन्दजी नामक छः पुत्र हुए।

बाबू धनपतसिंहजी—आप शिक्षित एवं सुधरे हुए खयालोंके सज्जन हैं। आपका जन्म सं० १९६१ की कार्तिक वदी १३ को हुआ। आपने सन् १९२५ मे हिन्दू युनिवर्सिटीसे बी० ए० तथा एल० टी० की डिग्री सन् १९३६ मे हासिल की। वर्तमानमें आप कानपुर के पृथ्वीराज हाईस्कूल मे असिस्टेण्ट हेडमास्टर हैं। आपके महिपतसिंहजी, लखपतसिंहजी एवं नरपतसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं।

बाबू अमोलखचन्दजी—आपका जन्म सं० १९६३ में हुआ। आप शिक्षित, योग्य एवं मिलनसार सज्जन हैं। आपने बी० ए० सन् १९२७ मे हिन्दू यु० से तथा सन् १९२९ में ला की डिग्री प्रथम दर्जेसे पास की। वर्त्तमानमे आप बनारसमे सफलतापूर्वक वकालात करते हैं। आपके वीरेन्द्रकुमारजी, राजेन्द्रकुमारजी तथा नरेन्द्रकुमार नामक तीन पुत्र हैं। बाबू प्रतापचन्दजी का जन्म सं० १९६५ में हुआ। आप बी० काम तक अध्ययनकर वर्तमानमें महाबोधी सोसायटी बनारसके असिस्टेण्ट सेक्रेटरीकी सर्विस पर हैं। विजयचन्द्रजीका जन्म १९६८ में हुआ। आप अभी बी० एस० सी० मे पढ़ते हैं। अभयसिंहजीका जन्म सं० १९७१ में हुआ. आप जमीदारीका काम देखते हैं। जयचन्दजीका जन्म सं० १९७७ में हुआ। आप अभी मैट्रिकमें पढ़ रहे हैं।

श्री अयोध्याप्रसादजीके बहादुर सिंहजी नामक हुए जिनके नाम पर श्री सूरजमल गोद आये। आप अभी विद्यमान हैं तथा जवाहरातका व्यापार करते हैं।

सेठ पांचीरामजी कुन्दनमलजी नाहठा, जलपाईगुड़ी

इस परिवारके सज्जनोंका मूल निवासस्थान तोल्यासार (बीकानेर) का था। जब सरदार शहरकी नई आबादी हुई उस समय इस खानदानके पूर्वपुरुष सेठ पदमचन्दजीके पुत्र सेठ सुखमलजी एवं सेठ कालूरामजी सरदारशहर में आकर रहने लगे। तभीसे आप लोग यही पर निवास करते हैं। आप लोग नाहठा गौत्रीय श्री श्वेताम्बर जैन तेरापन्थी

मतावलम्बी हैं। आप दोनों बन्धु बड़े परिश्रमी, साहसी एवं व्यापार कुशल सज्जन थे। करीब १०० वर्ष पूर्व देशसे चलकर आप जलपाईगुड़ी आये और यहाँ आकर मेसर्स सुखमल कालूरामके नामसे अपना कारवार शुरू किया। आपको कपड़ेके व्यवसायमें बहुत लाभ रहा। अपनी स्थितिको और भी मजबूत करनेके लिये आपने सम्वत् १९५१ में मे० नथमल भीखमचन्दके नामसे विलायती कपड़ेके इम्पोर्ट और आढ़तका व्यापार प्रारम्भ किया। आपने जमीदारी भी खरीद की। सम्वत् १९६६ तक आप लोगोंका व्यवसाय शामलाल में चलता रहा। तदनन्तर आपदोनों भाइयोंके परिवार वाले अलग २ होकर अपना स्वतन्त्र व्यवसाया करने लगे। सेठ सुखलालजीके बनसुखदासजी और शोभाचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ कालूरामजीका स्वर्गवास संवत् १९४९ में हो गया। आपके पाँचीरामजी एवं नथमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई भी बड़े बुद्धिमान और व्यापारकुशल सज्जन थे। आप लोगोंके हाथोंसे अपने फर्मकी बहुत तरक्की हुई और जमींदारीमें भी वृद्धि हुई। सम्वत् १९६६ में अपने व्यापारके अलग २ हो जानेके बाद आप दोनों बन्धुओंने अपना व्यापार शामलातमें शुरू किया। उस समय आप लोगोंकी कलकत्ता दुकान पर मे० पाँचीराम नथमल नाम पड़ने लगा। इस समय भी आप लोग कपड़ेका व्यवसाय करते रहे। सम्वत् १९७१ तक आप दोनों भाई शामलात में व्यापार करते रहे। तदनन्तर आप दोनों अलग २ हो गये। आप दोनों भाइयोंका जलपाईगुडी और सरदारशहरमें अच्छा सम्मान था। आप लोगों का धर्म की ओर भी बहुत ध्यान था। आप दोनों भाइयों ने अलग २ होकर अपना स्वतन्त्र व्यापार शुरू किया। सेठ पाँचीरामजीने मे० कुन्दनमल जयचन्दलालके नामसे और नथमलजीने मे० कालूराम नथमलके नामसे अपना व्यापार शुरू किया। कलकत्ता फर्म पर भी पाँचीराम नाहटा एवं नथमल सुमेरमलके नामसे क्रमशः अलग २ व्यवसाय होने लगा। कलकत्ता १७७ हरिसन रोडमें इस समय सेठ पाचीरामजीके परिवारवाले पाँचीराम नाहठाके नाम से अपना कारबार टी गार्डन फायनेंस हेल्प (Tea garden Finance Help) तथा विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट करते हैं। मे० नथमल सुमेरमलका काम सम्वत १९८८ में बन्द कर दिया गया। सेठ पाचीरामजीका सम्वत १९८८ मे स्वर्गवास हो गया। आपके कुन्दनमलजी नामक एक पुत्र हैं। इसी प्रकार जयचन्दलालजीके शुभकरणजी नामक पुत्र हैं।

सेठ कुन्दनमलजी बड़े ही मिलनसार एवं व्यापारकुशल सज्जन हैं। वर्त्तमानमें अपने फर्मके सारे व्यवसायका सचालन आप ही करते हैं। आपके मोहनलालजी, दीपचन्दजी, श्रीचन्दजी एवं छोटूलालजी नामक चार पुत्र हैं। आप लोग पढ़ते हैं।

सेठ नथमलजीका स्वर्गवास सवत् १९८१ में हो गया। आपके सुमेरमलजी नामक एक पुत्र हैं। आपका जन्म सवत् १९६६ में हुआ। वर्त्तमानमें आप ही अपने व्यवसायको संचालित करते हैं। आप बड़े योग्य और मिलनसार हैं। आपने अपने फर्मकी अधिक उन्नति की है। आपके [illegible] नामक एक पुत्र हैं। आजकल आपके यहां जमींदारीका कामकाज होता है।

लाला निहालचन्दजी चोरडिया, देहली
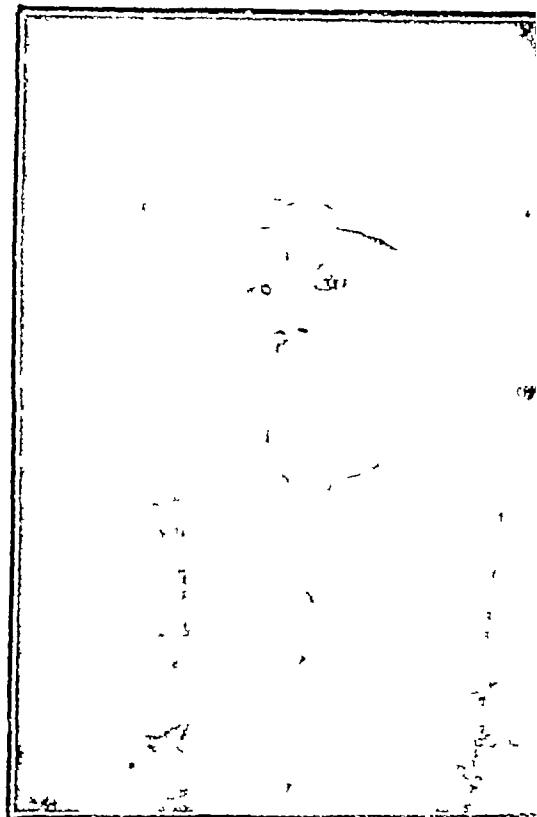
सेठ मानमलजी नाहटा, हापुड

बाबू मोहनलालजी, S/o सेठ कुन्दनमलजी नाहटा, सरदारशहर

बाबू उत्तमचन्दजी S/o मानमलजी नाहटा, हापुड

सेठ मानमलजी नाहठा का खानदान, हापुड़

इस खानदानवाले जैसलमेर निवासी नाहठा गौत्रके श्री जै० श्वे० मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। इस परिवारमें शामसिंहजी हुए। आपके पुत्र दानमलजी जैसलमेरसे भोपाल आये और वहांपर लेन देनका व्यापार किया। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १९४८ मे हुआ। आपके पुत्र जेठमलजीका भोपाल में ही १० वर्षकी आयु मे सं० १९३५ में स्वर्गवास हो गया। सेठ जेठमलजीके गुजरनेके समय आपके पुत्र हजारीमलजी पेटमें थे।

सेठ हजारीमलजी भोपालसे सिकन्द्रावाद आये और वहांपर कमीशन एजेन्सीका कार्य्य किया। आप धार्मिक, परोपकारी एवं मिलनसार व्यक्ति थे। श्रीलब्धिविजयजी महाराजके सिकन्द्रावाद आनेके समय आपने एक व्यक्तिको दीक्षा दिलवाई थी जिसमें आपने भी कुछ सहायता दी थी। आपका स्वर्गवास सं०१९७३ में हो गया। आपके मानमलजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ मानमलजीका जन्म सं० १९६२ में हुआ। आपके पिताजीकी मृत्युके समय आप केवल १० सालके थे। इस छोटीसी ऊमरसे आपने व्यापारमे भाग लेना शुरू कर दिया था। आगे जाकर आपको ठीक सफलता प्राप्त हुई। आप सिकन्द्राबाद से सं० १९८२में हापुड़ चले आये। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमे आपकी हापुड़, अमृतसर, उकाड़ा (पंजाब), शाहजहांपुर तथा सिकन्द्राबादमें फर्मे हैं।

आपने सिकन्द्रावादमें एक धर्मशाला भी बनवाई है। आपके उत्तमचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

श्री तेजमलजी नाहटाका खानदान, झालरापाटन

इस परिवार का मूल निवासस्थान जैसलमेर का है। आपलोग नाहटा गौत्रीय श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ रतनचन्दजी हुए। आपका जन्म सं० १८६४ में हुआ। आप करीब १०० वर्ष पूर्व जैसलमेरसे बूंदी आये और यहांपर आकर दीवान बहादुर गणेशदासजी दानमलजी की फर्मपर मुनीमातका काम किया। आप आजीवन यही काम करते हुए सं० १९२४ में गुजरे। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर कोटासे सेठ जौहारमलजी गोद आये।

सेठ जौहारमलजीका जन्म संवत् १९०५ मे हुआ। आप बूंदीसे कोटा चले आये और यहांपर आपने मे० गणेशदास हमीरमलके यहां नौकरी की। आपका स्वर्गवास सं० १९८८ में हुआ। आपके तेजमलजी एवं जयकरणजी नामक दो पुत्र हुए।

श्रीतेजमलजीका जन्म संवत् १९३६ में हुआ। आप व्यापार कुशल, साहसी तथा योग्य सज्जन हैं। इस खानदानमें आप ही विशेष कर्मशील एवं प्रतिभाशाली सज्जन हैं। १५ वर्ष

की अल्पायुसे ही आपने उदयपुरमें सेठ जोरावरमलजीके खजानेपर मुलाजिमत की। इसके पश्चात् आपने मे० हरगोपाल हरदयाल फतेहपुरियों के यहांपर पांच सालोंतक सर्विस की। तदनन्तर दीवान बहादुर सेठ केशरीसिंहजीने आपको अपनी पाटन दुकान पर मुनीम बनाकर भेजा। आपने योग्यतासे काम संचालित कर सेठोंके कामोंमें तरक्की की। तदनन्तर आप सेठोंकी बम्बई दूकानपर हेड मुनीम बनाकर भेजे गये। बम्बई फर्मके विस्तृत व्यवसायको आपने योग्यता पूर्वक संचालित किया। आप देश प्रेमी, परोपकारवाले एवं मिलनसार हैं। असहयोग आन्दोलनके उस तूफानके समयमें आपने कांग्रेसको बहुत मदद पहुँचाई थी। इसी प्रकार हिन्दू मुसलमानोंके झगड़ोंके समयमें आपने हिन्दुओंको मदद पहुँचाकर उनकी सेवा की थी।

आप व्यापारमें साहसी तथा कुशल हैं। बम्बईकी मारवाड़ी समाजमे आपका अच्छा सम्मान है। बम्बईमें आपने बड़े२ जोखमपूर्ण व्यवसायोंको कुशलता पूर्वक निपटाया। वर्तमानमें आप सेठोंकी कोटा फर्मका कामकाज सञ्चालित कर रहे हैं। आपके उम्मेदमलजी नामक एक पुत्र हैं। श्री उम्मेदमलजीने संवत् १९३५ में बी० ए० पास किया है। वर्त्तमानमें आप एल० एल० बी में पढ़ रहे हैं। आप उत्साही एवं मिलनसार युवक हैं।

झालरापाटनमें आपका परिवार प्रतिष्ठित समझा जाता है। यहांपर आपकी बहुतसी जमीन वगैरह भी है।

श्री लक्ष्मीपतिजी नाहटा, मुलतान (पंजाब)

इस परिवारका मूल निवास मारवाड़ है। मगर लगभग ७ पीढ़ियोंसे यह परिवार मुलतानमें निवास कर रहा है। मुलतानमें इस परिवारके मेम्बर बड़ी समृद्धि पूर्ण अवस्थामें रहे हैं। इनमें प्रधान पुरुष श्री हीरालालजी थे। आप बड़े दयालु और नामी व्यक्ति थे। आपके यहां जनरल मर्चेन्ट तथा कपडेका व्यापार होता था। आपके पुत्र खंडानन्दजी हुए। आपको वैद्यक का बडा शौक था। प्राचीन ग्रन्थोंके संग्रह करनेकी दिलचस्पी आपमें अच्छी थी। आपके दौलतरामजी, ठाकुरदासजी, माणिकचन्दजी एवं झंडूरामजी नामक ४ पुत्र हुए। लाला ठाकुरदासजी अपने चाचा लाला उत्तमचन्दजीके नामपर दत्तक गये। आप पंजाब प्रान्तके श्वे० जैन कार्योंमें अच्छा भाग लिया करते थे। आपके पुत्र श्री रोशनलालजी व श्री लक्ष्मीपति जी हैं। रोशनलालजी अपने मनिहारी कारवारको सम्हालते हैं।

नाहटा लक्ष्मीपतिजी B A मुल्तानके प्रथम ग्रेजुएट हैं। B A. पास करने बाद १॥ साल तक आपने गवर्नमेण्ट सर्विस की। इसके बाद आप कई कार्य करते रहे। आप बड़े स्पष्टवादी व सच्चरित्र व्यक्ति हैं तथा इस समय इण्डो यूरोपियन मशीनरी कम्पनी २२ एल्फीस्टन सरकस बम्बईके प्रतिनिधि हैं।

सेठ लालजीमलजी नाहटा का खानदान, सिकंदराबाद (यू० पी०)

इस खानदानवाले रूपसियां (जैसलमेर) निवासी नाहटा गौत्र के श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानके पूर्वपुरुष सेठ गुमानचन्दजीके पुत्र लालजीमलजी करीब एक सौ वर्ष पूर्व देशसे अनवरपुर (मेरठ जिला) आये तथा यहांपर लेनदेनका व्यापार करने लगे। आप जाति सेवा प्रेमी तथा मिलनसार सज्जन थे। आपके ईश्वरदासजी, अचलदासजी, पोहकरण-दासजी, भगवानदासजी तथा भवानीरामजी नामक पांच पुत्र हुए।

सेठ ईश्वरदासजीका खानदान—आप अनवरपुरमें ही अपनी जमींदारीको सम्भालते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९३२ में हुआ। आपके नाम पर सेठ अचलदासजीके पुत्र रतनलालजी गोद आये। सेठ रतनलालजी अनवरपुरसे सिकन्दराबाद चले आये और यहांपर जमींदारी व बैंकिंगका कार्य्य किया। आपका जन्म सं० १९२६ तथा स्वगवास सं० १९७९ में हुआ। आपके नामपर सेठ अचलदासजीके प्रपौत्र पीतमचन्दजी गोद आये। पीतमचंदका जन्म सं० १९६९ में हुआ। आप उत्साही तथा मिनलसार युवक हैं तथा बैंकिंग व जमीदारीका कार्य्य करते हैं। आप देशप्रेमी हैं। असहयोग आन्दोलनमें भाग लेनेके कारण आप दो बार जेलयात्रा भी कर आये हैं। आपके ताराचन्द नामक एक पुत्र हैं।

सेठ अचलदासजीका खानदान—आप बड़े योग्य कार्यकुशल तथा अनुभवी व्यक्ति हो गये हैं। आप पहले अनवरपुरसे समाना (मेरठ जिला) तथा वहांसे ६० वर्ष पूर्व सिकंदरा-बाद चले आये। वर्त्तमानमे भी आपके वंशज यहींपर निवास कर रहे हैं। आप बड़े धार्मिक, प्रतिष्ठित अथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। आपने यहांपर एक धर्मशाला बनवाई तथा दुष्कालके समयमें करीव ५००००) पचास हजार रुपया गरीबोंको सहायताके रूपमें दिया। आप यहांके म्युनिसिपल कमिश्नर भी रह चुके हैं। सरकारने भी आपको आनरेरी मजिस्ट्रेटके पदपर नियुक्तकर सम्मानित किया था। आपने घी दूध खाना व सवारीपर बैठना छोड़ दिया था। आप दानप्रिय व्यक्ति थे। आपको गवर्मेंटसे "सेठ"का खिताब प्राप्त था। आपका स० १९७० में स्वर्गवास हुआ। आपके दीपचन्दजी, रतनलालजी एवं खेमचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ दीपचन्दजीके दुर्गाप्रसादजी नामक एक पुत्र हैं। आप आपनी जमींदारीका काम देखते हैं। आपका जन्म स० १९४१ में हुआ। आपके काशीप्रसादजी, बनारसीदासजी, प्रीतमचन्दजी, ज्ञानचन्दजी एवं रणजीतसिंहजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें प्रीतमचन्दजी रतनलालजीके नामपर गोद चले गये है। शेष सब व्यापारमे भाग लेते हैं। आप लोग मिलनसार युवक हैं।

इस खानदानवाले यहाँके पञ्चायती मन्दिर की सारी व्यवस्था करते हैं। मन्दिरकी जमीन आप लोगों हीने दी थी।

सेठ भगवान दासजीका खानदान—सेठ भगवानदासजीके पूर्वज सेठ गुमानचन्दजी एवं लालजीमलजीके विषय मे हम लोग प्रथम ही कह चुके हैं। आप लोग जाति सेवा प्रेमी तथा नवयुवकोको आश्रय देनेवाले व उन्हें योग्य धन्धेसे लगा देनेवाले महानुभाव थे। सेठ

भगवानदासजीका स्वर्गवास छोटी ऊमरमें ही हो गया था। आपके नामपर आपके बड़े भाई पोहकरदासजीके छोटे पुत्र जवाहरलालजी गोद आये।

श्रीजवाहरलालजी—आपका जन्म सं० १९४१ के आषाढ़में हुआ। आप उत्साही, सार्वजनिक कार्य्यकर्त्ता तथा योग्य व्यक्ति हैं। आपको पठन पाठनका बहुत शौक हैं। आप व्यवस्था कुशल तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। आपने कई लायब्रेरियां, सभाएं, आदि संस्थाएं प्रयत्न करके स्थापित करवाईं जो आज भी सुचारु रूपसे चल रही हैं। कई स्थानोंपर आप व्यवस्थापक तथा प्रमुख कार्य्यकर्त्ता चुने गये। आपने प्रयत्न करके सं० १९६७ में आत्मानन्द पुस्तक प्रचार मंडलकी स्थापना की। इस संस्थासे कई महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुईं। जैनाचार्य्य विजयानन्द सूरिजी महाराज (आत्मानन्दजी) के समाधि प्रतिष्ठाके समय आप सेक्रेटरी पञ्जाब प्रान्तके चुने गये थे। आप जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंसकी स्टैंडिंग कमेटीके मेम्बर, ओसवाल सुधारक सञ्चालक बोर्डके मेम्बर, ओसवाल कान्फ्रेंसके स्वागताध्यक्ष, शिव बोर्डिङ्गहाऊस उदयपुरके सुपरिन्टेण्डेण्ट आदि रह चुके हैं। आप उत्साही, सुधरे हुए खयालोंके व्यक्ति हैं। आपने बहुतसे स्थानोंपर कुरीतियोंका निवारण किया। आठवीं जैन श्वे० कान्फ्रेंस मुल्तानके आप प्रधान कार्य्यकर्त्ता थे। आपने हिन्दू युनिवर्सिटी आदि संस्थाओंमें भी चन्दे वगैरह इकट्ठे करवाये थे।

आप सन् १९१४ में म्यु० कमिश्नर भी नियुक्त हुए थे। आपने एक समय पेशा तिज़ारत टैक्सके खिलाफ जनताकी एक पब्लिक एसोसियेशन बनाई थी तथा तीन साल तक बराबर लडते रहे और अन्तमें विजयी हुए। इसी प्रकारके आपने कई स्थानोंपर सुधारवादी भाषण दिये, कई संस्थाओंको प्रयत्न करके स्थापित करवाया तथा हजारों रुपये एकत्रित कर कई धार्मिक कार्य्यों में खर्च किया। आपका सारा जीवन सार्वजनिक है। आपने पालीवाल जातिमें काफी जागृति फैलाई है।

गोठी

गोठी खानदान, भरतपुर

इस खानदानवाले देवीकोट (जैसलमेर) निवासी गोठी गौत्र के श्री जैन श्वे० मंदिर मार्गीय हैं। इन परिवारमें सेठ रतनचन्दजी हुए। आपके मानसिंहजी तथा जगरामदासजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ मानसिंहजीका खानदान—आप देवीकोटमे ही निवास करते रहे। आपके नामपर सेठ काशीरामजी गोद आये। आप ही सबसे पहले करीब ६० वर्ष पूर्व देवीकोटसे भरत-

श्री सेठ हजारीमलजी गोठी, भरतपुर
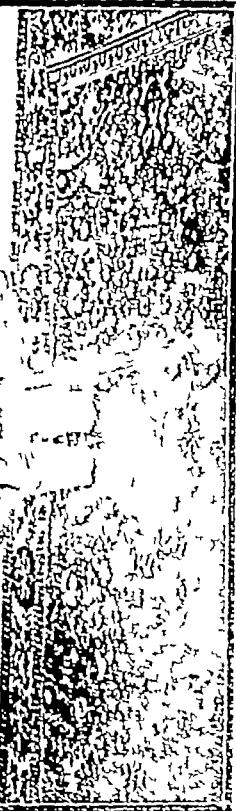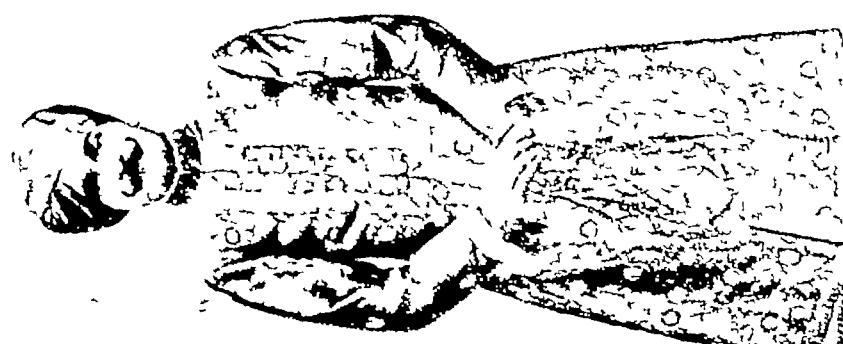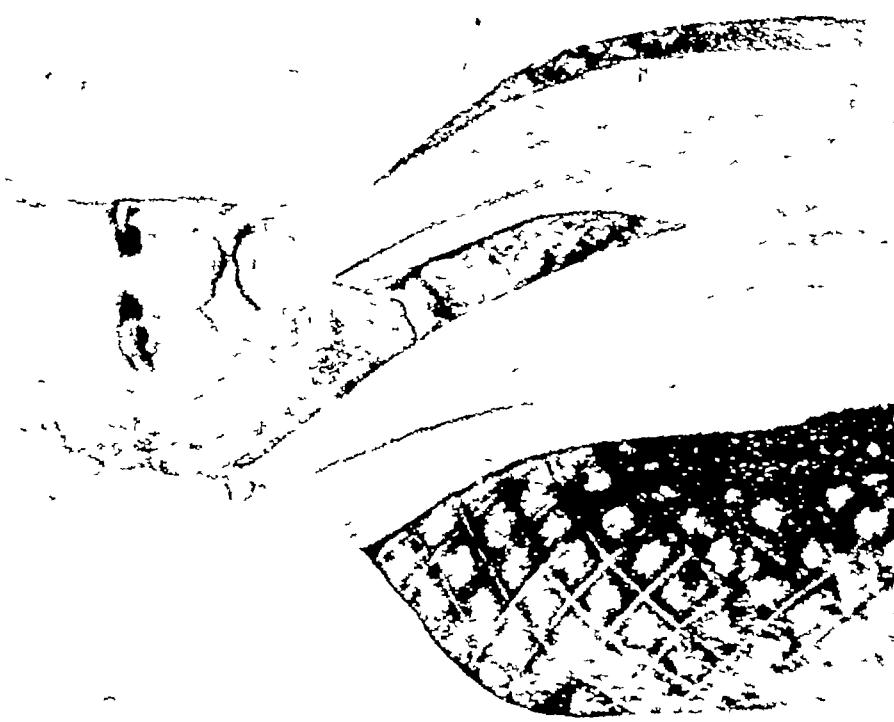
सेठ कन्हैयालालजी गोठी, भरतपुर

पुर आये और वहाँ आकर भरतपुरके तत्कालीन महाराजा श्री बलवंतसिंहजीके हुक्मसे फौज-में लेन देनका व्यापार किया। करीब ६० वर्ष प्रथम आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके जवाहरमलजी, हजारीमलजी, तथा प्यारेलालजी नामक तोन पुत्र हुए। इनमें प्यारेलालजीका छोटी उम्रमें ही स्वर्गवास हो गया था।

सेठ जवाहरमलजीका जन्म सं० १९१९ मे हुआ। आपने सं० १९५० के करीब लेन-देनका व्यापार बन्दकर अपनी फर्म पर बैंकिंग तथा गिरवीका व्यापार शुरू किया। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १९६३ में हुआ। आपके जसराजमलजी नामक एक पुत्र हैं। सेठ जसराजमलजीका जन्म सं० १९५० के चैत्रमें हुआ। आप मिलनसार तथा सरल स्वभाववाले व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप ही अपने फर्मके सारे कामको सफ-लतापूर्वक चला रहे हैं। आपके चम्पालालजी एवं पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू चम्पा लालजी मिलनसार तथा उत्साही युवक हैं। वर्तमानमें आप व्यापारमे योग देते हैं।

सेठ हजारीमलजीका जन्म सम्वत १९३२ में हुआ। आप सं० १९६३ तक अपने ज्येष्ठ भ्राताके साथ प्रेम पूर्वक व्यापारमें भाग लेते रहे। ज्येष्ठ भ्राताकी मृत्युके पश्चात् आपनेबड़ी योग्यता पूर्वक अपना काम संभाला तथा अपनी स्थायी सम्पत्तिको बढ़ाया। आप भरतपुरमें माननीय तथा योग्य पुरुष हो गये हैं। आपको स्टेटने ११ सालोंतक म्युनिसिपल कमिश्नरके पदपर नियुक्त कर सम्मानित किया था। आपने इस पदपर रहकर योग्यता पूर्वक कार्य किया। आप करीब १४ वर्षोंतक यहांकी कोर्टके असेसर रहे। स्टेटने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेटके पदपर भी नियुक्त किया था। मगर आपने इसके लिये साफ इंनकार कर दिया। आपयहाँपर लोकप्रिय तथा मिलनसार पुरुष हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सं० १९८५ की श्रावण बदी १२ को हो गया। आपकी मृत्युके पश्चात आप दोनों बन्धुओंके कुटुम्बी अलग अलग होकर अपना व्यापार करने लगे। स्थायी सम्पत्ति आप लोगोंके साझेमे है। सेठ हजारीमलजीके कन्हैयालालजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ कन्हैयालालजीका जन्म सं० १९६० की आसोज बदीका है। आपने मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है। उर्दू आप अच्छा जानते हैं। आप मिलनसार तथा कार्य्य कुशल व्यक्ति हैं। आपने अलग होनेके पश्चात अपनी फर्मपर कपड़ेका व्यापार प्रारम्भ किया जो सफलतापूर्वक चल रहा है। आपने अलग होनेके पश्चात अपनी बहुत सी स्थायी सम्पत्ति बढ़ाई तथा सं० १९८८ से मोटर सर्विस चालू की। आप कोई ९ वर्षों तक यहांके कोर्टके असेसर रहे। आप मिलनसार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपका प्रायः सभी बड़े अफसरोंसे प्रेम भाव है। वर्तमानमें आप ही अपने व्यापारको संचालित कर रहे हैं।

सेठ जगरामदासजी का खानदान—देशसे चलकर सेठ जगरामदासजी भरतपुर आये तथा यहांपर व्यापार शुरू किया। आपके खुशालीरामजी, खुशालीरामजीके दीपचन्दजी व मिट्ठनलालजी हुए। सेठ दीपचन्दजी के नामपर सेठ चुन्नीलालजी गोद आये। आप सब लोग

फौजमें लेन देनका व्यापार करते रहे। सेठ चुन्नीलालजी का छोटी ऊमरमें ही स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर डावरा से सेठ रिखबदासजी गोद आये।

सेठ रिखवदासजीका जन्म सं० १६५८ में हुआ। आपने फौजके साथ व्यापार करना वन्द करके अपने यहाँपर गिरवी व वैंकिंग का व्यापार शुरू किया। खेद है कि आपका भी छोटी ऊमरमें ही सं० १६८५ में स्वर्गवास हो गया। आपके भगवानदासजी नामक एक पुत्र हैं जो अभी वालक है।

यह खानदान भरतपुरकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

वेद मेहता

वेद मेहता परिवार, रतलाम

इस प्रतिष्ठित परिवारके मालिकों का मूल निवासस्थान मारवाड़ राज्यके जालौर नामक स्थानमें है। सत्रहवीं शताब्दीमें इस परिवारके पुरुष मारवाड़ राज्यमें ऊँचे ओहदोंपर राज्यकी सेवा करते थे। जव सं० १७११ में जोधपुरके राजकुमार रतनसिंहजीको मुगल सम्राटने उनके वहादुरी पूर्ण कार्योंसे प्रसन्न होकर मालवा प्रान्तका एक परगना इनायत किया, उस समय महाराजा रतनसिंहजीके साथ इस परिवारके पूर्वज मेहता किशनदासजीके पांचों पुत्र मेहता आसकरणजी, रूपसिंहजी, देवीदासजी, राजसिंहजी तथा पञ्चाननजी भी आये थे। महाराजाने इस प्रान्तपर आधिपत्य जमाकर रतलामको अपनी राजधानी वनाया एवं इस परिवारके पुरुषको दीवान पद इनायत किया तथा वंश परम्पराके लिये विवड़ोद गाँव जागीर-में दिया। मेहता आसकरणजीके पुत्र ठाकरसीजी और मेहता रूपसिंहजीके सुन्दरजी और सांवरजी नामक पुत्र हुए। इन वन्धुओंमें मेहता सांवरजी उज्जैनसे ७ कोस धर्मपुरा नामक गांव में उनाहावादकी लड़ाईमें महाराजा श्री रतनसिंहजीके साथ काम आये।

मेहता ठाकरसीजीके पश्चात क्रमश. तोगाजी, केसाजी रायमलजी, मियांचन्दजी एवं वखतसिंहजी हुए। आपको जोधपुर दरवार महाराजा माधवसिंहजीने संवत् १८०६ में छोडा और हाथी सिरोयान वख्शा तथा प्रतिष्ठाके साथ अपनी हवेली पर भेजा। आप मेवाड़के किसी युद्धमें मारे गये। ऐसी किम्वदन्ति है कि आपका घोड़ा आपके काम आ जानेपर पगड़ी लेकर विवड़ोद आया। वहाँ आपकी धर्मपत्नी सती हुईं जिनका विशाल चवूतरा विवडोदमें वना हुआ है। आपके सूरतसिंहजी, सरदारसिंहजी तथा उम्मेदसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

मेहता सूरतसिंहजी—आप इस परिवारमें वड़े वहादुर व प्रतापी पुरुष हुए। आपने वीरतापूर्ण युद्ध किया। स० १८२५ में आपने महाराजा अरिसिंहजीसे युद्ध किया। उसमें

आपकी विजय हुई तथा तीन सालों तक चित्तौड़ पर आधिपत्य रहा। वहाँ आपने एक लक्ष रुपये लगाकर तामीरका काम कराया व एक जैन मन्दिर और बावड़ी बनवाई। आपने सिन्धिया तथा होल्करके फौजोंकी सहायतासे आस पासके रजवाड़ों पर हमला कर कर वसूल करना शुरू किया। सम्वत १८३० की श्रावण सुदी ७ को महाराजा अरिसिंहजीने प्रसन्न होकर आपको पट्टा, पालखी, अमरकी माला, मोटी हवेली, कड़ा, मोती, हाथीका हौदा व घोड़ा साथ देकर विदा किया। सं० १८३४ की आसोज वदी १४ को जोधपुर दरबार महाराजा विजयसिंहजीने प्रसन्न होकर परगणे मेड़ता का सारसंड़ा गाँव ३०००) की रेखका इनायत किया। होल्कर दरबारसे भी आपको बहुत सी लाग व पट्टा प्राप्त हुआ था। कहनेका तात्पर्य यही है कि आपका उस समय होल्कर, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर व रतलामके दरबारोंमें बड़ा सम्मान व प्रभाव था। आपके छोटे बन्धु मेहता सरदारसिंहजी और मेहता उम्मेदसिंहजी आपकी एकत्रित की हुई सम्पत्तिकी रक्षा विबड़ोदमें रह कर करते थे।

मेहता सरदारसिंहजीका भी होल्कर दरबारमें अच्छा प्रभाव था। मेहता उम्मेदसिंहजी भी बहादुर तबियतके पुरुष थे। मेहता सरदारसिंहजीके पुत्र देवीसिंहजी तथा जोरावरसिंहजी एवं मेहता उम्मेदसिंहजीके पुत्र गुमानसिंहजी हुए। मेहता जोरावरसिंहजी तक बिबड़ोद गाँव इस परिवारके ताबेमें रहा, पीछे कुछ समय बाहर चले जानेसे रतलाम स्टेटने वह गाँव जप्त कर लिया। ऐसी स्थितिमें मेहता जोरावरसिंहजी ने जोधपुर दरबारसे अपने पुराने खैरख्वाह होने का प्रमाण पेश कर सिफारिशी पत्र रतलाम दरबारके नाम प्राप्त किया और इस प्रकार सम्वत् १८८०-८१ में इन्हें बीबड़ोदके बदलेमें पलसोड़ी गाँव जागीरमें मिला जो इस समयतक इस परिवार के ताबेमें है। मेहता जोरावरसिंहजी की मौजूदगीमें ही उनके पुत्र पूनमचन्दजी स्वर्गवासी हो गये थे।

मेहता गुमानसिंहजीके पुत्र भेरूसिंहजी और भेरूसिंहजीके दौलतसिंहजी, तखतसिंहजी, उदयसिंहजी तथा डूंगरसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें मेहता उदयसिंहजी अपने काका मेहता पूनमचन्दजीके नामपर दत्तक गये। मेहता दौलतसिंहजीके पुत्र हमीरसिंहजी, कुशलसिंहजी व चम्पालालजी हुए। इनमें दो बडे भ्राता तहसीलमे कार्य्य करते रहे। इस समय मेहता हमीरसिंहजीके पुत्र मेहता जसवंतसिंहजी रेवेन्यू विभागमे स्पेशल आफीसर हैं। मेहता कुशलसिंहजीके पुत्र रतनसिंहजी व शार्दूलसिंहजी व्यापार करते हैं।

मेहता तखतसिंहजी—आपने लगभग ३० सालोंतक रतलाम स्टेटमें इन्स्पेक्टर जनरल पुलिसके पदपर बड़े रुवाबके साथ कार्य किया। महाराजा रणजीतसिंहजीके साथ आप डेली कॉलेजमें पढ़े थे। महाराजा रणजीतसिंह एवं महाराजा सज्जनसिंहजीने आपको कई प्रशंसा पत्र दिये थे। इसके अलावा कई अंग्रेज आफिसर्स, ए० जी० जी०, पोलिटिकल, एजेन्ट आदि महानुभावोंने आपके इन्तजामकी बहुत प्रशंसा की थी। सन् १९०८ में अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेंसके रतलाम अधिवेशनके स्वयंसेवक दलके आप प्रधान थे। आपने रतलाम स्टेट व

वाजनामें भैंसे व पाड़ेकी वलि प्रथा वन्द करवाई। इसके लिये जैन संघ तथा संस्थाओंने आपको कई धन्यवाद पत्र दिये। इस प्रकार ५४ सालोंतक रतलाम राज्यमें सर्विस कर ८५ सालकी आयुमें सम्वत १९८९ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मेहता वहादुरसिंहजी, निर्भयसिंहजी तथा करणसिंहजी इस समय विद्यमान हैं। मेहता वहादुरसिंहजी गवर्नमेण्ट सर्विसमें हैं तथा निर्भयसिंहजी चीफ जज आफिस रतलाममें सिरस्तेदार हैं और इनसे छोटे मेहता करणसिंहजी पढ़ते हैं।

मेहता उदयसिंहजी रतलाम तहसील तथा कस्टम विभागमें सर्विस करते रहे। आपके पुत्र मेहता रतनसिंहजीका जन्म सम्वत् १९६३ में हुआ। रतलाममें मैट्रिक तक अध्ययन कर आप वम्वई आये तथा सन् १९१८ में यहाँ चारटेड अकाउण्टेंसी का इम्तहान पास किया। सन् १९२० में आप वम्वईके प्रसिद्ध व्यापारी सेठ रामनारायणजी रुइयाके प्राइवेट सेक्रेटरी नियुक्त हुए एवं अपनी कार्य कुशलतासे आपने दिन २ इस परिवारमें प्रतिष्ठा पाई। इस समय आप रामनारायण संस लिमिटेडके बोर्ड आफ डायरेक्टर्सके सेक्रेटरी एव इस फर्मकी दो मिलोंके स्टोर्स डिपार्टमेंटके हेड है।

मेहता डूंगरसिंहजी इस समय विद्यमान हैं। आपके जसवंतसिंहजी, विशनसिंहजी, मोहव्वतसिंहजी तथा भारतसिंहजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें मेहता जसवन्तसिंहजी ४६ सालकी आयुमें सम्वत १९९१ में स्वर्गवासी हो गये हैं। शेप तीन वन्धु विद्यमान हैं। मेहता जसवन्तसिंहजी सीतामऊ स्टेटमें वकालत करते रहे तथा वहां वहुत लोकप्रिय रहे। रतलाम व सीतामऊके नामी वकीलोंमें आपकी गणना थी। आपने अपने पुत्रोंको शिक्षित करनेकी ओर अच्छा लक्ष दिया है। आपके पुत्र मेहता कोमलसिंहजी वी० ए० ऑनर्स हैं। आप इस समय दरवार हाईस्कूलमें अध्यापक हैं तथा श्रीमहाराज कुमार रतलामके ट्यूटर हैं। आपके विचार वड़े उन्नत हैं। आपसे छोटे महतावजी पढ़ते हैं। मेहता कोमल सिंहजीके पुत्र निर्मल कुमार सिंहजी हैं।

मेहता विशनसिंहजी स्टेट कौन्सिलमें सिरस्तेदार हैं। धार्मिक कामोंमें आपको ज्यादा अनुराग है। मेहता मोहव्वतसिंहजी होलकर स्टेटमें हेल्थ आफिसर हैं एवं भारत सिंहजी, झावुआ स्टेटमें सर्विस करते हैं।

रतलाम स्टेटमें इस परिवारको जागीरी व दरवारमें सम्मान पूर्वक वैठक प्राप्त है।

सेठ सुखलालजी शिवलालजी वेदका परिवार, राहतगढ़ (सागर)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान आऊ (जोधपुर-स्टेट) में है। आप श्री श्वे० जैन मन्दिर मार्गीय आम्नायके माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवारके पूर्वज सेठ भूरचन्द जी वेद, आऊमें निवास करते थे। आपके हजारीमलजी, सुखलालजी तथा शिवलालजी नामक

सेठ गोकुलचन्दजी पुंगलिया जयपुर

मेहता रतनसिंहजी रतलाम

तीन पुत्र हुए। ये तीनो बन्धु अपने मामा सेठ सूरजमलजी रूणवालके साथ लगभग ५० साल पूर्व व्यवसायके निमित्त राहतगढ़ आये और यहाँ आकर आप लोगोंने दुकानदारीका कारबार शुरू किया। सेठ हजारीमलजी लगभग १६६७ में, सुखलालजी १६७० में तथा शिवलालजी सम्वत १६८३ की पौष वदी १० को स्वर्गवासी हुए। सेठ सुखलालजी तथा शिवलालजी बड़े व्यापार चतुर तथा बुद्धिमान पुरुष थे। आप भाइयोंने अपने परिवारके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। साथ ही अपने परिवारमें जमींदारी भी खरीद की। सी० पी० तथा रोहतासगढ़के ओसवाल समाजमे आप लोग प्रतिष्ठित व वजनदार सज्जन माने जाते थे। सम्बत् १६७६ में इन बन्धुओंका कारवार अलग २ हो गया। सेठ हजारीमलजीके पुत्र सुगनचन्दजी लश्करमे कनकमलजी मुन्नीलालजी वेदके यहाँ दत्तक गये।

सेठ सुखलालजीके पुत्र सेठ मानमलजीका जन्म सम्वत् १६६४ की फागुन सुदी १५ को हुआ। आपके यहाँ इस समय कपड़े तथा मालगुजारीका काम होता है। आप भी प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके पुत्र धनरूपमलजी हैं।

सेठ शिवलालजीके इन्द्रचन्दजी, गुलाबचन्दजी तथा चाँदमलजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। आप तीनों भाई भी अपना अलग २ व्यापार करते हैं। सेठ इन्द्रचन्दजी वेद बड़े प्रतिष्ठित व समझदार सज्जन हैं। आपका जन्म सम्वत् १६५६ की कातिक बदी १४ को हुआ। आप स्थानीय जैन मित्र मण्डल तथा पब्लिक सेनीटेशन कमेटीके प्रेसिडेण्ट रहे। आपके धनराजजी, शिखरचन्दजी तथा माणिकचन्दजी नामक ३ पुत्र हैं। श्री गुलाबचन्दजीका जन्म सम्बत १६६४ में हुआ। आपके यहाँ मालगुजारीका काम होता है। आपके पुत्र आसकरणजी हैं। श्री चांदमलजीका जन्म सम्वत् १६७० में हुआ। आपके यहाँ भी मालगुजारीका व्यापार होता है। आपके चैनकरणजी नामक एक पुत्र हैं।

पुंगलिया

श्रीयुत अमरचन्दजी पुंगलिया, बुरहानपुर (सी० पी०)

श्री अमरचन्दजी पुंगलिया उन चरित्रवान एवं कार्य्यदक्ष महानुभावोंमेसे एक हैं जो अपनी योग्यताके बलपर मारवाड़ी समाजके नररत्नोंके दिलोंमे अपने प्रति ऊँचे-ऊँचे विचारोंकी नीव दृढ़ जमा लेते हैं एवं अपने उत्साहभरे जिम्मेदारीके कार्य्योंसे आप अपनी प्रतिष्ठाकी उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहते हैं। आपके पितामह सेठ श्री दौलतरामजी पुंगलिया बीकानेरमे निवास करते थे। सेठ दौलतरामजीके कनोरामजी, भेरोंदानजी, सुगनचंदजी तथा जवाहरमलजी नामक चार पुत्र हुए थे।

उक्त चारों बंधुओंमेंसे सेठ भेंरोंदानजी नागपुरमे आकर व्यवसाय करने लगे। आपके

छोटे भ्राता सुगनचंदजी देशसे अमरावती आये और यहांकी मशहूर फर्म मेसर्स 'मौजीराम बलदेवदास' पर प्रधान मुनीम रहे। आपकी इस फर्मपर इतनी प्रतिष्ठा थी कि आप अमरावती और उसके आस पासके गाँवोंमें बड़े होशियार, समझदार तथा योग्य पुरुष समझे जाते थे। आप पर फर्मके मालिकोंका भी पूरा पूरा विश्वास था और अमरावतीकी जनता भी आपको वजनदार व्यक्ति समझती थी। लगातार २६ वर्षों तक आप इस फर्मकी मुनीमातका काम इमानदारी एवं दक्षताके साथ करते हुए संवत् १९५४ में ४४ वर्षकी आयुमें स्वर्गवासी हुए। उस समय आपके पुत्र अमरचंदजीकी वय केवल ७ वर्षकी थी।

श्री अमरचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९८६ के पौष मासमें हुआ। बाल्यावस्थामें ही आपके पिताजीके स्वर्गवासी हो जानेके कारण आपकी प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षाकी सारी व्यवस्था आपके मामा श्री सेठ छोटमलजी बांठियाने की और पितृवत् आपका लालन-पालन किया। आपकी बाल्यावस्थामें आपकी माताजीकी सात्विकता और स्वाभिमान पूर्ण जीवनका भी आप पर काफी प्रभाव पड़ा। अमरावतीमें आपने मैट्रिकतक अध्ययन किया। आपने सन् १९१२ में बी० ए० और इसके पश्चात् एल० एल० बी० तक अध्ययन किया। उस समय नागपुर कालेजमें आप ही एक अकेले मारवाड़ी युवक थे। आरम्भसे ही आप बड़े मिलनसार, उत्साही एवं सार्वजनिक स्पिरीटवाले सज्जन थे। सन् १९०७ से ही आपका मारवाडी समाजके श्रद्धेय नेता त्यागमूर्ति सेठ जमनालालजी बजाजसे सम्बन्ध हो गया था। उस समय आप मारवाड़ी शिक्षा मण्डल वर्धा व मारवाड़ी छात्रालय नागपुरके सुपरविजन आदि कार्य्योंमें सहायता लेते रहते थे। वर्धाके मारवाड़ी विद्यालयमें आपने कुछ समयतक अध्यापन का भी काम किया। इसके पश्चात् सन् १९१६ से २१ तक आप राजा गोविन्दलालजी पित्तीके परसनल सेक्रेटरीके पदपर बम्बई में काम करते रहे। उस समय कई करोड़ रुपयोंके एक केसमें आपने उनको प्रशंसनीय सहायता दी थी। इसी बीच एक सालतक आप शेअर मार्केट बम्बईमें भी व्यापार करते रहे। उस समय आप मारवाड़ी विद्यालय बम्बईकी एजूकेशन कमीटीके मेम्बर एवं मारवाड़ी सम्मेलनके भी मेम्बर थे।

सन् १९२१ से आप सुप्रसिद्ध टाटा सन्सके एजेण्ट मेसर्स चेनीराम जेसराज नामक फर्मकी सर्विसमें नागपुर आये तथा यहां उनके मेगेनीज का कार्य्य देखते रहे। सन् १९२८ तक आप उनके खदान विभागके प्रधान एजेण्टके तौरपर रहे। इसी बीच फर्मकी कई मार्केदार उलझनोंको सुलझानेके लिये आपने बम्बई, कलकत्ता, रंगून आदिकी यात्राएं कर उनमें सफलता प्राप्त की। आप पर मालिकों का पूरा विश्वास और अटूट प्रेम था। कई बार बड़ी बड़ी रकमें इनाम स्वरूप देकर फर्मने आपके कार्यों का उचित सम्मान किया। सन् १९२१—२८ के मध्यमें आप नागपुर प्राविन्शियल कांग्रेस कमेटीके मेम्बर एवं मारवाड़ी सेवा समाजके प्रधान रहे। नागपुरमें आपने महावीर भवन नामक संस्था कायम की एव आप उसके समाज सेक्रेटरीके पदपर रहकर उसके कार्य्यको जोरोंसे संचालित करते रहे। इसी प्रकार

आप मध्यप्रान्त एवं बरारकी ओसवाल महासभाके प्रारम्भिक तीन सालोंतक जनरल सेक्रेटरी रहे। सन् १९२८ से ३० तक बिड़ला ब्रदर्स कलकत्ताके जूट एक्सपोर्ट डि० में जिम्मेदारीके पदपर आपने कार्य्य किया। उसी समय आपने स्थानकवासी संघ नामक संस्था कायम की तथा उसके आप उप सभापति भी रहे। सन् १९३१ से ३३ तक आप बिड़ला मिल देहलीके ज्वाइंट सेक्रेटरी रहे। अजमेरके साधु सम्मेलन की सारे भारतवर्षके चुने हुए लोगों-की समितिके आप भी एक सदस्य थे। आप शुद्ध खद्दरधारी, राष्ट्रीय विचारवाले एवं सुधरे हुए खयालोंके सज्जन हैं। आपने अपनी प्रथम धर्मपत्नीके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् एक पोरवाल गुजराती विधवासे विवाह किया है जिसमें कई बड़े बड़े नेता एवं प्रतिष्ठित लोग आये थे।

सन् १९३२ के जूनसे आप राजा नारायणलालजी पित्तीके बुरहानपुर इलेक्ट्रिक पावर हाउस के प्रधान मैनेजरके रूपमे नियुक्त हुए तथा आज भी उसी पदपर सफलता पूर्वक कार्य्य कर रहे हैं। आपने बिजली द्वारा लूम इण्डस्ट्रीको बहुत प्रोत्साहन दिया। आप जिस समय बुरहानपुरमें आये थे उस समय ३ लूम्स बिजलीसे चलते थे। मगर आपके प्रयत्नोंसे आज १५१ लूम्स बिजलीसे चल रहे हैं। आपके इन कार्य्योंकी अनेक अंग्रेज तथा भारतीयोंने प्रशंसा की है। आपकी प्रथम धर्मपत्नी श्रीमती जवाहरबाई शिक्षित, पतिव्रता एवं राष्ट्रीय कार्य्य-कर्त्री थीं। आपको अछूतोद्धारसे प्रेम था। आपका स्वर्गवास संवत् १९९१ में हुआ। श्रीपुंग-लियाजी ने अपनी स्वर्गीया पत्नीके स्मारकमें पावर हाउसमे एक सर्व साधारणके उपयोगके लिये सुन्दर फव्वारा बनवाया है। पुंगलियाजीके इन्द्रचन्द्रजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ सोभागमलजी गोकुलचन्द्रजी पुङ्गलियाका खानदान, जयपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान पुंगलका था। वहांसे इस परिवारके पूर्व पुरुष बीकानेर आकर बस गये। आपलोग पुङ्गलिया गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ रावतमलजी हुए। आप ही सबसे पहले बीकानेरसे जयपुर आये और यहांपर आकर जवाहरातका व्यापार आरम्भ किया। आपको अपनी व्यापार चातुरीसे इस व्यवसायमें बहुत सफलता प्राप्त हुई। आपने अपना स्थाई निवास स्थान भी जयपुर बना लिया। तभीसे आजतक आपके वंशज यहीं पर निवास कर रहे हैं। आपके सौभागमलजी, किशनचन्दजी, हुकुमचन्दजी एवं भैरोंलालजी नामक पांच पुत्र हुए। इन पांचो बन्धुओंको सेठ रावतमलजी अपने जीतेजी सारी सम्पत्ति बांट गये थे। तभीसे आपलोगोंके वंशज आजतक अपना अलग२ स्वतन्त्र रूपसे व्यापार कर रहे हैं।

सेठ सौभागमलजी का परिवार—सेठ सौभागमलजी जवाहरातके व्यापारमें कुशल एवं

अनुभवी व्यक्ति थे। आपके हाथोंसे अपने फर्मके व्यवसायमें बहुत तरक्की हुई। आपने अपने व्यवसायको विशेष रूपसे चमकानेके लिये अपने फर्मकी एक शाखा रंगून भी खोली जिस-पर प्रधान रूपसे हीरेका व्यापार होता था। जिस समय आपने रंगूनमें अपनी दूकान खोली थी उस समय वहांपर हीरेका व्यापार करनेवाली आप हीकी पहली दूकान थी। आपके गोकुलचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ गोकुलचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल, साहसी एवं योग्य सज्जन थे। आपने भी अपने जवाहरातके व्यापारको तरक्की पर पहुंचाया और बहुत सी सम्पत्ति उपार्जितकी। रंगूनकी फर्मके सारे काम काजको आपने बड़ी योग्यता-पूर्वक संचालित किया था। आपका व्यापारिक अनुभव बहुत ही बढ़ा चढ़ा था। आपकी फर्म "कसला बाबू" के नामसे आज भी मशहूर है। यह एक पुरानीसे पुरानी पैढ़ी गिनी जाती है और हीराका बड़े स्केलपर काम होता है।

व्यापारमें बहुतसी सम्पत्ति कमानेके साथ ही साथ आपने अपने सम्मानको भी बढ़ाया और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप बड़े धार्मिक विचारोंके भी सज्जन थे। सार्व-जनिक एवं परोपकारके कामोंमें आपको विशेष रुचि रहा करती थी। आपने और आपके काका भैरालालजीने मिलकर जयपुर स्टेशनरोडपर एक सुन्दर धर्मशाला एवं एक मन्दिर बनवाया है जो आज भी विद्यमान है। इस मन्दिरके अन्तर्गत आपने सर्व प्रथम उत्सव बड़े ठाट बाटसे करवाया जिसमें आपका करीब दस बारह हजार रुपया खर्च हुआ होगा। इसके अतिरिक्त आपने अपने खर्चसे इसी मन्दिर पर दो अठाई महोत्सव कराये जिसमें करीब दस२ हजार व्यय हुआ होगा। आपने पांच साध्वीजी महाराजकी दीक्षाका कार्य्य भी अपने ही खर्चसे करके अपनी धर्म श्रद्धाका परिचय दिया। इसी प्रकार आपने कई सार्वजनिक, धार्मिक एव परोपकारके कामोंमें दिलचस्पीसे भाग लिया था।

धार्मिक एवं सार्वजनिक कामोंके साथ ही साथ आपने सामाजिक कार्य्य भी किये हैं। आपने अपनी पुत्री सौ० उमरावबाईका विवाह बहुत ही ठाटबाट और उत्साहके साथ किया था जिसमे करीब एक लाख रुपया खर्च किया गया था।

आप जयपुरकी ओसवाल एवं श्रीमाल समाजमें बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे। आप संवत् १९८४मे स्वर्गवासी हुए। आपके धनराजजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

श्रीधनराजजीका जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आप बड़े सरल स्वभाव वाले, शिक्षित, योग्य एव मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आपही अपने सारे हीरेके इम्पोर्ट तथा एक्स-पोर्टके काम काजको योग्यतापूर्वक सञ्चालित कर रहे हैं। आप देशभक्त तथा खद्दरसे प्रेम रखनेवाले हैं। आप श्वेताम्बर मन्दिरके मुख्य ट्रस्टी भी हैं। आप लोगोंका खानदान जयपुरमें अच्छा प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपका जयपुरमें मे० सौभागमल गोकुलचन्दके नामसे जवाहरातका व्यापार होता है। इसी फर्मकी एक ब्रांच उक्त नामसे ही रंगूनमें अपना

सफलता पूर्वक बड़े हीरेका व्यवसाय कर रही है। रंगूनमे भी आपकी फर्म प्रतिष्ठित समझी जाती है।

सेठ हुकुमचन्दजीका परिवार—सेठ हुकुमचन्दजी जवाहरात तथा ब्याजका व्यापार करते रहे। आप अपने पुत्र रूपचन्दजीको बाल्यावस्था में ही छोड़कर स्वर्गवासी हो गये थे।

सेठ रूपचन्दजी व्यापार कुशल एवं साहसी व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ग्वालियरमें मोतीका व्यापार करते हैं। आपका ग्वालियरकी समाजमें अच्छा सम्मान है। आप यहांके प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं स्टेटके जौहरी भी हैं। वर्त्तमानमें आपका परिवार ग्वालियरमें ही निवास कर रहा है। आपके शेरसिंहजी, सोहनलालजी एवं मुन्नीलालजी नामक तीन पुत्र हैं। इन बन्धुओंमेसे शेरसिंहजी रंगून फर्मपर काम करते है। शेष सब बन्धु ग्वालियरकी फर्मपर काम काज करते हैं।

सेठ भेरोंलालजीका खानदान—सेठ भेरोंलालजी व्यापार कुशल, योग्य एवं साहसी व्यक्ति हो गये हैं। आप बड़े धार्मिक विचारवाले महानुभाव थे। आपके विषय में हम ऊपर लिख आये हैं कि आपने अपने भतीजे सेठ गोकुलचन्दजीके साथ साथ एक मन्दिर एव धर्मशालाके बनवाने में पूरा २ योग दिया था। इसी प्रकार आप भी प्रायः सभी सार्वजनिक एवं परोपकारके कामों में सहायता प्रदान किया करते थे। आपका यहांकी समाजमें बहुत सम्मान था। आप यहाँकी समाजमें वजनदार व्यक्ति समझे जाते थे। आपके कन्हैयालालजी, भीखराजजी एव जोरावरमलजी नामक तीन पुत्र हुए। आप सब बन्धु वर्त्तमानमें जवाहरातका व्यापार करते हैं। सेठ जोरावरमलजीके पूनमचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

लूणावत

सेठ कन्हैयालालजी लूणावतका खानदान, कस्तला (हापुड़)

इस परिवारवाले रूपसियाँ (जैसलमेर) निवासी लूणावत गौत्रके श्री जै० श्वे० मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। सबसे प्रथम इस खानदान के सेठ रामकिशनदासजी देशसे अनवरपुर करीब १५० वर्षों पूर्व आये तथा यहांपर आकर व्यापार प्रारंभ किया। आपका मारवाड़में गणेशदासजी नाम था। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर सेठ जीवनलालजी गोद आये।

सेठ जीवनलालजी—आप अनवरपुरसे कस्तला (मेरठ जिला) में चले आये तथा यहांपर किश्तोंका व्यापार किया व धीरे धीरे जमींदारी खरीद की। आपको इसमें बहुत सफलता मिली। आप प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९१० के करीब हुआ। आपके नामपर सेठ रिखबदासजी फलौदीसे गोद आये।

सेठ रिखबदासजी—आपका जन्म सम्वत् १९२० में हुआ। आप बड़े धार्मिक वृत्तिवाले
तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। कस्तला तथा आसपासके गांवोंमें आप लोकप्रिय सज्जन थे।
आपने शिक्षा प्रचारकी दृष्टिसे यहांपर एक स्कूल खोला जिसे जमीन देकर व मकान बनाकर
गवर्नमेण्टके अन्डरमें जानेतक सुचारु रूपसे संचालित किया। आपने करीब १५ वर्षों तक
देहलीमें भी अपनी कोठी रखी थी। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं०
१९७५ में हुआ। आपके कन्हैयालालजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ कन्हैयालालजी—आपका जन्म सम्वत् १९५७ की श्रावण सुदी ३ को हुआ। आप
योग्य, विद्वान तथा अच्छे कवि हैं। आरम्भसे ही आपको कविता बनानेका शौक हो गया
है। आप एक साहित्य सेवी तथा रसिक व्यक्ति हैं। आप मैट्रिक द्वितीय दर्जेसे पास हुए।
आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपके लेख समय समयपर हिन्दीके
प्रमुख मासिक, साप्ताहिक पत्रोंमें जैसे-चाँद, सरस्वती, हंस आदिमें निकला करते हैं। आपने
कई पद्य पुस्तकें भी लिखी हैं जैसे प्रेमोपहार, भारत जागृति, आदर्श जीवन आदि आदि। इसके
अतिरिक्त गद्यमें भी आपने माधुरी, श्रीपाल आदि पुस्तकें लिखी हैं। आपकी लिखित पुस्तक
श्रीपालकी भूमिका लाला कन्नूमलजी एम० ए० जज धौलपुरने लिखी है। बाबू कन्हैयालालजी-
की भाषा सरल तथा रोचक है।

वर्त्तमानमें आप ही अपनी जमींदारीके कार्य्योंको सफलता एवं योग्यता पूर्वक संचा-
लित कर रहे हैं। आप अम्बाला महावीर जयन्तीके एक सालतक चेयरमैन तथा हस्तिनापुर
तीर्थ कमेटीके कई वर्षों तक प्रेसिडेण्ट रह चुके हैं। आप जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्स बम्बईकी
यू० पी० स्टेण्डिग कमेटीके मेम्बर भी हैं। आपकी इन सेवाओंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंट ने
आपको करीब ३ सालोंसे हापुड़ बेंचके आनरेरी मजिस्ट्रेटके पदपर नियुक्त किया है। आपको
समस्या पूर्त्तिसे बड़ी दिलचस्पी है। बहुतसे अखबारोंमें आपकी समस्या पूर्त्ति छपा करती
है। आपका कस्तला तथा हापुडकी जनतामें काफी सम्मान है। आपके भैरोंलालजी तथा
धनपतलालजी नामक दो पुत्र हैं।

आप लोगोंका खानदान यहाँपर प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपकी कस्तलामें बहुत
बड़ी जमींदारी है।

सेठ मोतीलालजी नथमलजी लूणावतका खानदान, भरतपुर

इस परिवारवाले रूपसियां (जैसलमेर स्टेट) के निवासी लूणावत गौत्रके श्री जै० श्वे०
मन्दिर मार्गीय है। इस खानदानवाले करीब ६० वर्ष पूर्व देशसे भरतपुर आकर बस गये हैं।

इस खानदानके सेठ गंगारामजी भरतपुरमें लेनदेनका व्यापार करते थे। आपके नथ-
मलजी नामक पुत्रका जन्म सम्वत् १९१५ में हुआ। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९६४ में हुआ।
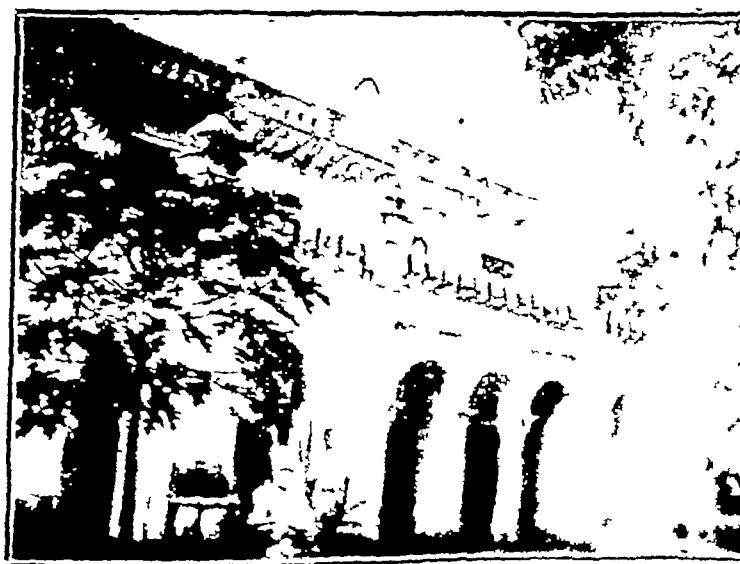
आप भी लेनदेनका व्यापार करते रहे। आपके मोतीलालजी नामके एक पुत्र हैं। आपका जन्म सम्बत् १९४१ में हुआ। आप सम्बत् १९७२ तक भरतपुरमें ही व्यापार करते रहे। तदनन्तर आप कलकत्ता चले गये। वर्त्तमानमें आप मे० अजीतमल माणकचन्दके फर्मपर सर्विस करते हैं। आप मिलनसार हैं। आपके दोनों पुत्र रिखबचन्दजी एवं नेमीचन्दजीकी भरतपुरकी नहरमें डूब जानेके कारण असामयिक मृत्यु हो गई है।

सँखलेचा

सेठ बिहारीलालजी मोहकमचंदजी का खानदान, हाथरस

इस खानदानवाले जेसलमेर निवासी सॅखलेचा गौत्रके श्री जै० श्वे० मंदिर मार्गीय हैं। इस खानदानमें धारसीजी हुए। आपके हंसराजजी, हंसराजजीके जालमचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग जैसलमेरमे ही रहते रहे। सेठ जालमचन्दजीके पुत्र सालमचन्दजी सबसे पहले करीब १०० वर्ष पूर्व देशसे हाथरस आये तथा यहाँपर लेन देन व जमींदारीका काम प्रारम्भ किया। आपका स्वभाव अच्छा था तथा धार्मिक पुरुष थे। आप यहींपर स्थायी रूपसे बस गये। तभीसे आपके वंशज आज तक यहींपर निवास कर रहे हैं। आपके धनीरामजी, उदयरामजी, एवं पूनमचंदजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ धनीरामजीका परिवारः—आप बड़े कुशल एवं धार्मिक व्यक्ति थे। आपने अपनी जमींदारीको बढ़ाया तथा लेन देनके व्यापारमें तरक्की की। इसके अतिरिक्त आपने मकान वगैरह बनाकर अपनी स्थायी सम्पत्तिको बढ़ाया। आपने तीर्थ यात्राएँ भी की थीं। आप संवत् १९०६ में स्वर्गवासी हुए। आपके माणकलालजी तथा विहारीलालजी नामक दो पुत्र हुए। माणकलालजी तो छोटी उमरमें ही गुजर गये थे।

सेठ विहारीलालजीका जन्म संवत् १९२० में हुआ। आप जमींदारी लेनदेन, किराया गिरवी तथा बैंकिंगका व्यापार करते रहे। इसमे आपने काफी सम्पत्ति कमाई। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति भी थे। आपने हाथरस में २००००) बीस हजारकी लागतसे एक सुन्दर दादावाड़ी भी बनवाई जो आज भी सुन्दर स्थितिमें मौजूद है। आपके दोनों पुत्र सकटमलजी तथा ज्ञानचन्दजीका आपकी मौजूदगीमें ही स्वर्गवास हो गया था। सेठ सकटमलजी की मृत्युके समय आपके पुत्र मोहमकचंदजी केवल दस मासके थे। अतः आपका सारा लालनपालन सेठ विहारीलालजीने किया। सेठ विहारीलालजी सं० १९८६ में स्वर्गवासी हुए।

बाबू मोहमकचन्दजीका जन्म संवत् १९७१ में हुआ। आप मिलनसार, उत्साही तथा अतिथि सेवा-प्रेमी सज्जन हैं। आप हाथरसमें लोकप्रिय तथा योग्य युवक हैं। वर्तमानमें आप ही अपने फर्मकी जमींदारी, बैंकिंग, किराया तथा लेनदेनके व्यापारको सफलतापूर्वक संचा-

लित कर रहे हैं। आप कमेटी तालीम, म्यु० कमेटी, देवघर मेला कमेटी आदि संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपने अपने पितामह द्वारा बनवाई हुई दादावाड़ीका प्रतिष्ठा महोत्सव सं० १६८६ की माघ सुदी १० को जैनाचार्य्य श्री हरिसागरजी द्वारा सम्पन्न करवाया जिसमें दो ढाई हजार खर्च हुआ होगा।

आप मे० बिहारीलाल मोहकमचन्दके नामसे अपना सारा व्यापार करते हैं। यह खानदान यहांपर प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ रोशनलालजी सँखलेचा का खानदान, हाथरस

इस खानदान वाले जैसलमेर निवासी श्री जै० श्वे० स्था० तथा मन्दिर आम्नाय को माननेवाले हैं। सबसे पहले इस खानदानके सेठ मयाचन्दजी देशसे हाथरस आये और यहांपर आकर आपने जमीदारी व लेनदेनका व्यापार किया। आपके बहादुरमलजी, इनके गोकुलचन्दजी नामक पुत्र हुए।

सेठ गोकुलचन्दजीका जन्म सं० १८८० में हुआ। आप भी अपने जमीदारीके व्यापारको सफलतापूर्वक चलाते रहे। आप बड़े धर्मात्मा थे। आपका स्वर्गवास सं० १६५३ में हुआ। आपके निःसन्तान गुजरनेपर आपके नामपर रोशनलालजी गोद आये।

सेठ रोशनलालजीका जन्म सं० १६२५ में हुआ। आप धार्मिक पुरुष हैं। आपने सिद्धाचलजी आदि तीर्थोंकी यात्राकी है। आप गरीबोंको सहायता पहुँचाते रहते हैं। आपने भी अपनी जमीदारी वगैरहकी ठीक व्यवस्था की। आपके कन्हैयालालजी, चन्द्रभानजी, सूरजमलजी, लक्ष्मीनारायणजी, दुर्गाप्रसादजी, लखमीचन्दी, गुलाबचन्दजी तथा पन्नालालजी नामक आठ पुत्र हैं। इनमें बाबू लखमीचन्दजी, सूरजमलजी तथा पन्नालालजीका स्वर्गवास हो गया है।

बाबू कन्हैयालालजीका जन्म सं० १६४२ में, चन्द्रभानजीका १६४४, लक्ष्मीनारायणजी का १६४६ में, दुर्गाप्रसादजी का १६५४ तथा गुलाबचन्दजी का १६७३ मे हुआ। आप सब बधु मिलनसार हैं तथा सम्मिलित रूपसे ही अपने व्यापारको संचालित कर रहे हैं। बाबू कन्हैयालालजीके नामपर चन्द्रभानजीके प्रथम पुत्र ज्ञानचन्दजी गोद आये। चन्द्रभानजीके ज्ञानचन्दजी, सुगनचन्दजी एवं प्रेमचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। सूरजमलजीके पीतमचन्दजी, दुर्गाप्रसादजीके हुकुमचन्दजी तथा गुलाबचंदजीके रणजीतसिंह नामक पुत्र हैं। पीतमचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। आपलोग हाथरसमें बैंकिंग तथा जमीदारीका मे० गोकुलचन्द रोशनलालके नामसे व्यापार करते हैं।

श्री चुन्नीलालजी नेमीचन्दजी सँखलेचा, बी० ए० एल० एल० बी, अडव्होकेट अहमदनगर

इस परिवारके पूर्वज सेठ कवरदासजी संखलेचा बीसलपुर (मारवाड़) में निवास करते थे। वहांसे आपने संवत् १४११ में अपना निवास स्थान कापरड़ा तीर्थ (मेड़ताके समीप—मारवाड़) मे बनाया। कापरड़ासे व्यापारके निमित्त इस परिवारके पूर्वज सेठ सीमलजी संखलेया महाराष्ट्र प्रान्तके आलकुटी (पारनेर तालुक जिला अहमद नगर में आये एवं वहां आपने अपना व्यापार आरम्भ किया। आपके बुधमलजी और विरदीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ शिवदासजीके नेमीचन्दजी, किशनदासजी, लछमणदासजी तथा रूपचंदजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बन्धुओंतक यह परिवार आलकुटीमें ही व्यापार करता रहा। सेठ नेमीचन्दजीके मगनीरामजी, इन्द्रभानजी, चन्द्रभानजी, नैनसुखजी एवं चुन्नीलालजी नामक ५ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमेंसे भगतीरामजी इस समय विद्यमान नहीं हैं।

आलकुटीसे लगभग ३० वर्ष पूर्व यह परिवार अहमदनगर आया। सेठ देमराजजी पन्नालालजीकी भागीदारीमें सेठ इन्द्रभानजीने बहुत समय तक व्यापार किया। इधर ३ साल पूर्व इस परिवारका व्यापार अलग २ हुआ है। इस समय इस परिवारका नेमीचन्द चन्द्रभान और नैनसुख शिवलालके नामसे व्यापार होता है।

श्री चुन्नीलालजी संखलेचाका जन्म सन् १८६८ में हुआ। आपने न्यू हाईस्कूल बम्बई-से१६१८ में मेट्रिक पास किया। सन् १६२३ में B A और १६२५ में डेक्कन कालेज पूनासे एल० एल० बी० का डिप्लोमा हासिल किया और तबसे आप अहमद नगरमें वकालत करते हैं। श्री चुन्नीलालजी बड़े सरल-स्वभावके सज्जन हैं। आप सन् १६२३ से २५ तक पूनाके भारत जैन विद्यालयमें आनरेरी सुपरिन्टेन्डेन्ट रहे थे। सन् १६२८ से ३३ तक आपको अहमद नगर म्यु० की मेम्बरानका सम्मान प्राप्त हुआ था। इधर ८ सालोंसे आप मर्चेन्ट एसोशिएशन अहमदनगर के सेक्रेटरी हैं। इसी तरहके कार्योंमे आप भाग लेते रहते हैं। आप महाराष्ट्र प्रान्तके बीसा ओसवाल समाजमें प्रथम बी० ए० एल० एल० बी० वकील हैं।

पगारिया

सेठ नानचन्दजी नरसिंहदासजी पगारिया, हिंगोना (खानदेश)

इस परिवारके मालिकोका मूल निवासस्थान मेड़ता है। वहाँसे यह कुटुम्ब करेड़ा (मेवाड़) मे आया। करेड़ासे इस परिवारके पूर्वज सेठ राय चन्दजी पगारिया लगभग संवत् १८६० मे व्यापारके लिये खानदेशके हिंगोना नामक स्थानमे आये और यहाँ आपने लेनदेन का

व्यापार आरम्भ किया। आपके लच्छीरामजी, लालचन्दजी, गोविन्दरामजी, नानचन्दजी तथा परशुरामजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें लालचन्दजीके परिवारमें इस समय कोई नहीं है।

इन पांचों बन्धुओंमें सेठ नानचन्दजी तथा सेठ परशुरामजी पगारिया बहुत नामांकित पुरुष हुए। आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की तथा साथ ही अपने परिवारके मान सम्मान व प्रतिष्ठाकी भी बहुत उन्नति की। आप खानदेशकी ओसवाल समाजमें गण्यमान्य पुरुष माने जाते थे। सेठ परशुरामजीने थरण गांवमें हाईस्कूलकी बिल्डिंग बनवाकर सरकारको भेंट की। सेठ नानचन्दजी लगभग २१ साल पहिले एवं सेठ परशुरामजी लगभग १६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

सेठ नानचन्दजीके पुत्र सेठ नरसिंहदासजी हुए। आपने भी अपने व्यापारको बढ़ाकर अपने परिवारकी प्रतिष्ठाको कायम रक्खा। खानदेशकी ओसवाल समाजमें आप भी गण्य-मान्य सज्जन माने जाते थे। सं० १९८८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके दगडूलालजी तथा मोतीलालजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें मोतीलालजी सेठ परशुरामजीके नाम पर दत्तक गये। सेठ दगडूलालजीका स्वर्गवास हो गया है। इस समय आपके पुत्र भागचन्दजी, दीपचन्दजी तथा उत्तमचन्दजी नामक ३ पुत्र हैं। आप तीनों भाई बड़े सीधे स्वभावके सज्जन हैं। आपके यहां सेठ नरसिंहदास नानचन्दके नामसे साहुकारी, कृषि तथा कपासका व्यापार होता है। सेठ मोतीलालजीके यहाँ मोतीलाल परशुरामके नामसे व्यापार होता है। आपने हिंगोना में एक पाठशालाका मकान बनवा कर सरकारको भेंट किया है। आपके अमोलकचन्दजी तथा प्रेमराजजी नामक पुत्र हैं। श्री भागचन्दजीके सौभागचन्दजी आदि पुत्र हैं।

इसी तरह इस परिवारमें सेठ लच्छीरामजीके पौत्र राजमलजी तथा सेठ गोविन्दराम-जीके पौत्र हरकचन्दजी, बच्छराजजी तथा चम्पालालजी विद्यमान हैं।

लखमीचंदजी सोभागमलजी मेहता का खानदान,

इस परिवारके पूर्वजोंका मूल निवास स्थान मेड़ता (मारवाड़) है। यह परिवार श्वे-ताम्बर जैन स्थानकवासी सम्प्रदायका माननेवाला है। मारवाड़से लगभग डेढ़ सौ पौने दो सौ वर्ष पूर्व इस परिवारके पूर्वज सेठ हिन्दूमलजी पैदल मार्ग द्वारा व्यापारके निमित्त भोपाल स्टेटके इच्छावर नामक स्थानमें आये तथा यहाँ बहुत साधारण स्थितिमें कारबार आरम्भ किया। आपके पुत्र सेठ सांवतमलजी मेहता हुए। आप भी साधारण कारबार करते रहे।

मेहता सावतमलजीके पुत्र मेहता बाघमलजी हुए। आप बुद्धिमान तथा व्यवसाय

चतुर पुरुष थे। आपके समयसे इस परिवारके व्यवसाय तथा सम्मानकी विशेष उन्नति आरम्भ हुई। साहुकारी तथा अफीमके व्यापारमें आपने बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। सम्वत १६७७ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके मेहता लखमीचन्दजी तथा मेहता ज्ञानमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों बन्धुओंके कोई सन्तान नहीं थी। अतएव बोरावड़ से मेहता ज्ञानमलजीके नाम पर मेहता सोभागमलजी (मेहता जयकिशनजीके पुत्र) सम्वत १६४५ में तथा मेहता लखमीचन्दजीके नामपर मेहता प्रतापमलजी उर्फ सवाईमलजी (मेहता सिरेमलजीके पुत्र) सम्वत १६६२ में दत्तक आये।

सेठबाघमलजी मेहताके पश्चात सेठ लखमीचन्दजी तथा सेठ सोभागमलजी दोनों काका भतीजोंने अपने व्यापारको विशेष उन्नत किया। आपने सम्वत् १६५० में अपनी दुकान-की शाखाएं भोपालमें व सम्वत् १६६३ में आस्टामें खोलीं। इसी प्रकार इच्छावर तहसील में ३।४ स्थानोंपर और अपनी शाखाएं स्थापित की। इन सब दुकानोंपर साहुकारी तथा आढ़तका कारबार आरम्भ किया। भोपाल रियासतमें आप बड़े नामांकित पुरुष माने जाते थे। सेठ लखमीचन्दजी मेहता सम्वत् १६८३ में स्वर्गवासी हुए। सम्वत् १६४६ मे ही इन दोनों बन्धुओं-का व्यापार अलग २ हो गया था।

मेहता सोभागमलजी—आपका जन्म सम्बत् १६३३ में बोराबड़में हुआ। आप बड़े कुशाग्र बुद्धिके, राजनीतिसे प्रेम रखनेवाले, विद्वान और धार्मिक वृत्तिके पुरुष थे। श्री श्वेताम्बर जैन स्थानक वासी कान्फ्रेंसके रतलाम अधिवेशनके समय आप प्रान्तिक सेक्रेटरीके पदपर सम्मा-नित किये गये थे। आप इच्छावर म्युनिसिपलिटीके प्रेसिडेंट थे एवं भोपाल स्टेटने भी आप-की योग्यतासे प्रसन्न होकर आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेटका सम्मान इनायत किया था। इतना ही नहीं आप बिना परवानगी जब चाहें तब नवाब साहब भोपालसे मिल सकते थे। आपने इच्छावरमे इंग्लिश स्कूल तथा कन्या पाठशालाका उद्घाटन करवाया एवं अपनी ओरसे इन पाठशालाओं में ५ हजार रुपयोंकी सहायता प्रदान की। रियासतकी खुशियोंके समयपर आपने हजारों रुपये अपने आसामियोंको माफ किये। इस उदारताके उपलक्ष में भोपाल दरबारने प्रसन्न होकर आपको कई परवाने देकर आपकी कद्र की। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताते हुए सन् १६३१ की २० जनवरीको हृदयकी गति एकाएक बन्द हो जानेसे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके मेहता थानमलजी तथा मेहता मोतीलालजी नामक पुत्र विद्यमान हैं।

मेहता सवाईमलजी—आपका जन्म सम्वत् १६५० मे बोरावड़में हुआ। आपने भी अपने व्यापार तथा परिवारके सम्मानको विशेष उन्नत किया। रियासतमें व जनतामें आप गण्यमान्य व्यापारी और प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। सन् १६३१ से तीन सालोंतक आपने भोपाल स्टेट कौन्सिलके मेम्बर पदको सम्मानित किया था। इस समय आपके यहाँ बाघमल लखमी-चन्दके नामसे इच्छावर, भोपाल आस्टा आदि स्थानोंपर व्यापार होता है। आपके पुत्र श्री महेन्द्रप्रतापजी ८ सालके हैं।

मेहता थानमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९६२ की कुँवार वदी ११ को हुआ। भोपालमें आपने मैट्रिक तक अध्ययन प्राप्त किया। हिन्दीकी भी आपने अच्छी योग्यता हासिल की है। जनताने आपको योग्य समझ सन् १९३३ से भोपाल स्टेट लेजिस्लेटिव कौंसिलके मेम्बर पदपर मनोनीत कर आपका उचित सम्मान किया है। इतनी छोटी वयमें ही आप बड़े लोकप्रिय, अनुभवी एवं विचारवान युवक प्रतीत होते हैं। भोपाल स्टेटके नवयुवकोंके आप अगुआ हैं। राजनीतिसे आपको विशेष रुचि है। इस समय आपके यहाँ इच्छावरमें बाघमल ज्ञानमलके नामसे बैंकिंगका व्यापार होता है तथा भोपालमें मे० सोभागमल थानमल के नामसे साहुकारी व आढ़तका कारबार होता है। इसी प्रकार अन्य शाखाओंपर बाघमल ज्ञानमल मेहताके नामसे कारबार होता है।

पारख

श्री लेखचंदजी सुगनचन्दजी पारख, जबलपुर

यह परिवार बड़ीपादू (मारवाड़) का निवासी है। वहांसे सेठ कचराजीका परिवार व्यापारके लिये जबलपुर आया। आपके खाजूरामजी, नन्दरामजी तथा मयारामजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ खाजूरामजी राजा गोकुलदासजीके यहां मुनीमात करते थे। आपकी सेठोंके यहां बड़ी प्रतिष्ठा तथा इज्जत थी। आप नामी तथा मातवर पुरुष थे।

सेठ नन्दरामजीके कस्तूरचन्दजी तथा नथमलजी और सेठ मयारामजीके गेनचन्दजी और केसरीचन्दजी नामक पुत्र हुए। इन भाइयोंमें केसरीचन्दजी सेठ खाजूरामजीके नामपर और नथमलजी सेठ मूलचन्दजी चोरड़ियाके नामपर दत्तक गये। सेठ केसरीचन्दजी प्रतिष्ठित व नामी व्यक्ति हुए। आपके लेखचन्दजी, सुगनचन्दजी, चन्द्रभानजी तथा नेमीचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें लेखचन्दजी तथा सुगनचन्दजी विद्यमान हैं। श्री सुगनचन्दजी सेठ कस्तूरचन्दजीके नामपर दत्तक गये हैं।

सेठ लेखचन्दजी तथा सुगनचन्दजी जबलपुरकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। श्री लेखचन्दजीने सम्वत् १९३० मे पूज्य चम्पालालजी महाराजके साथ लाडनू तक पैदल यात्रा की थी। सेठ लेखचन्दजीके पुत्र भीकमचन्दजी तथा दुलीचन्दजी, सेठ सुगनचन्दजीके पुत्र माणिकचन्दजी, सेठ चन्द्रभानजीके पुत्र निहालचन्दजी और गेनचन्दजीके पुत्र गुलाबचन्दजी विद्यमान हैं। इन भाइयोंमें श्री निहालचन्दजी सेठ नत्थूमलजी चोरड़ियाके नामपर दत्तक गये हैं।

श्री सुगनचन्दजीके यहा सुगनचन्द माणिकचंदके नाम से जनरल एण्ड क्राकरी मर्चेंट-का व्यापार होता है।

श्रीश्रीमाल

सेठ गुलाबचन्दजी वेदका खानदान मांगरोल (कोटा)

इस खानदानवाले मांगरोल (कोटा-स्टेट) निवासी ओसवाल जातिके श्रीश्रीमाल गुणायचा गौत्रके व्यक्ति हैं। इस खानदानमें सेठ गुलाबचन्दजी हुए।

सेठ गुलाबचन्दजी:—आप योग्य एवं वैद्यक विद्यामे कुशल सज्जन थे। आपकी वैद्यकीय निपुणताके कारण ही आज तक आपके खानदानवाले वेद नामसे मशहूर हैं। सरकारने आपकी वैद्यक सम्बन्धी प्रतिभाका सम्मान करनेके लिये खैरजा खेड़ली (जि० बड़ोद) मे बहुतसी जमीन पुरस्कार स्वरूप प्रदान की। आपके स्वर्गवासी हो जानेपर उक्त जागीरी की जमीन स्टेटमें चली गयी। कारण आपकी संतानों में इस विद्याका अभाव था। आप मांगरोलके एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये है। आपके डालूरामजी, ताराचन्दजी, राजारामजी, केशोरामजी एवं शम्भूरामजी नामक पाँच पुत्र हुए।

सेठ राजारामजीके निःसंतान स्वर्गवासी होनेके पश्चात् आपके नामपर सेठ केशोराम-जीके पौत्र मन्नालालजी गोद आये। सेठ मन्नालालजी भी निःसन्तान स्वर्गवासी हुए। आप-के नामपर मारवाड़की ओरसे सेठ ज्ञानमलजी गोद आये। सेठ ज्ञानमलजीका स्वर्गवास संवत् १९४३ मे हुआ। आपके धनराजजी एवं भवानीशंकरजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ धनराजजी:—आपका जन्म संवत् १९३० में हुआ। आपने १४ वर्षकी अल्पायुसे ही व्यापारमें भाग लेना शुरू कर दिया था। आप दोनों बंधुओंकी छोटी उम्रमें ही आपके पिताका स्वर्गवास हो गया था। संवत् १९५८ तक तो आप दोनों शामलातमें ही अपना व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् अलग होकर अपना २ स्वतन्त्र रूपसे व्यापार करने लगे। सेठ धनराजीने अलग होनेके पश्चात् अपने व्यापारको बढ़ाया तथा बहुतसी सम्पत्ति कमाई। आप कोटा स्टेटके धनिकोंमें गिने जाते थे। आपका मांगरोलमें अच्छा सम्मान था। आप प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। आपके निःसन्तान रहनेपर आपने जोधपुरके श्री जयचंदजी लूणावतके पुत्र मोतीलालजीको गोद लिया।

सेठ धनराजजी बड़े परोपकारी एवं सार्वजनिक सेवाप्रेमी सज्जन थे। आपने प्रयत्न करके मांगरोलमें एक सार्वजनिक औषधालय खुलवाया था तथा उसमें स्वयं भी आर्थिक सहायता दी थी। इसके अतिरिक्त अहिंसा सिद्धान्तको पालन करते हुए आपने बहुतसे जीवों-के प्राण बचाये।

बाबू मोतीलालजीका जन्म संवत् १९६५ की माह सुदी १२ को हुआ। आप संवत् १९७५ में मांगरोल गोद आये। आपने अपने स्वर्गीय पिताजीकी स्मृतिमे श्मशानमें एक तिबारी बनवाई तथा उनकी पुण्यतिथिपर मुनि श्री चौथमलजी महाराजके उपदेशसे "निग्रंथ

प्रवचन" नामक ग्रन्थके इंग्लिश अनुवादमें सहायता दी है। ये अनुवादित पुस्तकें अमूल्य वितरण की जाँयगी।

सेठ भवानीशंकरजीका स्वर्गवास संवत् १९७४ में हुआ। आपके पुत्र सूरजजमलजी विद्यमान हैं। आपके तेजमलजी, सौभागमलजी, मानमलजी एवं रतनसिंहजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ राजमलजी नन्दलालजी श्रीश्रीमाल, वरणगाँव (भुसावल)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान रूपनगढ़ (किशनगढ़ स्टेट) का है। आप श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायके माननेवाले हैं। रूपनगढ़से लगभग १०० साल पूर्व सेठ जालमचन्दजी श्रीश्रीमालके पुत्र सेठ लस्मणदासजी तथा सेठ सरदारमलजी व्यापारके लिये लखनऊ गये, वहांसे आप मिर्जापुर आये एवं मिर्जापुरसे दोनों बंधु लगभग ६० साल पहिले जबलपुर आये तथा वहाँ आप लोग अनाज व लेनदेनका व्यापार करते रहे। वहीं दोनों बन्धुओंका स्वर्गवास हुआ। सेठ लक्ष्मणदासजीके नथमलजी तथा ज्ञानचन्दजी एवं सेठ सिरदारमलजीके पन्नालालजी नामक पुत्र हुए। ये बंधु लगगग संवत् १९६६ में जबलपुरसे वरणगांव (भुसावल) आये तथा भागीदारीमें राजमल नन्दलालके नामसे रुई, सींगदाणा तथा कमीशनका व्यापार आरम्भ किया। सेठ पन्नालालजीने अपने परिवारके व्यापार तथा मान प्रतिष्ठाको विशेष बढ़ाया। संवत् १९८२ की कार्तिक बदी ११ के दिन ६२ सालकी वयमें आप स्वर्गवासी हुए।

इस समय सेठ नथमलजीके पुत्र बाबूलालजी तथा प्रेमचन्दजी, सेठ ज्ञानमलजीके पुत्र माणिकचन्दजी तथा सेठ पन्नालालजीके पुत्र राजमलजी, नन्दलालजी, हरकचन्दजी एवं चम्पालालजी विद्यमान हैं। सेठ बाबूलालजी तथा प्रेमचन्दजी, जलगावमें बाबूलाल प्रेमचन्दके नामसे अपना स्वतन्त्र कारबार करते हैं तथा शेष बन्धु सम्मिलित रुपसे व्यापार करते हैं।

सेठ राजमलजी, नन्दलालजी—सेठ राजमलजीका जन्म संवत् १९४७ में तथा नन्दलालजीका जन्म १९४९ में हुआ। आप दोनों ने अपने पिताजीके पश्चात् अपने व्यापार तथा सम्मानको विशेष उन्नत किया है। खानदेश तथा बरार प्रान्तके जैन समाजमें आपका परिवार गण्यमान्य माना जाता है। आपने रुई तथा सींगदाणाके व्यापारमें अपनी व्यापार चातुरीसे अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की है। मोसमके समय भुसावल, बोदवड़, जामनेर आदि अनेकों स्थानोंपर सींगदाणा तथा रुईकी खरीदी करनेके लिये आप अपनी एजेंसियां कायम करते हैं। आपकी वरणगांवमें एक जीनिंग व सींगदाणा फोड़नेकी फैक्टरी है। हरएक सार्वजनिक व धार्मिक कार्यों में तथा संस्थाओंमें आप सहायता देते रहते हैं। सेठ नन्दलालजीने सन् १९२९ में वरणगांवमें एक अंग्रेजी स्कूलको उद्घाटित करवाया जिसमें आपने भी बहुतसी सहायता प्रदान की। सेठ राजमलजीका व्यापारिक साहस बहुत बढ़ा चढ़ा है। आप

बड़ी उदार तबियतके तथा शिक्षासे प्रेम रखनेवाले व्यक्ति हैं। आपके साथ आपके बंधु हरकचंदजी तथा चम्पालालजी भी व्यापारमे भाग लेते हैं। आप दोनोंका जन्म संवत् १९६१ तथा ६८ में हुआ है।

सेठ नन्दलालजीके पुत्र फकीरचंदजी तथा नगीनचन्दजी एवं हरकचन्दजीके पुत्र नीलमचन्दजी हैं।

रांका

सेठ चेतनदासजी गुलाबचंदजी रांका, पूर्णिया

इस परिवारके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान महाजन (बीकानेर स्टेट) था। वहांसे संवत् १९५२ में इस परिवारवाले सेठ चेतनदासजी राजलदेसर आकर रहने लगे। तभीसे आपके कुटुम्बी लोग राजलदेसरमें निवास कर रहे हैं। आप लोग रांका गौत्रीय श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथी सम्प्रदायको माननेवाले हैं।

सबसे प्रथम सेठ चेतनदासजी संवत् १९२८ में देशसे चलकर व्यापार निमित्त पूर्णिया आये और यहांपर आपने कपड़ेका व्यवसाय प्रारम्भ किया। आपके हाथोंसे कार्यकी उन्नति हुई। आपका संवत् १९६० में स्वर्गवास हो गया। आपके गुलाबचन्दजी नामक एक छोटे भाई और थे।

सेठ गुलाबचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९२५ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल, साहसी एवं मेधावी सज्जन हैं। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे बहुत सी सम्पत्ति उपार्जित की और यश भी सम्पादन किया। आपने अपनी फर्मकी १९६४ में कलकत्तामें, १९८४ में फारबिसगंजमें तथा गुलाबबागमें भी शाखाएँ खोलीं। इन सब फर्मों पर पाट, कपड़ा तथा सराफीका लेन देन होता है। आपके हजारीमलजी, फतेचंदजी एवं जयचन्दलालजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों भाइयोंका जन्म क्रमशः सं० १९५५, १९६४, १९७४ में हुआ। आप तीनों सज्जन मिलनसार एवं व्यापारमें कुशल हैं। वर्त्तमानमें आप सबलोग व्यापार कार्य्यमें हाथ बटा रहे हैं।

यह खानदान राजलदेसरकी ओसवाल समाजमें बड़ा प्रतिष्ठित समझा जाता है।

सेठ राजमलजी दीपचंदजी रांकाका खानदान, गङ्गापुर

इस खानदानवाले आमेट (मेवाड़) निवासी रांका गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानके चतुर्भुजजी सं० १८५१ के करीब गंगापुर आये। आपके रूपचन्दजी तथा उनके मझले पुत्र किशनजी हुए।

सेठ श्रीकिशनजी:—आपका जन्म सं० १६०१ में हुआ। आपने सं० १६४४ तक तो अपने भाइयोंके साथ शामलातमें व्यापार किया। इसके पश्चात् सबलोग अपना२ अलग व्यापार करने लगे। सेठ किशनजी व्यापारकुशल व्यक्ति थे। आपने व्यापारमें अच्छी सफलता प्राप्त की।

आपको मेवाड़ स्टेट तथा गंगापुरमें अच्छा सम्मान प्राप्त हुआ। मेवाड़के महाराणा साहब श्री फतेहसिंहजीने आपको पोशाकें प्रदान कर व कस्टम सिलवाड़ीका खजांची बनाकर सम्मानित किया था। आप योग्य एवं मानेता व्यक्ति थे। आप सं० १६५८ मे गुजरे। आपके पुत्र केशरीचन्दजीका जन्म सं० १६२२ में हुआ। आप भी अपने सराफी व सिलवाड़ीके खजांची का काम करते रहे। आपको श्री मेवाड़से पोशाकें इनायतकी गई थीं। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १६६५ में हुआ। आपके राजमलजी एवं दीपलालजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ राजमलजीका जन्म सं० १६४३ में हुआ। आप योग्य एवं समझदार सज्जन हैं। आपको उदयपुर महाराणा साहबने पांच सात बार पोशाकें इनायत की हैं। इसके अलावा आपके पुत्र एवं पुत्रियोंके विवाहोंमें महाराणा साहबकी ओरसे कंठिएं प्रदान की गई थीं। आप गंगापुरमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप यहां की म्यु० के मेम्बर, परगना बोर्ड, चेम्बर आफ सरॉफस, तथा ग्वालियर बैंक गंगापुरके मेम्बर है। आपके शङ्करलालजी नामक एक पुत्र हैं। सेठ दीपलालजी का जन्म सं० १६४६ में हुआ। आप भी योग्य व्यक्ति हैं। आप पञ्चायत बोर्ड तथा ओकाव कमेटीके मेम्बर हैं। पञ्चायत बोर्डमें सफलता पूर्व कार्य करनेके उपलक्षमें आप दोनों बन्धुओंको ग्वालियर स्टेटने सार्टिफिकेट प्रदान किये हैं। शंकरलालजीके रिखबलालजी, कन्हैयालालजी तथा दीपलालजीके भगवतीलालजी नामक पुत्र हैं।

यह खानदान गंगापुरमें प्रतिष्ठित परिवार माना जाता है। आपलोग व्याज, हुंडी चिट्ठी, जमीदारी तथा रईसों एवं जमीदारोंके साथ लेन देनका व्यापार करते हैं। आपके यहांपर कस्टम सिलावड़ीके खजानेके अतिरिक्त सोड़ती ठिकानेका खजाना भी है। स्व० महाराणा फतेहसिंहजीकी पाटधर गादी सोड़तीमें है तथा यहींसे स्व० महाराणा साहब उदयपुर गोद गये थे। सोड़तीके महाराज श्रीशिवदानसिंहजी एक समयसं० १६६० में आपके यहां पर आये थे।

सेठ नेमचंदजी सुजानमलजी रांका का खानदान, देशनोक

इस खानदानवाले देशनोक (बीकानेर स्टेट) के निवासी ओसवाल जातिके रांका गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ उम्मैदमलजी हुए। आपके मूलचन्दजी, सवाई रामजी, हरिचन्दजी तथा हजारीमलजी नाम चार पुत्र हुए। आप

सबलोग देशनोकमें ही रहकर व्यापार करते रहे। सेठ सवाईरामजीका स्वर्गवास सं० १९२८ मे हुआ। आपके सुगनचन्दजी तथा भीखमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ सुगनचन्दजीका जन्म सं० १९०७ के करीब हुआ। आप छोटी उमरसे ही देशसे वाहर कलकत्तेके पास सेतियां चले आये तथा यहांपर आकर नौकरी की। आपका स्वर्गवास सं० १९४१ में हो गया। आपलोगोंतक यह खानदान मन्दिर मार्गीय रहा। मगर उधर मन्दिर मार्गीय साधुओंके आवागमन न होनेसे तथा स्थानकवासी साधुओंके संसर्गसे यह परिवार स्थानक वासी हो गया। सेठ सुगनचन्दजीके नेमचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ नेमचन्दजीका जन्म संवत् १९२९ में सेतियामें हुआ। आपकी छोटी उमरमें ही आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था, अतः आपको बहुत कष्टोंका सामना करना पड़ा। आप व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। आप सं० १९४४ तक सेतियामें ही रहे। यहांसे फिर देश तथा देश से फिर कलकत्ता चले आये। यहांपर सं० १९५८ तक सर्विस व सं० १९७२ तक दलाली की। फिर करीब ४ वर्षोंतक मे० नेमचन्दजी सुजानमल के नामसे कलकत्तेमें घीका व्यापार किया। तदनंतर आपने अपने यहाँपर कपड़ेका व्यापार शुरू किया जिसमे आपको वहुत सफलता मिली। आप बड़े दृढ़ विचारोंके सज्जन हैं। आप स्थानकवासी जैन संस्था कलकत्ता के उप सभापति भी रह चुके हैं। इसकी स्थापनामें आपका हाथ था तथा आप इसके मन्त्री भी रह चुके हैं। वर्त्तमानमें आप करणी मन्डल देशनोकके उपसभापति हैं। आप ही वर्त्तमानमें अपने सारे व्यापारसो सञ्चालित कर रहे हैं। आपके सुजानमलजी नामक एक पुत्र हैं।

सुजानमलजीका जन्म सं० १९५१ में हुआ। आप अपने व्यापारमें भाग लेते हैं। आपके मन्नालालजी, दीपचन्दजी, चम्पालालजी एवं सम्पतलालजी नामक चार पुत्र हैं। इनमें वाबू मन्नालालजी शिक्षित तथा मिलनसार युवक हैं। आपने कलकत्ता युनिवर्सीटीसे सन १९३४ में बी. ए. तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागसे विशारद परीक्षा पास की। शेष सब भाई पढ़ते हैं। इस परिवारकी मे० नेमचन्द सुजानमजके नामसे ४३ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्तामे गद्दी है तथा इसी नामसे ६९ क्रासस्ट्रीटमें दूकान है जिसपर आढ़तका व्यवसाय होता है।

भण्डारी सखरूपमलजी रघुनाथप्रसादजी भण्डारीका खानदान, कानपुर

इस खानदानके सज्जनोका मूल निवासस्थान रूपनगढ़ (मारवाड़) का था। आपलोग भण्डारी गौत्रके श्री० जै० श्वे० मं० आम्नामको माननेवाले हैं। इस परिवारमें लाला सखरूप मलजी, चिमनलालजी तथा नारायणदासजी नामक तीन वन्धु हुए। आप तीनों भाई करीब १२५ वर्ष पूर्व देशसे माधवगंज आये तथा यहांपर गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। ६० वर्ष पश्चात् लाला चिमनलालजी चतुर मेहता नयमलजीके यहाँपर कानपुर गोद चले गये। लाला सखरूप मलजी भी माधोगञ्जसे कानपुर चले आये। आपने कानपुरमें भी गल्लेका व्यवसाय किया। आपके नामपर लाला रघुनाथ प्रसादजी गोद आये।

लाला रघुनाथप्रसादजी:—आप बड़े व्यापार कुशल, प्रतिभाशाली तथा होशियार सज्जन थे। आपने अपने गल्लेके व्यापारको बहुत चमकाया व बहुत सी सम्पत्ति उपार्जित की। अपने फार्मके व्यवसायके तरक्कीके लिये आपने कलकत्ता, बम्बई, सुधौली, कालाकांकर, भारवारी, सण्डीला; काकोरी, लखनऊ, मलियाबाद, लखीमपुर, वैरामघाट आदि कई स्थानोंपर अपनी फर्में खोलकर उनपर सफलता पूर्वक गल्ले वगैरहका व्यापार किया जिसमें आपने लाखों रुपये कमाये।

आप बड़े धार्मिक तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। ऐसा सुना जाता है कि आपने सम्मैद शिखरजी तथा सिद्धाचलजीके पैदल संघ निकाले थे। इतना ही नहीं आपने कानपुर (प्रतिष्ठा सं० १९२८) सम्मैदशिखर तथा लखनऊमें तीन सुन्दर २ मन्दिर बनवाये और उनके प्रतिष्ठा महोत्सव करवाये।। आप बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १९१८ में हुआ। आपके नामपर लाला लक्ष्मणदासजीके ज्येष्ठ पुत्र सन्तोषचन्दजी गोद आये। लाला सन्तोष-चन्दजीके लालचन्दजी तथा लखमीचन्दजी दो भाई और थे।

लाला सन्तोषचन्दजी:—आपका जन्म सं० १९२५ मे हुआ। आपने अपने फार्म के विस्तृत गल्लेके व्यापारको सफलता पूर्वक चलाया। आपके यहांपर गल्लेका व्यापार बहुत बड़े स्केलपर होता था। इसके पश्चात् आपने अपने यहांपर जवाहरातका व्यापार शुरू किया।

आपने अपने पिताजी द्वारा बनाये हुए कानपुरके जैन मन्दिरमे काच जड़वाये व आस-पास बगीचा लगवाया। यह मन्दिर भारतके दर्शनीय स्थानोंमें प्रसिद्ध तथा भारतीय जड़ाऊ मन्दिरोंमें बहुत उच्च श्रेणीका गिना जाता है। इसमन्दिरकी कारीगरी, सोने व मोतीके काम में प्राचीन कलाका बहुत ही उत्तम नमूना मिलता है। निज मन्दिरके चौकके छतमें सोनेकी कोराई व खम्भों तथा दीवालोंके ऊपर काचकी जड़ाईके साथ मोती वगैरहका काम बहुत ही अनूठे ढङ्गका बना हुआ है। यह मन्दिर इतना सुन्दर तथा भारतीय कला व कारीगरीका ऐसा अच्छा नमूना है कि जिसे देखनेके लिये बाहर दूर २ से बहुतसे लोग आया करते हैं। विदेशसे भारतमें भ्रमण करनेके लिये आनेवाले टुरिस्टोंके लिये भी यह एक बहुत ही अमूल्य तथा दर्शनीय भारतीय वस्तु है। प्रतिवर्ष बहुतसे विदेशी लोग भी इसे देखनेके लिए आया करते हैं तथा इसकी कारीगरीको देखकर इसकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा करते हुए चले जाते हैं। इस प्रसिद्ध मन्दिरका फोटो टाइम्स आफ इण्डिया में भी प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ के अन्तर्गत भी इसके एक भागका फोटो दिया जा रहा है। इस मन्दिरके अन्तर्गत पर्यूषणपर्व में बहुत रोशनी तथा सजावट की जाती है जिसे देखनेके लिये हजारों नरनारी उन दिनों आते हैं।

लाला सन्तोषचन्दजीने एक सुन्दर वस्तु निर्मित कराकर अपना नाम अमर कर दिया है। आपने इस मन्दिरके सामनेका एक मकान धर्मशालाके लिये प्रदान किया है। आप कानपुरमें

सेठ सन्तोषचन्दजी भण्डारी, कानपुर
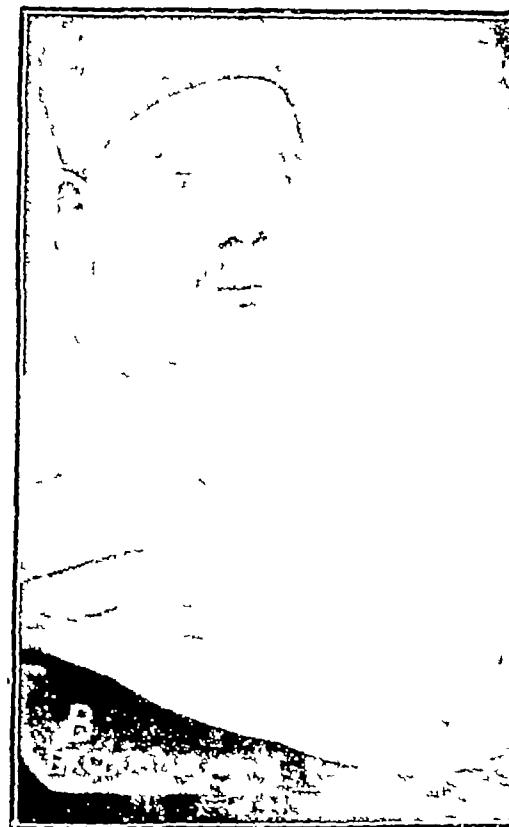
सेठ दौलतचन्दजी भण्डारी, कानपुर

श्री जैन श्वेताम्बर ग्लास टेम्पल, कानपुर

बाबू विजयचन्दजी भण्डारी S/O दौलतचन्दजी भण्डारी कानपुर

बड़ प्रतिष्ठित तथा धार्मिक व्यक्ति हो गये हैं। आपका सं० १९८९ की फाल्गुन बदी १४ को स्वर्गवास हुआ। आपके दौलतचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

बाबू दौलतचन्दजीका जन्म सं० १९६४ की आषाढ़ सुदी १४ को हुआ। आप मिलनसार व्यक्ति हैं तथा अपने जवाहरात, क्यूरियो, पुरानी वस्तुएं, भाड़ा व लेनदेनका व्यवसाय करते हैं। आपके विजयचन्दजी, विनयचन्दजी एवं विमलचन्दजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं। यह खानदान कानपुरमें प्रतिष्ठित माना जाता है।

भण्डारी रत्नसिंहजीका परिवार, जयपुर

इस खानदानके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान जोधपुरका था। आप लोगोंका पूर्वकालीन इतिहास गौरव शाली तथा बहादुरी पूर्ण रहा है। आपलोगोंका श्री रतनसिंहजी तथा उनके पुत्र जोरावरमलजी तकका इतिहास इस ग्रन्थके भण्डारी विभागमें पृष्ठ १४०-१४१ पर विस्तार पूर्वक दिया गया है। श्रीजोरावरमलजीके गणेशदासजी, शिवदासजी, भवानीदासजी एवं धीरजमलजी नामक चार पुत्र हुए।

धीरजमलजीका परिवारः—आपको अपने परिवारकी उच्चता व गौरवताका खयाल था। आपने अपने परिवारके सम्मानको बढ़ाया। आपके रिधमलजी नामक पुत्र हुए। श्री रिधमल जी शिक्षित व्यक्ति थे। आपकी धर्मपत्नी साहसी तथा कार्यकुशल थीं। आप बड़ी स्वस्थ, परिश्रमी तथा स्वावलम्बी स्त्री थीं। अपने पतिके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् अनेक कष्टोंका सामना करते हुए भी अपनी जागीरीके गांव मौजा राधाकिशनपुरा की ठीक ढङ्गसे व्यवस्था करती रहीं। श्रीरिधमलजी अपने पुत्र बुधमलजीको केवल छः वर्षका छोड़कर सं० १९१६ में स्वर्गवासी हो गये।

श्रीबुधमलजीः—आपका जन्म सम्वत् १९२२ में हुआ। आप व्यापार कुशल तथा साहसी सज्जन हैं। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपये कमाये व अपने खानदानके सम्मानको ज्योंका त्यों बनाये रक्खा। आप सबसे पहले १४) रुपया लेकर बम्बई गये और वहांपर अपनी हिकमतसे बहुतसे रुपये कमाये। वहांसे आप उमरिया (रीवां-स्टेट) मे गये तथा वहांपर अपनी व्यापार चातुरीसे बहुतसी सम्पत्ति उपार्जित की। वहांकी जनतामे आपका बहुत सम्मान है। आप उमरियामें आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। आपने उमरियामे एक धर्मशाला भी बनवाई। आप बड़े प्रतिष्ठित, मितव्ययी तथा स्वतन्त्र विचारोंके सज्जन हैं। उमरियाके पश्चात् आपने संवत् १९६६ में खड़गपुर (बंगाल) में अपनी एक ब्रांच खोली और वहांपर भी व्यापार शुरू किया। इसमें भी आपको सफलता मिली। आपके धनरूपमलजी, दौलतमलजी एवं प्रेमचन्दजी नामक तीनपुत्र विद्यमान हैं।

श्रीधनरूपमलजीका जन्म सं० १९४९ मे हुआ। १६ वर्षकी आयुसे ही आपने व्यापारमें भाग लेना शुरू किया था। आपने योग्यता पूर्वक खड़गपुरके व्यापारको संभाला तथा वहांपर

स्थायी सम्पत्ति व प्रतिष्ठा स्थापित की। आपकी फार्म वहांपर मातवर मानी जाती है। आपके ज्ञानचन्दजी, गुमानचन्दजी, केशरीचन्दजी, विजयसिंहजी तथा नरेन्द्रसिंहजी नामक पाँच पुत्र हैं।

बाबू दौलतमलजीका जन्म सं० १९६४ में हुआ। आपने सन् १९३०में एल०एल० बी० व सन् १९३१ में एम० ए० पास किया। आप उत्साही मिलनसार तथा शिक्षित सज्जन हैं। आप वर्तमानमें जयपुरमें सफलता पूर्वक वकालत कर रहे हैं। आपके धीरेन्द्र सिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। बाबू प्रेमचन्दजीका जन्म सं० १९७१ में हुआ। आप बी० ए० में पढ़ रहे हैं। आप भी शिक्षित युवक हैं। आपके सुरेन्द्रसिंहजी नामक एक पुत्र हैं। बाबू ज्ञानचन्दजी मेट्रिकतक पढ़कर खड़गपुर फर्मके व्यापारमें योग दे रहे हैं।

जयपुर, खड़गपुर, व उमरियामें आप लोगोंका खानदान प्रतिष्ठित समझा जाता है। आप-लोग श्री जै० श्वे० मन्दिर आम्नायको माननेवाले हैं।

सेठ फतेमलजी श्रीमलजी भण्डारी मूथा, गुलेदगुड्ड

इस प्रतिष्ठित परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान पीपाड़ (मारवाड़) है। वहाँ उस परिवारके पूर्वज सेठ फतेमलजी निवास करते थे। सेठ फतेमलजीके श्रीमलजी नामक एक पुत्र हुए। सेठ श्रीमलजी व्यापारके लिये मारवाड़से विदा हुए। अनेकों प्रकार-की कठिनाइयां उठाते हुए केवल २५ सालकी वयमें आप दक्षिण प्रान्तके गुलेदगुड्ड नामक स्थानमें आये। यहां आकर आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। आपने बड़े परिश्रमपूर्वक अपनी बुद्धिमानी तथा होशियारीके बलपर अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की। आपने अपने व्यापारकी नींवको जमाकर दुकानकी मान प्रतिष्ठाको बढ़ाया। व्यापारके साथ-साथ आप शास्त्रोंके पठन-पाठन व श्रवणमें बहुत भाग लेते थे। शास्त्रोंकी जानकारी आपको अच्छी थी। आप गुलेद गुड्डके व्यापारिक समाजमें गण्यमान्य तथा सम्माननीय पुरुष थे। यहांकी म्युनि-सिपल कमेटीने मेम्बर निर्वाचित कर आपका सम्मान किया था। हरएक धार्मिक कामोंमें आप आगे रहते थे। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताकर सेठ श्रीमलजी संवत् १९९२ की फागुन सुदी ११ को ५५ सालकी वयमें स्वर्गवासी हुए। आपके कोई संतान नहीं थी, अतएव आपने वेलापुरसे सेठ नेमीचन्दजी मूथाके पुत्र सेठ लालचन्दजीको संवत् १९६६ में दत्तक लिया।

सेठ लालचन्दजी—आपका जन्म संवत् १९५३ की पौस सुदी १२ को वेलापुरमें हुआ था। यहां आकर आपने अपने पिताजी द्वारा स्थापित व्यापारको भली प्रकार सम्भाल लिया तथा उसे बढ़ाकर अपने कुटुम्बके मान व प्रतिष्ठाको उज्ज्वल किया। आपने अपने पिताजीके स्मारकस्वरूप श्मशान भूमिमें ३ हजार रुपयोंकी लागतसे एक धर्मशाला बनवाई। सम्वत् १९९२ में अपने पिताजीके पश्चात् आप स्थानीय म्युनिसिपैलेटीमें मेम्बर निर्वाचित

श्री चुन्नीलालजी नेमीचन्दजी सँखलेचा,
बी ए एल एल बी अहमदनगर

स्व० सेठ श्रीमलजी मूथा, गुलेदगुड्ड (बीजापुर)

श्री सरदार उत्तमचन्दजी भण्डारी नानापेठ (पूना)

सेठ लालचन्दजी [illegible]
[illegible]

हुए, तबसे इस पदपर अभीतक आप हैं। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर संवत् १९८८ से सरकारने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेटका सम्मान प्रदान किया है। अभी संवत् १९९२ के आसोज मासमें यहांकी म्युनिसिपैलेटीने अपना प्रेसिडेंट बनाकर आपकी उचित कदर की है। आपने यहांके अस्पतालमें ११००) की लागतसे एक वार्ड बनवाकर जनताको विशेष सुविधा पहुंचाई है। इस वार्डका उद्घाटन बीजापुरके कलक्टर श्री मिरचदानी साहबके हाथोंसे १५-१२-३५ को हुआ। शिक्षाके कामोंमें आप दिलचस्पीके साथ सहायता देते रहते हैं। पाथर्डी जैन गुरुकुलको आप १० सालोंसे २५१) दे रहे हैं।

सेठ लालचन्दजीकी माताजी (सेठ श्रीमलजीकी धर्मपत्नी) की रुचि भी धार्मिक कार्यों की ओर बहुत है। आप भी अपने पतिदेवकी रुचिके अनुसार ही शिक्षाप्रचारके कामोंमें सहायताएँ देती रहती हैं। आपने श्री जैनरत्न पुस्तकालय सिंहपोल—जोधपुरको १ हजार रुपयोंकी सहायता दी है। इसी प्रकार किशनगढ़की जैन सागर पाठशाला, बड़लूकी जैन पाठशाला व पीपाड़की कन्या पाठशालाओंमें बंधी हुई वार्षिक सहायता देते हैं।

सेठ लालचन्दजीका स्वभाव बड़ा सरल व अभिमानरहित है। आप इतने मिलनसार महानुभाव हैं कि सम्पत्तिका कुछ भी गरूर आपपर विदित नहीं होता। महाराष्ट्र प्रान्तके जैन समाजमें आप नामी महानुभाव हैं। आपके पुत्र श्री देवीचन्दजी अभी शिशु हैं। इस समय आपके यहां सेठ फतेमल श्रीमलके नामसे गुलेदगुड्डमें साहुकारी व्याज तथा खण, साड़ी, चोली आदि कपड़ेका व्यापार होता है। गुलेदगुड्डके आप प्रधान धनिक है। आपका परिवार जैन श्वे० स्था० आम्नाय को माननेवाला है।

सरदार उत्तमचन्दजी भंडारी, पूना

इस परिवारका मूल निवासस्थान पीपाड़ (मारवाड़) है। वहांसे ३-४ पीढ़ी पूर्व यह कुटुम्ब व्यापारके लिये दक्षिण प्रान्तमें आया। इस परिवारके पूर्वज सेठ सरदारमलजी दौंडके पास पेड़गाँव नामक स्थानपर लेनदेन कृषिका कार्य्य करते थे। इनके पुत्र तुलसीरामजी भंडारी भी पेड़गाँवमें यही कार्य्य करते रहे। आपके उत्तमचन्दजी तथा फकीरचन्दजी नामक २ पुत्र हुए।

श्री उत्तमचन्दजी भंडारीका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। अपने पिताजीके स्वर्गवासके समय आप केवल १५ सालके थे। आपकी आरम्भिक स्थिति बहुत साधारण थी, लेकिन आप होनहार तथा होशियार प्रतीत होते थे। लगभग ३० साल पूर्व आप पेडगाँवसे पूना आ गये, तथा वहां गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। युरोपीय युद्धके समय आपको व्यापारमें अच्छी सफलता प्राप्त हुई, जिससे आपके सम्मान तथा सम्पत्तिमें विशेष उन्नति हुई। आपकी व्यापारिक चतुराई एवं मिलनसारीके उत्तम स्वभावके कारण आप व्यापारिक समाजमें "सरदार' के नामसे सम्बोधित किये जाने लगे। सन् १९२१ में आपने पूनसांने देवसी नामक फर्म

स्थापित की तथा उसके आप भागीदार हुए। पश्चात् आपने देवसी गंगाधर फर्म भागीदारी रूपमें स्थापन किया। एवं इन फर्मोंके व्यापारको अच्छा उत्तेजन दिया। तत्पश्चात् आपने ज्योतिप्रसाद दौलतराम फर्मकी भागीदारीमें व्यापार प्रारंभ करवाया एवं इस फर्मके व्यापारको भी आपके हाथोंसे अच्छा उत्तेजन मिला। वर्त्तमानमें आप इसी फर्मका संचालन करते हैं तथा पूनाके गल्लेके व्यापारियोंमें समझदार तथा वजनदार व्यक्ति माने जाते हैं। इस समय आप ग्रेन मर्चेंट एसोशियेसन पूनाके वायस प्रेसिडेंट तथा कोर्टमें सेशन ज्यूररके पदसे सम्मानित हैं। कई स्थानोंसे आपका यरोदा, थाना तथा बीजापुर आदि जेलोंकी कंट्राक्टिंगका काम होता था। इधर ४ सालोंसे आपने वीसापुर (अहमदनगर) जेलके कंट्राक्टिंगका काम आरंभ किया एवं इस समय इसका संचालन आपके पुत्र श्री बाबूलालजी भंडारी करते हैं। श्री रिखब-दासजी उर्फ बाबूलालजी भंडारीका जन्म मार्च सन् १९१३ में हुआ। आपने मेट्रिकतक अध्ययन किया है। आप बड़े सुशील तथा होनहार युवक हैं तथा आपने कंट्राक्टिंग कार्य्यको बड़ी तत्परतासे सम्भालते हैं।

भंसाली

लाला जटमलजी भंसालीका खानदान, देहली

इस खानदानवालोंका मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड़) का था। आपलोग भंसाली गौत्रके श्री जैन श्वे० म० मार्गीय सज्जन हैं। यह परिवार करीब २५० वर्षोंसे देहलीमें निवास कर रहा है। इस परिवारमें लाला जटमलजी हुये। आपके नूनकरणजी एवं नूनकरणजीके शुभकरणजी तथा एक और इस प्रकार दो पुत्र हुए। इनमें दूसरे पुत्रका परिवार यहांसे जयपुर चला गया। लाला शुभकरणदासजी तक आपलोग जवाहरातका व्यापार करते रहे।

लाला शुभकरणदासजी—आप बड़े सच बोलनेवाले व धार्मिक व्यक्ति हो गये हैं। आपने नौघरेके मन्दिरमें वासपूत स्वामीजी की मूर्त्ति सं० १८८७ की माघ सुदी ५ को प्रतिष्ठित करवाई। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन होलीके दिनोंमें आपके द्वारा एक मुसलमानका खून हो गया था। इस बातकी बादशाहसे जिक्र करके आपने इसका पश्चाताप करना चाहा। तब बादशाहकी मरजीसे आपने मालीवाड़ में अपने मकानके सामने एक मसजिद बनवाई। आपके मथुरादासजी, गंगादासजी, कन्हैयालालजी एवं खेमराजजी नामक चार पुत्र हुए।

लाला गंगादासजीका खानदान—लाला गंगादासजी व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने सबसे पहले अपने फार्मपर ठप्पेका व्यापार शुरू किया जिसमें आपको बहुत सफलता प्राप्त हुई। आपने अपने इस व्यवसायको इतना बढ़ाया कि आजतक आपके वंशज ठप्पेवालेके नामसे मशहूर
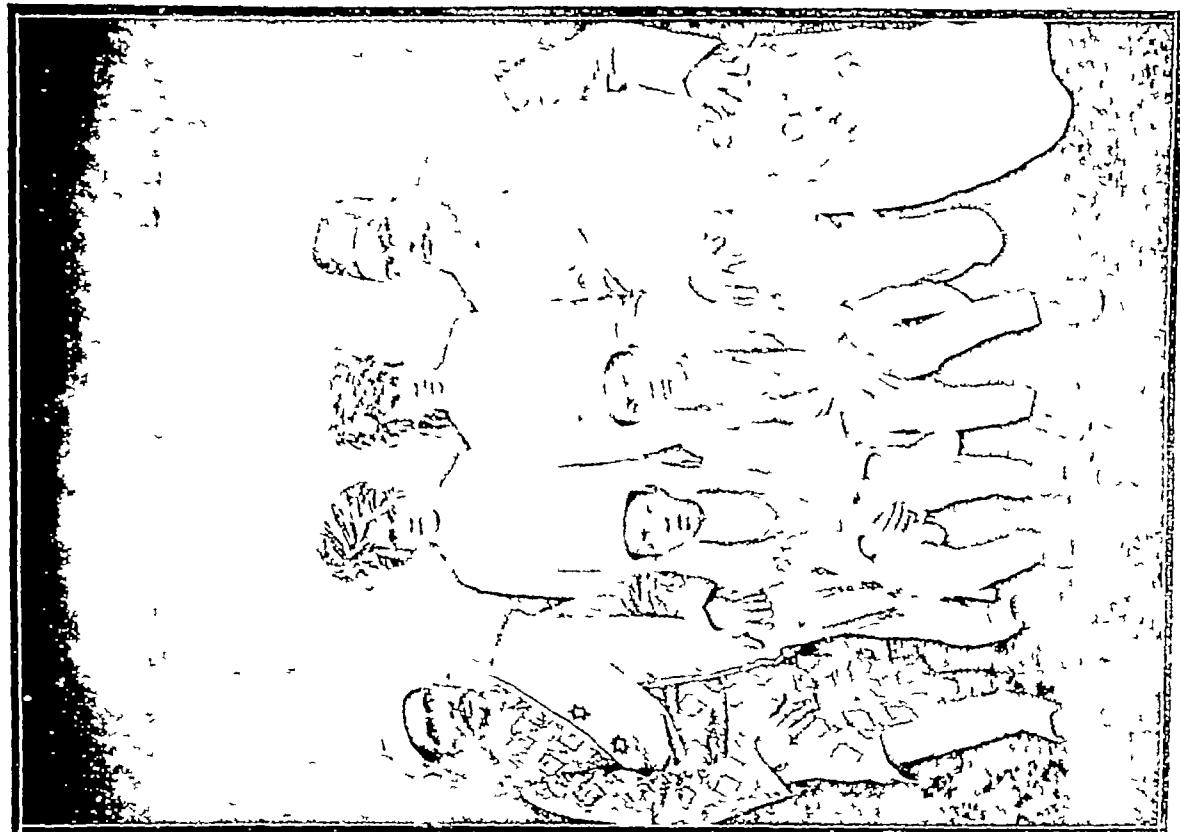
बाईं ओरसे—प्रथम लाला मोतीलालजी भंसाली अपने पुत्रों सहित

लाला मुकुन्दलालजी भंसाली, देहली

बा० कुंदनमलजी S/o सेठ [illegible]

हैं। आप धार्मिक वृत्तिवाले व्यक्ति थ। आपने सिद्धाचलजी आदि तीर्थ स्थानोंकी यात्रा की थी। आपके जिम्मे नौघरेके मन्दिरके भण्डार की व्यवस्थाका कार्य भी रहा था व आपके पुत्र लाला चुन्नीलालजीके पास चिरेखानेके मन्दिरके भण्डारका कार्य्य रहा। उसके पश्चात् आपने उक्त कार्य्य अपने भतीजे लाला माठूमलजीके सुपुर्द किया। लाला चुन्नीलालजीका जन्म सं० १८८६ के मगसर सुद १ को हुआ। आपने अपने ठप्पेके व्यापारको बढ़ाया तथा देहलीकी ओसवाल समाजमे अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप उस समय ठप्पेके काममे प्रसिद्ध व्यक्ति हो गए हैं। आपके हीरालालजी नामक एक पुत्र हुये।

लाला हीरालालजीका जन्म सं० १९०७ में हुआ। आप भी अपने ठप्पेके व्यापारको करते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९६७ की चैत वदी १ को हुआ। आपके मोतीलालजी, जवाहरलालजी, बब्बूमलजी, पन्नालालजी एवं छोटेलालजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमें जवाहरमलजी तथा छोटेलालजीका जन्म क्रमशः सं० १९४६, १९५२ तथा १९५६ का व स्वर्गवास सं० १९५८ की चैत सुदी नवमी, १९७० की आसोज वदी ११ तथा १९६५की फाल्गुन ५ को हुआ।

लाला मोतीलालजीका जन्म सं० १९४३ की आषाढ़ वदी को हुआ। आप मिलनसार तथा अपने फार्मके व्यापारके प्रधान संचालक हैं। आपने अपने फार्मपर गोटेका व्यापार शुरू किया है। आपके रतनचन्दजी, नेमचन्दजी श्रीचन्दजी एवं विजयचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें रतनचन्दजीका आसोज सुदी ११ सं० १९७१ को स्वर्गवास हो गया। लाला बब्बूमलजी का जन्म सं० १९४८ मे हुआ। आप भी मिलनसार तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप मेसर्स मोतीराम नरसिंहदासके नामसे सूरतवालोंके साझेमें गोटे वगैरहका व्यापार करते हैं। आपके कुन्दनलालजी, इन्द्रचन्द्रजी एवं केशरीचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं जिनमें कुन्दनलालजी तथा केशरीचन्दजी गुजर गए हैं। लाला मोतीलालजी तथा बब्बूलालजीने बहुतसी यात्रा भी की हैं।

लाला कन्हैयालालजीका खानदान:—लाला कन्हैयालालजीने अपने यहांपर गोटेका व्यापार सं० १९१० से बहुत बड़े स्केल पर शुरू किया जिसमे आपको बहुत सफलता मिली। आपका दूसरा नाम कन्नूजी था तथा उस समय आप कन्नूजी किनारी वालेके नामसे मशहूर थे। आपके नामपर मेड़तासे गुलाबसिंहजी गोद आये। आपका जन्म संवत १९०३ मे हुआ। आपने भी गोटेका व्यापार किया। आपका स्वर्गवास सं० १९३३ मे हुआ। आपके माठूमलजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

लाला माठूमलजी:—आपका जन्म सं० १९३१ की कार्तिक सुदी १ को हुआ। आप मिलनसार एवं अनुभवी सज्जन हैं। आपने अपने गोटे के व्यापारको विशेष तरक्की पर पहुचाया। वर्तमानमें आपकी फैक्टरी पर मे० कन्नूजी माठूमल एण्ड सन्स नाम पड़ता है। आपने इसके पश्चात् सन् १९०८ मे आर्ट प्रिंटिंग वर्क्सके नामसे एक प्रेस भी खोला था। इसी प्रेसमें दिल्ली केपिटल डायरेक्टरी (Delhi Capital Directory) भी छपी थी। आपके

यहांसे हिन्दी समाचार नामक एक साप्ताहिक पत्र भी निकाला गया था जिससे राजनैतिक जागृति करनेमें बहुत सहायता देशको मिला करती थी। कुछ वर्ष पश्चात् आपको गवर्मेन्टकी क्रूर दृष्टि होनेके कारण अपना अखबार तथा छापाखाना भी बन्द कर देना पड़ा।

आपने सन् १९१४ के महायुद्धके समय अपने यहांपर जर्मनीके मुकाबिलेका कलाबत्तू बनाया था। सन् १९१६ की बदायूं प्रदर्शनीमें इसके लिये आपको एक फर्स्ट क्लास स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया था। उसी समय आपने अपने कलाबत्तू व गोटेके व्यवसायको विशेष रूपसे चमकानेके लिये अपनी एक शाखा बंगलोरमें भी खोली थी। देहलीके अन्तर्गत कला-बत्तूके व्यापारकी इतनी तरक्कीका श्रेय आपहीको है। मैसूर राज्यसे भी आपको एक रौप्य-पदक प्रदान किया गया है।

आपके विचार सुधरे हुए एवं धार्मिक भाव उदार हैं। आपके जिम्मे चिरेखानेके श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथजीके मन्दिर तथा कुतुबके पास की जिनचन्द्रसूरिजीकी दादाबाड़ीके के समाधि स्थानकी व्यवस्थाका कार्य भी है। इन स्थानोंकी आपने सफलता पूर्वक व्यवस्था की है। आप दो तीन बार देहलीसे जै० श्वे० कान्फ्रेन्समें डेलीगेट बनाकर भी भेजे गये थे। कलकत्ता गवर्नरके ऊपस्थानेके वास्ते आनेके समय आप देहली प्रान्तसे प्रतिनिधिके रूपमें भेजे गये थे जहांपर आपने रा० ब० बद्रीदासजी जौहरीके साथ काम किया। इसी तरह कई संस्थाओंमें आपने कार्य किया है। आपके धनपतसिंहजी, रामचन्द्रजी, लछमणसिंहजी एवं नरपतसिंहजी नामक चार पुत्र हैं।

लाला धनपतसिंहजीका जन्म सं० १९५२ की माह वदी ४ को हुआ। आप मशीनके काम में होशियार तथा अच्छे व्यवस्थापक हैं। आप वर्तमानमें तीन सालोंसे देहली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स लि० में असिस्टंट वीविंग मास्टर हैं। सन् १९३४ में खोली गई इसी मीलकी लायलपुरकी शाखाकी मशीनरीको जमानेके तथा पंजाब गवर्नर द्वारा उद्घाटित करनेकी सारी व्यवस्था आपहीके सुपुर्द थी जिसे आपने सफलतापूर्वक पूरा किया। आपने दो पुस्तकें भी लिखी हैं। आपकी धर्मपत्नी दिल्ली प्रांतमें वैद्यक परीक्षामें सर्वप्रथम पास हुईं। मद्रास वैदिक यु० से आपका इसके उपलक्षमें एक स्वर्णपदक भी प्राप्त हुआ है। आपके सरदार सिंहजी, श्रीपतसिंहजी एवं महेन्द्रसिंहजी नामक तीन पुत्र हैं जिनमें प्रथम व्यापारमें भाग लेते हैं। लाला रामचन्द्रजी एवं लछमण सिंहजी दोनोंका जन्म सं० १९६७ की फाल्गुन सुदी ४ को हुआ। आप दोनों इस समय व्यापारमें भाग लेते हैं।

लाला माठूमलजीकी पुत्री कुमारी मीनादेवी तीक्ष्णबुद्धिवाली थीं। आप मिडिल परीक्षामें सारी पंजाब यु० में प्रथम पास हुई थीं जिसके फलस्वरूप आपको स्कूलकी ओरसे एक स्वर्णपदक भी मिला था। मगर आप १७ सालकी आयुमें स्वर्गवासी हो गयीं। इसी प्रकार श्रीमती धनवती देवी (माठूमलजीकी द्वितीय पुत्री) को भी अपनी तीक्ष्ण बुद्धिके कारण एक स्वर्णपदक प्राप्त हुआ था।

लाला माठूमलजी भंसाली अपनी पत्नी, पुत्र, पुत्रवधुओं एवं पौत्रों सहित, देहली

श्रीमती धन्नीदेवी D/o माठूमलजी भंसाली, देहली

कुमारी मीनादेवी D/o माठूमलजी भंसाली, देहली

इस खानदान वालोंने अपने यहांपर पर्दाप्रथाको बिलकुल तोड़ दिया है।

लाला मुकुन्दलालजी प्यारेलालजी भंसालीका खानदान, देहली

इस खानदानवाले मारवाड़ निवासी भंसाली गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० संप्रदायको माननेवाले हैं। यह परिवार बहुत सालोंसे देहलीमें ही निवास कर रहा है। इस खानदानमे लाला प्यारेलालजीकी धर्मपत्नी मन्दिर मार्गीय थीं। इस परिवारमें कस्तूरचन्दजी हुए। आपके लक्ष्मीनारायणजी तथा लक्ष्मीनारायणजीके मेहरचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग गोटा व टोपीका व्यापार करते रहे।

लाला मेहरचन्दजीः—आप व्यापार कुशल तथा मिलनसार व्यक्ति हो गये हैं। आप अपने फर्म पर गोटे व टोपीका व्यापार करते रहे तथा इसमें बहुत सफलता प्राप्त की। आप देहलीकी ओसवाल तथा स्थानकवासी जैन समाजमे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप टोपीवालोंके नामसे मशहूर थे। आपके मोहनलालजी, छुट्टनलालजी, प्यारेलालजी तथा मोतीलालजी नामक चार पुत्र हुए।

लाला प्यारेलालजीका परिवारः—आपभी गोटेका व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास १६।२० वर्षकी छोटी ऊमरमें ही हो गया है। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर सेठ समीरमल पारखके पुत्र मुकुन्दलालजी पालीसे गोद आये।

लाला मुकुन्दलालजीका जन्म संवत १६६४ में हुआ। आप योग्य देशभक्त, उत्साही तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने सन् १६२१ के असहयोग आन्दोलनमें भी भाग लिया था। इसके पश्चात् सन् १६३१ के आन्दोलनमें आपने बहुत भाग लिया जिसके कारण आप तीन वार जेल हो आये हैं। आप सार्वजनिक स्पीरीटवाले युवक हैं। आपने सन् १६३० में एक राष्ट्रीय संघ स्थापित किया था जिसमें आपके खर्चेसे ५० वालंटीयर तयार किये गये थे। उस संस्थाका काम विदेशी नकली घी पर पिकेटिङ्ग करना था। इसी प्रकार कांग्रेसमें गरमा गरम भाग लेने पर आपको अनेकों कष्टोंका सामना करना पड़ा था। आप मजूर एवं गरीब जनताके शुभचिन्तक तथा सार्वजनिक कामोंमें उत्साहसे भाग लेनेवाले युवक हैं। कई कांग्रेस अधिवेशनोंपर आपको देशके पूज्य नेताओंके साथ रहनेका अवसर भी मिला है। आप मजदूर संघके आर्गेनाइजर हैं।

आपने अपने हाथोंसे जवाहरातके व्यापारमें काफी सम्पत्ति कमाई। आपने अपनी स्वर्गीया माताजीके स्मारकमें एक जवाहर लायब्रेरी स्थापित कर उसे २१ नवम्बर सन १६३५ को प्रख्यात विदूषी महिला कमलादेवी चट्टोपाध्याय द्वारा उद्घाटित करवाया। इसके अतिरिक्त नौघरेके जैन मन्दिरमें भी आपने अपनी माताजीकी यादगारमें एक वेदी बनवाई है।

आप कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टीके कोषाध्यक्ष तथा किसान संघके देहली प्रान्तके आर्गेनाइजर हैं। आपके हुकुमचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

बेंगाणी

सेठ माणिकचन्दजी बुधमलजी बेंगाणी, दिनाजपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवास स्थान बीदासर (मारवाड़) है। बहुत पहले यह खानदान मेडतामें निवास करता था। मेडतासे इस खानदानके पूर्व पुरुष नागौर डिडवाना होते हुए बीदासरमें आकर निवास करने लगे। तभीसे करीब ३०० वर्षोंसे आपलोग बीदासर-में रह रहे हैं। आपके रहनेका मकान भी ३०० वर्ष पूर्वका बना हुआ है।

इस खानदानमें आगे चलकर सेठ जेसराजजी और बुद्धसिंहजी हुए। आप दोनों बन्धु देशसे करीब १०० वर्ष पहले व्यापार निमित्त कलकत्ते गये और यहांपर सराफीका काम-शुरू किया। आगे जाकर आप लोगोंका व्यवसाय अलग हो गया।

सेठ जेसराजजीः—आप बड़े उद्योगी तथा साहसी व्यक्ति थे। आपके आसकरणजी नामक एक पुत्र हुए। आपने अपनी दूकानपर कुस्टेका व्यवसाय चालू किया। आपका संवत् १६६८ स्वर्गवास हो गया।

सेठ आसकरणजीके इन्द्रचन्द्रजी नामक एक पुत्र हुए। आपका संवत् १६०५ में जन्म हुआ। आपने भी अपने व्यापारको बढ़ाया व कलकत्तेमें अपनी फार्मपर कुस्टेके व्यापारको प्रारम्भ किया। संवत् १६४८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके मन्नालालजी, प्रतापमलजी एवं उदयचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों बन्धुओंका जन्म क्रमश. संवत् १६२६,१६३५ तथा १६४० में हुआ। आप सब बन्धु बड़े समझदार तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हैं। इधर चार सालोंसे आपलोग कपड़ेका व्यवसाय कर रहे हैं। सेठ प्रतापमलजीके सोहनलालजी एवं मांगीलालजी नामक दो पुत्र हैं। आपलोग भी दूकानके व्यापारमें भाग लेते है। बाबू मोहनलालजीके श्री प्रेमचन्दजी, माणिकचंदजी, बुधमलजी; तथा मंगलचन्दजी नामक चार पुत्र हैं, इनमेंसे बड़े व्यापारमे भाग लेते व शेष पढ़ते हैं

आप लोगोंका दीनाजपुरमें मे० माणकचन्द बुधमलके नामसे कपडेका एवं कलकत्तेमें मे० इन्द्रचन्द बुधमलके नामसे आर्मेनियम स्ट्रीटमें आढ़तका कामकाज होता है। बीदासरमें आप लोगोंका खानदान प्रतिष्ठित समझा जाता है।

चौधरी

चौधरी दीपचन्दजी हंसराजजीका खानदान, नीमच सिटी

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान मांडू (सेन्ट्रल इंडिया) का था। आप लोग धूपिया चौधरी गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी आम्नायके माननेवाले हैं। आप मांडूसे नीमच आकर बसे।

इस खानदानमें चोधरी उदयभानजीके पुत्र सांवलदासजी हुए। आपके दीपचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। आप बड़े प्रभावशाली व्यक्ति हो गये हैं। आपके खानदानमें प्रारम्भसे ही जमीदारी तथा चोधरायत का कामकाज होता रहा है। आपने तथा आपके पुत्र हंसराजजीने नीमच सिटीके अन्दर सम्वत १८७० में एक सुन्दर श्री शांतीनाथजीका मन्दिर बनाया जिसमें करीब १॥ लाख रुपया खर्च हुआ होगा। श्री हंसराजजीके हुक्मीचन्दजी, पूरनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

चौधरी हुक्मीचन्दजी—आपका जन्म संवत् १८५० के करीब हुआ। आप इस खान्दानमें प्रसिद्ध, वजनदार, साहसी तथा आत्मसम्मानवाले व्यक्ति थे। आपने मेवाड़ राज्यमें श्री महाराणा सरूपसिंहजीके वक्तमें सरूपगंज, गारियावास, चोहानखेड़ा आदि सात गांव बसाये तथा नीमचसे लोगोंको लेजाकर अपने सर्फेसे गाँव आबाद किये। कुछ समय पश्चात् वहांके हाकिम और आपमें मनमुटाव होनेके कारण उदयपुरके महाराणा साहबने आपको उन सात गाँवोंकी जागीरदारीके बजाय जमीदारी रखनेका हुक्म दिया। तब इसे आप अपने आत्मा सम्मानके खिलाफ समझकर सब छोड़कर नीमच चले आये व अपना कार्य सम्हालने लगे। आप मिलनसार एवं धार्मिक व्यक्ति थे। आपका संवत् १९१२ में स्वर्गवास हुआ। आपके सुखलालजी, हीरालालजी, टेकचन्दजी, माणकचन्दजी, काशीरामजी तथा जोरावरसिंहजी नामक छः पुत्र हुए।

सुखलालजी चौधरी बड़े साहसी व्यक्ति थे। एक समय आपने उदयपुर स्टेटके खजाने को भीलवाड़ेकी ओरसे उदयपुर जाते समय डाकुओं द्वारा लूट जानेसे बचानेमे सहायता पहुंचाई थी। उस समय डाकू गिरफ्तार भी कर लिये गये थे। इसपर उदयपुरके महाराणा साहबने प्रसन्न होकर आपको भीलवाड़ा जिलेकी हाकिमी इनायत की। आपके हजारीमलजी तथा अजीतसिंहजी नामक दो पुत्र हुए।

हीरालालजी बड़े सीधे तथा मिलनसार थे। आपके हरकचन्दजी व नथमलजी नामक दो पुत्र हुए।

चौधरी टेकचन्दजीका परिवार :—आपका जन्म संवत् १८८७ का था। आप प्रभावशाली एवं माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपने परिवारके सम्मानको बढ़ाया तथा ग्वालियर दरबारमें नजर व निछरावलका स्थान प्राप्त किया। आज भी आपके वंशज हुकमचन्द

टेकचन्दके नामसे मशहूर हैं। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे सम्पत्ति भी बहुत उपार्जित की। आपका स्वर्गवास सं० १६४२ में हुआ। आपके जालिमसिंहजी, पन्नालालजी तथा नाहरसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

चौधरी जालमसिंहजीका जन्म सं० १६१० का था। आप अपनी जमीदारी एवं साहुकारीके कार्य्यों को संभालते हुए सं० १६८१ में स्वर्गवासी हुए। आपके केसरीसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

श्रीकेसरीसिंहजीका जन्म सं० १६३६ में हुआ। आपने अपने पिताजीकी स्मृतिमें यहां पर एक बाग, छत्री व बावड़ी बनवाई। वर्तमानमें आप ही अपनी जमीदारी व साहूकारीके कामोंको योग्यता पूर्वक सम्भालते हैं।

श्रीपन्नालालजीका परिवार—आपका जन्म सं० १६२१ में हुआ। आप भी बड़े प्रतिष्ठित तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। आपने नीमचमें १६ वर्ष तक सरपंची (ग्वालियर स्टेट) की ओरसे की। आप वर्तमानमें डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, परगना बोर्ड म्युनिसिपल कमेटी, ओकाफ कमेटी, जमीदार कमेटी व प्रेसिडेंट कृषीहितकारिणी सभा नीमच व जावद तथा हुजूर दरबारमें जूडीशियन एण्ड ला में बतौर मश्वरेके मेंबर मुकर्र र हुए हैं। इन सब सेवाओंके सिलसिलेमें ग्वा० गवर्नमेंटकी ओरसे आपको कई सार्टिफिकेट्स, पोशाकें व तगमा अता हुए हैं। आपकी सलाह वजनदार व कीमती समझी जाती है। सं० १६५१ में यहां नाज की मँहगाईके समय आपने अपने धानके कोठे लोगोंके लिये खोल दिये और अपनी दरिया दिलीका परिचय दिया। इसपर दरबार ग्वालियरने खुश होकर आपको बेठ बेगार माफका परवाना हमेंशाके लिये अना किया। आपने एक समय हिन्दू मुसलिमके दगेको बुद्धिमानीसे समझा कर बचाया था। ग्वालियर स्टेटने प्रसन्न होकर आपको मेडिल (तगमा) अता किया। आपने धार्मिक क्षेत्रमें भी करीब २५, ३० दीक्षा उत्सव कराये। यहांकी समाज तथा राज्यमें आपकी काफी प्रतिष्ठा है।

आपके श्रीमाधवसिंहजी नामक पुत्र हुए। आप बड़े अनुभवी और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपका जन्म सं० १६३६ में हुआ। आप वर्तमानमें अपनी जमीदारीके सारे काम काज को सम्भाल रहे हैं। आपको घोड़ेपर चढ़नेका काफी शौक है। आपके पुत्र उमरावसिंहजीका जन्म सं० १६६२ में हुआ। आप सुधरे हुए खयालोंके उत्साही युवक हैं। आपहीने सर्व प्रथम नीमच सिटीमें शुद्धि कार्य्य किया है। आपको बन्दूक चलानेका शौक है। आपको इसके लिये एक चांदीका तगमा भी ग्वा० स्टेटने इनायत किया है। आपको कई सर्टिफिकेट भी मिले हैं। आपके राजेन्द्रसिंहजी एवं सत्यप्रसन्नसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

श्रीनाहरसिंहजीका परिवार :—आपका जन्म सं० १६३० में हुआ। आप भी परगना बोर्ड, म्यु० कमेटी आदिके मेम्बर तथा को-आपरेटिव बैंक परगना नीमचके डायरेक्टर व खजांची रहे। आप यहांके प्रतिष्ठित एवं योग्य व्यक्ति हो गये हैं। आपको ग्वा० स्टेटकी ओरसे सर्टिफिकेट एवं पोशाकें प्रदान की गई हैं। आपने अपनी जमीदारी व फर्मका काम योग्यतासे

सम्भाला। आपका स्वर्गवास सं० १६८२ की चैत्र वदी ४ को हुआ। आपके उदयसिंहजी एवं मदनसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें उदयसिंहजीका जन्म सं० १६६४ में हुआ। आपही वर्तमानमें अपने सारे कामको सम्भाल रहे हैं। आपके प्रतापसिंहजी एवं लक्ष्मणसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

श्रीमाणिकचन्दजीका परिवार:—आपका जन्म सं० १८६५ एवं स्वर्गवास सं० १६६३ में हो गया। आपके राजमलजी तथा रतनलालजी नामक दो पुत्र हुए। राजमलजीके पुत्र मनोहरसिंहजी नीमच (ग्वा० स्टेट) में वकालत कर रहे हैं।

श्रीरतनलालजीका जन्म सं० १६४२ मे हुआ। आप जमींदारी व साहूकारीके कामको सम्भालते रहे। आपके सज्जनसिहजी, भूपालसिहजी एवं फतेसिहजी नामक तीन पुत्र हैं। श्री सज्जनसिहजी शिक्षित एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपको स्थानकवासी कान्फ्रेन्ससे "जैन विशारद" की पदवी प्राप्त हुई है। आप जैन पथ प्रदर्शक आगरा नामक साप्ताहिक पत्रके सम्पादक रहे। तदनंतर आपने बाम्बे हाईकोर्टसे एडवोकेटकी उच्च डिग्री प्राप्त की। आप ग्वालियर स्टेटमें वकालत पहिली जुलाईसे शुरु करेंगे। आपके यशवन्तसिहजी नामक एक पुत्र हैं। चौधरी काशीरामजीके परिवारमें इस समयमें श्रीमन्नालालजी हैं। आप कपड़ेके व्यापारी हैं। चौधरी जोरावरसिंहजीका कम उम्रमें देहान्त हो गया था।

यह खानदान यहांकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित तथा मातबर माना जाता है। इस खानदान वाले स्व० पितामह चौधरी हुकमीचन्दजीके स्मारकमें "हुकमीचन्द जैन भवन" को सुन्दर रुपमे निर्मित करा रहे हैं। आप लोगोंके यहां पर सन् १६१६ में श्रीमंत जार्ज जीयाजीराव महाराजके जन्म उपलक्षमें जलसेमें स्वयं पोलिटिकल एजण्ट मि० लुकाट सदर्न इण्डियाने पधार कर आपको सम्मानित किया। आपकी वर्तमानमें नीमच डिस्ट्रिक्टमें ३ गांव जागीरीमें व ३० गांव जमीदारीमें है।

दूगड़

श्री सहसकरणजी दूगड़का खानदान, दिनाजपुर

दूगड़ परिवारकी उत्पत्ति का इतिहास हम दूगड़ गौत्रमें लिख चुके हैं। दूगड़ और सूगड़ नामक दोनों बन्धुओंसे दूगड़ और सूगड़ गौत्रकी उत्पत्ति हुई। इन्हीं दूगड़जीके परिवारमेंसे शीतलजी नामक व्यक्ति केलगढ़ नामक स्थानपर जाकर रहे। वहांसे फिर डिडवाना आये। डिडवानासे सरदारसिंहजी राजगढ़ आये। राजगढ़से इसी परिवारके व्यक्ति सवाई सिंहजी श्रीनगर नामक स्थानपर जाकर बसे। यहांसे फिर गोमजी किशनगढ़ (राजपूताना) में निवास करने लगे। तभीसे यह खानदान किशनगढ़में निवास कर रहा है। इसी परिवारमें अजीमगंजका प्रसिद्ध दूगड़ परिवार है जिनका इतिहास दूगड़ गौत्रके प्रारम्भमें दिया गया है।

किशनगढ़में इस खानदानमें सवाईसिंहजी और उनके पुत्र गुमानसिंहजी हुए। आप दोनों साधारण साहुकारीका काम काज करते रहे। सेठ गुमानसिंहजीके कजोड़ीमलजी और कस्तूरचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ कस्तूरचन्दजी बड़े परिश्रमी, मेधावी एवं अध्यवसायी सज्जन हुए। आपको अजीमगंजवाले प्रतापसिंहजी अपने देशकी तरफ ले गये थे। वहांपर आपने बड़ी कोठीमें महाराजबहादुरसिंहजीके यहां मुनीमात का काम किया। कुछ समयके पश्चात् आपने मेसर्स कजोड़ीमल कस्तूरचन्दके नामसे कपड़ेका व्यापार भी प्रारम्भ किया। आपने कोठीकी मैनेजरी और अपने फर्मके व्यवसायमें बहुत तरक्की की। आपका वहांपर बहुत सम्मान रहा। आपके आसकरणजी तथा शेषकरणजी नामक दो पुत्र हुए। आसकरण-जी इस समय मे० ज्ञानचन्द पूरनचन्दके यहां मुनीम हैं। आपके अमरविजयसिंहजी, इन्द्र-विजयसिंहजी, राजविजयसिंहजी, रतनविजयसिंहजी एवं सौभाग्यविजयसिंहजी नामक पांच पुत्र हैं।

सेठ शेषकरणजी—आपका जन्म संवत् १९३५ मे हुआ। आप बड़े मिलनसार, सज्जन हैं। आप आजकल महाराजबहादुरसिंहजीकी दिनाजपुर फर्मपर जमींदारीके सारे कामकाजकी मैनेजरीका काम काज करते हैं। आप स्थानीय म्युनिसीपैलिटीके २१ वर्षतक मेम्बर और डिस्ट्रिक्ट बोर्डके ६ सालतक मेम्बर रहे। इसके अतिरिक्त आप यहांकी मरचेंट एसोसियेशन-के प्रेसिडेंट व गौशालाके प्रेसिडेंण्ट हैं। आपका यहांकी जनतामें अच्छा सम्मान है। आपकी यहांपर अच्छी जमींदारी है जिसका काम मे० सहसकरण झूमरमल श्रीचंदके नामसे होता है। आपके झूमरमलजी, सूरजमलजी एवं सोहनलालजी नामक तीन पुत्र हैं।

बाबू झूमरमलजीका जन्म सम्वत् १९६५ में हुआ। आप एम० ए० तक पढ़े हुए हैं और वर्त्तमानमें बालूवरघाटकी महाराजबहादुरसिंहजीकी जमींदारीके मेनेजर हैं। सूरजमल-जी मेट्रिकतक पढ़े हैं और अपनी घरू जमीदारीका काम काज देखते है। इसके साथ ही आप मे० सूरजमल सोहनलाल नामक फर्मपर गनीका काम काज देखते हैं। बाबू सोहनलालजी भी अपनी जमीदारी तथा फर्मका कामकाज देखते हैं। आप तीनों बन्धु भी मिलनसार सज्जन हैं।

सेठ नानचन्दजी भगवानदासजी दूगड़, घोड़नदी

इस परिवारका प्रथम निवास गोठण (मारवाड़) था, पर वहांसे यह कुटुम्ब हरसाला (नागोरके पास) आकर निवास करने लगा। मारवाड़से लगभग १०० साल पहिले सेठ रामचन्द्रजी दूगड व्यापारके निमित्त घोड़नदी आये तथा अपने जातिबन्धु सेठ बाघजी दूगड़ के साथ भागीदारीमें करडा नामक स्थानमें लेनदेनका कारबार आरम्भ किया। सेठ बाघजी तथा उनके छोटे भाई सरूपचन्दजी घोड़नदीमें और सेठ रामचन्द्रजी करड़ामें निवास करते थे। सेठ रामचन्द्रजीके अमरचन्दजी, प्रतापमलजी, लच्छीरामजी, हमीरमलजी तथा जवाहर-

सेठ बुधमलजी भण्डारी, जयपुर

बाबू सहसकरणजी दूगड़, दिनाजपुर (बंगाल)

सेठ अनराजजी कोचर, (अनराज नारायणदास) देहली

बाबू आसकरणजी दूगड़, दिनाजपुर (बंगाल)

मलजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयों मे से सेठ प्रतापमलजीके जोरावरमलजी, नानचन्दजी तथा हीराचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए।

सेठ वाघजी दूगड़के स्वर्गवासी हो जानेके बाद उनके पुत्र सेठ भगवानदासजीने अपने व्यापार तथा सम्मानको विशेष रूपसे बढ़ाया। आप घोड़नदी तथा आसपासकी जैन समाजमें प्रतिष्ठित पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५३ मे हुआ। आपके कोई पुत्र नही था, अतएव आपने सेठ प्रतापमलजीके विचले पुत्र सेठ नानचन्दजीको सम्वत् १९४१ में दत्तक लिया।

सेठ नानचन्दजीका जन्म सम्वत् १९२२ में गोठणमे हुआ। आप पुराने खयालके, प्रतिष्ठित तथा समझदार सज्जन हैं। आसपासकी ओसवाल समाजमें आप गण्यमान्य व्यक्ति माने जाते हैं। आपने घोड़नदी पींजरापोलमें २१३) रुपयोंको सहायता दी है। इसी प्रकार चिंचवड़की पाठशालामे भी सहायता की है। आप श्री अनन्दऋषिजी महाराजके शिक्षणमें ५०) मासिक सहायता देते हैं। स्थानीय म्युनिसिपैलेटी तथा पींजरापोलके प्रेसिडेंट भी आप रह चुके हैं। गराड़ाके सेठ नवलमलजी पारख ने जो २० हजार रुपयोंकी एक रकम व्याकरण शिक्षण उत्तेजनके लिये निकाली है उसके ५ ट्रस्टियोंमेंसे आप भी एक हैं। आपने उस रकमके व्याजसे १६ हजार रुपये शिक्षण कार्यमे खर्च किये हैं तथा इस समयमें और भी अच्छी उन्नति की है।

लाला हीरालालजी दूगड़का खानदान, देहली

इस खानदानके पूर्व पुरुषोंका मूल निवासस्थान लाहौरका था। आप दूगड़ गौत्रके श्री० जे० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस परिवारमें लीलापतिजी हुए। आपके जुलकरणदास जी तथा इनके ताराचन्दजी नामक पुत्र हुए। भारतके ११ वे मुगल सम्राट महम्मदशाहके समय में लाला ताराचन्दजी लाहौरसे देहली आये। आपको शाही तोषे खानेसे १५) मासिक इनायत किया गया व आप शाही जौहरी मुकीम नियत किये गये। आपके नथमलजी तथा सेढ़मलजी नामक दो पुत्र हुए। शाही जवाहरातका काम नथमलजीके वंशजोंके पास रहा, जिन्हें शाही तोषेखानेके १५) मासिक लागके अभीतक मिलते रहे। लाला सेढ़मलजी दलाली करते थे। आपके वख्तावरसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला वख्तावरसिंहजीका जन्म सं० १९२२ में हुआ। आपने दलालीकी और फिर गोट किनारीका ३० सालतक मोहकमसिंहजी चोथराके साझेमे व्यापार किया। आपके इन्द्रजीतजी, हीरालालजी तथा लक्ष्मणदासजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला इन्द्रजीतजीने जवाहरात व वैकिंगके व्यापारमे अपनी सम्पत्तिको बढाया व स्वतंत्र रूपसे अपनी अलग दूकान करने लगे। आपके बतूमलजी तथा बतूमलजीके नामपर हीरालालजीके पुत्र प्यारेलालजी गोद आये। आपके पुत्र रामदासजीका जन्म सं० १९५? की कार्तिक

वदी अमावस्याका है। आप वजनदार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने नौघरेके मन्दिरमें एक बेदी बनवाई। आपही अपने व्यापारको सञ्चालित करते हैं।

लाला हीरालालजी:—आपका जन्म सं० १८८१ की मगसर सुदी ११ को हुआ। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण थे। आपने अपने फार्मके जवाहरातके व्यापारको चमकाया व बहुत सी सम्पत्ति कमाई व स्थायी जायदाद बनाई। आपको कई अंग्रेज उच्च पदाधिकारियों की ओरसे सार्टिफिकेट आदि प्राप्त हुए। आप देहलीकी व्यापारिक समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपका स्वभाव अच्छा व मिलनसार था। आप सं० १९५३ की वैसाख सुदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपके सोहनलालजी, प्यारेलालजी तथा बत्तनलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे प्यारेलालजी तो इन्द्रजीतजीके नामपर गोद चले गये। सोहनलालजीने प्रयत्न करके किनारी बाजारकी धर्मशाला बनवाई तथा आजीवन इसके प्रबन्ध कर्त्ता रहे। नौघरेके जैन-मन्दिरमें सङ्गमरमरकी वासपूत स्वामीकी वेदी भी आपने बनवाई। आपके पुत्र नानकचन्दजीके बब्बूमलजी, खेरातीलालजी तथा रतनलालजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं।

लाला बत्तनलालजीके मोतीलालजी पन्नालालजी व चुन्नीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। मोतीलालजी सराफीका व्यापार करते हैं। आपके मन्नालालजी, चम्पालालजी, मिश्री-लालजी तथा सुन्दरलालजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। लाला पन्नालालजीका जन्म सं० १९५२ की भादवा सुदी ११ का है। आप मिलनसार व्यक्ति हैं व अपने जवाहरातके व्यापार को सञ्चालित कर रहे हैं। आपने सम्वत १९७९ में सुधर्म जैन पुस्तकालय खोला है जिसके आजतक आप आनरेरी सेक्रेटरी व खजांची हैं। आपके पिताजीने गुणायचा की धर्मशालामें एक कोठा बनवाया हैं। लाला पन्नालालजीने कुटुम्ब सहित पञ्चमी तप भी किया है।

धाड़ीवाल

सेठ करणीदानजी चांदमलजी धाड़ीवाल का खानदान, पाली (मारवाड़)

इस खानदानवालोंका मूल निवासस्थान बीकानेरका है। आप धाड़ीवाल गौत्रके श्री जैन श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस परिवारमें सेठ चिमनदासजी, रामचन्द्रजी तथा करणीदानजी नामक तीन भाई हुए।

सेठ रामचन्द्रजी:—आपका जन्म सम्वत १८१३ में हुआ। आप कार्य कुशल, साहसी तथा योग्य व्यक्ति थे। आप बीकानेरसे एलिचपुर चले गये तथा वहां आपने योग्यता पूर्वक कार्य किया। आपका स्वर्गवास सम्वत् १८८९ की फाल्गुन सुदी ७ को हुआ था। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर सम्वत् १८९३ में सेठ सौभागचन्दजी तिंवरीसे गोद आये। सेठ सौभागचन्दजी फिर उस वर्ष बीकानेर से पाली आकर निवास करने लग गये। तभीसे आपके वंशज आजतक यहीं पर निवास कर रहे हैं। आपने पालीमें आकर व्याज व लेनदेनका

व्यापार किया। आप सम्वत् १९२४ में स्वर्गवासी हुए। आपके सूरजमलजी एवं चांदमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ सूरजमलजीका जन्म सम्वत् १९१३ में हुआ था। आपने पालीमें मे० करणीदान चांदमलजीके नामसे फार्म स्थापित कर अपना व्यापार शुरू किया। इस व्यापारमें आपको बहुत सफलता प्राप्त हुई। आपका स्वर्गवास सम्बत् १९५७ की कार्तिक सुदी २ को हुआ। आपके भी कोई पुत्र न था। अतः चांदमलजीके ज्येष्ठ पुत्र केशरीमलजी आपके नामपर गोद आये। सेठ चांदमलजीका जन्म सम्वत् १९१८ का था। आप व्यापार कुशल तथा कार्य्य चतुर व्यक्ति थे। आपने तथा आपके बड़े भाई सूरजमलजीने अपने व्यापारको बढ़ाया और अपनी एक फर्म देहलीमे भी खोली। सेठ चांदमलजीने व्यापारमें खूब उन्नति कर लाखों रुपये कमाये। आपका पालीमें अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७१ की आसोज सुदी १४ को हो गया। आपके केशरीमलजी, कस्तूरचंदजी, वस्तीमलजी एवं हस्तीमलजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें सेठ केशरीमलजी सेठ सूरजमलजीके नामपर गोद चले गये हैं।

सेठ केशरीमलजीका जन्म सम्बत् १९४२ में हुआ। आप योग्य तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने व्यापारको सफलता पूर्वक सञ्चालित कर रहे हैं। आपने जनता की सुविधाके लिये पालीमें एक धर्मशाला भी बनवाई है। सेठ कस्तूरचन्दजीका जन्म सम्वत् १९४४ व स्वर्गवास सम्वत् १९७९ में हो गया। आपके नामपर बाबू कुन्दनमलजी गोद आये थे। उनका भी स्वर्गवास हो गया है। सेठ वस्तीमलजी एवं हस्तीमलजीका जन्म क्रमशः सम्वत् १९५६ तथा १९६१ में हुआ। आप दोनों भी व्यापारमें भाग लेते हैं। सेठ हस्तीमलजीके सोहनलालजी और मोहनलालजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

यह खानदान पालीमें प्रतिष्ठित माना जाता है। आपकी पाली तथा देहलीमें करणीदान चांदमल और चांदमल केशरीमल के नामसे फर्में हैं जिनपर कपड़े व आढ़तका व्यापार होता है।

श्री सेठ पनराजजी अनराजजी धाड़ीवाल, लश्कर

इस खानदानका मूल निवासस्थान नागौर (मारवाड़) का है। यह खानदान अठारहवीं शताब्दीमें बड़ा चमकता हुआ परिवार था। आप लोगोंकी उस समय नागौर, इन्दौर आदि स्थानोंपर दूकानें थीं। जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंहजी ने इस खानदानके सेठ हंसराजजीका वंश परम्पराके लिये जोधपुर-स्टेटमें चौथाई महसूलकी माफी का परवाना सम्वत् १९६१ में इनायत किया था। इसी प्रकार इन्दौरके अधिपति सूबेदार यशवन्तराव होल्कर बहादुरने नागौरके महाराजाधिराज कल्याणसिंहजीको इनके पुत्र पनराजजीके विवाहमें लवाजमा देने एवं बड़ा सम्मानका व्यवहार रखनेके लिये सिफारिशी पत्र दिया था। उस

समय इन्दौरमें भी आपका अच्छा सम्मान था। सेठ हंसराजजीने अपनी एक शाखा लश्कर में भी खोली। आपके जसराजजी, पनराजजी तथा रूपराजजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ पनराजजीः—आपका विवाह जोधपुरके दीवान मेड़ता मुकुन्दचंदजी की बहिनसे हुआ था। आपको २६ दूकानें अपने अधिकारमें मिली थी। आप लश्करमें स्थायीरूपसे निवास करने लगे। आप सम्वत् १९०३ में स्वर्गवासी हो गये थे। अतः सम्वत् १९०८ में इसी परिवारमें रंगराजजी दत्तक आये। सेठ रंगराजजी धार्मिक वृत्तिके पुरुष थे। आपका सम्वत् १९४२ की मगसर सुदी ११ को स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर सेठ रिधराजजी जोधपुरसे सम्वत् १९३१ में दत्तक आये।

सेठ रिधराजजी—आपका जन्म सम्वत् १९२३ की अनन्त चतुर्दशीको हुआ। आरंभसे ही आप उग्र बुद्धिके पुरुष थे। आपने अपने हाथोंसे बहुतसी सम्पत्ति तथा यश सम्पादन किया। इस समय आपकी फर्मके पास ११ स्थानोंके खजाने हैं। लश्करमें जबसे म्युनिसिपेलिटी कायम हुई तबसे आप उसके कमिश्नर हैं। इसके अतिरिक्त आप बोर्ड आफ साहुकारानके प्रेसिडेण्ट तथा लश्कर कोआपरेटिव बैंकके मेनेजिंग डायरेक्टरका पद सुशोभित कर रहे हैं। इसी प्रकार आप कई संस्थाओंके प्रेसिडेंट, व्हाइस प्रेसिडेण्ट, डायरेक्टर तथा मेम्बर हैं। आपका यहांकी जनता व सरकारमें अच्छा सम्मान है। आपकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर ग्वालियर दरबारने आपको कई समय सनदें, रुक्के, पोशाकें तथा नगदी इनाम देकर सम्मानित किया है। सम्वत् १९७४ में आपको एक सिलवर मेडल मिला व सन् १९१७ में गवालियर सरकारके जनानखानेमें आपका पड़दा रखना माफ हुआ। इसी समय आपको कई सम्मानोंसे यहांकी रियासत ने समय समयपर सम्मानित किया। आपके सिधराजजी, सम्पतराजजी, सजनराजजी एवं सुरजराजजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें सजनराजजी का सन् १९३३ में स्वर्गवास हो गया।

श्रीसिधराजजी—आपका जन्म संवत् १९६३ की चैत सुदी १२ को हुआ। आप अपनी फर्मकी दूकानों, खजानों तथा जमींदारीकी देखरेख रखते हैं। आप बड़े सज्जन एवं समझदार पुरुष हैं। आपके बुधराजजी, नागराजजी एव जीवनराजजी नामक तीन पुत्र हैं।

श्री सम्पतराजजी.—आपका जन्म सम्वत् १९६५ की आषाढ़ सुदी ४ को हुआ। आपने एफ० ए० तक शिक्षण पाया। आप इस समय स्थानीय जुडीशियल विभागके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट व म्यु० के आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। इसके अलावा आप ग्वालियर चेम्बर आफ कामर्सके सेक्रेटरी एवं गिर्द गवालियरके ट्रेझरर हैं। आपके सुगनराजजी नामक एक पुत्र हैं।

इस खानदानका मे० पनराज अनराजके नामसे स्टेटके खजांचीशिप और बैंकिंगका व्यापार होता है। इसके अलावा आपका दसई (मालवा) में एक जीन है।

———

सेठ केशरीचन्दजी भाण्डावत जमीदार,
शाजापुर (मालवा)
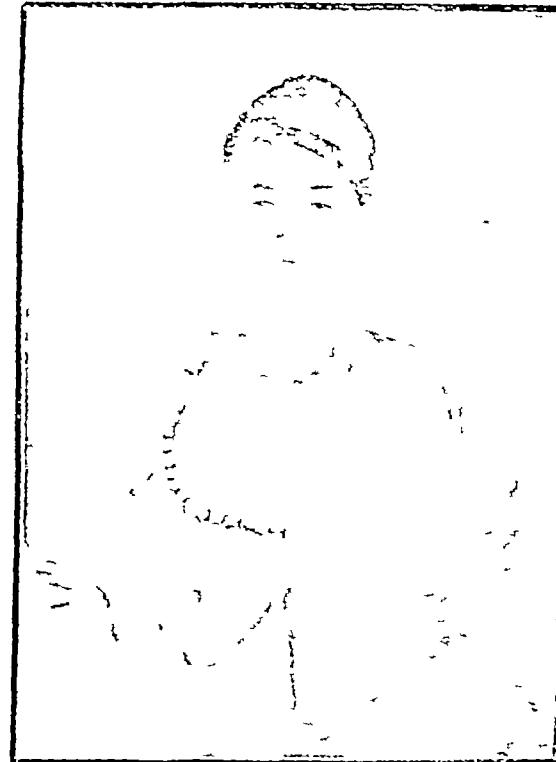
सेठ रिधराजजी, (मे० पनराज अनराज)
लश्कर

बैठे हुए दाहिनी ओर से—(१) सेठ इन्द्रचन्दजी घाड़ीवाल (२) सेठ सुल्तानचन्दजी घाड़ीवाल (३) सेठ मोतीलालजी घाड़ीवाल

सेठ सतीदासजी मुलतानचन्दजी घाड़ीवाल, घोड़नदी

इस परिवारका मूल निवासस्थान पांचला-सिद्धाका (खींवसरके पास जोधपुर स्टेट) का है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ हिन्दूमलजी धाड़ीवाल व्यापारके निमित्त घोडनदीके पास अरोमिरकगनेगांव नामक खेड़ेमें आये। आपकेहस्तीमलजी, ताराचन्दजी तथा अमरचंदजी नामक तीन पुत्र हुए। इन भाइयों ने घोड़नदीमें अपना कृषि तथा साहुकारीका कार्य्य चालू किया। सेठ हस्तीमलजीकेभेरूदासजी, सेठ ताराचन्दजीकेसतीदासजी एवं सेठ अमरचन्दजीके गम्भीरमलजी, गुलाबचंदजी, मुलतानचंदजी, कपूरचन्दजी तथा लच्छीरामजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमेंसे सेठ मुलतानचंदजी सेठ सतीदासजीके नामपर दत्तक गये। आप इस समय विद्यमान हैं। सेठ गुलाबचंदजी एवं सेठ मुलतानचंदजी दोनों बन्धु जातिकी पञ्च पंचायतीमें अग्रगण्य व सम्माननीय व्यक्ति हैं। धार्मिक कार्य्योंमें आपका अच्छा लक्ष है। लगभग ५० वर्ष पूर्वसे इस परिवारका व्यापार अलग२ हो गया है।

सेठ मुलतानचन्दजीके जसराजजी और इन्द्रचन्द्रजी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयोंमें श्री जसराजजी सेठ भेरूदासजीके नामपर दत्तक गये। आपका हालहीमें आसोज सम्वत् १९९२ में सैंतीस सालकी आयुमें स्वर्गवास हो गया है। आप बड़ी धार्मिक प्रवृत्तिके पुरुष थे। इस समय आपके १ सालका शिशु विद्यमान हैं। श्रीचन्दजीका जन्म सम्वत् १९५७ की पौष सुदी १० को हुआ। आप समझदार तथा योग्य व्यक्ति हैं। सरकारने जो ग्राम संगठनकी योजना चालूकी है उस योजनामें भाग लेनेके उपलक्षमें सरकार शिन्दने गोल्डन ज्युबिलीके समय आपको अच्छा मेडिल भेंट किया है। इसी तरह आप स्थानीय लोकलबोर्डके मेम्बर हैं तथा सार्वजनिक कामोंमें उत्साहसे भाग लेते हैं। आप घोड़नदीके आसपासकी जैनसमाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

आपके यहाँ कृषिका बड़े प्रमाणसे काम होता है। लगभग हजार रुपया साल आप सरकारी जमीन टैक्स चुकाते हैं। गनेगांव व अंजनगांवमें आपकी दुकाने हैं जहां सराफी व कृषिका कार्य होता है। आपके पुत्र मोतीलालजीकी वय १८ सालकी है। आप व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस प्रकार इस परिवारमें सेठ गम्भीरमलजीके शोभाचंदजी और पूरनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें पूरनचंदजी सेठ गुलाबचन्दजीके नामपर दत्तक गये। सेठ कपूरचन्दजीके फूलचन्दजी व माणिकचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। इनमें माणिकचन्दजी सेठ लछीरामजीके नामपर दत्तक हैं। आप बन्धुओंके यहां घोड़नदी में कृषि तथा साहुकारीका कारबार होता है।

तांतेड़

लक्ष्मणदास सुगनचन्द तांतेड़, लश्कर

इस खानदानका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) का है। यहांसे संवत् १६०० में सेठ दुर्गादासजी लश्कर आये और यहीं पर व्यापार करने लगे। तभीसे आपके परिवारवाले यहीं पर निवास कर रहे हैं। थोड़े समय बाद आपको यहांके खजाने और टकसालका काम मिला। आप बड़े व्यापार कुशल एवं कारगुजार सज्जन थे। आपकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर सरकारने आपको एक म्याना प्रदान कर सरकारी खर्चेसे एक रथ और बैल जोड़ी रखनेका हुकुम बख्शा। आप सं० १६४४ में स्वर्गवासी हुए। आपके रिखबदासजी, लक्ष्मणदासजी, गणेशदासजी एवं फूलचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

इन उक्त चारों भाइयोंमें सेठ लछमणदासजीने लश्करमें कुछ काम किया है। आपको गवालियर सरकारने आपके पिताजीका ओर्ध्व दैहिक कार्य्य करनेके लिये ५०००) प्रदान कर सम्मानित किया था। आप भी खजानाका काम करते रहे। आपको भी सरकारकी ओरसे एक कीमती जवाहरातका कंठा तथा पोशाकें मिलीथीं। सं० १६६० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् आपके छोटे भाई फूलचंदजी खजांची रहे। आप भी सम्वत् १६६३ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमानमें आपके पुत्र सुगनचंदजी विद्यमान हैं।

सेठ सुगनचंदजी पिछाड़ी ड्योढ़ी खजानेके खजांची तथा गवालियर सिविल एण्ड मिलिटरी स्टोअरके सेक्रेटरी रहे हैं। इस समय आप कपड़ेका व्यापार करते हैं। आप सुधरे हुए विचारोंके सज्जन हैं।

भाण्डावत

सेठ पीरचन्दजी फूलचन्दजी भाण्डावत, शिवपुरी

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान मेडता (मारवाड़) का है। आपलोग भाण्डावत गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर मतावलम्बी सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ पीरचन्द जी हुए। आपके फूलचन्दजी तथा जेठमलजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ फूलचन्दजी उर्फ सिद्धमलजी सबसे पहले देशसे व्यापार निमित्त गुनाकी तरफ आये और यहाँपर आकर ब्रिटिश रेजिमेंटका काम करने लगे। जब रेजिमेंट गूनासे शिवपुरी आई तब आप भी खजानेके साथ यहां आये और यहीं आकर बस गये। तभीसे आपके परिवारवाले शिवपुरीमें रह रहे हैं। आपने तथा आपके छोटे भ्राता जेठमलजीने अपने व्यापारको खूब तरक्कीपर पहुचाया और यश भी सम्पादन किया। आपलोगोंका ब्रिटिश आफीसरोंमें एवं जनतामें अच्छा सम्मान था। सेठ फूलचन्दजीके तेजमलजी और भीकमचन्दजी नामक दो

पुत्र हुए। इनमेंसे तेजमलजी सेठ जेठमलजीके नामपर दत्तक चले गये। सेठ फूलचन्दजी तथा जेठमलजी जब स्वर्गवासी हुये उस समय सेठ फूलचन्दजीके दोनों पुत्र नाबालिग थे। ऐसी स्थितिमें इस फार्मके मुनीम श्रीखिरमलजीके चचेरे भाई सेठ करमचन्दजीने बड़ी योग्यतासे सारे व्यापारको संचालित किया। आपका भी आफिसरान एवं जनतामें अच्छा सम्मान था। इन्हीं दिनों जेठमलजीका भी छोटी अवस्थामें स्वर्गवास हो गया। आपके नाम पर टोडरमलजी दत्तक आये।

सेठ भीकमचन्दजीने बालिग होनेपर सारे कामकाजको संभाला और जनतामें भी खूब सम्मान प्राप्त किया। जब शिवपुरीसे रेजिमेंट हटी और शिवपुरीमें पब्लिक ट्रेझरी कायम हुई उस समय आप उसके ट्रेझरर नियुक्त हुए। आप योग्य तथा मिलनसार सज्जन थे। यहां के आफीसरोंमें भी आपका अच्छा सम्मान था। आपका सम्वत १९६० में स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर सुपार्श्वमलजी दत्तक आये।

श्री टोडरमलजी एवं सुपार्श्वमलजी नागौर निवासी सेठ मोहनलालजी समदड़ियाके पुत्र हैं। आप दोनोंका जन्म क्रमशः सम्वत् १९४७ तथा ५२ में हुआ। आप दोनों बन्धु भी बड़े मिलनसार, योग्य एवं समझदार सज्जन हैं। आप लोगोंका यहांकी जनता एवं आफीसरों में अच्छा सम्मान है। ग्वालियर दर्बार स्व० श्री माधवरावजी सिंधिया जब शिवपुरी आते तब अपना प्राइवेट सारा काम काज आपकी फर्मके मार्फत करवाते थे। संवत् १९६८ में दरबारने भिंडकी पोद्दारी भी आपके जिम्मे कर दी थी। यह काम अभीतक आप लोगोंके पास है। इसके अलावा शिवपुरी, भिंड तथा लश्करमें आपका बैंकिंग व्यापार भी होता है।

वर्त्तमानमें सेठ टोडरमलजी मजलिसे कानून, (Legislative Assembly) मजलिसे आम और डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेम्बर, सहकारी बोर्ड शिवपुरीके व्हाइस प्रेसिडेण्ट, म्युनिसीपल बोर्ड तथा मंडी कमेटीके चेअरमैन और कोआपरेटिव बैंकके डायरेक्टर हैं। आपकी यहांपर अच्छी प्रतिष्ठा है। श्री सुपार्श्वमलजी यहांकी जुडिशियल और म्यु० के आनरेरी मजिस्ट्रेट व ओकाफ कमेटीके मेम्बर हैं। आप दोनों बन्धुओंको समय-समयपर ग्वालियर महाराज-ने पोशाकें, सनदें आदि देकर सम्मानित किया है। सन् १९२२ में जब प्रिंस आफ वेल्स ग्वालियर पधारे उस समय टोडरमलजीके जिम्मे प्रिंसके स्वागतका कार्य्य सौंपा गया था। उस समय प्रिंसकी ओरसे आपको एक घड़ी भी इनाम स्वरूप प्राप्त हुई थी।

सेठ केसरीचन्दजी प्रेमचन्दजी भांडावत, शाजापुर

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) है। वहांसे इस परि-वारके पूर्वज सेठ गोड़ीदासजी भांडावत व्यापारके लिये लगभग १२५ साल पहिले बजरंगगढ़ (गुना-ग्वालियर) आये। सेठ गोड़ीदासजी वहां व्यापार करते हुए संवत् १९१५ में स्वर्ग-वासी हुए। आपके पुत्र जमनादासजी हुए।

सेठ जमनादासजीका जन्म संवत् १९०१ में बजरंगगढ़में हुआ था। आपकी नाबालगी-की अवस्थामें आपके व्यापारकी देखरेख आपके काका सेठ घेवरचन्दजी भांडावतने की थी, लेकिन कुछ आपसी बोल लग जानेसे आपने ५) मासिकपर कस्टम विभागमें मुलाजिमात कर ली। थोड़े समय बाद आपके श्वसुर सेठ हजारीमलजी नाहटा आपको लश्कर ले आये। उस समय उनकी मालवामें कई जगह दुकानें थीं। थोड़े दिनोंतक आप लश्करमें नौकरी करते हुए जवाहरातका काम सीखते रहे। पश्चात् हजारीमलजी नाहटाकी शाजापुर, शुजालपुर तथा तलखेड़ दुकानोंपर सदर मुनीम बनाकर भेजे गये। इन दुकानोंपर सरकारी खजाना था और कस्टमका काम था। इन दुकानोंपर कार्य्य करते हुए सेठ जमनादासजीने अच्छी नामवरी तथा इज्जत प्राप्त की। धीरे धीरे आपने संवत् १९४० में शांजापुरमें अपनी घरू दुकानकी तथा उसपर हुंडी चिट्ठी व जमींदारीका कार्य्य आरम्भ किया। आपने मंडलका, पींडोनिया, रूपाहेड़ी तथा बाहीहेड़ा नामक ४ गाँवोंकी जमीदारी भी खरीद की। शाजापुर तथा आसपासकी जैन समाजमें आप नामी व्यक्ति थे। मक्षीजी तीर्थके सम्बन्धमें आपने बरसो तक दि० जैन समाजसे केस लड़ा तथा उसमें होशियारी और मर्दानगीपूर्वक काम करते हुए सफलता हासिल की। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताते हुए संवत् १९६८ के आषाढ़ मासमें आपका स्वर्गवास हुआ। आपके लखमीचंदजी, लाभचन्दजी, केसरीचन्दजी तथा प्रेम-चन्दजी नामक चार पुत्र हुए। इनमें लाभचन्दजी स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष तीन भाई मौजूद हैं।

सेठ लखमीचन्दजीका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आप अपने पिताजीकी मौजूदगीमें ही अलग हो गये थे। धार्मिक बातोंमें आपका अच्छा प्रेम है। इस समय आप बेरधा (गवा-लियर) में व्यापार करते हैं। आपके कोई संतान नहीं है।

सेठ केसरीचन्दजीका जन्म सम्वत् १९४६ में तथा प्रेमचन्दजीको सम्वत १९५३ में हुआ। इन दोनों भाइयोंका व्यापार सम्मिलित होता है। सेठ केसरीचन्दजी ६ सालोंतक परगना बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और मजलिसे आम के मेम्बर रहे। स्थानीय म्यु० के आप मेम्बर रहे थे। इस समय आप जिला कोआपरेटिव्ह बैंकके डायरेक्टर और जैन प्रबोध कमेटी-के प्रेसिडेण्ट हैं। यहांकी प्रबोध कमेटीने आपको ओसवाल भूषणकी पदवी की है। आपका परिवार शाजापुर तथा आसपास नामी माना जाता है। श्रीप्रेमचन्दजी उज्जैन दुकान का काम सम्भालते हैं। वहाँ आपका केसरीचन्द प्रेमचन्दके नामसे आढ़तका धंधा होता है। इस समय आप लोगोंके यहां ३ मोजोंकी जमींदारी हैं। श्री केसरीचन्दजीके पुत्र राजेन्द्रकुमार और प्रेमचन्दजीके पुत्र वीरचन्दजी हैं।

कोटेचा

श्री सेठ भीकचन्दजी चुन्नीलालजी कोटेचा, बार्शी (नांदूरकर)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान शेरसिंहजी की रीयाँ (मेवाड़) है। यहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ नवलमलजी अनेकों कठिनाइयाँ उठाते हुए व्यापारके निमित्त लगभग १४० साल पूर्व रवाना हुए तथा नांदूर (जिला बीड़—निजामस्टेट) में आये और यहां लेन देनका व्यापार चालू किया। आपके व्यंकटलालजी, नीलूरामजी तथा शिवनाथजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ नीलूरामजीने इस परिवारके मान सन्मान तथा व्यापारको विशेष बढ़ाया। आप लगभग ५० वर्ष पूर्व स्वर्गवासी हुए। सेठ व्यंकटलालजीके हुकुमचन्दजी, भारमलजी तथा बापूलालजी नामक तीन पुत्र हुए, इनमें सेठ हुकुमचन्दजीके पुत्र दुलीचन्दजी तथा खूबचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ नीलरामजीका परिवार:—हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ नीलूरामजी नांदूरमें व बीड़ जिलेमें नामी पुरुष हो गये हैं। आपका विस्तृत परिवार नांदूरमें निवास करता है। आपके रामचन्द्जी, हरखचन्दजी तथा छगनजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बंधुओंमें सेठ रामचंदजी तथा सेठ छगनजीने भी आसपासकी जैन समाजमें एवं बीड़ जिलेमें बड़ा सम्मान पाया। सेठ रामचन्दजी लगभग २६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ भीकचन्दजीका जन्म सम्वत् १९५० में तथा सेठ चुन्नीलालजीका जन्म सम्वत् १९५३ में हुआ। इन दोनों भाइयोंने भी अपने पिताजीके बाद अपने व्यापारकी अच्छी उन्नति की है। आपका नांदूरमें कृषि तथा साहुकारीका बड़े प्रमाणपर व्यापार होता हैं। आप लोग लगभग ३ हजार रुपया सालियाना सरकारी लगान भरते हैं। बीड़ जिलेमें आपका परिवार नामी माना जाता है। इधर ६ साल पूर्वसे आपने बार्शीमें आढ़तका कारबार शुरू किया है। श्री चुन्नीलालजी कोटेचाका धार्मिक और शिक्षाके कामोंकी ओर उत्तम लक्ष्य है। आप बार्शीके श्री महावीर जैन बालाश्रम तथा श्री मूलचन्द जोतीराम जैन पाठशालाके प्रेसिडेंट और तिलोक जैन पाठशाला पाथर्डीके प्रांतिक सेक्रेटरी हैं। इसी तरह हरएक सार्वजनिक व धार्मिक कामोंमें आप भाग लेते हैं। सेठ भीकचन्दजीके पुत्र मोतीलालजी तथा नन्दलालजी एवं चुन्नीलालजीके पुत्र पन्नालालजी, राजमलजी तथा साहबचन्दजी हैं।

इसी प्रकार सेठ रामचन्द्रजीके छोटे बन्धु सेठ हरखचन्दजीके लालचंदजी और गुलालचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इनमें लालचन्दजीके पुत्र मेघराजजी इस समय नांदूरमें कृषि और साहुकारीका काम करते हैं। सेठ छगनजीके भाऊलालजी और मोहनलालजी नामक २ पुत्र हुए। इस समय भाऊलालजीके पुत्र चंदूलालजी, बालचन्दजी, उत्तमचन्दजी तथा झूमरलालजी और मोहनलालजीके पुत्र लक्खीचन्दजी तथा अमरचन्दजी नांदूरमें अपना स्वतन्त्र कारबार करते है।

इसी तरह इस कुटुम्बमें सेठ शिवनाथजीके मगनलालजी, सुखलालजी तथा उदयचंदजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें मगनलालजी अच्छे प्रतिष्ठासम्पन्न व वजनदार पुरुष हुए। आपके छोटे बंधु सेठ उदयचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ ज्ञानमलजी केशरीमलजी कोटेचा, शिवपुरी

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवास स्थान मेड़ता (मारवाड़) का है। आप लोग कोटेचा गौत्रीय हैं। इस खानदानके पूर्वपुरुष सेठ ज्ञानमलजी मेड़तासे व्यापार निमित्त करीब १०० वर्ष पूर्व शिवपुरी आये। जिस समय शिवपुरी वस रही थी उस समय आप भी आकर यहां बसे और अपने पुत्र केसरीचंदजीकी मददसे व्यापार करने लगे।

सेठ केसरीचन्दजीके लालचन्दजी और मुलतानचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाइयोंने भी अपने व्यवसायको बढ़ाया। सेठ लालचन्दजी सम्वत् १९५३ की वैसाख बुदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपको रेजिडेण्ट तथा एजेण्टसे कई प्रशंसापत्र प्राप्त हुए थे। ग्वालियर-स्टेटमें भी आपका अच्छा सम्मान था। आपके शिवचन्दजी तथा नेमीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाइयोंने भी अपने व्यापारको बढ़ाया। सेठ शिवचन्दजी बड़े सरल एवं मितव्ययी पुरुष थे। आपको दरबारोंसे कई पोशाकें इनायत हुई थीं। ब्रह्मचर्य्याश्रम उदयपुर तथा आगरा अनाथालयको आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी गयी थी। सम्वत् १९८७ की आषाढ़ बदी १४ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपके अमोलकचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ नेमीचन्दजीका जन्म सम्वत् १९४२ में हुआ। आप बड़े सज्जन, प्रतिष्ठित एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपको भी कई सर्टिफिकेट प्राप्त हुए हैं। आप यहांके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, बोर्ड साहुकारान और कोआपरेटिव बैंकके मेम्बर रह चुके हैं। आपके शिखरचन्दजी एवं प्रसन्नचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ अमोलकचन्दजी भी मिलनसार तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप यहां की पंचायत बोर्डके सरपंच, ओकाफ कमेटी तथा मण्डी कमेटीके मेम्बर है। इसके पूर्व आप कोआपरेटिव बैंकके डायरेक्टर तथा म्यु० के आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। आपकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर महाराजा एव महारानी साहिबाने प्रसन्नतापूर्वक पोशाकें एव सर्टिफिकेट देकर आपको सम्मानित किया है। आपके वल्लभचन्दजी, विनयचन्दजी एवं पीरचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं।

आप लोगोंका लश्कर तथा शिवपुरीमें बैंकिंग व्यवसाय होता है। इस फर्मपर प्रतापचन्दजी मुनीम हैं। आप करीब २५ सालोंसे यहांपर मुनीमात कर रहे हैं। आपको भी प्रशंसापत्र मिले हैं।
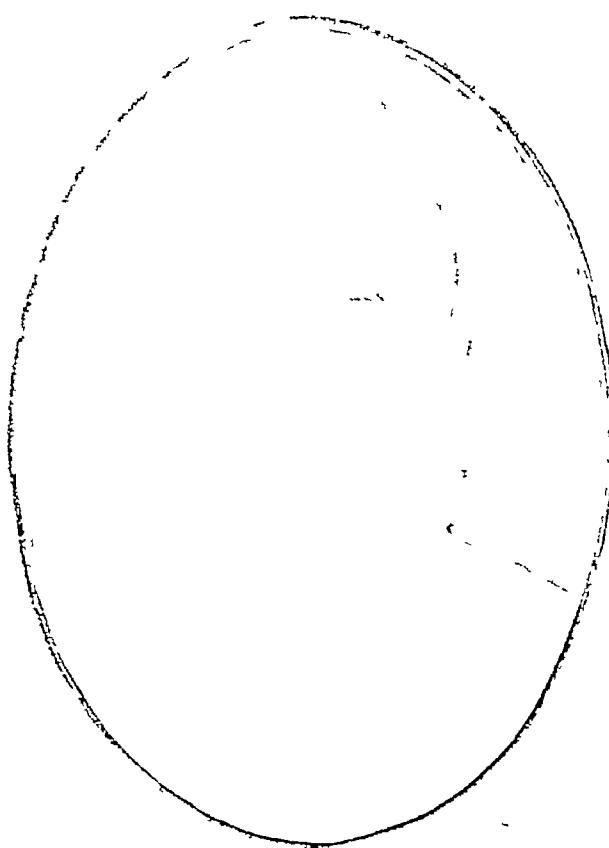
सेठ शिवचन्द्रजी कोटेचा, शिवपुरी

सेठ फूलचन्दजी कोचर मूथा जबलपुर

सेठ लक्ष्मीप्रसादजी कोटेचा शिवपुरी

सेठ जवाहरमलजी जोगीदासजी [illegible]
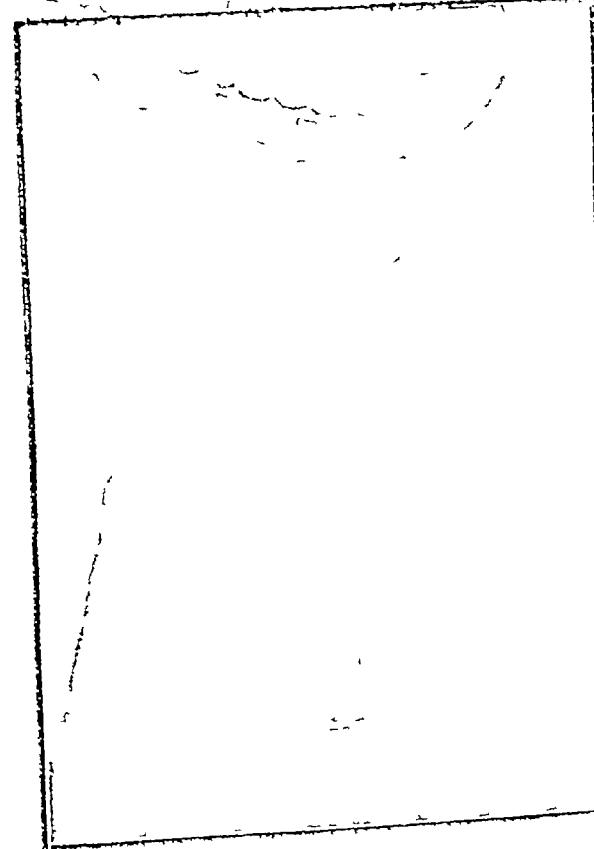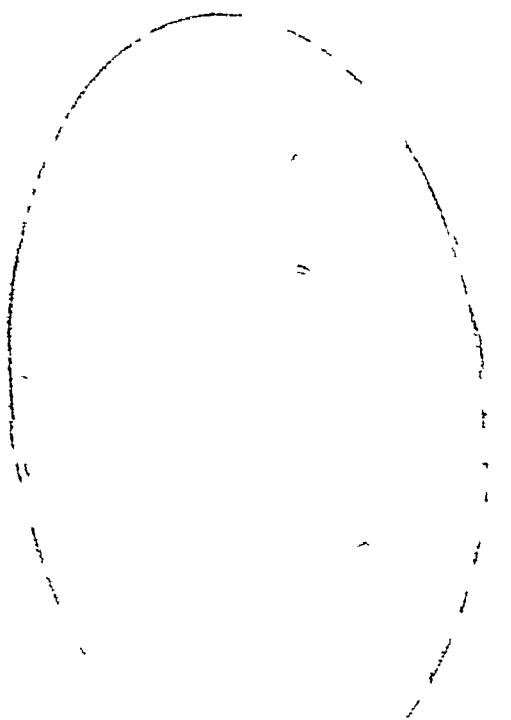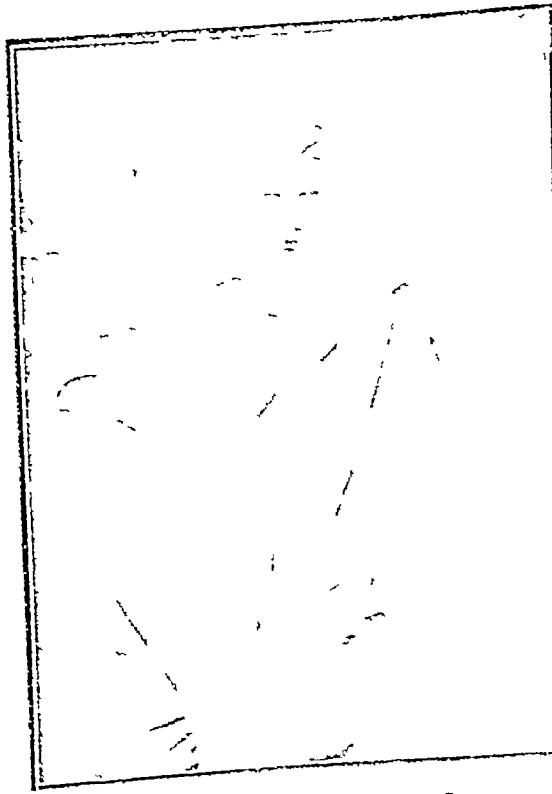
सांखला

सेठ भगवानदासजी शिवदासजी सांखला, शिवपुरी

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) का हैं। इस खानदानमें सेठ भगवानदासजी हुए जिन्होंने मेड़तेसे पालीतानाका संघ निकाला था। आप बड़े व्यापारकुशल एवं होशियार सज्जन थे। सम्वत् १८८० के करीब आप मेड़तेसे व्यापार निमित्त शिवपुरी आये और यहांपर कपड़ेका व्यवसाय चालू किया। आपका सम्बत् १९०२ में स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर सम्बत् १९११ में सेठ शिवदासजी मेड़तासे दत्तक आये।

सेठ शिवदासजीकी धार्मिक कामोंमें अच्छी श्रद्धा थी। व्यापारमें भी आपके हाथोंसे अच्छी तरक्की हुई। आप संबत् १९२५ में स्वर्गवासी हुए। आपके गुलाबचन्दजी नामक एक पुत्र थे। गुलाबचन्दजी व्यापार कुशल, मिलनसार तथा परोपकारके कामोंमें विशेष रुचि रखनेवाले सज्जन थे। आपने यहांपर एक धर्मशाला बनवाई तथा श्रीपार्श्वनाथजीके मन्दिरमें श्री नेमिनाथ भगवानकी मूर्ति प्रतिष्ठित कराई। इसके अतिरिक्त उक्त मन्दिरकी व्यवस्थाके लिये आपने एक मकान दान स्वरूप प्रदान किया। इसी प्रकारके धार्मिक कार्योंमें आप अच्छा सहयोग लेते थे। आपका यहांकी साहुकार मण्डलीमें अच्छा सम्मान था। आपका सम्बत् १९७४ की चैत सुदी ४ को स्वर्गवास हुआ। आपके नामपर श्री कानमलजी सम्वत १९६८ में ही दत्तक आ गये थे। आप नागौर निवासी सेठ गुलाबचन्दजीके पुत्र हैं।

सेठ कानमलजीका जन्म सम्वत् १९५० में हुआ। आप मजलिसे आम, बोर्ड आफ साहुकारान, परगना बोर्ड, ओकाफ कमेटी तथा म्यु० के मेम्बर हैं। इसके अतिरिक्त आप को-आपरेटिव बैङ्कके असिस्टेण्ट मेनेजिंग डायरेक्टर हैं। आपकी परोपकारके कामोंकी ओर भी अच्छी रुचि है। अपने पिताजीके स्वर्गवासी होनेके बाद आपने धर्मशालाके स्थाई प्रबन्धके लिये एक मकान दानस्वरूप प्रदान किया है। आपने अपने मन्दिरमें एक चांदीका विमान बनवाकर रक्खा है। आपके पुत्र इन्द्रमलजी २१ वर्षके हैं तथा वर्त्तमानमें व्यापारमें भाग लेते हैं। आप लोगोंने श्री विजयधर्मसूरीश्वर स्मारकमें एक लायब्रेरी को मकान भेंट किया है।

वर्त्तमानमें आपके यहां मे० भगवानदास शिवदासके नामसे बैंकिंग, आढ़त तथा कपड़े का व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त मे० नथमल इन्द्रमलके नामसे सराफी व्यापार भी होता है। लश्करमें मे० भगवानदास शिवदासके नामसे हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

नाहर

सेठ अभयचन्दजी दीपचन्दजी नाहरका खानदान, जबलपुर

यह परिवार मेड़ताके पास ईडवा नामक स्थान का निवासी है। लगभग १२ पीढ़ी पूर्व इस परिवारमें श्रीदेवीचन्दजी नाहर हुए। आप तिल्लोनस ठिकानेके कीमती थे। आपके पश्चात् आपके पुत्र पौत्रोंमें क्रमशः श्री खूबचन्दजी, श्रीजीतमलजी, श्री डूंगरमलजी, श्रीवच्छराजजी और श्री मयाचन्दजी भी लगातार ६ पीढ़ियोंतक तिल्लोनस ठिकानेके कीमती पदपर कार्य्य करते रहे। तिल्लोनसके पश्चात् श्री मयाचन्दजीने अपना निवास ईडवामें सं० १७२६ में बनाया। आपके कुशलाजी, बीजराजजी, रतनचन्दजी तथा जसराजजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें श्री रतनचन्दजी नाहरके सुजानमलजी, रुघजी, हीरजी, सालमजी तथा सवाईमलजी नामक ५ पुत्र हुए। इन वन्धुओंमें सेठ सवाईमलजीके पुत्र सेठ वनेचन्दजी लगभग १५० साल पहिले व्यापारके लिये पैदल राह द्वारा हुशंगाबाद जिलेके चारुवा नामक स्थानमें आये तथा वहां अपना व्यापार स्थापित किया। आपके जुहारमलजी, जेठमलजी तथा आईदानजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ जुहारमलजीने वहां जादूपुरा नामक एक गांव खरीदा जो अब भी आपके परिवारके पास है। इस समय आपका कुटुम्ब चारुवामें निवास करता है।

सेठ जुहारमलजीके छोटे भाई सेठ जेठमलजी भी थोड़े समय वाद चारुवा आये। सम्वत् १६३८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके वख्तावरचन्दजी. अगरचन्दजी तथा चन्दनमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ वख्तावरचन्दजी और सेठ अगरचंदजी जबलपुर आये तथा सम्बत १६२५ में यहां दुकान स्थापित कर कपड़ा व लेनदेनका व्यापार आरम्भ किया। आरम्भसे ही आपका व्यापार उन्नति करता आ रहा है। सेठ अगरचन्दजी संवत् १६५३ में एवं सेठ वख्तावरचन्दजी संवत् १६६२ में स्वर्गवासी हुए। इन दोनों वंधुओंका कारवार सम्वत १६६० में अलग-अलग हो गया। सेठ वख्तावरमलजीके हीराचन्दजी, घेवरचन्दजी तथा देवकरणजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें हीराचन्दजीका जन्म संवत् १६३६ में हुआ। आप तथा आपके पुत्र अगरचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ अगरचन्दजीके अभयराजजी तथा गोरीदासजी नामक २ पुत्र हुए। इन वंधुओंमें सेठ गोरीदासजी सम्वत १६४६में स्वर्गवासी हो गये है।

सेठ अभयराजजी नाहरका जन्म १६४० में हुआ। आप इस समय जवलपुरकी जैन समाजमें प्रतिष्ठित एवं समझदार सज्जन हैं। हरएक धार्मिक तथा सार्वजनिक कामोंमें आपका परिवार सहयोग लेता रहता है। आप श्री जैन श्वे० तेरापंथी सम्प्रदायके अनुयायी हैं। आपके श्री दीपचन्दजी, लालचन्दजी, रिखवदासजी, जीवनदासजी तथा भीकमचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए, इनमें दीपचन्दजी, रिखवदासजी तथा भीकमचन्दजी इस समय विद्यमान हैं। आप तीनों वन्धु सज्जन तथा मिलनसार युवक हैं। तथा फर्मके व्यापारको

तत्परता से संभालते हैं। श्री हरिचन्दजी के पुत्र भँवरचन्दजी एवं रिखवदासजी के पुत्र धनराजजी हैं।

इस समय आपके यहाँ सेठ अभयराज दीपचन्द के नाम से बैङ्किंग व्यापार एवं ए० आर० दीपचन्द एण्ड ब्रदर्स के नामसे कपड़े का बड़े प्रमाण पर व्यापार होता है। जबलपुर सदर की व्यापारिक समाज मे आपकी फर्म नामी मानी जाती है।

कोचर

सेठ मेघराजजी कोचर का खानदान, पाली

इस खानदान के पूर्व पुरुषों का मूल निवासस्थान पाली (मारवाड़) का है। आपलोग कोचर गौत्र के श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। आपका खानदान फलौदी के कोचरों मे से निकला हैं। इस परिवार में सेठ मेघराजजी हुए। आप पाली में ही रह कर अपना व्यापार करते रहे। आपके चाँदमलजी नामक एक पुत्र हुए। आपका जन्म सं० १९१७ के करीव हुआ। आप पाली से देहली आये तथा यहां पर कुछ दिनों सर्विस करके अपनी दुकान खोली। आपका स्वर्गवास सं० १९७३ में हो गया। आपके अनराजजी तथा बिरदीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई सं० १९७४ तक शामलात में व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् आप दोनों अलग २ होकर अपना स्वतंत्र रूप से व्यापार करने लगे।

सेठ अनराजजी का जन्म सं० १९४३ में हुआ। आप सं० १९७४ तक तो सर्विस करते रहे। तदनन्तर आपने मे० रामभगतदास सूरजभान के साझे में कपड़ा व आढ़त का व्यापार शुरू किया। इस फर्मके व्यापार में आपको बहुत सफलता प्राप्त हुई। सं० १९८३ तक तो यह फर्म साझे में चलती रही। इसके पश्चात् आपने रा० ब० सेठ गोर्द्धनदास मोतीलाल के साझे में गिरधरलाल व्रजरतन के नाम से वही कपड़े व आढ़त का काम किया। सं० १९८८ से आपने मेसर्स अनराज नारायणदास के नाम से अपना फर्म स्थापित किया। इस फर्म पर वही आढ़त व कपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म में सेठ नारायनदासजी का साझा है। सेठ अनराजजी मिलनसार व योग्य व्यक्ति हैं। आपको जाति सेवा से बड़ा प्रेम है। आपके सुखराजकुमारजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। बाबू बिरदीचन्दजी का जन्म सं० १९५२ का है। आप अभी देहली में ही निवास कर रहे हैं। आपलोगों का पाली तथा देहली की ओसवाल समाज में अच्छा सम्मान है।

सेठ हीरचन्दजी फूलचन्दजी कोचर मेहता, जबलपुर

इस परिवार के पूर्वज लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व मुआसर में निवास करते थे। वहां से सेठ हिम्मतरामजी कोचर फलोदी आये तथा अपना स्थाई निवास वहीं बनाया। आपके

हीरचन्दजी, उम्मेदचन्दजी, केसरीचन्दजी, चौथमलजी और बहादुरचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयों में सेठ उम्मेदचन्दजी जबलपुर आये, तथा लेनदेन का व्यापार चालू किया। सेठ हीरचन्दजी ने इस दुकान के कपड़े तथा साहुकारी कारबार को बढ़ाया। आप संवत् १९५० की चेत वदी १० को स्वर्गवासी हुए। आपके मोहनलालजी, सूरजमलजी और फूलचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। सेठ हीरचंदजी के बाद मोहनलालजी ने कारबार को संभाला, आप संवत् १९५५ की पोष वदी २ को स्वर्गवासी हुए। इनसे छोटे बन्धु सेठ सूरजमलजी सिकंद्राबाद मे सेठ धीरजी चांदमलजी के यहाँ दत्तक गये।

सेठ फूलचंदजी का जन्म संवत् १९३७ की फागुन सुदी ४ को हुआ। आप ही इस समय उपरोक्त फर्म के मालिक हैं। जबलपुर सदर में आपकी दुकान प्रतिष्ठित मानी जाती है। धार्मिक कामों में आपकी अच्छी रुचि है। आपके पुत्र श्री मेघराजजी भी फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। इनके पुत्र अनोपचन्द बालक हैं। इस समय आपके यहाँ सराफीका व्यापार होता है।

डागा

सेठ शिवपालजी धनराजजी डागा, गाडरवारा

इस परिवार के मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है। लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व सेठ शिवपालजी डागा व्यापार के निमित्त गाडरवारा आये। आपका सं० १९४१ में स्वर्ग वास हुआ। आपके धनराजजी तथा जुगराजजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ धनराजजी डागा का जन्म संवत् १९१० में हुआ। आपके हाथों से फर्म के व्यापार तथा सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। आपके विशेष प्रयत्न एवं सहयोग से गाडरवारा में श्रीशांतिनाथजी के देरासर का निर्माण हुआ। स्थानीय धर्मादा कमेटी के आप सेक्रेटरी थे। आप गाडरवारा के व्यापारिक समाज में एवं जैन समाज में गण्यमान्य पुरुष थे। आप बड़े साहसी व हिम्मतवान पुरुष हो गये हैं। आप तीव्र बुद्धि के महानुभाव थे तथा अपने विरोधी विचार वाले व्यक्तियों का संतोष बड़ी युक्ति से करने में सिद्ध हस्त थे। आप संवत् १९६९ की फागुन सुदी ७ को स्वर्गवासी हुए। आपके मानपालजी और फूलचन्दजी नामक २ पुत्र हुए। इन भाइयों में श्री मानपालजी संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ फूलचन्दजी डागा का जन्म सं० १९५१ की सावण सुदी १४ को हुआ। आपके हाथों से भी इस फर्म के व्यापार तथा सम्मान की विशेष वृद्धि हुई है। आप स्थानीय म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर तथा व्हाइस प्रेसिडेण्ट रहे हैं, तथा इस समय ४ सालों से पुनः म्यु० के मेंबर हैं। आप धर्मादा कमेटी के सेक्रेटरी हैं तथा स्थानीय जैनमंदिर के ट्रस्टी हैं। आपके पिताजी ने मंदिर को जो १ गाँव दिया था उसकी आय को आपने बढ़ाकर २ गाँव की जमीदारी कर दी है। इसी प्रकार मंदिर की और भी स्थाई सम्पत्ति को दृढ़ किया है।

सरकारी आफीसरों में आपका अच्छा सम्मान है। आपके डालचन्दजी तथा ताराचन्दजी नामक २ पुत्र हैं। इनमे श्री ढालचन्दजी का जन्म सावण सुदी २ सं० १६७० में हुआ। आप कामर्स कालेज वम्बई मे शिक्षा पा रहे हैं।

सिंघी

सेठ दयाचन्दजी सिंघी, गोटेगाँव

इसी परिवार का मूल निवास नागोर है। वहाँ से सेठ रामचन्द्रजी सिंघी लगभग १०० साल पहिले डीडवाणा आये और आपने अपना स्थाई निवास वहाँ बनाया। यह परिवार रामभलोत सिंघवी गौत्र का है। इस खानदान ने जोधपुर दरबार की बड़ी २ सेवाएं की हैं, जिनका इतिहास इस ग्रन्थ के सिंघवी गौत्र में दिया है। सिंघवी रामचन्द्रजी महकमा दाण (सायर) में अफसर थे। सं० १६४० में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ दयाचन्दजी मारवाड़ से इन्दौर आये तथा सं० १६५५ में रीयाँ वाले सेठो की दुकान पर मुनीम होकर नरसिंहपुर गये। पश्चात् सं० १६६७ मे आप जबलपुर वाले राजा गोकुलदासजी की गोटे गाँव दुकान के मुनीम नियुक्त हुए, एवं सं० १६७० से अनाज को आढ़त का अपना स्वतन्त्र व्यापार आरम्भ कर दिया। सं० १६८७ में आप स्वर्गवासी हो गये।

सेठ दयाचन्दजी के पुत्र सेठ मंगलचन्दजी सिङ्घवी का जन्म सम्बत् १६४६ में हुआ। आपने अपने व्यापार तथा परिवार के सम्मान को बढ़ाया है। आप १५ सालों से गोटेगाँव म्युनिसिपैलेटी के मेम्बर हैं। आपके बड़े पुत्र श्री सुगनचन्दजी २२ साल की आयु में स्वर्गवासी हो गये हैं। आप बड़े होनहार थे। इनसे छोटे भीकमचन्दजी, सवाईचन्दजी, कोमलचन्दजी तथा हुकुमचन्दजी हैं। भीकमचन्दजी ने मेट्रिक तक अध्ययन किया हैं। इस समय आपके यहां अनाज का व्यापार होता है।

बलदोटा

सेठ सूलचन्दजी जोतीलालजी बलदोठा, वार्शी

इस परिवार का मूल निवास जीवन्द (बाली के पास जोधपुर स्टेट) मे है। वहाँ से व्यापार के निमित्त इस कुटुम्ब के पूर्वज सेठ महासिंहजी बलदोटा दक्षिण प्रांत के बार्शी नामक स्थान के समीप चिकलोड़ खेड़े में आये और वहां आप लेनदेन का व्यापार करते रहे। आपके जीतमालजी उर्फ जोतीरामजी, मयारामजी, शिवरामजी तथा खुशालचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बन्धुओं मे सेठ जीतमलजी ने इस परिवार के व्यापार की नींव जमाई तथा अपने परिवार के मान की भी वृद्धि की। आप लगभग ८०।८५ साल पूर्व चिकलोड़ से बार्शी आ गये और अपना स्थायी रूप से निवास यहीं बना लिया। संवत् १६४६ में

में आप स्वर्गवासी हुए। आपके यहां प्रधानतया साहुकारी लेनदेन का व्यापार होता था। सेठ ज्योतीरामजी के मूलचन्दजी तथा जवाहरमलजी नामक २ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में सेठ मूलचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ मूलचंदजी बलदोटा:—आपका जन्म शके १७६७ की मगसर सुदी २ को हुआ। आपने अपने पिताजी के पश्चात् अपने परिवार के मान सम्मान तथा व्यापार को अच्छी उन्नति पर पहुंचाया। धार्मिक, सार्वजनिक एवं परोपकार के कई प्रशंसनीय कार्य आपने ऐसे किये जिन्हें वार्शी तथा आसपास की जनता कई वर्षों तक नहीं भूल सकती। शके १८३४ में आपने श्रीमूलचन्द जवाहरमल हास्पीटल नामक एक अस्पताल का उद्घाटन किया एवं इस संस्था के लिये ५० हजार रुपये की रकम प्रदान कर इसकी व्यवस्था एक ट्रस्ट के जिम्मे की, जिसके ब्याज से यह संस्था चल रही है। इस अस्पताल में अंग्रेजी पद्धति से इलाज होता है एवं २५० रोगी प्रति दिन यहाँ इलाज के लिये आते हैं। इसके अलावा २० हजार रुपयों की लागत से आपने एक धर्मशाला एवं जैनमंदिर का निर्माण करवाया तथा ११ हजार की लागत से एक जैन पाठशाला का उद्घाटन किया। इसी प्रकार नगर की और भी सार्वजनिक एवं धार्मिक संस्थाओं में आप उदारता पूर्वक सहयोग एवं सहायता देते हैं। स्थानीय गोरक्षण संस्थायें, घास व गायों के पोषण के लिये ५ हजार रुपया एवं लखमीदास खीमजी आर्फनेज में सवाहजार रुपयों की सहायता दी है। शुभ कार्यों की ओर विशेष प्रेम होने की वजह से वार्शी की जनता आपको दानवीर के नाम से सम्बोधित करती है एवं नगर की सर्वसाधारण जनता के प्रमुख व्यक्तियों ने आपके द्वारा किये हुए पब्लिक कार्यों के उपलक्ष में धन्यवाद स्वरूप ता० २१ नवम्बर १९२४ को एक मान-पत्र देकर आपको सम्मानित किया है। सन् १९१२ से आप वार्शी में आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं, व इधर २ सालों से आपकी वजनदारी का स्मरण कर सरकार ने सेकंड क्लास अधिकार दिये हैं। सन् १९३० में आप जुन्नर की श्री महाराष्ट्र प्रांतीय जैन परिवार के सभापति भी रहे थे। वार्शी के लोकमान्य मिल के आप भागीदार और डायरेक्टर हैं। इसके अलावा जय-शंकर मिल आदि मिलों के भी शेयर होल्डर हैं। आपका स्वभाव बड़ा सरल, सादा, एवं अभिमान रहित है। आपके छोटे बंधु श्री जवाहरमलजी बलदोटा केवल २७ साल की अल्पायु में शके १८३४ में स्वर्गवासी हो गये हैं। उनके नाम पर आपके भाइयों के परिवार से श्री नेमीचदजी बलदोटा के मझले पुत्र चन्दनमलजी दत्तक आये है। आपकी वय २० साल की है, तथा आपभी होनहार एवं योग्य प्रतीत होते हैं।

इस समय आपके यहा सेठ मूलचन्द ज्योतीराम के नाम से मिल की भागीदारी, शेअर्स, व्याज व साहुकारी लेनदेन का कार्य होता है।

———

सेठ धीरजमलजी भगवानदासजी गांधी, सोलापूर

इस परिवार के मालिकों का मूल निवासस्थान नागोर (मारवाड़) है। वहां इस परिवार के पूर्वज सेठ कीरतमलजी चंडाल गांधी निवास करते थे। सेठ कीरतमलजी के धीरजमलजी, सूरजमलजी और गेंदमलजी नामक ३ पुत्र हुए। नागोर से आप बंधुगण लगभग १०० वर्ष पूर्व ताहरावाद जिला ठाणा में आये और वहां से आप करंडी (तालुका पारनेर—जिला नगर) गये। सेठ सूरजमलजी तथा गेंदमलजी तो करंडी व ताहरावाद में ही साधारण व्यापार करते रहे तथा सेठ धीरजमलजी गांधी के पुत्र सेठ भगवानदासजी गांधी लगभग ६० साल पहिले सोलापुर आये और आपने यहां आरम्भ में सर्विस की। लगभग दस वर्षों तक सर्विस करने के पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र कपड़े का व्यापार आरम्भ किया तथा परिश्रम व बुद्धिमत्ता पूर्वक आपने व्यापार में अच्छी सम्पत्ति उपार्जित कर सोलापुर के व्यवसायिक समाज में एवं अपने समाज में अच्छी प्रतिष्ठा व ख्याति प्राप्त की। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्ण जीवन बिताते हुए आप सं० १९६८ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्री शिवलालजी गांधी उस समय केवल २ साल के थे।

सेठ शिवलालजी गांधी:—आपका जन्म सम्वत् १९६६ में हुआ। पिता श्री के स्वर्गवास के समय आप अबोध शिशु थे, अतएव आपके लालन पालन तथा शिक्षण का भार आपकी फर्म के योग्य दीवान श्री सीताराम बालकृष्ण देगांवकर नामक दक्षिणी सज्जन ने बड़ी योग्यता तथा बुद्धिमता से वहन किया। बाल्य वय से ही सेठ शिवलालजी बड़े होनहार तथा उग्र बुद्धि के युवक प्रतीत होते थे। आपने अपने व्यापार तथा परिवार की प्रतिष्ठा में उन्नति की। सोलापुर नगर के सार्वजनिक व व्यापारिक क्षेत्र में आप बहुत उत्साह तथा वजनदारी के साथ भाग लेते हैं। सोलापुर मर्चेण्ट एसोसिएसन के आप सेक्रेटरी रहे थे और इस समय सोलापुर कापड़ आढ़तिया मंडल के सेक्रेटरी हैं। राष्ट्रीय कार्यों में आप बड़ी दिलचस्पी से भाग लेते हैं। आपने सोलापुर जिला कान्फ्रेंस और प्रांतीय कान्फ्रेंस में कई कार्य किये हैं। स्थानीय हिन्दू महासभा के आप ट्रेभरर रहे। सन् १९२५ के हिन्दू मुसलमानों के झगड़े के समय चन्द मुसलमानों ने आप पर प्रहार किया था, जिससे आपके सिर में दो भारी चोटें आईं, लेकिन आपने इन प्रहारों को मुस्तैदी से सहन कर अपने सामने वालों को ऐसा करारा जबाब दिया, जिसकी याद उन्हें भी बहुत समय तक रहेगी। वयस्क होने के बाद से ही आप शुद्ध स्वदेशी वस्त्र धारण करते हैं तथा खादी प्रचार में आपने कई प्रकार से भाग लिया है। सन् १९३२ से ३५ तक आप स्थानीय म्यु० कमेटी के मेंबर रहे थे तथा वर्तमान में म्यु० के एजूकेशनल बोर्ड के मेंबर हैं। स्थानीय जैन मन्दिर में आपने बहुत

सी सम्पत्ति लगाई है। इस समय आपके यहां कपड़े का व्यापार होता है। आपकी फर्म सोलापुर की व्यापारिक समाज में मातवर मानी जाती है।

इसी प्रकार इस परिवारमें धीरजमलजीके छोटे बन्धु सेठ सूरजमलजीके गुलाबचन्द जी तथा रतनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों सज्जनोंका स्वर्गवास हो गया है। सेठ गुलाबचंदजीके शोभाचन्दजी तथा मूलचन्दजी और रतनचन्दजीके हीरालालजी व चांदमलजी नामक पुत्र हुए। इनमें मूलचन्दजी पारनेरमें व्यापार करते हैं। हीरालालजीके पुत्र भागचन्दजी सोलापुरमें कपड़ेका व्यापार करते हैं। दूसरे कुन्दनमलजी अहमदनगरमें रहते हैं एवं तीसरे पेमराजजी अजमेरमें धन्नालालजी मन्नालालजीके यहां दत्तक गये हैं।

सेठ शिवदानमलजी धनराजजी गांधी, गुलेदगुड्ड

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान सेठजीकी रींया (मारवाड़) का है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ शिवदानमलजी गांधी लगभग ५० वर्ष पूर्व व्यापारके लिये वेटगिरी (गदगके पास) आये तथा वहां आप सर्विस करते रहे। थोड़े समय बाद संवत् १९५३ के करीब सेठ शिवदानमलजी अपने बड़े पुत्र सेठ धनराजजीको साथ लेकर गुलेज गुढ (कर्नाटक) आये तथा कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। सेठ शिवदानमलजी बड़े व्यापार चतुर और हिम्मतवान पुरुष थे। अपने अपने व्यापारको जमाया। संवत् १९७२ की मिती चेत सुदी ६ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके थोड़े समय बाद आपके बड़े पुत्र सेठ धनराजजी गाँधी भी संवत् १९७३ की भादवा वदी २ को स्वर्गवासी हो गये।

सेठ शिवदानमलजीके धनराजजी, जुगराजजी तथा विरदीचन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें विरदीचन्दजी तो छोटी वयमें ही स्वर्गवासी हो गये थे। सेठ जुगराजजी गांधीने अपने पिता शिवदानमलजी तथा बड़े भाई धनराजजीके स्वर्गवासी हो जानेके बाद अपने व्यापारको बड़ी योग्यतासे सञ्चालित किया। गुलेजगुड्डके व्यापारिक समाजमें आप प्रतिष्ठित सज्जन थे। धार्मिक कार्योंमें आपकी अच्छी रुचि थी। संवत् १९९१ की श्रावण सुदी १३ को आप स्वर्गवासी हो गये।

वर्त्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ धनराजजी गांधीके पुत्र सेठ मोतीलालजी एवं सेठ जुगराजजीके नथमलजी हैं। श्री मोतीलालजी गांधीका जन्म संवत् १९६५ की जेठ सुदी ६ को हुआ। आप सयाने तथा समझदार युवक हैं। हरएक धार्मिक तथा शिक्षाके कार्मोंमें आप सहायता देते रहते हैं। पीपाड़ जैन कन्याशाला व बड़लू पाठशालामें आपने सहायता दी है। आपके भाई नथमलजी ६ सालके हैं। आप श्री श्वे० जैन स्थानकवासी आम्नायके हैं। इस समय आपके यहां शिवदानमल धनराजके नामसे कपड़ा तथा साहुकारीका कारवार होता है।

सेठ जुगराजजी गांधी (शिवदानमल धनराज)
गुलेदगुड्ड (बीजापुर)

श्रीशिवलालजी भगवानदासजी गांधी,
सोलापुर

सेठ मोतीलालजी गांधी, (शिवदानमल धनराज)
गुलेदगुड्ड

सेठ अभयराजजी नाहर,
जबलपुर

लाला कुञ्जीलालजी गांधी मेहताका खानदान, बनारस

इस परिवारके पुरुषोंका मूल निवासस्थान मुलतान (पञ्जाव) का है। आप गांधी मेहता गोत्रके श्री जैन दिगम्बर हैं। इस परिवारमें लाला मोतीसिंहजी हुए। आप मिलनसार, योग्य तथा अनुभवी थे। आप ही सर्व प्रथम मुलतानसे कालपीके राजा लोदीके दीवान होकर कालपी गये थे। आपकी योग्यता तथा कार्यकुशलतासे प्रसन्न होकर मुसलमान बादशाहने "दीवान" की पदवीसे विभूषित किया। आप कालपीमें ही स्वर्गवासी हुए। आपके परिवारवाले भी वहीं पर बस गये। आपके परिवारमें आगे जाकर श्रीचंदजी, विद्याचन्दजी तथा मानिकचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला मानिकचन्दजी बड़े दानी तथा धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आप कालपीसे मुर्शिदाबाद गये तथा वहाँपर जाकर आपने शिखरजी और सोनागिरीजीमें एक २ मन्दिर बनवाया जो आज भी विद्यमान है। लाला श्रीचन्दजीके मुन्नीलालजी और पलटीलालजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें लाला पलटीलालजीने कालपीमे एक मन्दिर और धर्मशाला बनवाई जो आज भी विद्यमान है। लाला पलटीलालजीके मनसुखरायजी तथा सर्वसुखरायजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सर्वसुखरायजीके ताराचन्दजी, हरकचन्दजी तथा कुञ्जीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें ताराचन्दजी सेठ मनसुखरायजीके नामपर गोद चले गये।

लाला ताराचन्दजीका खानदान:—लाला ताराचन्दजी बड़े धर्मात्मा थे। आप कालपीमें प्रसिद्ध जमींदार व बैंकर थे। आप म्युनिसीपैलिटीके मेम्बर तथा यहांकी जनतामें माननीय थे। आपके कुन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। आप भी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता तथा म्यु० कमिश्नर रहे। आपके किशनचन्दजी एवं बाबूलालजी नामक दो पुत्र हुए। लाला किशनचन्दजीके पुत्र राजकुमारसिंहजी बी० ए० एल० एल० बी० हैं तथा शिक्षित व मिलनसार युवक हैं। आप बनारसमें वकालत कर रहे हैं।

लाला हरकचन्दजीका खानदान—लाला हरकचन्दजीने कालपीमें एक मन्दिर बनवाया है। आपलोग श्वेताम्बर मतावलम्बी हैं। आपके पुत्र फकीरचन्दजीके पुत्र दीपचन्दजी कालपीमें कपड़ेकी दुकान कर रहे हैं।

लाला कुञ्जीलालजीका खानदान—लाला कुञ्जीलालजीका जन्म सं० १८७३ मे हुआ। आप बड़े धार्मिक तथा सरल स्वभाववाले थे। आपने शिखरजीकी यात्रा पैदल चलकर की थी। आप हर रोज महावीर स्वामीके दर्शन किये बिना भोजन नहीं करते थे। आप सं० १९६३ मे गुजरे। आपके विषयमे ऐसा कहा जाता है कि आप कभी झूठ नही बोले। आपके शिखरचंदजी, अयोध्याप्रसादजी तथा बनारसीदासजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला शिखरचन्दजी व इनके पुत्र फुलचन्दजीका स्वर्गवास हो गया।

अयोध्याप्रसादजीका खानदान—लाला अयोध्याप्रसादजीका जन्म सं० १९१० मे हुआ।

आप कसरत प्रिय, अच्छे पहलवान हैं। आप आजतक भगवत् भजन करते हुए शान्ति लाभ कर रहे हैं। आपके दौलतचन्दजी, लालचन्दजी एवं गुलालचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों बन्धुओंका जन्म क्रमशः सं० १९३५, १९५४ तथा १९६० में हुआ। लाला दौलतचन्दजी अभी भी कालपीमें कपड़ेका व्यापार करते हैं। आपके मोतीचन्दजी, विमलचन्दजी, हीराचन्द-जी एवं प्रतापचन्दजी नामक पांच पुत्र विद्यमान हैं। इनमें बाबू मोतीचन्दजी बनारस चले गये हैं तथा यहांपर जवाहरातका व्यापार करते हैं।

लाला लालचन्दजी तथा गुलालचन्दजीको आपके काका बनारसीदासजी बनारस ले आये थे। आप दोनों बन्धु मिलनसार हैं तथा अपने-अपने जवाहरात व बैंकिङ्गके व्यापारको स्वतन्त्र रूपसे सफलतापूर्वक कर रहे हैं। लालचन्दजी सेशन कोर्टके जूरी भी हैं। आपके नगीनचन्दजी तथा रिखबचन्दजी नाम दो पुत्र व लाला गुलालचन्दजीके प्रकाशचन्दजी तथा दीपचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

लाला बनारसीदासजीका खानदान—लाला बनारसीदासजीका जन्म सं० १९१७ का था। इस खानदानमें आप एक बहुत योग्य, व्यापार कुशल एवं जवाहरातके व्यापारमें निपुण हो गये हैं। आप ही सबसे पहले कालपीसे बनारस आये तथा यहां आकर आपने जवाहरात का व्यापार प्रारम्भ किया जिसमें आपने बहुतसी सम्पत्ति उपार्जित की। आप यहांके नामी जौहरी, प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा अनुभवशील पुरुष थे। आप समयके बड़े पाबन्द थे। आपका स्वभाव बड़ा सादा था।

जवाहरातके व्यापारमें सम्पत्ति व प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके साथ ही साथ आपने सार्व-जनिक तथा परोपकारके कामोंमें अच्छा योग दिया था। आपने प्रयत्न करके बनारसमें एक जैन दिगम्बर महाविद्यालय खोला था, जिसमें आपने सर्व प्रथम १०००) प्रदान किये थे। आप इस संस्थाके कई वर्षों तक कोषाध्यक्ष भी रहे। इसके अतिरिक्त कई समय आपने इस संस्थाकी सहायता की थी। आपको जैनधर्म व सिद्धान्तोंका अच्छा ज्ञान था। चतुर्दशी को अपनी फर्म बन्द करके आप अपना पठन-पाठन किया करते थे। आपका बनारसकी ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान था। आपका विवाह बनारसके प्रसिद्ध पुरुष राजा बच्छराजजीकी पोतीसे हुआ था। आपका सं० १९८४ की पौष वदी ११ को रथयात्रामें भगवानका दर्शन करते हुए हृदयकी गति रूक जानेके कारण एकदम स्वर्गवास हो गया था। आपके काशी-प्रसादजी नामक एक पुत्र हुए। आपका जन्म सं० १९३५ में हुए। आप धार्मिक भावनाओंके व्यक्ति थे। आप बनारस तीर्थ कमेटीके मेम्बर भी थे। आप अपने व्यापारको सफलतापूर्वक संचालित करते हुए सं० १९९१ में स्वर्गवासी हुए। आपके फतेचन्दजी, केशरीचन्दजी, अमी-चन्दजी तथा मिलापचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

लाला फतेचन्दजीका जन्म सं० १९७० में हुआ। आप मिलनसार हैं। वर्तमानमें आप ही अपने सारे जवाहरातके व्यापारका संचालन कर रहे हैं।

स्व० लाला बनारसीदासजी गाधी, बनारस

दानवीर सेठ मूलचन्दजी बलदोटा बार्शी
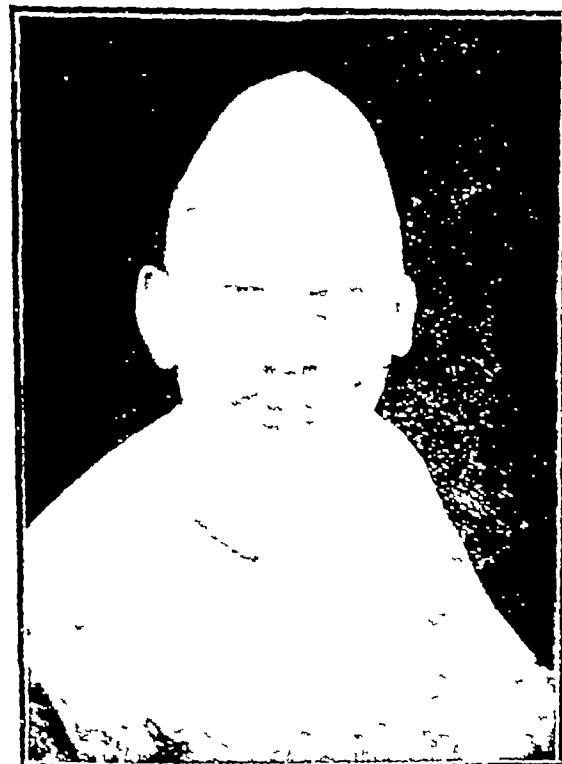
स्व० लाला काशीप्रसादजी गाधी, बनारस

लाला लालचन्दजी गांधी, बनारस

सुराणा

लाला प्यारेलालजी सुराणा मूंगेवाले, देहली

इस खानदान वाले बहुत पुराने समयसे अन्दाजन २५० वर्षों से देहलीमें ही निवास कर रहे हैं। आप लोग सुराणा गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारमें लाला प्यारेलालजी, पन्नालालजी तथा कन्हैयालालजी नामक तीन भाई हुए। प्राचीन समयमें यह खानदान बहुत प्रतिष्ठित रहा है। आपलोगोंके यहांपर मूंगेका व्यापार इतने बड़े स्केलपर होता था कि आजतक आपलोगोंके वंशज मूंगेवालेके नामसे मशहूर हैं।

लाला प्यारेलालजीः—आप इस खानदानमें बड़े प्रतिष्ठित तथा व्यापार कुशल व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपने समयमे अपनी फर्मपर नीलमका व्यापार शुरू किया। चांदीमें भी आपने बहुत व्यापार किया। आप इस बाजारमें भी बहुत प्रसिद्ध पुरुष गिने जाते थे। आपका तत्कालीन जम्बू महाराजसे अच्छा परिचय था। आपका वहांपर इतना सम्मान था कि जब आप जाते तब महाराजा साहब आपको अपने पास सम्मान पूर्वक बिठाते थे। इसके अतिरिक्त जबतक आप जम्बू नहीं जाते तबतक स्टेट नीलमका व्यापार नहीं करती थी। करीब ४० वर्ष पूर्व आप तीनों भाई अलग २ होकर अपना स्वतन्त्र रूपसे व्यापार करने लग गये थे। तभीसे आपलोगोंके वंशज अलग अलग व्यापार करते आ रहे हैं।

लाला पन्नालालजीके पुत्र उमरावसिंहजी मूंगेके व्यापारको सफलतापूर्वक चलाते हुए स्वर्गवासी हुए। आपके उत्तमचन्दजी नामक पुत्र हुए जो अतीव भाग्यशाली थे। मगर आठ वर्षकी आयुमें ही आप गुजर गये। तदनन्तर लाला उमरावसिंहजीके नामपर नागौरसे जीतमलजी गोद आये। लाला जीतमलजीने मूंगेके व्यापारमें विलायती नकली मूंगोंके चल जानेके कारण कुछ सुस्ती देखकर अपने यहांपर हुण्डी, चिट्ठीका व्यापार शुरू कर दिया था जिसमें आपको काफी सफलता प्राप्त हुई। आप श्वे० स्था० कान्फ्रेंसके मेम्बर भी रहे थे। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आप सं० १९७१ में स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर कन्हैयालालजीके पौत्र (जवाहरलालजीके पुत्र) माणकचन्दजी गोद आये। आपका भी स्वर्गवास हो गया। अतः आपके नामपर आपके बड़े भाई नानकचन्दजी गोद आये।

लाला नानकचन्दजीका जन्म सं० १९३५-३६ में हुआ। आपने अपने यहांपर जवाहरात-का व्यापार शुरू किया तथा इसमे काफी सफलता प्राप्त की। आप श्वे० स्था० कान्फ्रेंसके मेम्बर भी रहे थे। आप धार्मिक व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १९७१ में हो गया। आपके कपूरचन्दजी तथा मिलापचन्दजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

लाला कपूरचन्दजीका जन्म सं० १९६९ में हुआ। आप ही वर्तमानमें अपने सारे व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आप मिलनसार युवक है। आपके धर्मचन्दजी तथा पद्मचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू मिलापचन्दजीका सं० १९९१ में स्वर्गवास हो गया है। आप

लोगोंका खानदान आज भी मूंगेवालोंके नामसे मशहूर है। आप मे० नानकचन्द कपूरचन्दके नामसे देहलीमें पीतलके वर्तनका व्यापार करते हैं। आपका फर्म जैन ब्रास वेअर मार्टके नामसे मशहूर है। देहलीमें आपका एक बहुत बड़ा मकान है।

बाबू निहालचन्दजी राय सुराणा का खानदान, बनारस

इस खानदानके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान नागौर (मारवाड़) का था। आपलोग श्री० जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस परिवारवाले नागौरसे देहली तथा देहलीसे मुगलकालमें आगरा आये। आगरासे आपलोग बनारसमें आकर रहने लगे। इस खानदानमे रायसिंहजी हुए। आपके पूर्वज बनारसमें बैंकिंगका व्यापार करते थे। आपके गङ्गाप्रसादजी नामक पुत्र हुए। गङ्गाप्रसादजीके पन्नालालजी तथा पन्नालालजीके किशनचन्दजी नामक पुत्र हुए। आपलोग गवर्नमेंटमें सर्विस करते रहे। बाबू किशनचन्दजीके बिशनचन्दजी, निहालचन्दजी, पूरमचन्दजी तथा आनन्दचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

बाबू विशुनचन्दजी:—आपका जन्म १८ मई सन् १८५२ में हुआ। आप योग्य तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति थे। आप गवर्मेंट सर्विसमें डिप्टी कलक्टर गाजीपुरमें रहे। आप अनुभवशील तथा मिलनसार महानुभाव थे। गवर्मेण्टके अन्तर्गत आपका अच्छा सम्मान था। आप तथा आपके तीनों भाई जब छोटे थे तब आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था। ऐसी स्थितिमें आपका लालन-पालन आपकी दादी गङ्गाप्रसादजीकी धर्मपत्नीने किया। उस समय आपलोगोंकी देख रेख राजा शिवप्रसादजी सितारे हिन्दके अन्डरमें रही।

बाबू निहालचन्दजी:—आपका जन्म ५ दिसम्बर सन् १८५४ में हुआ। आपने कलकत्ता यु० से बी० ए० पासकर अलाहाबाद हाईकोर्टसे ला पास किया। आप शिक्षित, कार्य्यकुशल तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। पहले-पहल आप नैपालकी रेसीडेन्सीमें गवर्मेण्टकी ओरसे मीर मुंशी नियुक्त हुए। इसके बाद आप उन्नति करते गये। आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले सज्जन थे। आप कोर्टके मुन्सिफ, सबजज आदि रहे। आपके ईमानदारीसे कार्य्य करनेके उपलक्षमें ब्रिटिश गवर्मेण्टने आपको सर्टिफिकेट देकर सम्मानितत किया है। यहासे रिटायर हो जानेके पश्चात आप बीकानेर स्टेटमें चीफ जजके उच्च पदपर नियुक्त किये गये। मगर वहांपर अस्वस्थ रहनेके कारण आप उस पदसे इस्तीफा दे बनारस चले आये।

आप बडे सार्वजनिक स्पीरीटवाले सज्जन थे। आप बनारस हिन्दू यु० के कोर्टके मेम्बर थे तथा आपने इसमें एक जैन सीटके कायम करनेमें बहुत कोशिश की थी जिसमें आप को पूर्ण सफलता मिली। आप धर्म पालनमें दृढ़ विचारोंके महानुभाव थे। आप बड़े वजनदार तथा माननीय व्यक्ति गिने जाते थे। आपका ब्रिटिश गवर्मेन्ट, बनारस तथा बीकानेर—स्टेटमें अच्छा सम्मान था। आप १५ दिसम्बर सन् १९२९ को स्वर्गवासी हुए। आपके गुलाबचन्दजी, गुलालचन्दजी, महताबचन्दजी एवं सितावचन्दजी नामक चार पुत्र हुए।

स्व० बाबू निहालचन्दजी रायसुराणा, बनारस

स्व० बाबू आनन्दचन्दजी रायसुराणा, बनारस

बाबू खुशालचन्दजीका जन्म सन् १८८६ की ३ दिसम्बरको हुआ। आप बी० ए० एल० एल० बी० पास शिक्षित सज्जन हैं। आप बनारस बैंककी भागलपुर शाखाके मैनेजर, बनारस काटन मिलके सेक्रेटरी व बनारस हिन्दू यु० के कोर्टके मेम्बर रहे हैं। आपके जयचन्दजी, रायचन्दजी एवं रिखबचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। बाबू गुलालचन्दजीका जन्म २७ अक्टूबर सन् १८९२ में हुआ। आप वर्त्तमानमें एजेन्सी व अन्य व्यापार करते हैं। आपके अमीरचंदजी, लालचन्दजी, लाभचन्दजी, मोतीचन्दजी एवं अभयचन्दजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमेंसे प्रथम दो भाई तो व्यापारमें भाग लेते हैं। तीसरे बाबू लाभचन्दजी एल० एल० बी फायनलमें व मोतीचन्दजी एफ० ए० में पढ़ रहे हैं। पांचवें बन्धुका स्वर्गवास हो गया है। बाबू महताबचन्दजी का जन्म जुलाई सन् १८९६ में हुआ। आप कलकत्तेमें जूट की दलाली करते हैं। सिताबचन्दजीका जन्म १८९८ में हुआ। आप जमशेदपुरमें व्यापार करते हैं। आपके निर्मलचन्दजी, ललितचन्दजी, विनोदचन्दजी तथा सुबोधचन्दजी नामक चार पुत्र हैं।

बाबू पूरनचन्दजीका जन्म १३ जून सन् १८५६ में व स्वर्गवास १९ मई सन् १९०५ में हुआ। आप तहसीलदारीके पदपर काम करते रहे। आपके पुत्र उदयचन्दजीका भी स्वर्गवास हो गया है।

बाबू आनन्दचन्दजी—आपका जन्म २० फरवरी सन् १८५८ में हुआ। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने अपने व्यापारमे तरक्की की। बनारसमें जमींदारी खरीद की। इस प्रकार अपने खानदानकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप ५० वर्षके बाद गृहस्थाश्रम छोड़कर धर्मध्यानमें अपने शेष जीवनको बिताने लग गये थे। आप बड़े धर्मध्यानी व्यक्ति थे। कई स्थानोंपर आपने पशु बलि बन्द करवाये तथा अनेक धार्मिक संस्थाओंको आपने मदद पहुंचाई। आपने अपनी जमीदारीपर मांसाहार तो बिलकुल ही बन्द करवा दिया था। आप २७ अगस्त सन् १९३४ को स्वर्गवासी हुए। आपके मानकचंदजी नानकचंदजी, फतेचंदजी एवं रूपचंदजी नामक चार पुत्र हुए।

बाबू मानकचंदजीका जन्म सन् १८८८ की १५ दिसम्बरको हुआ। आप वर्त्तमानमें एक्सपोर्ट एवं इम्पोर्टका कार्य्य करते हैं। आपने आय० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। आपके विजयचंदजी तथा पद्मचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें प्रथमका स्वर्गवास हो गया है। दूसरे अभी एफ० ए० में पढ़ रहे हैं। बाबू नानकचंदजीका जन्म सन १८९५ की १६ अप्रेलको हुआ। वर्त्तमानमें आप जवाहरातका व्यापार करते हैं। आप जै० श्वे० तीर्थ सोसायटीके आनरेरी सेक्रेटरी एवं धर्मके कामोंमें बहुत भाग लेते हैं। आपके खेमचन्दजी तथा हेमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू फतेचंदजीका जन्म १ अक्टूबर सन् १९०० में हुआ। आप कलकत्तामें जूट ब्रोकर हैं। आपके कुशलचन्दजी, पृथ्वीचन्दजी तथा किशोरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। कुशलचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। बाबू रूपचन्दजीका जन्म २६ सितम्बर सन्

१९०२ में हुआ। आप अभी व्यापार करते हैं। आपके धर्मचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

आप लोगोंके यहां बनारसमें जवाहरात, बैंकिंग व जमींदारीका काम होता है। आप लोगोंका सारा खानदान सम्मिलित रूपसे प्रेमपूर्वक रह रहा है।

बोथरा

बाबू उदयचन्दजी बोथरा का खानदान, मुर्शिदाबाद बालूचर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान कोड़मदेसर (बीकानेर-स्टेट) का है। आप लोग बोथरा गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० आम्नायको माननेवाले हैं। इस खानदानके पूर्व-पुरुष केशरीचन्दजी अपने पुत्र जसरूपजीको लेकर सम्वत् १८३२ के करीब देशसे बाहर रवाना हुए व सर्वप्रथम मुर्शिदाबाद आये। यहां आकर आपने स्वतन्त्र मनिहारीका व्यापार किया। इस खानदानवालोंने अपनी उन्नति सर्विस करके नहीं की वरन् अपने व्यापारिक परिश्रमसे सारी सम्पत्ति कमाकर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। बाबू जसराजजीके दयाचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

बाबू दयाचन्दजी—आप व्यापार कुशल, योग्य तथा धर्मात्मा पुरुष हो गये हैं। आपने अपनी फर्मपर कपड़ेका व्यापार प्रारम्भ किया जिसमें आपको बहुत सफलता प्राप्त हुई। आपने अपने व्यापारकी तरक्कीके लिये कलकत्ता तथा जंगीपुर (मुर्शिदाबाद डि०) में भी फर्में खोली थीं। इस तरह लाखों रुपयेकी सम्पत्ति कमाकर आपने मुर्शिदाबादके मन्दिरमें चांदीके चौक व चन्दोवा करीब ४०००) की लागतका प्रदान किया व सिद्धाचलजी (शत्रुञ्जय) पर सदाव्रत चालू किया था। इसी प्रकार ३२ भर सोनेके श्रीदादाजीके चरण भी आपने बनवाये थे। आपका मुर्शिदाबादकी जैन जनतामें अच्छा सम्मान था। आप सं० १९३२ की श्रावण वदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर रेणीसे श्री शिवदानमलजीके पुत्र उदय-चन्दजी बोथरा गोद आये।

बाबू उदयचन्दजीका जन्म स० १९०६ की फाल्गुन सुदी १५ को हुआ था। आप तेरा-पन्थी खानदानसे यहांपर गोद आये थे। मगर आपने उदार नीति द्वारा इस खानदानके मन्दिर मार्गीय भावनाओंका पूरा पूरा आदर किया व मन्दिर आदि कार्य्योंमें अग्रभाग लेते हुए अपना तेरापन्थी धर्म पालते रहे। आपने भी अपने व्यापारको सफलतापूर्वक सञ्चालित किया व अपने खानदानकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप बड़े लोकप्रिय और मिलनसार महानुभाव थे। आपमें न तो अभिमान था और न अपनी प्रशंसाके प्रति प्रेम। आपने कई सत्कार्य्य कर यश सम्पादित किया। आपका सं० १९६० के आसोज सुदि ११ को स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गवास पर सारी मुर्शिदाबादकी जनताने शोक मनाया था तथा स्वेच्छासे अपनी २
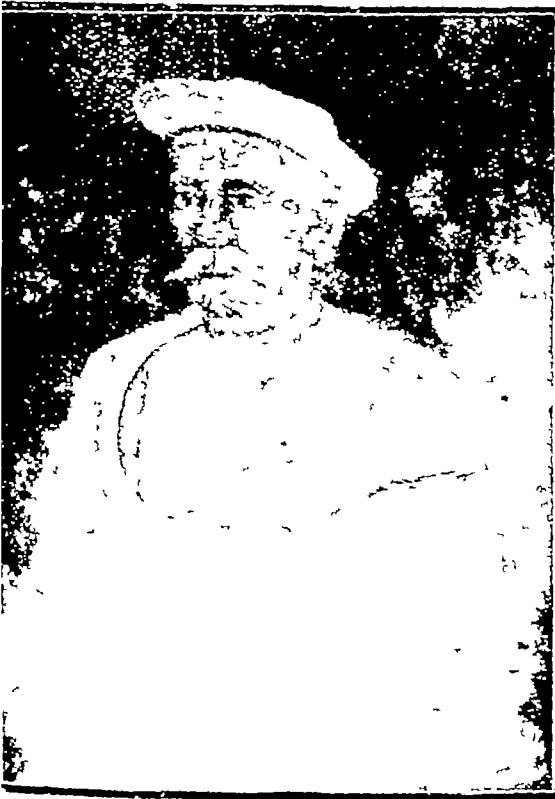
बाबू दयाचन्दजी बोथरा, मुर्शिदाबाद बालूचर
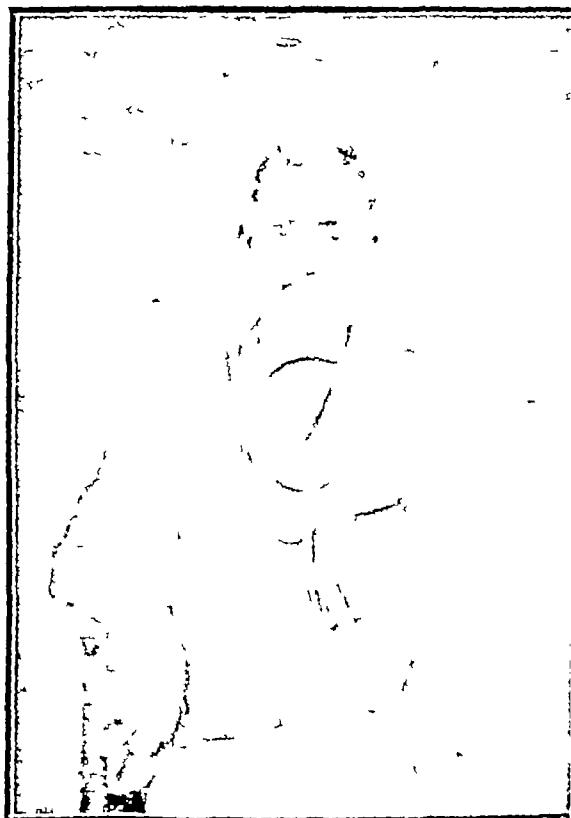
श्री सुगनचन्दजी कोठारी रेंहठी (भोपाल)
परिचय देखिये पृष्ठ ५

दुकानें बन्द करके शव के साथ साथ चले थे। आपके चुन्नीलालजी, धन्नूलालजी, बुधसिंहजी, अमरचन्दजी तथा कमलापतजी नामक पांच पुत्र हुए। आप सब बन्धु इस समय अपना अपना अलग व्यवसाय कर रहे हैं। इनमें बाबू चुन्नीलालजी व कमलापतजी मुर्शिदाबादमें हैं। बाबू धन्नूलालजीका स्वर्गवास हो गया है।

बाबू बुधसिहजीका जन्म सं० १६३६ की चैत्र बदी १२ को हुआ। आप मिलनसार सज्जन हैं तथा अपनी जमींदारीकी व्यवस्था योग्यतापूर्वक कर रहे हैं। आपके खड्गसिंहजी, जसवन्तसिहजी, पुण्यवंतसिहजी तथा विनयवन्तसिंहजी नामक चार पुत्र तथा हीराकुमारी एवं देवकुमारी नामक दो पुत्रियां हैं। इनमें श्री हीराकुमारी बड़ी विदूषी तथा साध्वी स्त्री हैं। अपने पतिके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात् आप अपना सारा जीवन पढ़ाई तथा ज्ञान प्राप्त करनेमें व्यतीत कर रही हैं। आप सांख्य, वेदान्त तथा व्याकरण तीर्थ हैं और वर्त्तमानमें न्याय शास्त्रका अध्ययन कर रही हैं। आप बौद्ध तथा जैन सिद्धांतोंका अच्छा ज्ञान रखती हैं। बाबू खड्गसिंहजी अपनी जमीदारीके संचालनमें भाग लेते हैं, बाबू जसवन्त सिंहजी बम्बई आर्ट स्कूलमें फिफ्थइयरमें, पुण्यवंतसिंहजी इञ्जीनियरिङ्ग कालेजमें फोर्थइयरमें व विनयवन्तसिंह-जी इन्टरमें विद्याध्ययन कर रहे हैं। आप सब बन्धु शिक्षित एवं मिलनसार हैं।

बाबू अमरचन्दजी मिलनसार तथा सरल स्वभाववाले सज्जन हैं। आप वर्त्तमानमें भागलपुर नाथनगर में कपड़ेका व्यापार करते हैं। आपके निर्मलचन्दजी तथा उद्योतचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

यह खानदान मुर्शिदाबादकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

गुलाबचन्दजी बोथराका खानदान, जयपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान बीकानेरका है। आपलोग बोथरा गौत्रके श्रीजैन श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें सेठ मायाचन्दजी हुए। आपके सवाईसिंहजी तथा सवाईसिंहजीके नवलसिहजी नामक पुत्र हुए। सेठ नवलसिंहजी ही सबसे पहले बीकानेरसे करीब २०० वर्षोंपूर्व जयपुर आये और यहींपर स्थायीरूपसे निवास करने लगे। तभीसे आपके वंशज यहींपर निवास कर रहे हैं। आपके छोटमलजी, सरवसुखजी तथा चुन्नीलालजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ सरवसुखजी कोठीवालीका व्यापार करते थे। आपके मन्नालालजी, धन्नालालजी तथा चौथमलजी नामक तीन पुत्र हुए। सं० १६४० के करीब आप तीनों भाइयोंके खानदान-वाले अलग अलग होकर अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगे। सेठ मन्नालालजीके परिवारमें इस समय कोई नही हैं। सेठ धन्नालालजीके परिवारमें उनके पुत्र मगनमलजीके पुत्र हजारी-मलजीके पुत्र चम्पालालजी विद्यमान हैं।

सेठ चौथमलजीका जन्म सं०१६१२ में हुआ। आपने पहले पहल मद्रासमें सर्विस की।

फिर आप जयपुर चले आये और यहां पर जवाहराता का व्यापार शुरू किया जिसमें आपको काफी सफलता प्राप्त हुई। आप धार्मिक व्यक्ति भी थे। आपका सं०१९६९ में स्वर्गवास हो गया है। आपके नामपर जोधपुरसे श्रीपूनमचन्दजी वच्छावतके पुत्र गुलाबचन्दजी सं० १९५७ में गोद आये।

सेठ गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १९५० में हुआ। आप मिलनसार व्यक्ति हैं तथा अपने जवाहरातके व्यापारको सफलतापूर्वक चला रहे हैं। आप जैन श्वे० स्था० सुबोध मिडिल स्कूलके सेक्रेटरी १० सालोंतक रहे। इस स्कूलके ट्रस्टियोंमेंसे भी आप एक हैं। इसके अति- आप जुएलर्स एसो० की एक्जीक्यूटिव्ह कमेटीके मेम्बर भी हैं। आपके मिलापचन्दजी, कैलाशचन्दजी, प्रकाशचन्दजी तथा कमलचन्दजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। श्रीमिलापचन्दजीने इसी साल बी० ए० का इम्तहान दिया है। बाबू कैलाशचन्दजी इन्टरमें पढ़ते हैं। आप दोनों मिलनसार हैं।

सेठ लक्ष्मणदासजी बोथराका खानदान, बीकानेर

(मेसर्स शिवलाल पन्नालाल कोटा)

इस परिवारके लोगोंका मूल निवासस्थान बीकानेरका है। आप ओसवाल समाजके बोथरा गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी आम्नायको माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवारमें सेठ लक्ष्मणदासजी हुए। आप व्यापार कुशल थे। आपके समयमें आपकी फर्मपर अफीमका व्यापार होता था। धर्मध्यानकी तरफ भी आपका अच्छा ध्यान था। आपके मनसुखदासजी शिवलालजी, एवं दीपचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इन तीन बन्धुओंमेंसे प्रथम दो भाईयोंका स्वर्गवास क्रमशः सं० १९६३ एवं १९६५ में हुआ। सेठ दीपचंदजी वर्तमानमें विद्यमान हैं। सेठ मनसुखदासजीके नथमलजी नामक एक पुत्र हुए। आप व्यापार कुशल एवं होशियार व्यक्ति हैं। आपके तोलारामजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ शिवलालजीके धनराजी एवं पन्नालालजी नामक दो पुत्र हैं। आप दोनों बन्धुओंका जन्म क्रमश. सम्वत् १९६१ एव १९६४ में हुआ। आप दोनों मिलनसार एवं उत्साही व्यक्ति है। वर्त्तमानमें आप दोनों अपने फर्मके व्यवसायको संचालित कर रहे है।

सेठ दीपचंदजी व्यापार कुशल एवं मिलनसार सज्जन हैं। वर्तमानमें आप ही इस परिवारमें सबसे बड़े एवं अपने व्यापारके प्रधान संचालक हैं। आपके हीरालालजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी मिलनसार हैं।

वर्तमानमें इस परिवारवालोंकी बीकानेरमें तीन-चार फर्में हैं जिनपर किराना अफीम आदि का व्यवसाय होता है। आप लोगोंकी कोटामें भी मे० शिवलाल पन्नालालके नामसे एक ब्रांच है जिसपर पेचा-पगड़ी एवं वैंकिगका व्यवसाय होता है।

सेठ गुलाबचन्दजी बोथरा, जयपुर

बाब मिलापचन्दजी S/o सेठ गुलाबचन्दजी बोथरा
जयपुर
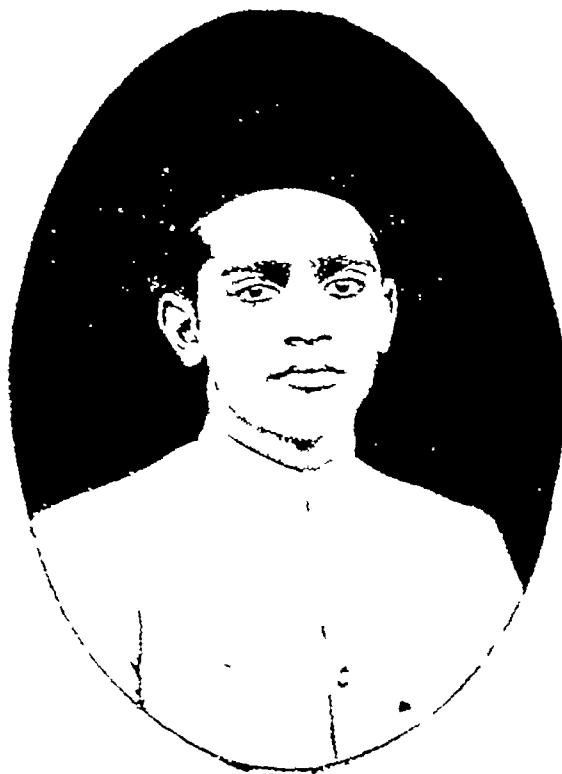
बाबू कैलासचन्द्रजी S/o गुलाबचन्दजी बोथरा

बाब प्रकाशचन्द्रजी S/o सेठ गुलाबचन्दजी बोथरा

समदड़िया

सेठ मानमलजी बिरदीचन्दजी समदड़िया, मंचर (पूना)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान बुचकलां (पीपाड़के समीप—मारवाड़) में है। वहां इस परिवारके पूर्वज सेठ अमरचन्दजी समदड़िया निवास करते थे। आपके पुत्र सेठ बिरदीचंदजी समदड़िया हुए। आप लगभग सौ-सवासौ वर्ष पूर्व व्यापारके लिये दक्षिण प्रान्तमे आये एवं आपने मंचर नामक स्थानपर अपना लेन-देनका व्यापार आरम्भ किया। आपके हीराचंदजी, चतुरभुजजी, रामचन्दजी तथा मानमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन बन्धुओं में से सेठ मानमलजीने इस कुटुम्बके व्यापारको बढ़ाकर अपनी साम्पत्तिक स्थितिको मजबूत किया। साथ ही अपने परिवारकी मान प्रतिष्ठामे भी आपके हाथोंसे अच्छी उन्नति हुई। मंचर तथा आसपासकी जनतामें आप वजनदार व्यक्ति माने जाते थे। सं० १९६८ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ आनन्दरामजी तथा सेठ राजमलजी समदड़िया हुए। आप दोनों सज्जन विद्यमान हैं।

सेठ आनन्दरामजी राजमलजी समदड़िया—आप दोनों बन्धुओंका जन्म क्रमशः संवत् १९४२ की कार्तिक सुदी १५ तथा सम्वत १९४६ में हुआ। आपका शिक्षण मंचरमें ही अपने पिताजीकी देखरेखमें हुआ। आप दोनों भाई मचर, पूना तथा महाराष्ट्र प्रान्तकी जैन समाजमें नामांकित व्यक्ति हैं। आप बन्धुओंने अपने पिताजीके स्वर्गवासी हो जानेके बाद संवत् १९६९ में मंचरके श्री सुमतिनाथ भगवानके मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उत्सव अपनी आगेवानीमें पूरा कराया। इस मन्दिरकी प्रतिष्ठाका कार्य्य लगभग ४० सालोंसे रुका हुआ था और इसके कारण समाजमें मनोमालिन्य पैदा हो रहा था। पर आपलोगोंके प्रेममय व प्रभावपूर्ण व्यवहार से शांति व समझौता स्थापित हुआ और कार्य्य निर्विघ्न समाप्त हुआ। जातिकी सभा समितियों एवं कान्फ्रेंसोंमें भी आप दोनों सज्जन अच्छी दिलचस्पी लेते रहते हैं। जुन्नरके मारवाड़ी सम्मेलनमें सं० १९८८ में सेठ आनन्दरामजीने स्वागताध्यक्षका पद सम्मानित किया था। इसी प्रकार आप ग्राम पंचायतके प्रेसीडेण्ट तथा लोकल बोर्डके मेम्बर भी निर्वाचित हुए थे। मञ्चर की हिन्दू मुस्लिम जनतामें आपका अच्छा वजन है एवं इन जातियोंमें प्रेममय व्यवहार बने रहनेका आप हमेशा प्रयास करते रहते हैं। इस समय आपके जिम्मे श्री अम्बालाल बाकुभाई धर्मार्थ दवाखाना मचर, श्रीपूना डिस्ट्रिक्ट पांजरापोल मंचर एवं जैन मन्दिरकी व्यवस्थाका भार है।

सेठ राजमलजी समदड़िया शिक्षित तथा विद्यानुरागी सज्जन हैं। श्री मूर्ति पूजक जैन वाचनालय नामक आपका एक स्वतन्त्र वाचनालय है। इसमे पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। इसके अलावा आपके पास लगभग ४०-५० पत्र आते रहते हैं। आपके पठनप्रेमसे ग्रामकी जनताकी जागृतिमें अच्छी मदद मिली है। सेठ आनन्दरामजीके ३ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः

उत्तमचंदजी, भागचंदजी एवं पन्नालालजी हैं। इन तीनों भाइयोंका जन्म क्रमश: संवत् १९६९-७१ तथा ७५ में हुआ है। आप तीनों भाई सुशील तथा शान्त प्रकृतिके युवक हैं तथा फर्मके व्यापारमें भाग लेते हैं। इस समय इस परिवारका मचरमे सेठ मानमल विरदीचंदके नामसे सराफी, बैंकिंग व साहुकारीका व्यापार होता है। सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र प्रेमराजजी, लालचंदजी भी मंचरमें अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

बोहरा

सेठ मेघराजजी पूनमचन्दजी वोहरा, घोड़नदी (पूना)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान वराथड़ खींवसरके पास (जोधपुर स्टेट) में है। आपलोग श्वेताम्बर जैन समाजके ढेलडिया वोहरा गौत्रके सज्जन हैं। वराथड़से व्यापार के निमित्त इस परिवारके पूर्वज सेठ फतेचन्दजी वोहरा दक्षिण प्रांतके घोडनदी नामक स्थानपर आये। आपके साथमें आपके पुत्र भींवराजजी और मेघराजजी भी थे। घोड़नदीमें इन तीनों पिता पुत्रोंने किरानेकी किरकोल दुकानदारी आरम्भ की तथा इस व्यापारसे सम्पत्ति उपार्जित करके रिसालेके साथ लेनदेनका व्यापार आरम्भ किया। उन दिनों घोड़नदीमें रेजिमेन्ट बहुत बड़ी सख्यामें रहती थी। इसलिये इस कार्य्यमें आपको वहुत वड़ी सफलता प्राप्त हुई। इन तमाम व्यापारोंका मुख्य संचालन सेठ मेघराजजी वोहरा करते थे। आप वड़े होशियार, चतुर तथा बुद्धिमान पुरुष थे। आपके हाथोंसे अपने परिवारके सम्मान और सम्पत्तिकी विशेष उन्नति हुई। गावकी पञ्चपञ्चायतीमें भी आप सम्माननीय व अग्रगण्य पुरुष माने जाते थे। अपनी फर्मपर साहुकारी लेनदेन भी आपहीके समयमें आरम्भ हुआ। इस प्रकार अपने व्यापारको दृढ़ वनाकर आप सं० १९२२ में स्वगवासी हुए। आपके सेठ ताराचन्दजी और पूनमचदजी नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों भाइयोंका व्यापार लगभग ५० साल पहिले अलग अलगहो गया।

सेठ ताराचन्दजी बोराका जन्म लगभग सं० १९०२ में हुआ था। जातिकी पञ्चपञ्चायतीमें तथा समाजमें आपभी सम्माननीय सज्जन थे। धार्मिक कामोंकी ओर आपका बड़ा लक्ष था। आपकी अगवानीमें घोड़नदीमें श्रीपार्श्वनाथ भगवानका मंदिर बना तथा आपने अपने व्ययसे उसपर कलश चढ़वाया। लगभग सं० १९८५ में आप स्वर्गवासी हुए। इस समय आप- के पुत्र जुगराजजी और हीरालालजी विद्यमान हैं

सेठ पूनमचन्दजी वोहरा—आपका जन्म सं० १९१९ की कार्तिक बदी ११ के दिन हुआ। आप घोड़नदी तथा आसपासके जैन समाजमें प्रतिष्ठित सज्जन हैं। दान धर्मके कामोंमें आपका अच्छा ध्यान है। आपने अपने बन्धु मेघराजजीके साथ सन् १९०७ में शिरूर मामलेदार कचहरीमें लगभग १ हजारकी लागतसे एक कारञ्जा बनवाया। सेठ पूनमचन्दजी शिरूर म्युनिसिपैलेटीमें ३० सालतक कार्य्य करते रहे। इस संस्थाके आप चेयरमैन और वाइस प्रेसिडेंटके

पदपर भी सम्मानित रहे। इसी तरह तालुका लोकलबोर्डमे भी आप मेम्बर रहे। अहमदनगरके श्रीजैनमन्दिरकी प्रतिष्ठामे आपने १ हजार रुपयोंकी सहायता दी। आपकी दुकान घोड़नदीमें प्रधान एवं मातबर मानी जाती है। आपके पुत्र श्रीकेवलचन्दजीका जन्म सं० १९६४ की जेठ सुदी ३ को हुआ। श्रीकेवलचन्दजी सयाने तथा समझदार युवक हैं तथा अपनी दुकानके व्यापार संचालनमे प्रधान सहयोग देते हैं। इस समय आपके यहां मेघराज पूनमचन्दके नामसे साहुकारी तथा कृषिका कार्य्य होता है। वेलवण्डी बुदरक (अहमदनगर) में आपकी दुकान है।

इस दुकानपर श्रीशिवलालजी बोथरा ५० सालोंसे मुनीम हैं। आप बड़े सयाने तथा समझदार पुरुष हें तथा जातिकी पञ्चपञ्चायतीमे दुकानकी ओरसे आप ही जाते हैं। आपकी ईमानदारी से प्रसन्न होकर दुकानके मालिकोंने आपको ७ हजारकी लागतके घर जमीन वगैरह बख्शिसमें दिये हैं।

बापना

सेठ लछमणदासजी केशरीमलजी बापना, बड़वाहा

इस खानदानके पुरुषोंका मूल निवासस्थान लवारी (मारवाड़) का है। आप बापना गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदान वाले सेठ हजारीमलजी तक तो मारवाड़में ही रहते रहे। सेठ हजारीमलजी ही सबसे पहले देशसे चलकर पीपलगांव बसवंत (जिला नाशिक) गये तथा वहांपर अपना व्यापार शुरू किया। आपके शेष भाई तो इसी गांवमें रहने लगे। मगर हजारीमलजी सं० १९४८ में बड़वाहा (इन्दौर-स्टेट) आये और यहां पर कपड़े, किराना आदिका व्यापार शुरू किया। आप अच्छे स्वभावके तथा व्यापारमें होशियार पुरुष थे। आपको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली। आपके लछमणदासजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ लछमणदासजी—आप व्यापार कुशल तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति थे। आपका सं० १९२१ में जन्म हुआ था। आपने व्यवसायके अन्तर्गत बहुत सफलता प्राप्त की व धीरे-धीरे बड़वाहा के अन्दर अपना एक जीन व प्रेस स्थापित किया। आपने बहुत प्रयत्न करके बड़-वाहके अन्दर एक कपासकी मण्डी जमाई। आप बड़वाहामें बड़े इज्जतदार, प्रतिष्ठित तथा लोक प्रिय सज्जन थे।

आपने करीब डेढ़ लाखकी लागतसे बड़वाहके अन्दर एक सुन्दर मन्दिर व धर्मशाला बनवाई। मन्दिरके प्रतिष्ठा महोत्सवको आपने बड़े ठाटसे करवाया जिसमे करीब ५००००) पचास हजार रुपये व्यय हुये होंगे। आपका स्वर्गवास सं० १९९१ मे हुआ। आपके केशरी-मलजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

सेठ केशरीमलजीका जन्म सं० १९४४ में हुआ। आप मिलनसार तथा व्यापार कुशल

व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने सारे व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आप वड़वाहमें प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय व्यक्ति हैं। आप अपने मन्दिरकी अच्छे ढंगसे व्यवस्था कर रहें हैं। आपके सौभागचन्दजी तथा चौथमलजी नामक दो पुत्र हैं। आप लोगोंका वड़वाहमें एक जीन तथा एक प्रेस सफलतापूर्वक चल रहा है। आपका खानदान वड़वाहामें प्रतिष्ठित माना जाता है।

सेठ मोतीरामजी कुन्दनमलजी बापना, घोड़नदी (पूना)

इस परिवारका मूल निवासस्थान सिरला ढावा (मेड़ताके पास) है। वहांसे लगभग ६०, ७० साल पहिले इस परिवारने कुचेरामें अपना निवास बना लिया है। लगभग १२५ साल पहिले सेठ उदयचन्दजी वापना अपने निवास स्थान सिरला ढावासे व्यापारके लिये दक्षिण प्रान्तमें आये तथा धसाई (थाणा जिला-तालुका मुरवाड़) में पहुंचकर इन्होने वहां लेनदेन-का कारवार आरम्भ किया। इनके फतेहचन्दजी, हीराचन्दजी, धीरजी, जीतमलजी और मोतीचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। धसाईसे आकर लगभग १०० साल पहिले इन पांचों भाइयों-ने घोड़नदीमें कपड़ेकी दुकान खोली तथा सालमें चार माह वारिशमें घोड़नदी रहते थे और फिर धसाई चले जाते थे। जव घोड़नदीका व्यापार जम गया तव सेठ हीराचन्दजी और मोतीचन्दजीने अपना स्थाई निवास यहीं वना लिया तथा सेठ फतेहचन्दजी और धीरजीका परिवार धसाईमें ही निवास करता रहा। पीछेसे धीरजी मारवाड़ चले गये। शेप दो बन्धु हीराचन्दजी तथा जीतमलजीके कोई सन्तान नहीं रही।

सेठ फतेहचन्दजी वापनाका परिवार--आपके जोधराजजी, गम्भीरमलजी तथा कस्तूर-चन्दजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें जोधराजजीके चन्दनमलजी, मगनमलजी और जीव-राजजी नामक ६ पुत्र हुए। श्री चन्दनमलजी धसाईमें कपड़ेका व्यापार करते थे। आपके हंसराजजी, चुन्नीलालजी तथा घूमरमलजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भाइयोंमेंसे सेठ हंसराजजी धसाईमें ही स्वर्गवासी हो गये, सेठ चुन्नीलालजी इस समय कुचेरामें निवास करते हैं एवं सेठ घूमरमलजी अपने दादा सेठ कुन्दनमलजीके यहाँ घोड़नदी में दत्तक आये हैं। सेठ चुन्नी-लालजीके पुत्र पारसमलजी बङ्गालमें व्यापार करते हैं। सेठ मगनमलजीके रामदेवजी, लिखमीचन्दजी, मालमचन्दजी तथा खेमचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें सेठ लिखमीचन्दजी इस समय बङ्गालमें व्यापार करते हैं तथा रामदेवजीके पुत्र भँवरीलालजी, मनोहरमलजी और पारसमलजी गायबादा (बंगाल) में कारवार करते हैं। इसी प्रकार सेठ जीवराजजीके पौत्र अमोलकचन्दजी (सेठ भेरूदासजीके पुत्र) भी फूलछड़ी (बङ्गालमें) रहते हैं।

सेठ गम्भीरमलजीके अमरचन्दजी, रतनचन्दजी, घेवरचन्दजी तथा हरकचन्दजी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें घेवरचन्दजी मौजूद हैं। इन चारों भाइयोंका कारवार धसाईमें होता है। रतनचन्दजीके नामपर मिलापचन्दजी दत्तक हैं और हरकचन्दजीके पुत्र जुगराजजी हैं।

सेठ घुमरमलजी बापना, घोड़नदी (पूना)

सेठ नन्दरामजी बरडिया, गोटेगाव

बाबू शोभाचन्दजी बापना, घोड़नदी (पूना)
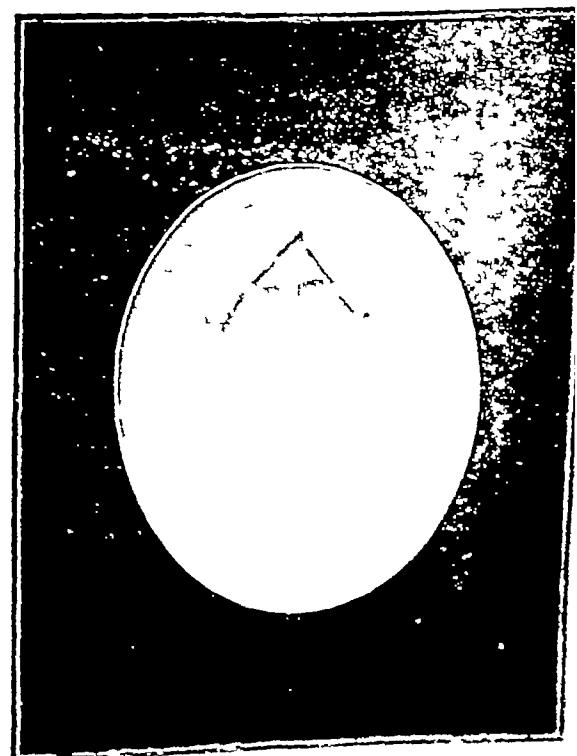
श्री उत्तमचन्दजी मूथा, पाथर्डी (अहमदनगर)

सेठ धीरजी बापना मारवाड़में ही रहते थे। इनके सुकजी तथा धनजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों भाई घोड़नदीमें व्यापार करते थे। पश्चात् सुखजी मारवाड़ चले गये तथा धनजी घोड़नदी में ही व्यापार करते रहे। सेठ सुखजी कार्तिक बदी ११ सं० १९५७ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रावतमलजी सतारामें सेठ कनीरामजीके नामपर दत्तक गये हैं। सेठ धनजीके हरकचन्दजी, भूरमलजी तथा देवीचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें देवीचन्दजी मौजूद हैं। आपने १९५९ की पौष सुदी १३ को बड़ौदामें अमरविजयजीसे दीक्षा ली। आपका देवविजयजी नाम है।

सेठ मोतीचन्दजी बापनाका परिवार—हम ऊपर लिख आये हैं कि सेठ हीराचन्दजी और मोतीचन्दजीने अपने कपड़े तथा सराफीके व्यापारको घोड़नदी में बहुत उन्नतिपर पहुचाया। आप लोग अपने आसपासकी व्यापारिक समाजमें नामी पुरुष थे। आपके हाथोंसे परिवारके मान सन्मानकी एवं दानधर्मकी बड़ी वृद्धि हुई। हजारों रुपयोंकी सहायता आपने गरीबोंको दी। सेठ हीराचन्दजी लगभग ७० साल पहिले तथा सेठ मोतीचन्दजी लगभग ५० साल पहिले स्वर्गवासी हुए। सेठ मोतीचन्दजीके पुत्र सेठ कुन्दनमलजीका जन्म सवत् १९०० में हुआ। आप भी अपने पिताजीकी भांति प्रतिष्ठित तथा नामी पुरुष हुए। धर्म ध्यानमें आपका बड़ा लक्ष था। आपने पूज्य श्री तिलोकऋषिजीके सामने प्रतिज्ञा ली थी कि अमुक रकमसे जितनी अधिक रकम मेरे पास होगी, वह सब पुण्यार्थ लगादेऊँगा और इस प्रतिज्ञाको आप आजन्म निबाहते रहे। जातिपाँति व आसपासके जैन समाजमें आप आगेवान पुरुष थे। आपके १४ पुत्र हुये थे। पर कोई जीवित नहीं रहा। आपने अतएव अपने परिवारसे ही चन्दनमलजीके छोटे पुत्र धूमरमलजीको कुचेरासे दत्तक लिया। संवत् १९७१ की फाल्गुन बदी ४ को आप स्वर्गवासी हुए। आपने अपने स्वर्गवासके समय ५ हजार रुपये तथा धूमरमलजीने १ हजार रुपये धर्मार्थ निकाले थे।

सेठ धूमरमलजी बापनाका जन्म संवत् १९४८ में कुचेरामें हुआ। सम्वत् १९६० मे आप सेठ कुन्दनमलजीके यहाँ दत्तक आये। आप घोड़नदीकी जैन समाजमें सयाने एव समझदार पुरुष हैं। आप जैन श्वे० स्थानकवासी आम्नायके माननेवाले सज्जन हैं। दान धर्म तथा सार्वजनिक कामोंमे यह परिवार सहयोग लेता रहता है। सेठ धूमरमलजीके पुत्र शोभाचन्दजी सुशील युवक हैं। आपका जन्म सम्वत १९६७ में हुआ है। इस समय आपके यहां कुन्दनमल धूमरमल तथा शोभाचन्द धूमरमलके नामसे कपड़ा, गिरवी तथा हुण्डी चिठ्ठीका व्यापार होता है।

सेठ रावतमलजी मिश्रीमलजी बापना, सतारा

हम ऊपरके परिचयमें सेठ सुखजी बापनाका परिचय दे चुके हैं। सेठ सुखजीके स्वर्गवासी हो जानेपर उनके पुत्र सेठ रावतमलजी बापना सं० १९४८ में सतारा आये। सेठ

रावतमलजीका जन्म सम्वत् १९३९ की फाल्गुन वदी १० को खजवाणा (कुचेरा) में हुआ। सेठ कनीरामजी सतारावालोंकी धर्मपत्नीके अचानक प्लेगमें स्वर्गवासी हो जानेके कारण उनकी सम्पति आपको प्राप्त हुई। आपने सतारा आकर अपने कपड़ेके व्यापारको बढ़ाया तथा द्रव्य उपार्जन किया। सम्वत् १९६५ में आपने अपनी फर्मकी एक शाखा रावतमल भूरमलके नामसे बम्बईमें खोली। पर सम्वत् १९७३ में आपकी सुयोग्य पत्नीके स्वर्गवासी हो जानेसे एवं उनके कोई पुत्र भी जीवित न रहनेसे दुःखी होकर आपने अपनी बम्बईकी दूकानको बन्द कर दिया। पश्चात् आपने दो विवाह और किये, जिनसे मिश्रीमलजीका जन्म १९७७ की वैशाख वदी ६ को तथा हुक्मीचन्दजीका जन्म १९८६ की आसोज वदी १० को हुआ।

सेठ रावतमलजीकी व्यापारमें अच्छी बढ़ी हुई हिम्मत है। हर एक धार्मिक कामोंमें आप उदारता पूर्वक व्यय करते हैं। आप सम्वत् १९७४ से हर साल दो माह अपना कारबार बन्द करके पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराजकी सेवामें जहां वे चतुर्मास करते हैं वहाँ जाते हैं। इसी प्रकार हर एक साधु मुनिराजके दर्शनोंसे आपको अच्छा प्रेम है।

धूपिया

सेठ नेमीचन्दजी उत्तमचन्दजी मूथा, पाथर्डी (अहमदनगर)

इस परिवारका पूर्व परिचय इस ग्रन्थके पृष्ठ ६२८ में सेठ किशनदासजी माणकचन्दजी मूथा अहमदनगर वालोंके परिचयमें दे चुके हैं। जब सम्वत् १९७३ में सेठ हजारीमलजी, अगरचन्दजी, नेमीचन्दजी और किशनदासजी इन पांचों भाइयोंका व्यापार अलग २ हो गया तबसे इस परिवारकी पाथर्डीकी दुकान सेठ नेमीदासजीके परिवारके भाग में आई। सेठ नेमीदासजी सम्वत् १९६९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्री उत्तमचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ उत्तमचन्दजी मूथाका जन्म सम्वत् १९५७ में हुआ। आप सामाजिक एवं शिक्षा विषयक कार्यों में अच्छी दिलचस्पी लेते हैं तथा स्थानीय श्री तिलोक जैन पाठशाला व जैन बोर्डिंगके मन्त्री पदका कार्य १३ वर्षों से बड़ी योग्यतासे संचालित कर रहे हैं। पाथर्डीके जैन समाजमें आप समझदार व आगेवान व्यक्ति हैं। आपके यहाँ इस समय कपड़ेका व्यापार होता है।

सेठ देवीचन्दजी चुन्नीलालजी मूथा, वांबोरी (अहमदनगर)

यह परिवार पीपाड़ (जोधपुर स्टेट) का निवासी है। वहांसे लगभग १२५ साल पहिले इस परिवारके पूर्वज सेठ फानमलजी दक्षिण प्रान्तके अहमदनगर जिलेके डोंगरगाव

नामक स्थानमें आये। आपके दानमलजी, लक्ष्मणदासजी, देवीचन्दजी, चन्दनमलजी, किशनदासजी तथा पूनमचन्दजी नामक ६ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमेंसे सेठ दानमलजी लगभग सौ साल पहिले डोंगरगांवसे वांबोरी आये और आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। इनका पञ्चपञ्चायती तथा जातिमें अच्छा सम्मान था। इन छहों भाइयोंमेंसे इस समय सेठ किशनदासजी मौजूद हैं।

सेठ देवीचन्दजीका परिवार—सेठ देवीचन्दजीने अपने कपड़ेके व्यापारको जमा कर अपनी प्रतिष्ठा व सन्मानकी वृद्धि की। सम्वत् १९४० मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १९३९ मे हुआ। सेठ चुन्नीलालजी वांभोरीमें प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप यहांकी म्युनिसिपैलिटीके ३ सालोंतक प्रेसिडेंट ६ सालोंतक वाइस प्रेसिडेंट एवं तीन सालोंतक चेयरमनके पदपर रहे। हर एक अच्छे कामोंमें आप सहयोग लेते रहते हैं। आपके मोहनलालजी, उत्तमचन्दजी तथा समरथमलजी नामक ३ पुत्र हैं। आप तीनों भाई भी अपनी फर्मके व्यापारको बड़ी तत्परतासे सञ्चालते हैं। श्री मोहनलालजी गत वर्ष तालुका लोकल बोर्डके मेम्बर थे एवं वर्तमानमें डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड अहमदनगरके मेम्बर हैं। आपके यहां इस समय वांभोरीमे देवीचन्द चुन्नीलाल तथा चुन्नीलाल समरथमलके नामसे तथा बम्बई व वेलापुरमें उत्तमचन्द मूथाके नामसे आढ़त, कपड़ा तथा फ्रूटकी चलानीका व्यापार होता हैं। वांभोरीके व्यापारिक समाजमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती हैं।

मुणोत

सेठ धीरजमलजी चांदमलजी रीयांवाले, लश्कर

इस प्रतिष्ठित खानदानका पूर्व परिचय हम इस ग्रन्थके प्रथम खण्डमें में दे चुके हैं। इस परिवारके पूर्व पुरुषोंने कई महत्वके कार्य्य किये और अपने नाम और यशको खूब चमकाया। इस परिवारवाले जीवनदासजी वगैरह कई सज्जनोंने अपने अतुल ऐश्वर्य्य एवं प्रतिभाके कारण सारे मारवाड़में खूब ख्याति और यश प्राप्त किया। यहांतक कि जोधपुरके महाराजा मानसिंहजी समय-समयपर आपसे आर्थिक सहायताएं लिया करते थे। इस परिवारवालोंके पास आज भी अनेकों महत्वपूर्ण रुक्के एवं पुराने कागजात पाये जाते हैं जिनसे आपलोगोंके प्राचीन ऐश्वर्य्यका पता लगता है। आपलोगोंको जोधपुर दरबारकी ओरसे पुश्त-हा-पुश्तके लिये सेठका सम्माननीय खिताब प्राप्त हुआ था।

इस खानदानके सेठ हमीरमलजीके समयमें इस खानदानकी अजमेर, जबलपुर, सागर, दमोह, लश्कर, उज्जैन आदि २ कई स्थानोंपर दुकानें थी। इसके अतिरिक्त पञ्जाबमें भी आपकी शाखाएँ खुली हुई थीं। कई स्थानोंपर ब्रिटिश गवर्मेण्टके खजाने भी आपके जुम्मे

थे। सेठ हमीरमलजी संवत् १९१२ में लश्करमें स्वर्गवासी हुए। आपके धीरजमलजी, चन्दनमलजी तथा रा० सा० चांदमलजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ धीरजमलजी सं० १९११ में स्वर्गवासी हुए। आपके कनकमलजी तथा धनरूपमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमेंसे धनरूपमलजी सेठ चंदनमलजीके नाम पर दत्तक आये। संवत् १९३४-३५ तक यह परिवार शामलातमें अपना व्यवसाय करता रहा। इसके पश्चात् रा० सा० सेठ चांदमलजीका परिवार अजमेरमें, सेठ कनकमलजीका परिवार सागरमें तथा सेठ धनरूपमलजीका परिवार लश्करमें अपने २ हेड आफीस बनाकर अपनी शाखाओंका व्यापार संचालन करने लगा।

सेठ धनरूपमलजीका व्यापार लश्कर, जबलपुर, भेलसा, उज्जैन आदि स्थानोंमें था। आपका बैंकिङ्ग व्यवसाय भी बहुत बढ़ा-चढ़ा था। सम्वत् १९५५ में आप ग्वालियर आ गये। यहापर आप ग्वालियर स्टेटके ईसागढ़के तथा भेलसाके खजांची बनाये गये। यह खजानेका कार्य्य अभीतक आपके परिवालोंके पास चला आ रहा है। सेठ धनरूपमलजीका ग्वालियर सार्वजनिक क्षेत्रमे अच्छा सम्मान था। आप यहांके आनरेरी मजिष्ट्रेट तथा म्युनिसिपल मेम्बर भी रहे थे। आपके पुत्र बागमलजीका जन्म सम्वत् १९५३ में हुआ। आप बड़े मिलनसार तथा योग्य सज्जन हैं। आपके पांच गांव जमींदारीके हैं और ग्वालियर स्टेटके दो खजाने भी आपके जिम्मे हैं। आपके गोपीचन्दजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ कनकमलजीके पुत्र भैरोबगसजीके पास सागरमें १३-१४ गांवोंकी जमींदारी है। आप मेसर्स रघुनाथदास हमीरमलके नामसे बैंकिंग तथा जमींदारीका काम काज करते हैं। आपके रिखबदासजी एवं बल्लभदासजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू रिखबदासजी बी० ए० में पढ़ रहे हैं।

सेठ मगनमलजी फतेचन्दजी मुहणोत, अमरावती

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान सेठोंकीरीयां (मारवाड़) है। इस परिवारके पूर्वज सेठ हुकमीचन्दजी मुहणोत रीयाँमें ही निवास करते थे। आपके मानमलजी, गुलालचन्दजी, तखतमलजी, बखतावरमलजी एवं रूपचन्दजी नामक पांच पुत्र हुए। इन भाइयोंमेंसे दो छोटे बन्धु बाल्यावस्थामें ही स्वर्गवासी हो गये थे। शेष तीन भाइयोंमेंसे सबसे बड़े भाई सेठ मानमलजी मुहणोत मारवाड़से सं० १८९७ में व्यापारके निमित्त रवाना हुए एवं कई कठिनाइयाँ झेलते हुए बम्बईके पास महाड़बंदर नामक स्थानपर गये तथा सं० १९०० तक आप वहा नौकरी करते रहे। इस प्रकार कठिन परिश्रम द्वारा आपने २००) एकत्रित किये और फिर आप फेरी द्वारा मनिहारी सामानकी बिक्रीका कार्य्य करने लगे। कुछ ही दिनों बाद स० १९०० मेंही आपने केलसी (रत्नागिरी) में अपनी स्वतन्त्र दुकान की और उसपर किराना और कपड़ाका व्यापार आरम्भ किया। आपके दो पुत्र नवलमलजी एवं धनराजजी थे। इन भाइयोंमें धनराजजी अपने काका सेठ गुलाबचन्दजीके नामपर दत्तक गये।

जब सेठ मानमलजी लगातार १३ सालोंतक मारवाड़ नहीं आये, तब उनकी धर्मपत्नीने

अपने पुत्र नवलमलजीको सेठ मानमलजीको मारवाड़ लिवा लानेके लिये भेजा। जब ये लोग केलसी पहुंचे, तो सेठ मानमलजीने अपना तमाम व्यापार अपने छोटे बन्धु गुलाबचन्दजी एवं पुत्र नवलमलजीको सह्मलाया और आप मारवाड़ आ गये। यहाँ आकर आपने अपने पूर्वजों-का जितना देना था वह सब चुकाया। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण उद्योगमय एवं आशामय रहा।

सेठ नवलमलजीने केलसीके व्यापारको अच्छा बढ़ाया तथा अपनी दुकानकी शाखा आंजरला (केलसीके पास—रत्नागिरी) में खोली। इसके बाद सं० १९३४ में आपने अमरावतीमे दुकान की। इसके पश्चात् आपने अपनी शाखाएं बम्बई और गुलेजगुडमें भी खोलीं। आपने केलसीमें एक हनुमानजीका मन्दिर भी बनवाया। आपके रतनचन्दजी, सूरजमलजी तथा चाँदमलजी नामक तीन पुत्र हुए और सेठ धनराजजीके पनराजजी और मगनमलजी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ रतनचन्दजी सेठ तखतमलजीके नामपर दत्तक गये। सेठ रतनचन्दजी तथा सेठ धनराजजीने इस फर्मकी बम्बई, अमरावती तथा गुलेजगुड शाखाओंको बहुत उन्नति प्रदान की एवं अपनी भागीदारीमें शाखाएं बरोड़ा, सोलापुर, जमखण्डी, रायपुर आदि स्थानोंपर खोलीं। सं० १९७६ में प्लेगके कारण इस परिवारके मालिकोंमे सेठ रतनचन्द-जी, सूरजमलजी, चाँदमलजी, पनराजजी, उदयराजजी (पनराजजीके बड़े पुत्र) एवं मिश्रीमलजी (सूरजमलजीके पुत्र) का स्वर्गवास हो गया, जिससे इस परिवारमें भयङ्कर शोक छा गया। प्रमुख व्यक्तियोंके स्वर्गवासी हो जानेसे योग्य सञ्चालकोंकी कमी हो गई। अतएव कई जगहोंका व्यापार कम कर दिया गया। सं० १९८१ में इस परिवारका व्यापार भी अलग-अलग हो गया। सेठ मिश्रीमलजीके नामपर सेठ पनराजजीके मझले पुत्र पुखराजजी दत्तक गये हैं। इनका व्यापार मोघामण्डी (पंजाबमें) सूरजमल मिश्रीमलके नामसे होता है।

वर्तमानमें सेठ रतनचन्दजीके परिवारका तथा सेठ मगनमलजीका व्यवसाय सम्मिलित है। सेठ रतनचन्दजीके पुत्र छगनमलजी एवं फतेचन्दजी हुए। इन भाइयोंमे सेठ फतेचन्दजीने इस परिवारके व्यापारको पुनः जोरोंसे उन्नत किया। सेठ छगनमलजीके पुत्र श्रीमाँगीलाल-जीका जन्म सं० १९६९ मे हुआ। आप होशियार तथा समझदार युवक हैं तथा अपने व्यापार-को बड़ी तत्परतासे सह्मालते हैं। आपके पुत्र कल्याणमलजी हैं।

सेठ फतेचन्दजी तथा सेठ मगनमलजी प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपकी धार्मिक एवं शिक्षाके कामोंमें अच्छी रुचि है। आपने लगभग ३६ हजार रुपयोंकी लागतसे पींपाडमें एक पाठशालाकी सुन्दर बिल्डिंग बनवाई एवं उस स्कूलके पढ़ाईका सब व्यय भी आप अपनी ओरसे देते हैं। इस पाठशालामे इस समय १६० छात्र शिक्षा पाते हैं। सेठ फतेचन्दजीके पुत्र श्रीजेंवरीलालजी तथा हीरालालजी हैं।

वर्तमानमें इस परिवारका अमरावतीमे सेठ मगनमल फतेचन्द और मानचन्द छगन-मलके नामसे, गुलेजगुडमें धनराज मगनमलके नामसे, आंजरलामे मानमल गुलाबचन्दके नामसे

एवं केलसीमे चादमल जॅवरीलालके नामसे व्यवसाय होता है। इन सब स्थानोंपर यह फर्म नामांकित मानी जाती है।

मुणोत परिवार, पनवेल (कुलाबा)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान सेठोंकी रीयाँ (मारवाड़) है। वहाँ इस परिवारके पूर्वज सेठ राजारामजी और करणमलजी दोनों भ्राता निवास करते थे। इन बन्धुओंमेंसे लगभग १०० वर्ष पूर्व बड़े भ्राता सेठ राजारामजीके नन्दरामजी एवं सेठ करणमलजीके रामदासजी नामक पुत्र हुए।

सेठ नन्दरामजी मुणोतका परिवार—आपके यहां आरम्भसे ही कपड़ा, कृषि तथा साहुकारीका व्यापार होता है। सेठ नन्दरामजीके कोई सन्तान नहीं थी। अतएव उनके नामपर सेठ रामदासजीके ज्येष्ठ पुत्र सेठ किशनदासजी दत्तक आये। सेठ किशनदासजी इस परिवारमें प्रतिष्ठित तथा नामी पुरुष हुए। लगभग सम्वत् १९४९-५० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके मुकुन्ददासजी तथा मोतीलालजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ मोतीलालजीने पनवेलके समीप ही बम्बई पूनारोडपर अच्छी लागतसे एक सुन्दर बगीचा बनाया है। आप शौकीन तबियत के और बुद्धिमान पुरुष थे। सेठ मुकुन्ददासजीका स्वर्गवास सम्वत् १९७७ में एव सेठ मोतीलालजीका स्वर्गवास सम्वत् १९९१ की पोष सुदी १४ को हुआ। इस समय इस परिवारमें सेठ मुकुन्ददासजीके पुत्र लालचन्दजी एव सेठ मोतीलालजीके पुत्र पन्नालालजी, पेमराजजी एवं शान्तिलालजी विद्यमान हैं। आप सब भाई अपने व्यापार को भली प्रकार सम्हालते हैं। इस समय आपके यहाँ सेठ राजाराम नन्दरामके नामसे व्यापार होता है।

सेठ रामदासजी मुणोतका परिवार—जिस प्रकार इस परिवारके पूर्वज सेठ राजारामजीने पनवेलमें आकर अपना व्यापार शुरू किया उसी प्रकार उनके छोटे भाई सेठ करणमलजीने मारवाड़से आकर पूना जिलेके आलेगाँव नामक गाँवमे अपनी दुकान की। आपके पुत्र सेठ राजारामजी का विवाह आलेगाँवमें ही हुआ। सेठ रामदासजीके किशनदासजी, जसरूपजी, हीरालालजी, शोभाचन्दजी तथा गुलाबचन्दजी नामक ५ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ किशनदासजी अपने काका सेठ नन्दरामजी के नामपर दत्तक गये। कुछ समय बाद सेठ रामदासजीका परिवार भी पनवेलमें आकर रामदास जसरूपके नामसे कपड़ेका व्यापार करने लगा। सब भाई उस फर्मका संचालन करते रहे। सेठ गुलाबचन्दजी इस परिवारमें नामाकित पुरुष हुए। आपने अपने कुटुम्बकी सम्पत्ति तथा सम्मानकी विशेष उन्नति की। सम्वत् १९६० में आपने कपड़ेके व्यापारके साथ साथ एक राइस मिल खोली एवं सागलीमें श्रीराम गुलाबचन्दके नामसे एक दुकान खोली। यहाँके व्यापारको भी आपने बहुत बढ़ाया। कुछ समय बाद कपड़ेके व्यापारको बन्द कर दिया गया। सेठ जसरूपजी सम्वत् १९५८ मे, सेठ शोभाचन्दजी १९०४ में तथा सेठ गुलाबचन्दजी सम्वत् १९७३ में स्वर्गवासी हुए।

स्व० सेठ लक्ष्मणदासजी चापना, बड़वाहा

सेठ केशरीमलजी चापना, बड़वाहा

इन बन्धुओंमें सेठ जसरूपजीके पुत्र चुन्नीलालजी और सोनीलालजी विद्यमान हैं। सोनीलालजी अपने काका सेठ शोभाचंदजीके नामपर दत्तक गये हैं। आप दोनों भाइयोंका व्यापार अलग अलग है।

सेठ चुन्नीलालजीका जन्म सम्बत् १९४८ में हुआ। आपने अपने काका गुलाबचन्दजीके बाद अपने व्यापारको भली प्रकार संचालित किया तथा १९७६ में बम्बईमें गुलाबचन्द राजमलके नामसे आढ़तका काम शुरू किया था। थोड़े समय बाद स्वास्थ्य ठीक न होने एवं योग्य कार्य्यकर्त्ताओंके अभावके कारण बम्बईका काम बन्द कर दिया गया। इस समय आपके यहाँ सेठ बरदीचन्द मुणोतके नामसे एक राईस मिल है तथा राजाराम गुलाबचन्द और बरदीचन्द मुणोतके नामसे चावल व आढ़तका व्यापार होता है। इस समय सेठ चुन्नीलालजीके पुत्र हरकचंदजी तथा शांतिलालजी पढ़ते हैं।

सेठ लखमीचन्दजी जड़ावचन्दजी मुहणोत, सिवनी (मालवा)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान बीकानेर है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ लखमीचंदजी मुहणोत लगभग १०० साल पहिले व्यापारके निमित्त सिवनी (मालवा) आये। यहाँ आकर आपने लेन-देनका व्यापार आरम्भ किया। आपके नामपर दौलतपुरेसे सेठ छोगमलजी मुहणोतके छोटेभाई (जिनका इटारसीमें छोगमल हजारीमलके नामसे फर्म है) सेठ जड़ावमलजी दत्तक आये। आपके हाथोंसे इस परिवारके व्यापार तथा सम्मानकी बृद्धि हुई। आपने साहुकारी ब्यापारमें सम्पत्ति उपार्जित करकेअपने परिवारमें गांव व जमींदारी खरीद की। आप सिवनी म्यु० के मेम्बर तथा पञ्च कमेटीके प्रेसीडेण्ट थे तथा सिवनीके वजनदार और नामी पुरुष थे। शिवनी व आसपासकी जनतापर आपका बड़ा प्रभाव था। जनताके बीचमेंझगड़ोंका तसवीहा आपसे करवानेमें जनता बड़ी सन्तुष्ट होती थी। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सम्वत १९६९ की भादवा सुदी में आप स्वर्गवासी हुए। उस समय आपके पुत्र श्री पन्नालालजी व मोतीलालजी बालक थे। अतएव अपनी जमीदारी व व्यापारका तमाम संचालन आपकी धर्मपत्नीजीने बड़ी बुद्धिमत्तापूर्वक किया।

वर्तमान समयमें इस फर्मके मालिक सेठ पन्नालालजी तथा सेठ मोतीलालजी हैं। आप दोनों भाइयोंका जन्म क्रमशः सम्वत् १९६५ तथा १९६८ में हुआ है। आप सिवनीके अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। स्थानीय अस्पताल, गौशाला आदिमें आपने सहायताएं दी हैं। आप लोग जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस कमेटी रतलामके मेम्बर हैं। इस समय आपके यहां "लखमीचन्द जड़ावचन्द" के नामसे जमींदारी और साहुकारी लेन-देनका व्यापार होता हैं।

पालावत

लाला सौभागचंदजी रिखबदासजी, लखनऊ

इस खानदानके मालिकोंका मूल निवासस्थान अलवरका था। आप लोग पालावत गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस परिवारवाले सबसे पहले अलवरसे देहली तथा देहलीसे करीब १०० वर्ष पूर्व लखनऊ आये। तबसे आजतक आप लोग लखनऊमें ही निवास कर रहे हैं। इस परिवारमें लाला ओरामलजी हुए। आपके छोटमलजी तथा छोटमलजीके सौभागचन्दजी व सुगनचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। लाला छोटमलजीकी धर्मपत्नीने अपने घरखर्चेसे एक पाठशाला खोली थी जो आजतक सुचारु रूपसे चल रही है। आप सब लोग महाजनी व जवाहरात का व्यापार करते रहे।

लाला सौभागचन्दजीने अपने जवाहरातके व्यापारको बढ़ाया व अपने खानदानकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप बड़े धार्मिक भावनाओंवाले पुरुष थे। आपने ऋषभदेवजी वगैरह स्थानोंके मन्दिरोंके जीर्णोद्धार करवाये थे। आप लखनऊकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके रिखवदासजी नामक पुत्र हुए।

लाला रिखवदासजी—आपका जन्म सम्वत् १९३१ में हुआ। आप बड़े धार्मिक, केशरियाजीके अनन्य भक्त तथा मिलनसार व्यक्ति थे। आपने कई समय बहुतसे व्यक्तियोंके साथ तीर्थयात्राएँ की थीं। धार्मिक कामोंके साथ ही साथ आपने जवाहरातके व्यापारमें भी काफी सफलता प्राप्त की। आप यहांकी श्रीमाल एवं ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आप स्वर्गवासके समय ५०००) पांच हजार रुपया पुण्यार्थ निकाल गये हैं। जैन श्वे० पाठशालाके लिये भी आप ५) मासिक कर गये हैं। आपके रतनचन्दजी, उदयचन्दजी तथा उम्मेदचन्दजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं। आप तीनों बन्धुओंका जन्म क्रमशः सम्वत् १९६२, १९६४ तथा १९७४ में हुआ। इनमेंसे प्रथम दो बन्धु तो अपने जवाहरातके व्यपारको सफलतापूर्वक चला रहे हैं। तृतीय अभी फोर्थ ईयरमें पढ़ रहे हैं। आप सब मिलनसार एवं उत्साही हैं। लाला उदयचंदजीके जयचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान है।

इस खानदानकी ओरसे केशरियाजीमें एक छोटी धर्मशाला बन रही है। आप लोग मे० सौभागचन्द रिखबदासके नामसे लखनऊमें जवाहरातका व्यापार कर रहे हैं।

लाला प्यारेलालजी दलेलसिंहजीका खानदान, देहली

इस परिवारवामें मूल निवासी अलवरके हैं। आप लोग पालावत गौत्रके श्री जै० श्वे० मूर्त्तिपूजक हैं। इस खानदानके पूर्व पुरुष करीब २०० वर्ष पहले अलवरसे देहली आये थे। इसमें लाला दीपचन्दजी हुए। आपके सुखलालजी, सुखलालजीके लछमणदासजी तथा लछमणदासजीके प्यारेलालजी नामक पुत्र हुए।

स्व० लाला दुलेलसिंहजी पालावत, देहली

स्व० सेठ बरदीचन्दजी मुणोत, पनवेल (कुलाबा

लाला सौभागचन्दजी पालावत, लखनऊ

सेठ फतेचन्दजी मुणोत, पीपाड़

लाला प्यारेलालजी जवाहरातका व्यापार करते रहे। आपका स्वर्गवास करीव ६० वर्ष पूर्व हो गया है। आपके स्वर्गवासके समय आपके पुत्र दलेलसिंहजी एवं टीकमसिंहजीकी बहुत छोटी २ ऊमर थीं। लाला प्यारेलालजीका जन्म सं० १९२८ के करीब हुआ। आप योग्य, व्यापार कुशल तथा धार्मिक भावनाओंवाले पुरुष थे। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की व सारे सामाजिक कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किये। आपका स्वभाव सरल व धार्मिक था। आपने तथा लाला टीकमचन्दजीने दिल्लीके नौघरेके जैन मन्दिरमें दो अलग २ वेदियां बनवाईं हैं। इसी प्रकार लाला टीकमचन्दजीने श्री आत्मवल्लभ धर्मशालाके नामसे देहलीमें एक धर्मशाला भी बनवाई। लाला दलेल सिंहजीका स्वर्गवास सं० १९९० में हो गया। आपके श्रीचन्दजी, गुलावचन्दजी एवं विजयसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। आप तीनों बन्धुओंमेंसे लाला श्रीचन्दजी सं० १९९२ से अलग होकर अपना स्वतन्त्र कारबार कर रहे हैं। आप उत्साही तथा मिलनसार युवक हैं।

लाला गुलावचन्दजीका जन्म सं० १९५९ में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा वर्तमानमें प्यारेलाल दलेलसिंह नामक फर्मके सारे कामको संचालित कर रहे हैं। आपके पद्मचन्दजी एवं हेमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू विजयसिंहजी अभी बालक हैं।

सुचंती

सेठ मालीरामजी फकीरचंदजीका खानदान, जयपुर

इस खानदानवाले बहादुरपुर निवासी संचेती गौत्रीय श्री जै० श्वे० मन्दिर मार्गीय व्यक्ति हैं। इस खानदानमें श्रीचन्दजी नामक व्यक्ति हुए। आपके पुत्र सूरजमलजी सबसे पहले करीब ९० वर्ष पूर्व बहादुरपुरसे जयपुर आये तथा वहांपर कपड़ेका व्यापार शुरू किया। आपको इस व्यवसायमें अच्छी सफलता मिली। आप बड़े धार्मिक मनोवृत्तिवाले व्यक्ति थे। आपने श्रीसुमतीनाथजीके मन्दिरकी व्यवस्थाका कार्य किया जिसे आजतक आपके वंशज बराबर कर रहे हैं। आपके मालीरामजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ मालीरामजी अपने व्यापारको सफलतापूर्वक चलाते रहे। आप सीधे तथा सज्जन व्यक्ति थे। आपके पुत्र फकीरचन्दजीका जन्म सं० १९२८ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल एवं मिलनसार व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपने सम्मानको बढ़ाया तथा व्यापारमें भी तरक्की की। आपका स्वर्गवास सं० १९५६ में हुआ। मरनेके कुछ समय पूर्व आपने अपने परिवार-वालों, इष्ट मित्रों आदिको बुलाकर क्षमा-याचना कर ली मानो कि आपको अपनी मृत्युका पहले होसे ज्ञान हो गया हो। आपके सागरमलजी, सरदारमलजी तथा फूलचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ सागरमलजीका जन्म सं० १९४१ में हुआ। आप धर्मध्यानमें श्रद्धा रखनेवाले

व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप अपने व्यापारको सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं। आपनी वंश परंपरागत मन्दिरकी व्यवस्था आप भी ठीक ढङ्गसे कर रहे हैं। आपके सिरेमलजी तथा ताराचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू सिरेमलजीका जन्म सं० १९६? में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा व्यापारमें भाग लेते हैं। आपने नौपतजीके उज्जवणीके उत्सवपर मंदिरमें श्रावकके १२ व्रत ग्रहण किये हैं। आप नवयुवक सभाके कोषाध्यक्ष हैं। आपके भंवरमलजी एवं ज्ञानचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

सेठ सरदारमलजीका जन्म सं० १९४७ में हुआ। आप भी व्यापारमें सहयोग प्रदान करते हैं। आपके रतनचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आप लोगोंका परिवार सम्मिलित रूपमें रह रहा है। आपके यहांपर त्रिपोलिया तथा जौहरी बाजारमें एक२ फर्म है जिनपर जयपुरी छपमा कपड़ेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त आपकी त्रिपोलियामें एक रङ्गकी दुकान और है।

लाला खुशालचन्दजी कन्हैयालालजी सुचन्ती, देहली

आप लोगोंका मूल निवास स्थान बहादुरपुर (जिला अलवर) का हैं। आप सचेती गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले हैं। करीब २०० वर्षों से यह परिवार देहलीमें निवास कर रहा है। इस परिवारमें लाला जवाहरलालजी हुए। आपके कालूरामजी, भैरोदासजी, दिलसुखरायजी आदि चार पुत्र हुए। भैरोदासजीके खुशालचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला खुशालचन्दजीका सं० १८९९ में जन्म हुआ था। आप बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। आपको गोटा, किनारा तथा रेशमके व्यापारमें बहुत सफलता मिली। आपकी यहापर अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास सं० १९६४ में हुआ। आपके मन्नूलालजी, कन्हैयालालजी, मोतीलालजी तथा हीरालालजो नामक चार पुत्र हुए।

बाबू कन्हैयालालजीका जन्म सं० १९३५ में हुआ। आप मिलनसार हैं तथा अपने बैङ्किङ्ग व हुंडी चिट्ठीके व्यापारको सफलतापूर्वक चला रहे हैं। आपने अपने यहां डिप्टीमलजीको गोद लिया हैं। डिप्टीमलजी तीक्ष्ण बुद्धिवाले बालक हैं।

पीतल्या

सेठ बदीचंदजी बच्छराजजी पीतल्या, जावरा

इस खानदानका पूर्व परिचय इसी खानदानवाले बदीचंद वर्द्धमान पीतल्या रतलामवालोंके इतिहासमें पृष्ट ५८८ पर दिया गया है। इस परिवारका इतिहास बच्छराजजीसे प्रारम्भ होता है।

सेठ बच्छराजजी—आप बड़े भाग्यशाली एवं साहसी पुरुष थे। अपने पिताजी द्वारा सं० १९२२ में स्थापित जावरा दुकान सं० १९४४ में जब आप तीनों भाई अलग अलग हो गये तब आपके हिस्सेमें आई। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे अपनी फर्मपर अफीमका व्यापार बहुत जोरोंसे प्रारम्भकर लाखों रुपये कमाये। आप जावराकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपका जावरा स्टेटमें तथा यहांकी जनतामें भी अच्छा सम्मान था। व्यापारमें आपका साहस खुला हुआ था। सम्पत्ति कमानेके साथ ही साथ आपने कई लोगों-की सहायता करके उसका सदुपयोग किया था। आपका सं० १९५६ में स्वर्गवास हो गया। आपके चांदमलजी नामक एक पुत्र थे।

सेठ चादमलजी—आपका जन्म सं० १९३९ में हुआ। आपके पिताजी गुजरे उस समय आपकी वय केवल १७ वर्षकी थी। अतः कुछ सालोंतक जावरा की फर्मका सारा कार्य्य रतलामवालोंने सम्हाला। संवत् १९६२ में रतलामवालोने पुनः सारा काम काज सेठ चांदमल-जीके सुपुर्द कर दिया। आप बड़े दयालु एवं मिलनसार व्यक्ति थे। आप जावरामें लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आपने अपने हाथोंसे धार्मिक एवं सार्वजनिक कामोंमें बहुत रुपया खर्च किया। जावरा स्टेटमें भी आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपने स्टेशनके पास एक बङ्गला भी बनवाया है जो आज भी सुन्दर स्थितिमे विद्यमान है आपका स्वर्गवास सं० १९८२ में हुआ। आपके बख्तावरमलजी एवं सूरजमलजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

श्री बख्तावरमलजी एवं सूरजमलजीका जन्म क्रमशः सम्वत १९६० एवं १९६५ में हुआ आप दोनों मिलनसार व्यक्ति हैं। आपलोग अपने कारबारको भी योग्यतापूर्वक चला रहे हैं। आप दोनोंका जनता एवं राज्यमें अच्छा सम्मान है। बख्तावरमलजीके व्रजलालजी, आनन्दी-लालजी, बसन्तीलालजी एवं नन्दलालजी नामक चार पुत्र हैं। इसी प्रकार सूरजमलजीके विनेंद्रमलजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

बोरड़

सेठ मोतीलालजी कन्हैयालालजी बोरड़, हापुड़

इस खानदानवाले जैसलमेर निवासी बोरड़ गौत्रके श्री जै० श्वे० मंदिर मार्गीय हैं। इस परिवारके पूर्वपुरुष रतनलालजी करीब ८० वर्ष पूर्व देशसे चलकर सिकंदराबाद (जिला बुलंद शहर) आये तथा यहांपर ब्याजका व्यापार किया। आपके मोतीलालजी, गंभीरमलजी एवं माघमलजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ मोतीलालजीका जन्म सं० १९३० में हुआ। आपको सिकन्दराबादमें ... के व्यापारमें भी सफलता मिली। आपने संवत् १९७२ में हापुड़में अपनी एक दुकान खोली और आप भी यहां आकर रहने लगे। तभीसे आजतक आपके वंशज यहींपर निवास कर रहे हैं।

आपके दोनों भाई व्यापारमें भाग लेते रहे। सेठ गंभीरमलजीके मुकुटलालजी तथा मोहनलालजी नामक दो पुत्र हुए जो सेठ मोतीलालजीके वंशजोंसे अलग होकर करीव १० सालोंसे अपना अलग व्यापार करते हैं। सेठ मोतीलालजी बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप बड़े धार्मिक हो गये हैं। आपने हापुडमें एक मंदिर तथा धर्मशाला भी वनवाई है। आपका स्वर्गवास सं० १९६१ में हुआ। आपके कन्हैयालालजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ कन्हैयालालजीका जन्म सं० १९५६ में हुआ। वर्त्तमानमें आपही अपने व्यवसायके प्रधान संचालक तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपने अपनी एक फर्म गाजियाबादमें भी खोली है। आपने सम्वत् १९८३ में हापुडमें पुण्य श्री जैन लाइब्रेरी नामकी एक लायब्ररी भी खोल रक्खी है। इसके अतिरिक्त मंदिर तथा धर्मशालाका कार्य्य भी सुचारुरूपसे चल रहा है। इस मंदिरका प्रतिष्ठा महोत्सव सम्वत् १९७९ में यति श्री वरदीचन्दजीने सम्पन्न किया है।

सेठ कन्हैयालालजीके जीवनलालजी, तुलारामजी तथा फकीरचंदजी नामका तीन पुत्र है। यह खानदान यहां की ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपकी फर्मोंपर गल्ले, रूई, भाड़ा तथा व्याजका व्यवसाय होता है।

पावेचा

सेठ गुलाबचन्दजी मेहताका खानदान, कोटा

इस खानदानका मूल निवासस्थान सोजत (मारवाड़) का था। आप लोग ओसवाल जातिके पावेचा गौत्रीय श्री जैन श्वे० म० मार्गीय सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ वनेचन्दजी हुए। आपके मूलचन्दजी, मूलचन्दजीके छजमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ छजमलजीके रामदासजी एव नानूरामजी नामक दो पुत्र हुए।

इस खानदानमें सेठ रामदासजी सोजतसे सम्वत् १८९२ के करीव पाली चले गये। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका जन्म सम्वत् १८६७ में हुआ था। आपने पालीमें अपने व्यापारको वढ़ा कर सम्पत्ति कमाई थी। आपका स्वर्गवास स० १९२७ में हो गया। आपके हीराचन्दजी एवं गुलावचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। श्री हीराचन्दजी अपने काका नानूरामजी के नामपर गोद चले गये।

सेठ गुलाबचन्दज—आपका जन्म सबत १९१९ की कार्तिक सुदी ८ को हुआ। आप योग्य, व्यापार कुशल एवं धार्मिक सज्जन थे। आपने करीव ५ सालोंतक जोधपुर दरबार श्री यशवंतसिंहजीके छोटे भाई श्री किशोरसिंहजीके पास सफलतापूर्वक कामदारी की। इसके पश्चात् सं० १९३९ में आपने कोटा आकर दलाली की व स० १९४५ से स्वतन्त्ररूपसे अपना अफीमका व्यापार शुरू किया जिसमें आपको वहुत सफलता मिली। आपने शांघाई (चीन) भी डायरेक्ट् अफीमकी पेटियाँ भेजी थीं।

आप बड़े धार्मिक सज्जन भी थे। सं० १९५० में आपने पाटनपोलके एक प्राचीन मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया और एक श्यामपत्थरकी शिखरबन्द वेदी स्थापित कर उसपर सोनेकी कोराई आदिमें बहुतसा धन खर्च किया। इसके अतिरिक्त आपने अपनी हवेलीपर भी एक सुन्दर देरासरजो स्थापित किया जिसकी प्रतिष्ठा सं० १९७४ में कराई। वेदी सुन्दर व सोनेकी कोराईसे भव्य मालूम पड़ती है। सेठ गुलाबचंदजी कोटामें प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आपके हाथोंसे कई सत्कार्य हुए। आपने कई जैन पुस्तकोंको छपाकर मुफ्त वितरित किया है। आपने बहुतसे तीर्थोंकी मय कुटुम्बके यात्रा की। आपका संवत् १९९३ की आषाढ़ बदी ६ को स्वर्गवास हो गया। आप आजन्म उपवासादि करते रहे। आपकी धर्मपत्नी भी साध्वी स्त्री थीं। श्री गुलाबचन्दजीके सौभागमलजी एवं ज़ोरावरमलजी नामक दो पुत्र हुए।

श्री सौभागमलजीका जन्म सम्वत् १९५२ की कार्तिक सुदी १२ को हुआ। आप मिलनसार, योग्य एवं सज्जन व्यक्ति हैं। संवत् १९८० तक आप सब काम सफलतापूर्वक करते रहे। इसके पश्चात् श्री विनोदीरामजी बालचन्दजीके यहांपर सर्विस प्रारम्भ की। आपकी होशियारी एवं वजनदारीसे आपको उक्त सेठोंने सं० १९८२ से अपनी कोटा दुकान का हेड मुनीम बनाकर भेजा। वर्त्तमानमे भी आप कोटा फर्मके प्रधान मुनीम तथा योग्य व्यक्ति हैं। फर्मके सारे कामको योग्यतापूर्वक चला रहे हैं। आपका कोटा स्टेटमें भी अच्छा सम्मान हैं। आपके पुत्र उमरावसिंहजीके विवाहमें कोटा दरबारने लवाजमा, सवार आदि बिना फीसके भेजकर आपके सम्मानको बढ़ाया था। आपके उमरावसिंहजी एवं चैनसिंहजी नामक दो पुत्र हैं। प्रथम व्यापार करते हैं तथा दूसरे अभी पढ़ते हैं।

श्री जोरावरमलजीका जन्म सं० १९६४ की कार्तिक बदी २ को हुआ। आप योग्य व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप कोआपरेटिव बैंकके एकाउण्टेंट हैं।

यह खानदान यहांकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

चौपड़ा

सेठ चांदमलजी मोहनलालजी चौपड़ा, अहमदनगर

यह परिवार सेठोंकी रीयाँ (पीपाड़—मारवाड़) का निवासी है। वहांसे बहुत समय पूर्व यह कुटुम्ब व्यापारके निमित्त अहमदनगर आया। सेठ चांदमलजीने अपने परिवारके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। आप संवत् १९८२ की आषाढ़ सुदी १४ को स्वर्गवासी हुए। आपके मोहनलालजी, झूमरलालजी तथा चुन्नीलालजी नामक ३ पुत्र विद्यमान हैं। इन तीनों भाइयोंका कारबार सम्वत् १९८६ में अलग हो गया है। तबसे सेठ मोहनलालजी, उप-

रोक्क नामसे अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। आपके शान्तिलालजी, कुन्तीलालजी एवं कान्तिलालजी नामक ३ पुत्र हैं। इनके दो बन्धु धर्मानुरागी सेठ मगनमलजीके पास रहते हैं। इस समय आपके यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

सेठकेशरीचंदजी दानमलजीका खानदान, कोटा

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान जैसलमेरका है। आप ओसवाल जातिके कूकड़ चौपडा गौत्रीय श्री जै॰ श्वे॰ मं॰ मार्गीय महानुभाव हैं। आपका बङ्क सिंघी है। इस खानदानमें सेठ निहालचन्दजी हुए। आपके धनराजजी एवं केशरीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ केशरीचन्दजी सबसे पहले सम्वत् १९१२ के करीब देशसे चलकर छवड़ा (टोंक) आये और वहांपर मेसर्स बागमल राजमल मुमइया अजमेरवालोंके यहांपर नौकरी की। सं० १९२६ तक यहींपर सर्विस करनेके पश्चात् आपने काश्तकारी लेनदेनका अपना स्वतन्त्र काम-काज शुरू किया जिसमें आपको अपनी व्यापार चातुरीसे बहुत सफलता प्राप्त हुई। आप छवड़ेमे बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे। आपका सं० १९६९ में स्वर्गवास हुआ। आपके दानमलजी, माणकचंदजी एवं लखमीचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ दानमलजीका जन्म सं० १९२६के चैत्र वदी अमावसको हुआ। आप व्यापारकुशल एवं धर्म ध्यानमें विशेष श्रद्धा रखनेवाले सज्जन हैं। आपने अपने हाथोंसे बहुत रुपये कमाये और धर्मके कार्य्योंमें भी बहुत खर्च किया। आपने छीपाबाड़ीमें एक मन्दिर बनाया तथा कई समय तीर्थयात्रा की। आपका स्वभाव सरल और मिलनसार है। वर्तमानमें आप ही कोटा फर्मका व्यवसाय संचालित कर रहे हैं। आपके भूरामलजी, कन्हैयालालजी एवं चांदमलजी नामक तीन पुत्र हैं।

बाबू भूरामलजी, कन्हैयालालजी एवं चांदमलजी तीनों बन्धु बड़े उत्साही एवं मिलनसार नवयुवक हैं। आप लोग भी व्यापार सञ्चालनमें पूर्ण योग दे रहे हैं। बाबू कन्हैया-लालजीके सुन्दरलालजी, धर्मचन्दजी एवं रणजीत सिंहजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ दानमलजी अपने बन्धुओंसे सम्वत् १९५४ तक सम्मिलित रूपसे व्यापार करते रहे। तदनन्तर आप सब लोगोंके वंशज अलग २ हो गये और अपना स्वतन्त्र कारबार करने लगे। सेठ दानमलजीके परिवारवालोंकी छीपाबड़ोद, कोटा एवं इकलेरेमें मेसर्स केशरीचन्द दानमलके नामकी फर्मे हैं जिनपर बैंकिंग व लेनदेनका व्यापार होता है। इकलेरेमें आपकी एक जीनिंग फैक्टरी भी है।

आपका खानदान छीपाबड़ौदमें अच्छा प्रतिष्ठित एवं मातबर माना जाता है।

स्वर्गीय सेठ किशनदासजी मेहर, आस्टी (निजाम स्टेट)

सेठ मुकुन्ददासजी मेहर, आस्टी

सेठ चुन्नीलालजी मेहर, आस्टी

सेठ शोभाचन्दजी मेहर, आस्टी
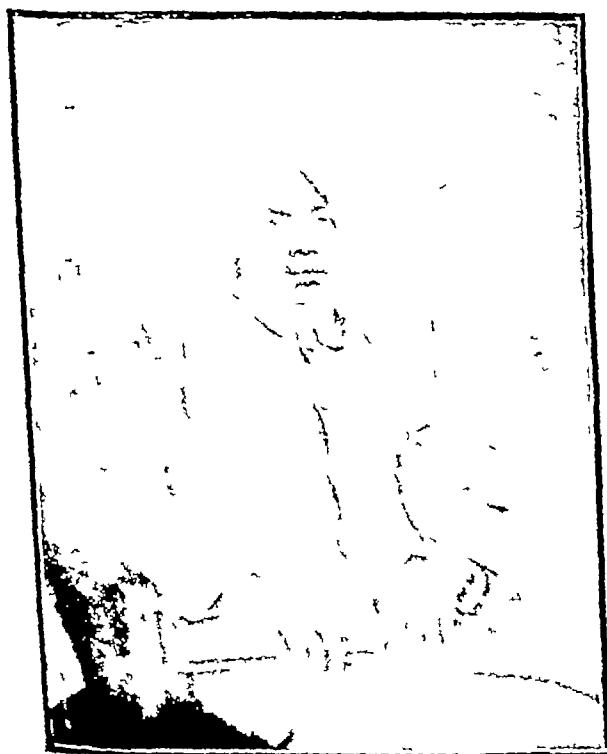
ललवाणी

सेठ उदयचन्दजी कजोड़ीमलजी ललवाणी, बून्दी

इस खानदान वाले मेड़ता (मारवाड़) निवासी ओसवाल जातिके ललवाणी गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारवाले मेड़तासे फतेगढ़ चले गये। सेठ रामनाथजीके पुत्र बलदेवजी हिंडोली तथा हिंडोलीसे बून्दी चले आये। बून्दीमें आपने कपड़ेका व्यापार प्रारम्भ किया। आपके उदयचंदजी एवं कजोड़ीमलजी नामक दो पुत्र हुए।

आप दोनों भाई व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप दोनों भाइयोंमें बहुत प्रेम था। दोनों भाइयोंने अपने कपड़ेके व्यापारको बढ़ाया तथा बूंदीमे अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आप लोग यहांपर प्रतिष्ठित एवं वजनदार व्यक्ति माने जाते थे। आप धर्मकेकामोंमें भी सहायता तथा सहयोग प्रदान किया करते थे। सेठ कजोड़ीमलजीके मोतीलालजी, नाथूलालजी एवं शिवचंदजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ मोतीलालजीका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आप धार्मिक प्रवृत्तिवाले एवं बूंदीमें सम्माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपका सं० १९८६ में स्वर्गवास हो गया। सेठ नाथु- लालजीका जन्म सं० १९५० में हुआ। आप सरल प्रकृतिवाले तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमे आप ही अपने सारे कामकाजको देखते हैं। आपका यहांकी ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान है।

आप लोग मेसर्स उदयचंद कजोड़ीमलके नामसे बूंदीमें कपड़ेका व्यापार करते हैं। सेठ मोतीलालजीकी मृत्युके समय सेठ शिवचन्दजीने एक मकान बूंदीके स्थानकको दान स्वरूपमे भेंट किया है।

मेहर

मेहर खानदान, आस्टी (निजाम स्टेट)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान राजोत (मारवाड़) है। वहाँसे लगभग १०० वर्ष पहिले सेठ हिन्दूमलजी मेहरके पिताजी व्यापारके निमित्त दोहिढान (आस्टीके पास—निजाम स्टेट) में आये। आपके रामचन्द्रजी, कस्तूरमलजी एवं भागचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इन बंधुओंमें सेठ भागचन्दजीने सूरड़ीमें अपना व्यापार जमाया। सेठ कस्तूरमलजी और सेठ भागचन्दजी लगभग ५० वर्ष पूर्व दोहिढानसे आस्टी आ गये। तबसे इन दोनों बंधुओंका परिवार स्थाई रूपसे आस्टीमें ही निवास कर रहा है। सेठ कस्तूरमल जीका जन्म संवत् १८९२ मे तथा सेठ भागचन्दजीका जन्म संवत् १९०२ में हुआ था।

सेठ रामचन्द्रजी मेहरका परिवार—आपका परिवार सूरड़ीमें व्यापार करता है। आपके गेंदमलजी, नवलमलजी तथा राजमलजी नामक तीन पुत्र हुए। इस समय सेठ गेंदमलजी विद्यमान हैं। इन तीनों भाइयोंका व्यापार अलग-अलग होता है। सेठ गेंदमलजीके पुत्र लालचन्दजी, शोभाचन्दजी व चुन्नीलालजी, सेठ नवलमलजीके गम्भीरमलजी, मोतीलालजी और भगवानदासजी एवं सेठ राजमलजीके पुत्र दगडूरामजी और पौत्र पन्नालालजी हैं। यह परिवार सूरड़ीमे व्यापार करता है।

सेठ कस्तूरमलजी मेहरका परिवार—आपने इस परिवारमें बहुत सम्पत्ति कमाई। छोटे ग्राममें निवास करते हुए भी आप सारे बीड़ प्रान्तमे मशहूर थे। आपके थानमलजी, किसनदासजी, मुकुन्ददासजी, पूनमचन्दजी, चुन्नीलालजी तथा शोभाचन्दजी नामक ६ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ थानमलजी और सेठ किशनदासजी स्वर्गवासी हो गये हैं। इस परिवारका ७५ सालोंसे दोहिढानमें "कस्तूरमल थानमल" के नामसे व्यापार होता है। इस समय ५० सालोंसे हेड आफिस आस्टीमें है। यहाँ कस्तूरमल किशनदासके नामसे व्यापार होता है। इसके अलावा सिलेमान-देवला (आस्टी) में थानमल लालचन्दके नामसे, अहमदनगरमें शोभाचन्द लालचन्दके नामसे दुकाने हैं। इन दुकानोंपर साहुकारी, जरायत, कृषि, कपड़ा, रुई, गल्ला व आढ़तका व्यापार होता है।

सेठ थानमलजी मेहरका जन्म संवत् १९१४ मे तथा स्वर्गवास संवत् १९५९ में हुआ। आपके पुत्र श्रीलालचन्दजीका जन्म संवत् १९६२ में हुआ। आपने वम्बईमे बी० काम तक शिक्षण पाया है। आप कड़ा जैनशालाके आनरेरी सेक्रेटरी हैं। संवत् १९८४ के हिन्दू-मुस्लिम झगडेमें आपने बीचमें पड़कर अपने प्रभावसे शांति स्थापित करवाई थी। ओसवाल परिषद अहमदनगरमें आप वालण्टियरोंके केप्टन थे। आपके पुत्र कुंवरलालजी, शांतिलालजी, कांतिलालजी तथा अमृतलालजी हैं। इनमे तीन बड़े अहमदनगरमें पढ़ते हैं। आप अपनी सिलेमान देवला फर्मका संचालन करते हैं।

सेठ किशनदासजी मेहरकाजन्म संवत् १९३६ मे हुआ। आपने अपने पिताजीके पश्चात अपने परिवारके मान-सम्मान व व्यापारको विशेष चमकाया। आप इस परिवारमें बहुत प्रतापी पुरुष हुए। निजाम रियासतके अमीर उमराव और हाकिमात आपको बड़ी इज्जत और मोहब्बत की निगाहोंसे देखते थे। अपनी जातिमें भी आप गण्यमान्य पुरुष माने जाते थे। आपके साथ आपके सब बंधुगण भी अपने व्यापारकी उन्नति व तमाम सामाजिक कामोंमें योग देते रहे। संवत् १९७५ के दुश्कालके समय आपने गरीबोंको अनाज व कपड़े द्वारा बहुत मदद पहुचाई, जिससे निजाम सरकारने आपको बहुत सम्मान दिया। इस प्रकार प्रतिष्ठामय जीवन बिताकर संवत् १९८५ की जेठ वदी ३ को आप स्वर्गवासी हुये। आपके प्रेमराजजी, गोकुलदासजी, शङ्करलालजी, अमरचन्दजी तथा नेमीचन्दजी नामक ५ पुत्र विद्यमान हैं। प्रेमराजजीने मेट्रिकतक अध्ययन किया है। आपका जन्म सं० १९६२ में हुआ है। आप अपने
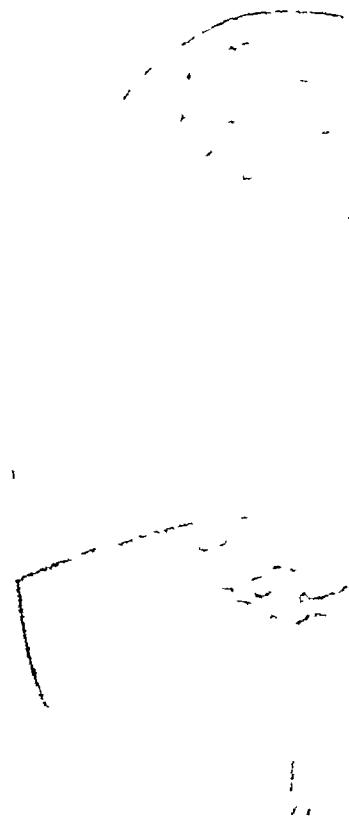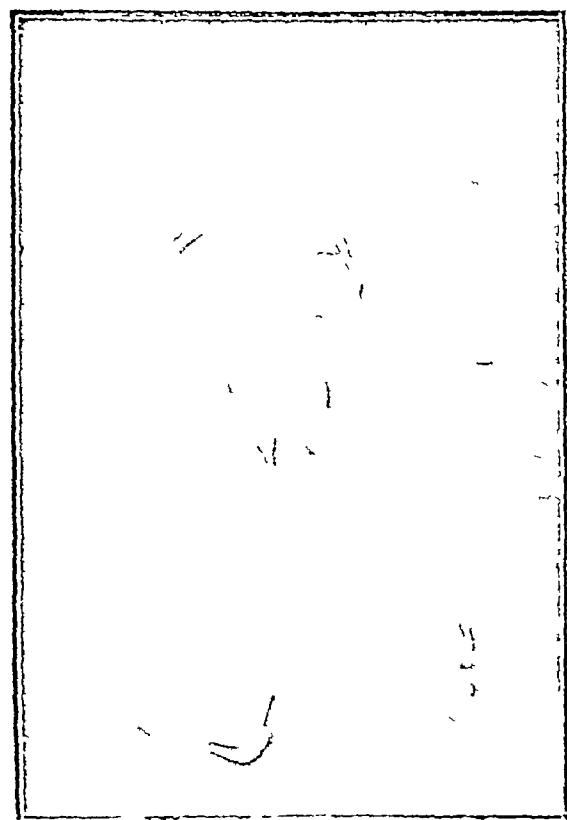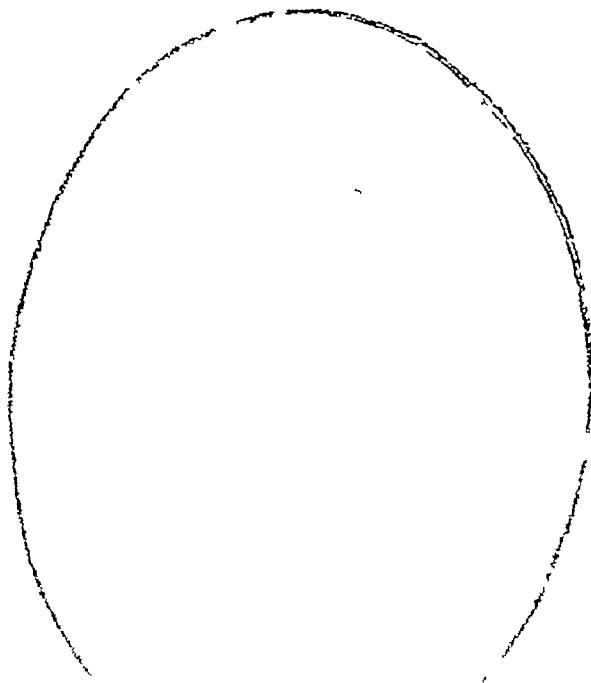
काका सेठ मुकुन्ददासजीके साथ अपनी आस्टी दुकान का काम देखते हैं। आपके छोटे भाई गाकुलदासजी मेट्रिकमें पढ़ते हैं।

सेठ मुकुन्ददासजी मेहरका जन्म संवत् १९३८ में हुआ। आप अपनी पुरानी दुकान दोहिठानका कार्य्य संचालित करते हैं। पन्नालालजीका जन्म सं० १९६१ में हुआ है।

सेठ पूनमचन्दजीका जन्म संवत् १९४५ में हुआ। आपके पुत्र श्रीकनकमलजी व केसरमलजी हैं। कनकमलजीका जन्म सं० १९६७ मे हुआ। आप पूनमचन्द कनकमलके नामसे आस्टीमें किरानेका व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १९४९ में हुआ। आप अपने हेड आफिसका कार्य्य सञ्चालन करते हैं। सेठ शोभाचन्दजीका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आप अपनी अहमदनगर दुकानका कार्य्य सह्मालते हैं। आपके पुत्र कुन्दनमलजी तथा चंदनमलजी हैं। अहमदनगरकी मारवाड़ी समाजमे आपकी अच्छी प्रतिष्ठा हैं।

सेठ भागचंदजी मेहरका परिवार—सेठ भागचन्दजीके हमीरमलजी व नारायणदासजी नामक २ पुत्र हुए। इन दोनों बंधुओंका हेड आफिस आस्टीमे है। आपके यहां भागचन्द नारायणदासके नामसे कृषि और जरायतका व्यापार होता है। सेठ हमीरमलजी संवत् १९५९ मे स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्रीवंशीलालजी कपड़ेका व्यापार करते है।

सेठ नारायणदासजी सयाने तथा समझदार पुरुष हैं। आप अपनी आस्टी दुकानका संचालन करते हैं। आपके कोई संतान नहीं है।

चतुर

सेठ घासीरामजी नेमीचन्दजी चतुर, सिवनी (मालवा)

इस परिवारका मूल निवासस्थान ताल (मेवाड़) है। वहांसे सेठ जोधराजजी चतुर लगभग सवासौ डेढ़सौ वर्ष पहिले व्यापारके लिये सिवनी (मोलवा) आये। यहां आकर आपने आरम्भमे किरानेका व्यापार शुरू किया। उस समय नागपुरके भोंसलोंपर अधिकार प्राप्त करनेके लिये अङ्गरेजी फौजोंका इधर दौरा हुआ करता था। ऐसे समयमे सेठ जोधराजजी ब्रिटिश रेजिमेंटको खाद्य पदार्थोंकी सहायता पहुंचाते रहते थे। आपकी इन सेवाओंसे प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकारने आपको चार गांव जमीदारी हकसे इनायत किये। आपके नामपर आपके भतीजे सेठ कल्याणचन्दजी दत्तक आये। सेठ कल्याणचन्दजी भी अपने पिताजी द्वारा स्थापित किये व्यापार एवं जमीदारीके गांवोंका संचालन करते रहे। आपके घासीरामजी तथा नेमीचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ नेमीचन्दजी—आपका जन्म सं० १९३२ मे हुआ। आपने अपने परिवारके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। सिवनीके आप गण्यमान्य सज्जन थे। यहांकी म्यु० मे

मेम्बर पदको आपने सम्मानित किया था। आपके भाई सेठ घासीरामजी आपके पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये थे। धार्मिक कामोंमें आपकी अच्छी रुचि थी। सं० १९७८ की कार्तक सुदी ७ को आपका अन्तकाल हुआ। आपके यहां आपके ही परिवारसे (सेठ कल्याणचन्दजीके छोटे बन्धुके पौत्र सेठ चम्पालालजीके बड़े पुत्र) श्रीगनेशीलालजी दत्तक आये।

श्रीगनेशीलालजी चतुर—आपका जन्म सं० १९६४ की फागुन सुदी ८ को हुआ। आप सेठ नेमीचन्दजीके यहां सं० १९७९ में दत्तक आये। सेठ गनेशीलालजी चतुर शिक्षित, विचारवान व स्वदेशप्रेमी युवक हैं। आप शुद्ध स्वदेशीवस्त्र धारण करते हैं। सिवनीके हरएक धार्मिक तथा सार्वजनिक कामोंमें आप भाग लेते रहते हैं। वर्तमानमें आप सिवनी लोकल-बोर्डके चेयरमैन हैं। स्थानीय आपरेशनरूम में आपने सहायताएं दी हैं। वर्तमानमें आप अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित की हुई जमीदारीका संचालन करते हैं। आपने यहां एक श्रीशान्ति जैन पुस्तकालय खोला है। सिवनीमें आप गण्यमान्य सज्जन हैं।

गूगलिया

सेठ जेठमलजी मोतीलालजी गूगलिया, पाथर्डी (अहमदनगर)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवासस्थान मलसावावड़ी (सोजत-मारवाड़) है। वहांसे लगभग ७५-८० वर्ष पूर्व सेठ चिमनीरामजी गूगलियाके वड़े पुत्र सेठ तेजमलजी गूगलिया व्यापारके निमित्त दक्षिण प्रान्तके अहमदनगरमें आये तथा वहां आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। सेठ तेजमलजीके ५ वर्ष बाद इनके छोटे बन्धु जेठमलजी भी अहमदनगर आये और इन्होंने पाथर्डीमें किरानेका व्यापार आरम्भ किया। इसके बाद आपने कपड़ेका व्यापार शुरू किया। सेठ जेठमलजीके छोटे भाई मारवाड़में ही निवास करते रहे। सेठ जेठमलजीने परिश्रमपूर्वक सम्पति उपार्जन कर अपनी आर्थिक स्थिति एव परिवारके सम्मानको विशेष बढ़ाया। पाथर्डीकी जैन समाजमें आप सयाने तथा समझदार पुरुष थे। सं०१९७७ की भादवा वदी ३ को ७६ सालकी वयमें आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र श्रीमोतीलालजी गुगलिया विद्यमान हैं।

सेठ मोतीलालजी गुगलियाका जन्म सं०१९४३ की आसोज सुदी १४ को हुआ। आप श्री० श्वे० जै० स्था० सम्प्रदायके माननेवाले सज्जन हैं। आपने पिताजीके बाद अपनी फर्मके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया है। आप पाथर्डी एव नगर जिलेकी जैन समाजमें नामाङ्कित व्यक्ति हैं। धार्मिक कार्योंमें एवं शिक्षाके कार्यों में आप अच्छी सहायतायें देते रहते हैं। आप हीके विशेष प्रयाससे पाथर्डीमें श्रीतिलोक जैन विद्यालय चल रहा है। इस संस्थाके लिये आपने तथा श्रीमानमलजी साहब पारनेरकरने ११ हजार की एक बिल्डिंग संस्थाको प्रदान की है। इसके अलावा ३१ हजार रुपया और आप संस्थाको सहायतार्थ दे

चुके हैं। १३ सालोंसे आप इस संस्थाके अध्यक्ष भी हैं। आपका स्वभाव बड़ा सरल है। स्थानीय ग्रामपञ्चायतीमें ५।६ सालोंतक आप मेम्बर रह चुके हैं। पाथर्डीके आप प्रधान सम्पत्तिशाली माने जाते हैं।

सेठ मोतीलालजीके इस समय प्रेमराजजी, चुन्नीलालजी पन्नालालजी एवं नैनसुखजी नामक ४ पुत्र हैं। श्रीचुन्नीलालजी, होनहार युवक प्रतीत होते हैं। इस समय इस परिवारमें साहुकारी, कृषि, कपड़ा व जमीदारीका व्यापार होता है।

बोगावत

श्री उत्तमचंदजी रामचंदजी बोगावत वकील, अहमदनगर

इस परिवारका मूल निवासस्थान सेठों की रीयां (पीपाड़के पास-मारवाड़) हैं। वहाँसे लगभग १५० सालों पूर्व इस परिवारके पूर्वज नेताजी बोगावत व्यापारके निमित्त अहमदनगर जिलेके मिरी नामक स्थानमें आये। नेताजीके खेताजी और इनके नथमलजी तथा मोतीलालजी नामक पुत्र हुए। नथमलजीके हिन्दूमलजी तथा छोटूजी और मोतीलालजीके रतनचन्दजी, फकीरचन्दजी और बापूजी नामक पुत्र हुए। इन भाइयोंमें रतनचन्दजीके हंसराजजी और खुशालचन्दजी हुए। इस समय हंसराजजीके पुत्र रामचन्दजी विद्यमान हैं। श्री रामचन्दजी बोगावतका जन्म १९३८ में हुआ। आपके समय तक यह परिवार साधारण स्थितिमें रहा। आपके पुत्र श्री उत्तमचन्दजी एवं पन्नालालजी हैं।

श्री उत्तमचन्दजी का जन्म संवत् १९५८ में हुआ। आपका मेट्रिक तक शिक्षण अहमदनगरमें हुआ। पश्चात् आपने फर्ग्यूसन कॉलेज पूनामें शिक्षण प्राप्त कर बाम्बे हाईकोर्टसे १९२४ में वकीली डिप्लोमा प्राप्त किया। आरम्भमें १ सालतक आप श्री कुन्दनमलजी फिरोदियाके पास प्रेक्टिस करते रहे। सन् १९२५ से आपने अपनी स्वतन्त्र प्रेक्टिस आरम्भ की एवं अपनी होशियारी एवं कार्य तत्परतासे इस में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपको इनकमटैक्सकी विशेष जानकारी हैं। राष्ट्रीय कामोंमें भाग लेनेके उपलक्ष्में सन् १९३२ में आपको ६ मासका कारावास एवं ३००) का दण्ड भी हुआ था। ऐसे कामोंमें दिलचस्पी रखनेके कारण दो बार सरकारने आपका वकीली डिप्लोमा सस्पेण्ड करनेकी कोशिश भी की, लेकिन आपने उसे पुनः सम्पादन किया। इस समय आप अहमदनगर जैन बोर्डिङ्गके सेक्रेटरी हैं। आपने एक बड़े स्केलपर कृषि कार्य भी आरम्भ किया है। साहुकारी व्यवसाय भी आप करते हैं। कहनेका तात्पर्य यह कि आपने अपनी आर्थिक स्थितिको उन्नत बनाया, अपने परिवारकी प्रतिष्ठा बढ़ाई एवं अहमदनगरकी शिक्षित जनतामें ख्याति पाई।

मुन्नी बोहरा

सेठ सरूपचंदजी जेठमलजीका खानदान, हापुड़

इस खानदानवाले हालान्यू (सिंध) निवासी मुन्नी बोहरा गौत्रके श्री जे०श्वे० मंदिर-मार्गीय हैं। आप हाल के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपके सरूपचन्दजी, जोगीदासजी तथा खेतसीदासजी नामक तीन पुरुष हुए।

सेठ सरूपचन्दजी प्रथम हालासे कस्तला (मेरठ जिला) आये और यहांसे हापुड़में आगये। तभीसे आपके वंशज यहींपर रह रहे हैं। आपके पुत्र जेठमलजीका जन्म सं० १६३६ में हुआ। आप धार्मिक भावनाओंके, प्रेमी तथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। आपने हापुड़में सराफीके व्यापारमें सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास ३० अक्टोबर सन् १६३१ में हुआ। आपके मनोहरलालजी, चिन्तामणिदासजी, सुन्दरलालजी, इन्दरलालजी, मोहनलालजी एवं सोहनलालजी नामक छः पुत्र हुए। प्रथम तीन बन्धु तो अलाहाबाद बैंकमें सर्विस करते हैं तथा शष तीन हापुड़में सराफी और बैंकिंगका व्यवसाय करते हैं। आप सब मिलनसार हैं। मनोहरलालजीके ज्ञानचन्दजी तथा चिन्तामणिदासजीके आनन्दचन्दजी एवं टेकचन्दजी नामके दो पुत्र हैं।

आप लोगोंका खानदान कस्तलावालोंके नामसे मशहूर है।

सेठ जीतमलजी दौलतरामजी बोहरा, मिरजगांव (अहमदनगर)

इस परिवारके मालिक बूसी (मारवाड़) के निवासी हैं। वहांसे सेठ दयारामजी सालेचा-बोहरा व्यापारके निमित्त सवा सौ वर्ष पूर्व महाराष्ट्र प्रान्तके शिराल नामक स्थानमें आये। आपके जीतमलजी, बालारामजी तथा धीरजमल नामक ३ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ जीतमलजी बोहरा मिरजगाँव आये। आप बड़े बुद्धिमान व व्यापार चतुर पुरुष थे। आपने अपने परिवारके व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। आप मिरजगाँव व उसके आसपासके क्षेत्रमें नामाकित पुरुष हो गये हैं। अनाजके बहुत बड़े बड़े व्यापार आप किया करते थे एवं बड़ी रईसी तबितयके पुरुष थे। आपके बन्धु सेठ बालारामजी और सेठ धीरजमलजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते थे। सेठ जीतमलजीके पुत्र दौलतरामजी और बालारामजीके केसरचन्दजी तथा खुशालचन्दजी हुए।

सेठ दौलतरामजी बोहराने अपने पिताजीके फैले हुए व्यापारको समेटकर अपनी साम्पत्तिक स्थितिको विशेष मजबूत किया। आप भी अपने आसपासकी जैन समाजमें नामी पुरुष थे। इधर ५ वर्ष पूर्व आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें आपके पुत्र श्री माणिकचन्दजी बोहरा विद्यमान हैं। सेठ माणिकचन्दजीका जन्म शके १८१६ में हुआ। आप १३

सालों तक जिला लोकलबोर्डके मेम्बर रहे थे। पाथर्डी जैनशाला आदि संस्थाओंमें आप सहायताएं देते रहते हैं। आप मिरजगांवके प्रधान धनिक हैं। इस समय आपके यहां सराफी कपड़ा, किराना और कृषिका व्यापार होता है। इसी प्रकार इस परिवारमें सेठ केसरचन्दजीके पुत्र सोभाचन्दजी कपड़ेका, सेठ खुशालचन्दजीके पुत्र भगवानदासजी और नवलमलजी कृषिका कारबार तथा सेठ धरिजमलजीके पौत्र दीपचन्दजी कृषिका कारबार करते हैं।

बुंदेचा

सेठ माईदासजी छोगमलजी बुंदेचा, अहमदनगर

यह परिवार सेठोंकी रीयां (मारवाड़) का निवासी है। वहांसे सेठ माईदासजी बुन्देचा लगभग संवत् १८८० में व्यापारके निमित्त अहमदनगर आये एवं अपने यहां कपड़ा और सूतका व्यापार आरम्भ किया। आपके कोई पुत्र न था। अतएव आपके नामपर सेठ छोगमलजी रीयाँसे संवत् १९१४ में दत्तक आये। आपका जन्म संवत् १९०१ में हुआ। आपने अपने पिताजी सेठ माईदासजीके साथ अपने व्यापार तथा परिवारके सम्मानको बढ़ानेकी ओर अच्छा परिश्रम उठाया। संवत् १९३९ में सेठ माईदासजी स्वर्गवासी हुए।

सेठ छोगमलजी बुन्देचा बड़े धर्मात्मा एवं भद्र पुरुष थे। जातिमें आप सन्माननीय व्यक्ति माने जाते थे। संवत् १९६८ की आसोजवदीमें आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र सेठ रूपचन्दजी बुन्देचा हुए। सेठ रूपचन्दजी बुन्देचाका जन्म संवत् १९४५ की पोष सुदी ७ को हुआ। आपका परिवार अहमदनगरकी ओसवाल समाजमें गण्यमान्य माना जाता है। आपके पुत्र श्री माणकलालजी बुंदेचा पूनामें एफ० ए० में शिक्षण पाते हैं। इस समय इस परिवारके यहां कपड़ा, अनाज, रूई तथा आढ़तका व्यापार होता है।

दरड़ा

सेठ भूरजी रघुनाथजी दरड़ा, लातूर (निजाम स्टेट)

इस परिवारके मालिकोंका मूल निवास स्थान भखरी (निजाम स्टेट) में है। वहांसे सेठ भूरजी दरड़ा लगभग १०० साल पूर्व व्यापारके निमित्त निजाम स्टेटके लातूर नामक स्थानपर आये तथा यहां लेनदेनका व्यापार आरम्भ किया। सेठ भूरजीके पुत्र सेठ रघुनाथजी दरड़ा हुए। इन्होंने अपने पिताजीके व्यापारको बढ़ाकर लगभग ७५ साल पूर्व अपनी एक ब्राच लोहा (नांदेड) में खोली, जो इस समय भी व्यापार कर रही है।

सेठ रघुनाथजी दरड़ाके बालकिशनजी, कस्तूरचंदजी तथा बहादुरमलजी नामक ३ पुत्र

हुए। आप तीनों भाई भी अपनी लातूर तथा लोहा दुकानका संचालन करते रहे। सेठ बालकिशनजीके पुत्र सेठ उत्तमचन्दजी एवं सेठ मूलचन्दजी हुए। इन भाइयोंमें उत्तमचंदजी अपने काका कस्तूरचंदजीके नामपर दत्तक गये तथा सेठ मूलचंदजी विद्यमान हैं। सेठ बहादुरमलजीके शिवकरणजी एवं रामचंद्रजी नामक २ पुत्र हुए। इनमे सेठ रामचन्द्रजी विद्यमान हैं। यह कुटुम्ब लातूर तथा आसपासके जैन समाजमे एवं व्यापारिक समाजमें नामी माना जाता है।

सेठ उत्तमचन्दजी तथा सेठ रामचन्द्रजीने इस परिवारके व्यापार और सम्मानको बहुत बढ़ाया। सेठ उत्तमचन्दजीका धार्मिक कार्यों में अच्छा लक्ष था। संवत् १९७० के लगभग आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र मोतीलालजी बालवय में ही सम्वत् १९८३ में स्वर्गवासी हो गये।

सेठ रामचन्द्रजी दरड़ा—आपका जन्म संवत् १९३० में हुआ। धार्मिक कार्यों में आपका लक्ष है। आपकी ओरसे लातूरमें श्रीमोतीलाल उत्तमचन्द्र औषधालय स्थापित है। इसमें लगभग ३ हजार रुपया सालाना आपकी ओरसे खरच होता है। सेठ रामचन्द्रजी लातूरके होशियार व अनुभवी व्यापारी हैं। आप सेंट्रल बैंक लातूरके सलाहकार व मेम्बर हैं। आपके बड़े भ्राता सेठ शिवकरणजी सबत् १९७० में चचेरे भाई उत्तमचांदजीके २ दिनो बाद स्वर्गवासी हो गये थे। सेठ उत्तमचन्दजीके छोटे भाई मूलचन्दजीका जन्म संवत् १९५० में हुआ। आप अपनी फर्मके संचालनमें सहयोग देते हैं। आपके यहा श्री हरकचन्दजी (आलोगांव) पूनासे दत्तक आये हैं।

सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र श्री पृथ्वीराजजीका जन्म संबत् १९६५ की आसोजबदी ३० को हुआ। आप बड़े होशियार तथा बुद्धिमान युवक हैं तथा अपने कारभारको अपने पिताजीके साथ बड़ी तत्परताके साथ सम्हाल रहे हैं। इस समय आपके इस सम्मिलित परिवारमे सेठ भूरजी रघुनाथजी दरड़ाके नामसे आढ़त, साहुकारी तथा लेनदेनका व्यापार होता है।

जिंदानी

नरसिंहगढ़का जिंदानी परिवार

इस परिवारके मालिकों का मूल निवासस्थान जेसलमेर (राजपूताना) है। वहांसे लगभग ७५-८० साल पूर्व इस परिवारके पूर्वज सेठ गोड़ीदासजी मालवा प्रान्तमे आये तथा नरसिंहगढ़में जेसलमेरके पटवा परिवारकी दुकान सेठ सागरमल सगतमलके यहां मुनीम हो गये। अपनी चतुराई से इस दुकानके व्यापारको आपने खूब चमकाया। नरसिंहगढ़ स्टेट तथा जनतामें आपका बड़ा सम्मान तथा वजन था। सम्वत् १९५५में आप स्वर्गवासी हुए। आपके गम्भीरमलजी, ओंकारलालजी तथा धनराजजी नामक ३ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ

गम्भीरमलजी जवान वयमें ही स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र सेठ नथमलजी जिंदानी हैं।

सेठ उँकारलालजी जिंदानी पहिले राजा गोकुलदासजी जबलपुरवालोंकी भोपाल दुकानपर मुनीम रहे। पश्चात् श्री राजमाता राठोड़जी साहिबाके कामदार नियुक्त हुए तथा १५ सालोंतक इस पदपर रहे। आप सम्वत् १९७२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र श्री हीराचन्दजी जिंदानी हैं।

सेठ धनराजजी पहिले नरसिहगढ़ स्टेटके सायर विभागमें मामूली नौकरीपर मुकर्रर हुए। पश्चात् अपने अपना घरू व्यापार आरम्भ किया। सराफी व्यापारमें द्रव्य उपार्जित कर आपने बहुत नाम आबरू व प्रतिष्ठा पाई। आपने यहांके कई सार्वजनिक कामोंमें उदारतापूर्वक सम्पत्ति खर्च की। नरसिंहगढ़ दरबार महाराजा विक्रमसिंहजीने आपको "शिरोमणि सेठ" की पदवीसे सम्मानित किया था एवं मां साहिबाने आपको एक उत्तम सार्टिफिकेट प्रदान किया था। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सम्वत् १९९१ की फागुन सुदी ६ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपकी मृत्युसे नरसिंहगढ़ स्टेटका एक भारी पुरुष कम हो गया, ऐसा जनताने अनुभव किया। आपके नामपर श्री छबीलालजी दत्तक हैं।

सेठ नथमलजी जिंदानी वर्तमानमें माजी राठोडजीकी जनानी ड्योढ़ीके कामदार हैं। इसके पूर्व आप रियासतके खजांची पदपर अधिष्ठित थे। इसके अलावा आप अपना घरू व्यापार भी करते हैं। आप नरसिहगढ़में प्रतिष्ठित और गण्यमान्य सज्जन हैं। आपके चांदमलजी, छबीलालजी, नेमचन्दजी, सिरेमलजी तथा हेमचन्दजी नामक ५ पुत्र हैं। इन बन्धुओंमें छबीलालजी सेठ धनराजजीके नामपर दत्तक गये हैं।

श्री हीराचन्दजी जिन्दानी स्टेट बैंकके अकाउन्टेंट रहे। इधर सन् १९२७ से आप नरसिंहगढ़ स्टेटमें वकालत करते हैं। आपने मेट्रिकतक एजूकेशन पाया है तथा सुशील, होशियार तथा मिलनसार सज्जन हैं। आप स्था० म्यु० के मेम्बर हैं। आपके दौलतचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। यह परिवार श्री श्वे० जैन मन्दिर अम्नायका माननेवाला है।

बागरेचा

सेठ हजारीमलजी मुलतानमलजी बागरेचा मूथा, कोप्बल (निजाम-स्टेट)

इस परिवारका मूल निवासस्थान जेतारण (जोधपुर स्टेट) है। वहांसे लगभग ६०-७० साल पहिले सेठ हजारीमलजी मूथा कोप्बल (निजाम) आये तथा यहाँ आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। आप लगभग ३५।४० साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके समरथमलजी, केसरीमलजी, कुन्दनमलजी, उम्मेदमलजी आदि ५ पुत्र हुए। इन बन्धुओंमें सेठ मुलतानमलजीका कारबार लगभग ४० साल पहिले अलग हो गया। इसके पश्चात् सब बन्धु भी अलग २ हो गये।

सेठ मुलतानमलजीने अपने पिताजीके पश्चात् अपने व्यापार तथा सम्मानको विशेष बढ़ाया। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपयेकी सम्पत्ति कमाई। आपका जन्म सम्वत् १९२५ में हुआ है। इस समय आपका परिवार रायपूर जिलेकी व्यापारिक समाजमें प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके जसराजजी तथा केवलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें जसराजजी सम्वत् १९७३ की मगसर वदी १४ को स्वर्गवासी हो गये। जसराजजीके पुत्र दीपचन्दजी तथा माणिकचन्दजी विद्यमान हैं। श्री दीपचन्दजीका जन्म सम्वत् १९६७ में हुआ। आप बड़े सरल स्वभावके व व्यापारमें होशियार सज्जन हैं।

श्री केवलचन्दजीका जन्म संवत् १९५१ में हुआ। आप कोप्बल म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर हैं और यहांकी व्यापारिक समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपके पुत्र श्री नेमीचन्दजी हैं। यह परिवार कोप्बलमें प्रधान धनिक है। आपकी यहां एक जीनिंग फैक्टरी और बागायत आदि है।

इसी तरह इस परिवारमें सेठ समरथमलजीके पुत्र शेषमलजी तथा अमोलकचन्दजीके यहाँ रतनचन्द सम्पतराज व माणकचन्द किशनराजके नामसे आढ़तका व्यापार होता है। सेठ केशरीमलजीके पुत्र चांदमलजी हैं। सेठ कुन्दनमलजीके पुत्र सागरमलजी कोप्बल के पासके गाँवमें व्यापार करते हैं और उम्मेदमलजीके पुत्र अजराजजी, जुगराजजी, रूपचन्दजी तथा मोतीलालजी कोप्बलमें कपडा तथा किरानाका व्यापार करते हैं। यह परिवार श्री जैन श्वे० स्थानकवासी आम्नायका माननेवाला है।

मरलेचा

सेठ कस्तूरचन्दजी जोरावरमलजी मरलेचा, मोमिनाबाद (निजाम)

इस परिवारका मूल निवास कण्टालिया (सोजतके पास—मारवाड़) है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ श्रीचन्दजी मरलेचाके पुत्र कस्तूरचन्दजी तथा जोरावरमलजी मरलेचा व्यापारके लिये संवत् १८८७ के लगभग रवाना हुए तथा झांसीके समीप आकर आप अंगरेजी फौजोंको रसद तथा नगदी सप्लाय करनेका काम करने लगे। इस सिलसिलेमें जहां जहां ब्रिटिश रेजिमेंट्स जाती थीं, वहाँ २ आप दोनों भाई भी अपनी दुकान ले जाते थे। इस प्रकार मोमिनाबाद, बोधनदी, सिकन्दराबाद, हिंगोली, औरङ्गाबाद आदि स्थानोंपर आप दुकान करते रहे। धीरे-धीरे आपने सम्वत् १९३२ के लगभग मोमिनाबादमें अपना स्थाई निवास बनाया और यहीं आप व्यापार करने लगे। इस व्यापारमें इन भाइयोंने बडी हिम्मत व बहादुरीसे पैसा कमाया। सेठ जोरावरमलजीके फरमचंदजी तथा दलीचंदजी नामक दो पुत्र हुए। इन भाइयोंमें फरमचंदजी सेठ कस्तूरचंदजीके नामपर दत्तक गये।

स्व० सेठ करमचन्दजी मरलेचा, मोमिनाबाद, (निज़ाम-स्टेट)

बाबू उत्तमचन्दजी बोगावत, वकील, अहमदनगर

सेठ करमचन्दजी मरलेचा—आपका जन्म संवत् १९२७ में हुआ। आपने अपने पिताजी के पश्चात् अपने व्यापार तथा परिवारके नामको विशेष बढ़ाया। आप रईस व ठाटबाटवाले पुरुष थे। पञ्च-पञ्चायती व राज-दरबारमें आपका अच्छा वजन था। आपके छोटे भाई दलीचंदजी छोटी उम्रमे ही स्वर्गवासी होगये थे। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताकर सेठ करमचंदजी संवत् १९८८ की पौष वदी १० को स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रतनचन्दजी, चंदनमलजी तथा नेमीचंदजी विद्यमान हैं। इन भाइयोंमें रतनचंदजी सेठ दलीचंदजीके नामपर दत्तक गये हैं। आप बन्धुगण भी यहांकी व्यापारिक समाजमें प्रतिष्ठा रखते हैं। आपके यहां करमचन्द चंदनमलके नामसे कपड़ा, साहुकारी तथा कृषिका कार्य्य होता है।

ओसतवाल

मेसर्स नन्दरामजी किशोरीदासजी ओसतवालका खानदान, कोटा

इस खानदानके पूर्व पुरुषोंका निवासस्थान यों तो मेवाड़का है मगर आपलोग पांच-सात पीढ़ियोंसे कोटामें ही निवास कर रहे हैं। आप ओसतवाल गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले सज्जन हैं। आप लोग बहुत सालोंसे सराफीका व्यापार कर रहे हैं। इसलिये नेणावटीके नामसे भी मशहूर हैं।

इस खानदानमे सेठ नन्दरामजी हुए। आपके किशोरीदासजी एवं किशोरीदासजीके हुकमीचन्दजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग सराफीका व्यवसाय करते रहे। सेठ हुकमीचन्दजीके मन्नालालजी, किशनलालजी, खेतीलालजी, रतनलालजी आदि पांच पुत्र हुए। इनमेंसे सेठ खेतीलालजी विशेष व्यापार कुशल एवं योग्य सज्जन हुए हैं। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे अपने व्यवसायको तरक्कीपर पहुंचाया तथा अपनी स्थायी सम्पत्तिको बढ़ाया। आपने बहुत-सी जमीन व जायदाद भी खरीदी। आप कोटेमे प्रतिष्ठित एवं यहांकी सरकारमें भी एक सम्माननीय व्यक्ति समझे जाते थे। आपके देवराजजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ देवराजजी—आपका जन्म संवत १९५२ में हुआ। आप बड़े सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके हाथोंसे अपने फर्मके व्यापारमें बहुत तरक्की हुई। कोटा स्टेटमें भी आपका सम्मान है। वर्त्तमानमे आप ही अपने सारे व्यवसायको सञ्चालित करते हैं। आपकी धार्मिक भावना भी उच्च है। आपके पूनमचन्दजी, छत्रसिंहजी एवं वीरेन्द्रकुमारजी नामक तीन पुत्र हैं।

बाबू पूनमचंदजी उत्साही एवं मिलनसार सज्जन हैं। वर्त्तमानमे आप भी अपने व्यापार में भाग लेते हैं। आपके महेन्द्रकुमारजी नामक एक पुत्र हैं। शेष दोनों बन्धु भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

आपलोगोंका खानदान कोटाकी ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपकी कोटामें मे० नन्दराम किशोरीदासके नामसे एक फर्म है [illegible]

होता है। इसके अतिरिक्त कल्यानपुरामें भी आपकी एक ब्राञ्च है जिसपर जमींदारीका काम भी होता है।

बावेल

मेसर्स प्रेमराजजी भैरूदानजी बावेल, कोटा

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान कोटाका है। आप ओसवाल जातिके बावेल गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले सज्जन हैं। इस खानदानमें सेठ प्रेमराजजी हुए। आपके नामपर भैरूलालजी गोद आये। आप होशियार व व्यापार कुशल सज्जन थे। आपने अपने व्यापारको बढ़ाया। आपके नामपर मोतीलालजी गोद आये।

सेठ मोतीलालजीने व्यापारको तरक्कीपर पहुचाते हुए सारे जीवनभर आनन्द किया। आपके निःसन्तान गुजर जानेपर आपके नामपर सेठ हजारीमलजीके पुत्र चुन्नीलालजी गोद आये।

सेठ चुन्नीलालजीका जन्म संवत् १९३० में हुआ। वर्त्तमानमें आप ही इस सारे काम-काजको सम्भाल रहे हैं। आपको धर्मध्यानमें विशेष आनन्द आता है। आप एक समय बीमार पड़े थे उस समय आपने १००००) दस हजारकी रकम निकालकर उसका व्याज दान धर्मके कामोंमें खर्च्च किये जानेका सङ्कल्प छोड़ा था। इसके अतिरिक्त आपने अपने दोनों पुत्रियोंको बीस-बीस हजार दहेजमें प्रदान किया है। और भी धार्मिक एवं परोपकारके कामोंमें आप सहायता पहुचाते रहते है।

वर्त्तमानमें आप मेसर्स प्रेमराज भेरूदानके नामसे कोटामें बैंकिंग व गिरवीका व्यवसाय करते हैं। यहांकी ओसवाल समाजमें आप प्रतिष्ठित माने जाते।

बैताला

हीराचंदजी बैतालाका खानदान, नागौर

इस परिवारवाले सोमण (मारवाड़) के मूल निवासी ओसवाल जातिके बैताला गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायको माननेवाले सज्जन हैं। इस परिवारके सेठ कनीरामजी करीब १५० वर्षों पूर्व सोमणसे कुचेरिया आ गये। आपके मनरूपमलजीके रामसुखदासजी व मगनमलजी एवं रामसुखदासजीके आठ पुत्रोंमें सबसे बड़े मुल्तानमलजी हुए। सेठ मुल्तान-मलजीके दुलीचन्दजी, दीपचन्दजी तथा घूमरमलजी नामक तीन पुत्र हुए। आपलोग कुचेरियामें ही निवास करते रहे।

सेठ दुलीचन्दजीका जन्म सं० १९०६ में हुआ। आपने बम्बई वगैरह स्थानोंपर व्यापार किया। आपका स्वर्गवास सं० १९६७ में हुआ। आपके हीराचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

श्री हीराचन्दजीका जन्म सं० १९३७ में हुआ। आप मिलनसार सज्जन हैं। आपने प्रथम कस्टम व हवालामें सर्विस की। इसके पश्चात् वकालतकी परीक्षा पास करके चीफ कोर्टमें वकालत करना शुरू की। जोधपुरमें तीन सालोंतक वकालत करनेके पश्चात् आप नागौर चले आये। आप वर्त्तमानमें नागौरमें वकालत करते हैं। आप यहाँके प्रमुख वकील हैं। आपका यहांकी ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान है। आपके अमरचन्दजी एवं जबरचन्दजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

बढ़ेर

लाला कन्हैयालालजी मांगीलालजी बढ़ेर, देहली

इस परिवारका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें पृष्ठ ६२१ पर दिया गया है। लाला कन्हैयालालजीके मांगीलालजी और चुन्नीलालजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला मांगीलालजीका जन्म सं० १९३७ व स्वर्गवास सं० १९९२ में हुआ। आपकी देहलीमें अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपके चम्पालालजी, मन्नालालजी तथा ऋषभचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगोंके जन्म क्रमशः सं० १९५५, ५६ तथा १९६९ में हुए। इनमें चम्पालालजी बड़े उद्योगी तथा धर्मध्यानी व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सं० १९७७ में हो गया। मन्नालालजीका भी स्वर्गवास सं० १९९२ की भादवा सुदी १० को हो गया। बाबू ऋषभचन्दजी मिलनसार तथा उत्साही युवक हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने फर्मके प्रधान सञ्चालक हैं तथा देहलीमें जवाहरातका व्यापार करते हैं।

सेठ कन्हैयालालजी रूपचन्दजी बढ़ेर जौहरी, कलकत्ता

इस प्रतिष्ठित परिवारका मूल निवासस्थान जेसलमेर है। वहां इस परिवारके पूर्वज सेठ गाढ़मलजी निवास करते थे। आपके देवीचन्दजी एवं सौभागमलजी नामक दो पुत्र हुए। इनमें सेठ देवीचन्दजीके तिलोकचन्दजी एवं कुशलचन्दजी नामक पुत्र हुए। यह परिवार सेठ तिलोकचन्दजीसे सम्बन्ध रखता है। आपके शम्भूरामजी तथा शम्भूरामजीके हिम्मतरामजी नामक पुत्र हुए। आपके पुत्र लाला रतनलालजी बढ़ेर व्यापारके निमित्त लगभग सम्वत् १९४० में कलकत्ता आये और यहां आपने अफीम तथा जवाहरातका व्यवसाय आरम्भ किया।

आप बड़े व्यापार दक्ष और होनहार पुरुष निकले। व्यापारमें बहुत द्रव्य उपार्जन कर धार्मिक कामोंमें आपने उदारता पूर्वक खर्च किया। कई मन्दिरोंके जीर्णोद्धारमें आपने रकमें लगाईं। अपने जाति भाइयोंको रोजगारसे लगानेमें एवं उन्हें हर तरहसे मदद देनेमें आप उत्सुक रहते थे। अफीमके व्यापारमें आप इतने मातबर व्यापारी माने जाते थे कि बाजारको घटाना बढ़ाना आपका एवं आपके साथी सुलतानचन्दजी काछवाके दाहिने हाथका खेल था। धीरे धीरे आपने बैंकिंग व्यापार भी आरंभ किया, जिससे कई बंगाली और अंग्रेज सज्जनोंमें आपका अच्छा प्रभाव जमा। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन बिताते हुए सम्वत् १९५० में आप स्वर्गवासी हुए। आपको जैसलमेर स्टेटकी ओरसे काजीकी उपाधि प्राप्त हुई थी। आपके पुत्र कन्हैयालालजीका जन्म जैसलमेरमें हुआ। आप भी अपने फर्मके बैंकिंग व जवाहरातके व्यापारको सम्हालते रहे। आपने पटनामें एक जैन मन्दिरका जीर्णोद्धार करवाया। इसी प्रकार कई धार्मिक कार्योंमें सहयोग देते रहे। संवत् १९७१ मे आपका स्वर्गवास हुआ। स्वर्गवासके समय आप २००००) बीस हजार रुपये धर्मार्थ कार्यके लिये निकाल गये थे। आपके पुत्र लाला रूपचन्दजी इस समय विद्यमान हैं।

सेठ रूपचन्दजीका जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आप भी बड़े मिलनसार तथा उत्साही व्यक्ति हैं। आपके यहां इस समय बैंकिंग और जवाहरातका व्यापार होता है। आपके हाउस का पता ४१।२A बद्रीदास टेम्पल स्ट्रीट कलकत्ता है। सेठ रूपचन्दजीके इस समय ३ पुत्र हैं जिनके नाम विजयकुमारसिंहजी, विमलकुमारसिंहजी तथा वीरेन्द्रकुमारसिंहजी हैं। बाबू विजयकुमारसिंहजी बी॰ कामके फोर्थइअर में पढ़ रहे हैं।

धम्मावत

बाबू गोपालचन्दजी धम्मावतका खानदान, बनारस

इस खानदान वालोंका मूल निवासस्थान उदयपुर का था। आपलोग वहांसे मिर्जापुर तथा मिर्जापुरसे करीब १०० वर्ष पूर्व बनारस आकर स्थायी रूपसे रहने लगे। आप धम्मावत गौत्रीय श्री॰ जै॰ श्वे॰ एवं दिगम्बर सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें लाला सुमेरचन्दजी हुए। आपके उमरावचन्दजी उर्फ लल्लूजी, ज्ञानचन्दजी उर्फ गुल्लूजी तथा गोपालचन्दजी नामक तीन पुत्र थे।

लाला उमरावचन्दजी:—आप बड़े नामी तथा प्रतिष्ठित जौहरी हो गये हैं। आपने अपने जवाहरातके व्यापारमें इतनी तरक्की की थी कि आप बनारस महाराजके जुएलर थे। आप बनारसके प्रसिद्ध जौहरी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपके कोई पुत्र न था। बाबू ज्ञानचन्दजी आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपके पुत्रोंमेंसे अमीचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। शेष बन्धु बाहर व्यापार करते हैं।

बाबू गोपालचन्दजीने अपने व्यापारको ठीक तरहसे संचालित किया। आप भी अच्छे जौहरी थे। आपके गुलाबचन्दजी एवं धर्मचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। बाबू गुलाबचन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९५३ में हुआ। आप भी अपना जवाहरातका व्यापार करते रहे। आप संवत् १९८९ में स्वर्गवासी हुए।

बाबू धर्मचन्दजीका जन्म सं० १९५३ की फाल्गुन सुदी ८ का है। आप मिलनसार हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने जवाहरातके व्यापार को सफलतापूर्वक चला रहे हैं। आप मे० धर्मचन्द एण्ड संसके नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं। आपके यहांपर प्राचीनकालका एक देरासर बना हुआ है जिसमें श्रीपारसनाथ भगवानकी एक बहुमूल्य प्रतिमाजी भी हैं। इस मन्दिरकी पूजाका कार्य वर्त्तमानमें आपके जिम्मे है। इस प्राचीन मन्दिरके दर्शनार्थ बहुतसे दिगम्बर श्रावक बाहरसे प्रतिवर्ष आते हैं। धर्मचंदजीके सन्तोषचन्दजी नामक एक पुत्र है।

टुंकलिया

सेठ गोकुलचन्दजी टुङ्कलियाका खानदान, जयपुर

इस परिवारवालोंका मूल निवास स्थान बड़खेड़ा (जयपुर-स्टेट) का है। आपलोग टुंकलिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारवाले बड़खेड़ासे खो तथा खो से सेठ दयाचन्दजी १५० वर्ष पूर्व जयपुर आये। तभीसे आपलोग यहींपर निवास कर रहे हैं। सेठ दयाचन्दजीके बख्तावरमलजी, पन्नालालजी, हीरालालजी तथा मगनीरामजी नामक चार पुत्र हुए।

सेठ मगनीरामजी व आपके पूर्वज जयपुरमें हाथीखाना तथा लेनदेनका काम करते थे। आपके मोतीलालजी तथा लादूरामजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ मोतीलालजीके चन्दनमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ चन्दनमलजी संवत् १९५२ में स्वर्गवासी हुए। आपकेपुत्रका नाम गोकुलचन्दजी है।

सेठ गोकुलचन्दजीका जन्म सं० १९२८ में हुआ। आपही ने सर्वप्रथम अपने यहाँपर जवाहरातका व्यापार शुरू किया। इसके पश्चात् आप सं० १९६६ में महकमा तारतम्यके हाकिम हो गये। सं० १९९० से आप पेशन प्राप्त कर शान्ति लाभ कर रहे हैं। आपके गुलाबचन्दजी, नथमलजी तथा पूर्णचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं। आप तीनों बन्धु मिलनसार हैं। गुलाबचन्दजी जवाहरातका व्यापार करते, नथमलजी गोंदे (जयपुरस्टेट) में और बाबू पूर्णचन्दजी सांगानेर (जयपुर) में सर्विस करते हैं। बाबू पूर्णचन्दजी एक योग्य तथा शिक्षित सज्जन हैं। आपने एम० ए० और विशारद परीक्षाएँ पास की हैं। आप विद्वान महानुभाव हैं।

बरड़िया

सेठ रतनलालजी जीतमलजी बरड़िया, जयपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान जोवनेरका है। आप वरड़िया गौत्रके श्री जै० श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें चतुर्भुजजी, इनके रघुनाथजी तथा नन्दलालजी नामक पुत्र हुए। आपलोग जोवनेरमें ही हुण्डी चिट्ठीका लेन देन करते रहे। पश्चात् सेठ नन्दलालजीके पुत्र शिवलालजी सबसे प्रथम करीव ११० वर्ष पूर्व वहांसे जयपुर आये और यहांपर मेसर्स शिवलाल इन्द्रचन्द्रके नामसे हुण्डी चिट्ठीका व्यापार किया। आपने अपनी एक फर्म मे० शिवलाल भवानीरामके नामकी किशनगढ़में भी खोली थी। आपके भवानीरामजी, इन्द्रचन्द्रजी, चांदमलजी तथा कस्तूरचंदजी, नामक चार पुत्र हुए।

सेठ चांदमलजी व्यापारकुशल तथा साहसी व्यक्ति थे। आपने भी अपने व्यापारको बढ़ाया। आपके पुत्र तेजकरणजीका जन्म सं० १९२३ में हुआ। आपने अपनी एक फर्म मे० जीतमल माणकचन्दके नामसे वम्बईमें भी खोली थी। आपके रतनलालजी, जतनलालजी, जीतमलजी एवं कल्याणमलजी नामक चार पुत्र हुए। सं० १९७१ में सेठ तेजकरणजीने अपनी वम्बई दुकान वन्द कर दी तथा आप जयपुर चले आये। आपका सं० १९८१ में स्वर्गवास हुआ।

सेठ रतनलालजीका जन्म सं० १९४३ में हुआ। आप सर्विस करते हैं। आपके पुत्र सरदारमलजी मिलनसार युवक हैं। सेठ जीतमलजीका जन्म सं० १९५० में हुआ। आप सफल जवाहरातके व्यापारी हैं। सेठ कल्याणमलजीका जन्म सं० १९५८ में हुआ। आप कलकत्तामें चांदी सोनाके व्यवसायी हैं। जयपुरमें आपलोग एक अच्छी हवेली वना रहे हैं।

शाह नन्दरामजी शिखरचन्दजी बरड़िया, गोटेगाँव

यह परिवार नागोर के पास घंटियाली नामक स्थान का निवासी है। यहाँ से सेठ गंगाधरजी वरड़िया लगभग १०० वर्ष पूर्व व्यापार के लिये गोटेगांव आये। आपके मेघराजी, व्रजलालजी, खेमराजजी तथा प्रेमसुखजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयों ने अपने व्यापार तथा सम्मान को अच्छी तरक्की दी। आपकी मेघराज व्रजलाल के नाम से प्रख्यात दुकान थी। संवत् १९४७ में आपने देव सथनाथ भगवान का देरासर वनाया। आप चारों भाइयों का स्वर्गवास हो गया है। इस समय सेठ मेघराजजी के पुत्र रायमलजी एवं खेमराज जी के पुत्र नन्दरामजी विद्यमान हैं।

सेठ नन्दरामजी वरड़िया गोटेगाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप स्थानीय म्यु० के वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपका जन्म सं० १९३८ में हुआ। आपके पिताजी के स्वर्गवास के समय आप १२ साल के थे, पर आपने अपनी होशियारी से परमचन्द नन्दराम के नाम से जोरों से

व्यापार संचालन किया। सेठ नन्दरामजी के पुत्र शिखरचन्दजी, मोतीलालजी, सुन्दरलालजी, सरदारसिंहजी तथा विजयसिंहजी हैं। इनमें शिखरचन्दजी तथा मोतीलालजी फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। श्री मोतीलालजी फूलचन्द मोतीलाल के नाम से व्यापार करते हैं।

लूणिया

सेठ गौरूमलजी चौथमलजी लूणिया, जयपुर

यह परिवार जैसलमेर निवासी लूणिया गौत्रीय श्री जै० श्वे० तेरापन्थी है। इस परिवारके सेठ गौरूमलजी जैसलमेरसे देहली तथा देहलीसे जयपुर आये और यहांपर जवाहरातका व्यापार किया। आपके चौथमलजी तथा गणेशीलालजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों बन्धु बड़े धार्मिक तथा मिलनसार थे। आज भी आप अपने नेकचलनके लिये जयपुरमें प्रसिद्ध हैं। आप दोनोंने सफलतापूर्वक जवाहरातका व्यापार किया। आप दोनोंका क्रमशः सं० १९५४ और ५७ में स्वर्गवास हो गया।

सेठ गणेशीलालजीके तेजकरणजी और गुलाबचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमेंसे तेजकरणजी सं० १९५८ मेंही गुजर गये हैं। सेठ गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १९३५ की भादवा बदी २ को हुआ। वर्त्तमानमे आप ही अपने सारे जवाहरातके व्यापारको सञ्चालित कर रहे हैं। आपने सेठ गुलाबचन्द एण्ड को० के नामसे एक फर्म और खोली है जिसपर भी जवाहरात व क्युरियोसिटी का व्यापार होता है। आप जवाहरातका एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट भी करते हैं। आप बड़े धार्मिक पुरुष हैं। स्तवन, ढालें आदि आपने लिखी हैं। आप जयपुरके तेरापन्थी सम्प्रदायके प्रमुख व्यक्ति हैं। आपके केशरीचन्दजी एवं पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू केशरीचन्दजी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपके यहांपर मे० गौरूमल चौथमल एवं सेठ गुलाबचन्द एण्ड संसके नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार होता है।

भाभू

लाला जसवन्तरायजी भाभूका खानदान, होशियारपुर

इस खानदानका मूल निवासस्थान होशियारपुर (पञ्जाब) का है। आप भाभू गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानमें लाला जौहरीमलजी हुए। आपके गुलाबरायजी, [illegible] तथा [illegible]रामजी नामक तीन पुत्र हुए। लाला गुलाबरायजी के राधूमलजी और [illegible], राधूमलजीके छज्जूमलजी तथा छज्जूमलजीके हंसराजजी हुए। आप सब लोग गुजर चुके हैं। लाला [illegible]जीके रतनचन्दजी तथा जसवंतरायजी नामक दो पुत्र हुए।

इनमे उत्तमचन्दजी तथा उनके पुत्र प्यारेलालजीका स्वर्गवास हो गया है। होशियारपुर में आप लोग मनिहारीका काम करते थे। लाला शिब्बूलालजी सं० १९४८ में गुजरे।

लाला जसवन्तरायजीका जन्म सं १९२८ मे हुआ। आपने सं० १९५० में मेट्रिक पास की। उसी साल आपने लाहौरमें अलायंस बैंक आफ शिमलामें सर्विस की। आपने इस बैंकके अलावा जैन बैंकमें सन् १९१३ से दो सालों तक सेक्रेटरीशिप का कार्य्य किया। फिर पुनः इसी बैंकमें आ गये। सन् १९३२ तक इसकी देहली शाखा में आप सर्विस करते रहे। उन्हीं दिनों सन् १९३१में आपने हायजरी वर्कका देहलीमें एक कारखाना खोला। इसमें आपको काफी सफलता प्राप्त हुई। आप सार्वजनिक स्पीरीटवाले सज्जन भी हैं। आप श्री आत्मानन्द जैन पत्रके ७ सालों तक सम्पादक आत्मानन्द जैन गुरुकुलके ५ सालोंतक निरीक्षक आदि २ रहे। वर्त्तमानमें आप तीन सालोंसे आत्मानन्द गुरुकुलकी प्रबन्धक कमेटीके मेम्बर, आत्मानंद जैन महासभा पंजाब, हस्तिनापुर जै० श्वे० तीर्थ कमेटीकी प्रबन्ध कमेटियोंके मेम्बर हैं। आप को धार्मिक पुस्तकें सग्रह करनेका अच्छा शौक है। आप आत्मानंदजी महाराजके अनन्य भक्त तथा अनेक भाषा जाननेवाले व्यक्ति हैं। आपके बनारसीदासजी, जिनचरणदासजी, लछमण दासजी, नानकचन्दजी, धर्मचन्दजी एवं कस्तूरचन्दजी नामक छः पुत्र हुए। इनमें से लाला बनारसीदासजी देहलीमें परखूमलजीकी विधवाके यहांपर गोद गये तथा जिनचरणदासजी लछमणदासजी क्रमशः लाहौर और देहलीमें अपना अलग स्वतन्त्र व्यापार करते हैं। लाला नानकचंदजी एवं धर्मचन्दजी अभी अपने व्यापारमें भाग ले रहे हैं। नानकचन्दजीके विजयकुमारजी, देवेन्द्रकुमारजी, राजेन्द्रकुमारजी तथा धरणेन्द्रकुमारजी नामक चार पुत्र हैं। इसी प्रकार धर्मचन्दजी के पदमचन्दजी और विमलचन्दजी नामक दो पुत्र हैं।

यह खानदान होशियारपुरमें प्रतिष्ठित माना जाता है। आपकी जैनीको रुमाल एण्ड हायनरी फैक्टरी शाहदरा दिल्लीमें है।

लाला मिलखीरामजी बनारसीदासजीका खानदान, होशियारपुर

इस परिवारवाले होशियारपुर (पंजाब) निवासी भाभू गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें लाला हजारीमलजी हुए। आपके राधाकिशनजी और राधाकिशनजीके गुरुदत्तामलजी तथा नत्थूमलजी नामक दो पुत्र हुए। आप सब लोग होशियारपुरमें ही सराफीका व्यापार करते रहे।

लाला गुरुदत्तामलजीके पुत्र मिलखीरामजीका जन्म सं० १९२८ में हुआ था। आप बड़े धार्मिक तथा मिलनसार व्यक्ति थे। आप स्वभावके अच्छे तथा धर्म ध्यानी पुरुष थे। रात्रि भोजन, चौविहार आदि नियमोको आपबराबर पालते रहे। आप ही पहले पहल सं० १९६१ में देहली आये और यहांपर बसातखाने व आढ़तका कार्य्य शुरू किया। आपको इसमें सफलता मिली। आपके पन्नालालजी तथा बनारसीदासजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला कुंजलालजी गधैया (हुकुमचन्द काशीराम)
अमृतसर
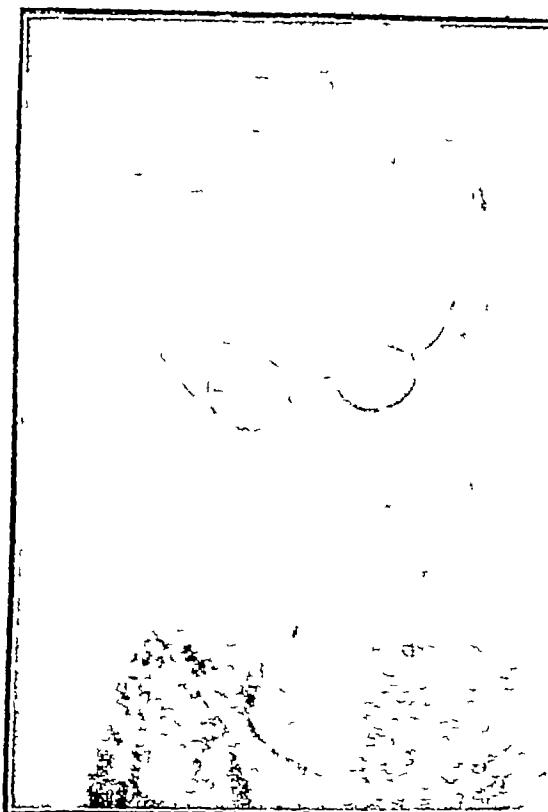
बाबू भँवरमलजी सिंघी,
जयपुर

लाला बनारसीदासजी ओसवाल,
सदर बाजार देहली

लाला दीवानचन्दजी लोढ़ा, (नानक-
चन्द दीवानचन्द) सदर देहली

लाला पन्नालालजीका जन्म सं० १९५८ में हुआ। आप कलकत्तेमें अपना व्यापार करते हैं। लाला बनारसीदासजीका जन्म सं० १९६१ में हुआ। आप समाजसेवी तथा मिलनसार युवक हैं। जैन पुस्तकालय सदर बाजार देहलीकी मैनेजिंग कमेटीके आप मेम्बर व समितिके भण्डारके कार्यकर्त्ता हैं। आपके पुत्रप्रेमचन्दजी महावीर पब्लिक लायब्रेरीके खजांची तथा उत्साही युवक हैं। आपका पता बनारसीदासजी ओसवाल सदर बाजार देहली है।

गधैया

लाला हुकुमचन्दजी काशीरामजी गधैया, अमृतसर

इस खानदानका खास निवासस्थान अमृतसर (पंजाब) का है। आप गधैया गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। यह खानदान मे० मेलूमल मानकचन्द मेंसे निकला है। इस खानदानवालोंने उपरोक्त नामसे सं० १९१४ के गदरके पहलेसे अपने यहाँ बसातखाने का काम चला रक्खा था। आप लोगोंकी फर्म बहुत ही पुरानी तथा बिसात खानेके व्यापारमें प्रमुख रही है। इस खानदानमें लाला हुकुमचन्दजी हुए। आपका जन्म सं० १८५२ में हुआ था। आप अमृतसरमें बसातखाने का सफलतापूर्वक काम करते रहे। आप सरल स्वभाववाले धार्मिक पुरुष थे। हर अमावस्याको आप सदाव्रत देते थे। आप सं० १९१५ में गुजरे। आपके काशीरामजी, वाशीरामजी एवं हंसराजजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला काशीरामजीका जन्म सं० १९३१ मे हुआ था। आप व्यापार कुशल तथा हर एकके साथ हमदर्दी रखनेवाले शख्स थे। आपने व्यापार बढ़ाया और अपनी जायदाद बनाई। अमृतसरमें आप प्रसिद्ध थे। आपका सं० १९८९ में स्वर्गवास हुआ। आपके फूलचन्दजी, रामलालजी, शोरीलालजी तथा तिलकचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। आप चारों भाई व्यापार में भाग लेते हैं। लाला फूलचन्दजीके रोशनलालजी, जुगेन्द्रलालजी, मनोहरलालजी तथा सत्यपालजी और रामलालजीके विजयकुमारजी, पुजनकुमारजी नामक पुत्र हैं।

लाला वाशीरामजी युवावस्थामे ही सं० १९५९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र लाला कुञ्जलालजीका जन्म सं० १९५८ में हुआ। आपने सन् १९१८ में मेट्रिक पास करके अपने व्यापारमें भाग लेना शुरु कर दिया है। सुप्रसिद्ध गुजराती लेखक वाड़ीलाल मोतीलाल शाह ने अपने 'जैन हितेच्छु' मे आपकी स्मरण शक्ति, तीक्ष्ण बुद्धि व धार्मिक शिक्षाकी लगनकी तारीफ की थी। आपने देहलीके व्यापारको सम्हाला और यहांपर एक बड़ी फेक्टरी खोली जो आज भी सफलतापूर्वक चल रही है। इस फैक्टरीसे दूर दूरके प्रांतोंमें माल भेजा जाता है। आप सुधरे हुए खयालके, राष्ट्रीय भावनाओं वाले व्यक्ति हैं। आध्यात्मिक विषयोंमें आपको काफी दिलचस्पी रहती है। आप महावीर जैन विद्यालयके जन्मदाता, श्री श्रवणोपासक जैन मिडिल

स्कूलके संचालक हैं। आप आफताफ नामक मासिक पत्रके भी संचालक रहे। आप अपने व्यापारके प्रधान संचालक, उत्साही तथा सार्वजनिक सेवा प्रेमी हैं। आपने परोपकारमें बहुत व्यय किया है। आपके शीतलप्रसादजी तथा देवेन्द्रकुमारजी नामक दो पुत्र हैं। प्रथम एफ० ए० में पढ़ रहे हैं।

लाला हंसराजजीका जन्म सन् १८८७ में हुआ। आपही वर्तमानमें इस खानदानमें सबसे वड़े तथा धर्मप्रेमी सज्जन हैं। आपको व्यापारका अनुभव भी अच्छा है। आपके दीपचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आप मे० हुकुमचन्द काशीरामके नामसे अमृतसरमें तथा काशीराम हंसराजके नामसे देहली सदरमें हायजरी व वसातखानेका व्यापार करते हैं।

लोढ़ा

लाला पन्नालालजी लोढ़ा का खानदान, देहली

इस परिवार वाले करीब १०० वर्षों से देहलीमें ही निवास कर रहे हैं। आप लोढ़ा गौत्रीय श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारमें किशनचन्दजी हुए। आपके नामपर पन्नालालजी गोद आये।

लाला पन्नालालजी—आप वड़े प्रतिष्ठित तथा व्यापारकुशल सज्जन हो गये हैं। आपके पहले आपकी फर्मपर चूड़ियोंका व्यापार होता था। आपने अपने यहांपर जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ कर बहुत सफलता प्राप्त की। ऐसा सुना जाता है कि आपके समयमें आपके यहासे कई स्टेटोंको जवाहरात जाता था। आप नामी जौहरी तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। आपने खानदानकी प्रतिष्ठाको भी बहुत बढ़ाया। आपने लाला जीतमलजीको गोद लिया। गोद लेनेके पश्चात् लाला पन्नालालजीके मोतीलालजी नामक पुत्र हुए। आप दोनों भाई करीब ४५ वर्ष पूर्वसे अलग होकर अपना-अपना अलग व्यापार करने लगे। लाला जीतमलजीके नामपर माणकचंदजी नागौरसे गोद आये।

लाला माणकचन्दजीने पुनः जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया और सफलता प्राप्त की। आप मिलनसार व्यक्ति थे। आपकी धर्मपत्नी साधु सेवाप्रेमी तथा नम्र महिला थी। सं० १९६१ में आप स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर फूलचन्दजी प्रतापगढ़से गोद आये। आपका जन्म सं० १९४६ में हुआ। आप ही वर्त्तमानमें अपना व्यवसाय संचालित कर रहे हैं। आपके वव्बूमलजी, गुलाबचन्दजी एवं धर्मचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

लाला वव्बूमलजीका जन्म सं० १९६५ में हुआ। आप वर्तमानमें जवाहरातका व्यापार करते हैं। आपके चमनलालजी और पूनमचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १९६९ में हुआ। आप सुधरे हुए ख़यालोंके योग्य तथा उत्साही युवक हैं। देश
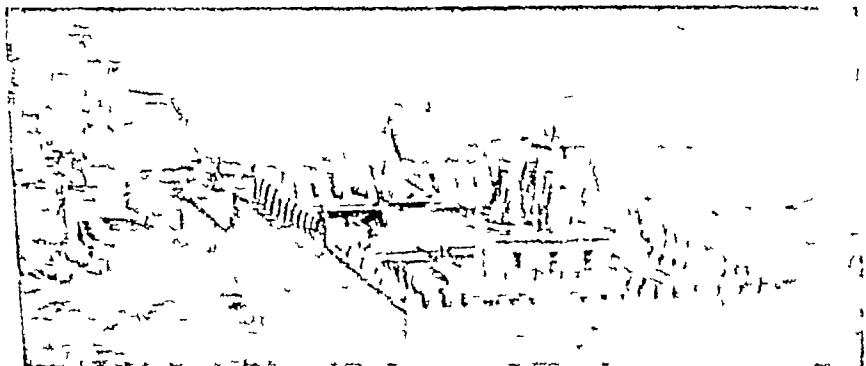
वलारी जैन मन्दिर

स्व० राजा प्रतापसिंहजी दूगड मुर्शिदाबाद
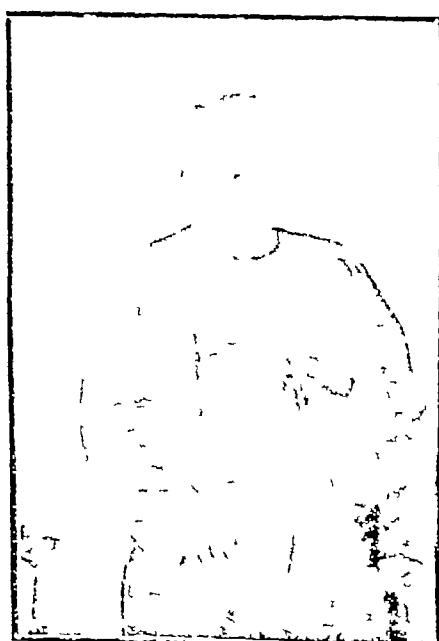
स्व० राय धनपतसिंहजी बहादुर, मुर्शिदाबाद

सेवासे आपको विशेष प्रेम है तथा आप शुद्ध खद्दर पहनते हैं। कई समय आपको राष्ट्रीय नेताओंके साथ रहनेके अवसर आये हैं। आप राष्ट्रीय विचारोंके योग्य युवक हैं। आपने गुजरात विद्यापीठमें भी अध्ययन किया है। असहयोग आन्दोलनमें भाग लेनेके कारण आप एक समय जेल यात्रा भी कर आये हैं। आप राष्ट्रीय महासभाके देहली अधिवेशनकी स्वागतकारिणीके मेम्बर, स्थानकवासी जैन पाठशालाके मन्त्री आदि हैं। यहांकी महावीर जैन लायब्रेरीके उत्थानमें आपका बहुत हाथ रहा है।

लाला दीवानचन्दजी लोढ़ाका खानदान, अमृतसर

लाला दीवानचन्दजी लोढ़ाका मूल निवासस्थान अमृतसरका है। आप लोढ़ा गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। आप उन व्यक्तियोंमेंसे एक हैं जो अपने पैरों-पर खड़े रहकर अपनी सारी स्थितिको सँभालते हैं। आप जातिमें एक वजनदार व्यक्ति हैं। करीब ३५ सालोंसे आप देहलीमें व्यापार कर रहे हैं। आप लोकप्रिय तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। पञ्चायतके चौधरी भी आप ही हैं। आप मेसर्स नानकचन्द दीवानचन्दके नामसे सदर-बाजार देहलीमें ब्रश, बटवा, निवार आदिका व्यापार करते हैं। आपकी जातिमें अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके मोलखराजजी तथा सत्येन्द्रकुमारजी नामक दो पुत्र हैं जो व्यापारमें भाग लेते हैं।

परिशिष्ठ

*राय बुधसिंहजी प्रतापसिंहजी दूगड़का खानदान, मुर्शिदाबाद

यह खानदान सम्पूर्ण भारतवर्षके ओसवाल परिवारोंमें बहुत ही प्रतिष्ठित, अग्रगण्य तथा सम्माननीय माना जाता हैं। इस प्रसिद्ध राजवंशकी उत्पत्ति चौहान राजपूतोंसे हुई है। आप लोग प्राचीन कालमें सिद्धमौर और अजमेरके पास वीसलपुरमें राज्य करते थे। सन् ६३८ मे इस राजवंश में राजा माणिकदेव हुए। आपके पिता राजा महिपालने जैनाचार्य श्री जिन वल्लभसूरिजी से जैन धर्म अंगीकार किया था। आपके दो तीन पीढ़ी बाद दूगड़ सूगड़ नामक दो पुत्र हुए जिनका विस्तृत इतिहास ग्रन्थके प्रथम भागमें दूगड़ गौत्रके प्रारम्भमें दिया गया है। आप हीके नामसे आप की संतानें दूगड़ कहलाईं। आपके कई सन्तानों बाद श्रीमान सुखजी हुए। आप सन् १६३२ ई० में राजगढ़ आये। उन्हीं दिनोंमें आप बादशाहके यहांपर पांच हजार सेनाके सेनापति नियुक्त हुए। आप बड़े योग्य तथा बहादुर व्यक्ति थे। सम्राट ने आपको राजा की पदवीसे विभूषित किया था। आपके बाद १८ वीं शताब्दीमें आपके खान-

---

* हमें खेद है कि इस प्रतिष्ठित खानदानका इतिहास हमें कुछ विलम्बसे मिला। अतः हम इसे उचित स्थानपर न छाप सके।

दानमें धर्मदासजीके पुत्र वीरदासजी हुए जो अपने निवासस्थान किशनगढ़ (राजपुताना) से तीर्थ यात्रा करनेके लिये रवाना हुआ। आप पार्श्वनाथ तीर्थ होते हुए सपरिवार बंगाल प्रांतके मुर्शिदाबाद नगरमें आये और यहीं पर स्थायी रूपसे बस गये। आप बड़े व्यापार कुशल तथा साहसी सज्जन थे। यह वह समय था जिस समय मुर्शिदाबाद बंगाल प्रान्तमें सबसे अधिक चमकता हुआ नगर व उन्नतिके शिखर पर था। प्रसिद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनीके समयमें यहांका व्यापार बहुत ही बढ़ा चढ़ा था। ऐसे समृद्धिशाली नगरमें आपने अपना निवासस्थान बनाकर वहां पर बैंकिंग का व्यापार आरम्भ किया। आपके बुधसिंहजी नामक पुत्र हुए।

बाबू बुधसिंहजीने अपने बैंकिङ्ग व्यापारको सफलता पूर्वक चलाया। आपके बहादुर सिंहजी एवं प्रतापसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। बाबू बहादुरसिंहजी तो नि संतान स्वर्गवासी हुए। अत सारे परिवार व व्यवसायका कार्य्य भार बाबू प्रतापसिंहजीने अपने कन्धोंपर लिया।

राजा प्रतापसिंहजी—आप इस खानदानमें बहुत ही चमकते हुए, प्रतिभाशाली तथा प्रभावशाली पुरुष हुए। आप व्यापारमें निपुण तथा कार्य्यकुशल महानुभाव हो गये हैं। इस खानदानके इतने ऐश्वर्य्यशाली व वैभव सम्पन्न दृष्टि गोचर होनेका प्रधान श्रेय आप हीको है। आपने अपने व्यवसायको चमकाया व लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की। आपका ध्यान अपनी स्थायी सम्पत्ति बनानेकी ओर भी विशेष रहा। आपने भागलपुर, पूर्णिया, रङ्गपुर, दिनाजपुर, माल्दा, मुर्शिदाबाद, कूचबिहार आदि जिलोंमें जमींदारी खरीद की।

धार्मिक कामोंमें भी आपने उत्साह पूर्वक भाग लिया। आप बड़े धार्मिक सज्जन थे। आपने कई स्थानोंपर जैन मंदिर बनवाये तथा कई धार्मिक कार्य्यों में मुक्तहस्त से सहायता प्रदान की। आपने पालीताना और शिखरजीकी यात्राके लिये एक पैदल संघ निकाला था जिसमें बंगालके सैकड़ों कुटुम्ब आमन्त्रित किये गये थे। इस संघके शत्रुञ्जय तीर्थपर पहुचने के पश्चात् आपने अगहन वदी १ पर नौकारसी का बड़ा भारी जीमन किया। तभीसे यह प्रथा चालू हो गई तथा आजतक आपके वंशज उक्त मितीपर पालीतानामें दस पन्द्रह हजार मनुष्योंका जीमन हरसाल करवाते हैं।

आपको जाति सेवासे भी बहुत प्रेम था। सैकड़ों ओसवाल बन्धुओं को आपकी ओरसे प्रोत्साहन मिला होगा। आपके आश्रय पाये हुए सैकड़ों परिवार आज भी लखपति की हैसियतमें विद्यमान हैं। आपका कलकत्ते एवं मुर्शिदाबादकी जैन जनतामें बहुत सम्मान है। बङ्गालकी जैन समाजमें आप ही सबसे बड़े जमींदार हैं। आपका परिचय इतना व्यापक तथा प्रभाव इतना फैला हुआ था कि दिल्लीके बादशाह तथा बंगालके नवाब ने भी आपको खिलअत देकर सम्मानित किया था। आपका सन् १८६० में स्वर्गवास हो गया। आपके लक्ष्मीपत सिंहजी एवं धनपतसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों बन्धुओंका सारा विभाजन राजा प्रतापसिंहजी अपने स्वर्गवासके कुछ मास पूर्व ही अपने हाथोंसे कर गये थे।
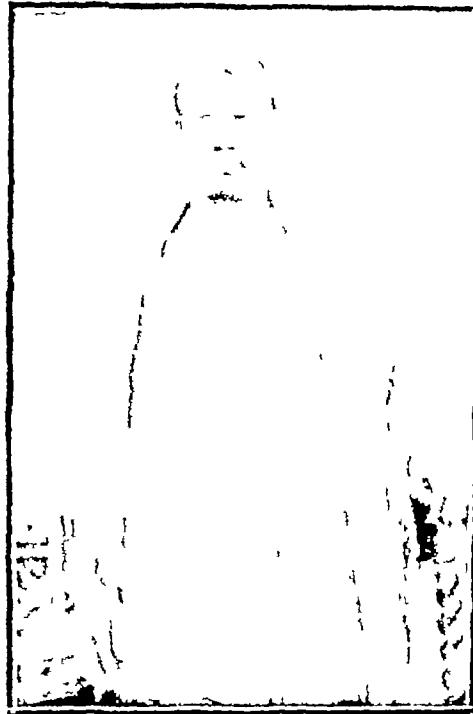
स्व० राय वहादुर लछमीपतसिंहजी दूगड, जीयागंज

स्व० वावू छत्रपतसिंहजी दूगड़, जीयागंज
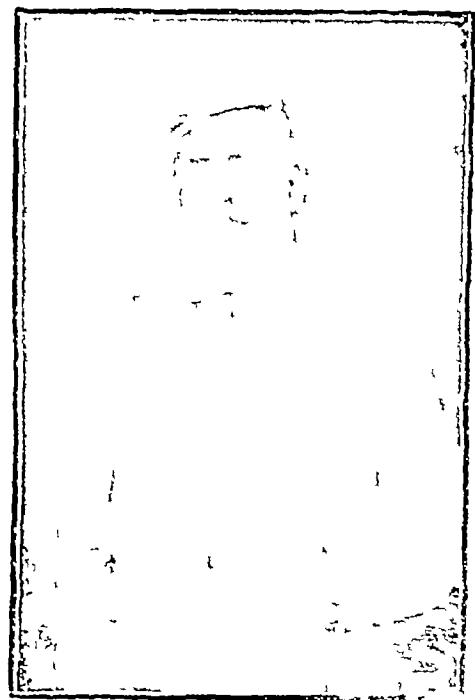
वावू श्रीपतसिंहजी दूगड, जीयागंज
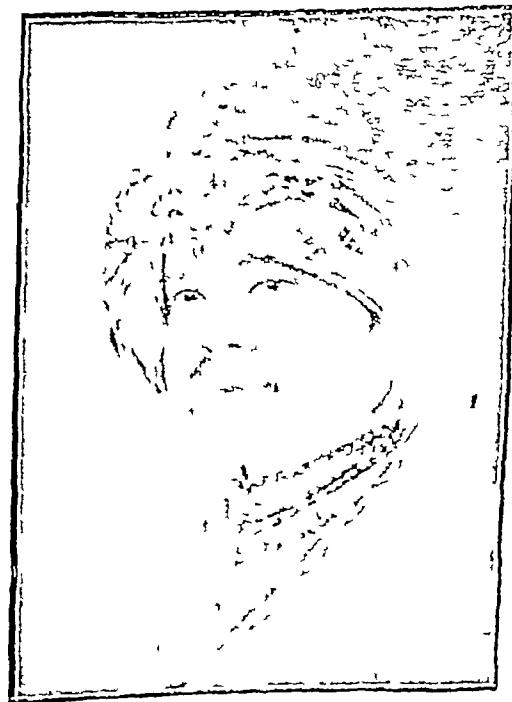
वावू जगतपतसिंहजी दूगड, जीयागंज

राय लक्ष्मीपतसिंहजी बहादुर का खानदान - आपका जन्म सन् १८३५ में हुआ था। आपने योग्यता पूर्वक अपनी जमींदारीकी व्यवस्था की तथा खानदानकी प्रतिष्ठाको बहुत बढ़ाया। आप बड़े सार्वजनिक स्पीरीटवाले महानुभाव थे। आपने अपनी जमींदारीके गाँवोंमें स्कूल व अस्पताल खोले तथा अनेक सार्वजनिक एवं परोपकारी संस्थाओंको खुले हाथोंसे दान प्रदान किया। आपकी भी धार्मिक भावनाएं बड़ी प्रबल तथा स्वभाव उदार था। आपने सन् १८७० में एक सङ्घ निकाला था। इस सङ्घमें राजपुतानाके कई नरेशोंसे आपका परिचय हो गया था। एक समय जयपुर नरेश महाराजा सवाई रामसिंहजी जब कलकत्ता आये थे तब आपके यहां अतिथि होकर रहे थे।

आप जैन समाजके अंतर्गत प्रख्यात तथा नामी पुरुष हो गये हैं। आपने सन् १८७६ में छत्रबाग (कठगोला) नामक एक बहुत ही दिव्य उपवन लगाया जिसमें लाखों रुपया व्यय किया। यह बगीचा मुर्शिदाबाद तथा बङ्गालके दर्शनीय स्थानोंमें एक है तथा अपने ढङ्गका अनूठा बना हुआ है। इसी बगीचेमें आपने श्रीआदिनाथ भगवान का एक सुन्दर मंदिर बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा श्रीजिनदत्तसूरीजीने सम्पन्न की। आप इस मदिरके नामपर हजारों रुपये सालके आयकी जमीदारी देवपत्तर कर गये जो आजतक बराबर चली आ रही है। इस सम्पत्ति व देवपत्तर की व्यवस्था बाबू जगतपतसिंहजी के जिम्मे हैं। बाबू लक्ष्मीपतसिंहजी समयके बड़े पाबन्द थे। आपने जीवनमें कभी समयका दुरुपयोग नही किया था। गवर्मेन्टने सन् १८६७ में आपको "राय बहादुर" के सम्माननीय खिताबसे सम्मानित किया। आप सन् १८८६ में स्वर्गवासी हुए। आपके छत्रपतसिंहजी नामक एक पुत्र हुए।

बाबू छत्रपतसिंहजी—आपका जन्म सन् १८५७ का था। आप निर्भीक विचारोंके स्वतंत्र व्यक्ति थे। आपका कलकत्तामे बहुत परिचय था। आप जैन समाजके एक प्रमुख नेता तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप अपने पिताजीकी मृत्युके पश्चात् अपनी जागीरीकी सफलतापूर्वक व्यवस्था करते रहे तथा आपने अपने खानदानके सम्मानको पूर्ववत बनाये रक्खा। आपका स्वर्गवास सन् १९१८ में हुआ। आपके श्रीपतसिंहजी एवं जगतपतसिंहजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

बाबू श्रीपतसिंहजी—आपका जन्म सन् १८८२ में हुआ। आप सरल स्वभावके मृदुभाषी व मिलनसार व्यक्ति हैं। ब्रिटिश गवर्मेण्टमें आपका अच्छा सम्मान है। आपका कई रईसोंसे भी अच्छा परिचय है।

बाबू जगतपतसिंहजी—आपका जन्म सन् १८८९ का है। आप योग्य, मिलनसार तथा बङ्गालके जागीरदारोंमें सम्माननीय व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप ही अपनी जमींदारीकी योग्यता पूर्वक व्यवस्था कर रहे हैं। आपके राजपतसिंहजी, कमलपतसिंहजी, प्रजापतसिंहजी एवं जदुपतसिंहजी नामक चार पुत्र हैं। बाबू राजपतसिंहजी उत्साही तथा शिक्षित युवक हैं। आपने बी० ए० पास कर लिया है तथा लॉ का अध्ययन कर रहे हैं।

राय धनपतसिंहजी बहादुर का खानदान—आपका जन्म सन् १८४० में हुआ था। आपने अपने गुणों, धार्मिक कार्यों तथा परोपकार वृत्तियों द्वारा अपने पिताके चमकते हुए नामको विशेष प्रकाशमान किया। अपनी जमीदारीकी योग्यता पूर्वक व्यवस्था करनेके साथ ही साथ आपने अनेक धार्मिक एवं परोपकारके सत्कार्य किये। आपने चिरकालसे अप्रकाशित जैन धम के आगम ग्रन्थोंके प्रकाशनको अपने हाथमें लेकर एक अभूत पूर्व कार्य्य किया है। इन ग्रन्थोंको प्रकाशित करानेमें आपने अपना प्रचुर धन व्यय किया जिसके लिये सारा जैन समाज आपका ऋणी रहेगा। आपकी धार्मिक भावनाएँ बड़ी प्रबल तथा भक्तिभाव पूर्ण थीं। आपने अजीमगंज, बालूचर, नलहटी, भागलपुर, लक्खीसराय, गिरीडीह, बड़ाकर, सम्मैदशिखरजी, लछवाड़, काकड़ी, राजगिरी, पावापुरी, गुनाया, चम्पापुरी, बनारस, वटेश्वर, नवराही, आबू, पालीताना, जलाजा, गिरनार, (बम्बई) तथा किशनगढ़में मंदिर बनवाये और धर्मशालाएं निर्मित करवाई। पाठकोंको इन उक्त बातोंसे आपकी धर्मशीलताका पूर्ण परिचय हो जायगा। आपके बनाये हुए इन मन्दिरोंमें शत्रुंजय तलहट्टीका मंदिर विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। जैन समाजका इस मंदिरपर बहुत प्रेम भाव है तथा यह मंदिर दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। इसका चित्र ग्रन्थमें दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त आपने कई संघोंको निकाला तथा बंगालकी सभी संस्थाओंमें उदारतासे सहायता प्रदान की। गवर्नमेंटने आपको सन् १८६५ में "राय बहादुर" का खिताब प्रदान किया। आप मुर्शिदाबादमें ही नही वरन् सारे भारतवर्षकी जैन जनतामें आदरणीय तथा लोकप्रिय सज्जन थे। आप सन् १८६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके राय गनपतसिंहजी बहादुर, श्रीनरपतसिंहजी एवं श्री महाराजबहादुरसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

राय गणपतसिंहजी बहादुर :—आप तथा आपके छोटे भाई श्रीनरपतसिंहजी सन् १८८७ में अलग हो गये थे और अपने हिस्सेकी आई हुई स्टेटकी स्वतन्त्र रूपसे व्यवस्था करने लग गये थे। राय गणपतसिंहजी बहादुरका जन्म सन् १८६४ का था। आप योग्य व्यवस्थापक तथा व्यवहार कुशल सज्जन थे। आपने अपनी स्टेटकी सुचारु रूपसे व्यवस्था की। विद्या प्रचारसे आपको विशेष प्रेम था। आपने कई छात्रोंको मदद देकर उच्च शिक्षा दिलाई थी। आपको सन् १८९८ में ब्रिटिश गवर्नमेंटने "राय बहादुर" का खिताब इनायत किया। आप निसंतान सन् १९१५ में स्वर्गवासी हुए। अतः आपकी मृत्युके पश्चात् आपके छोटे भ्राता बाबू नरपतसिंहजी सारी स्टेटके उतराधिकारी हुए।

राय नरपतसिंहजी बहादुर केसरे हिन्द :—आपका जन्म संवत् १९२२ में हुआ। आप तथा आपके ज्येष्ठ भ्राता राय गणपतसिंहजी बहादुरने मिलकर अपने खानदानकी स्थायी सम्पत्तिमें वृद्धि की, जमीदारी और खरीद की तथा अपने रुतबे को बहुत बढ़ाया। आप लोगोंने भागलपुर जिलेके हरावत नामक स्थानमें अपनी जमीदारी स्थापित की और आप लोग वहांके राजाके नामसे प्रख्यात हुए। आप बड़े माननीय, प्रतिष्ठित तथा मिलनसार सज्जन हो

बीचमे स्व० राय गनपतसिहजी वहादुर दूगड, मुर्शिदावाद

(१) स्व० राय नरपतसिहजी वहादुर कैसरेहिंद, मुर्शिदावाद (२) वावू सुरपतसिहजी दूगड, मुर्शिदावाद

(३) वावू महिपतसिंजी दूगड, मुर्शिदावाद (४) वावू भूपतसिहजी दूगड, मुर्शिदावाद

गये हैं। आपकी जमीदारी ४०० वर्ग मीलमें फैली हुई है तथा इसमें कई गांव बसे हुए हैं। आपने अपनी जमीदारीमें स्कूल तथा दवाखाने खोले। अपनी प्रजाके विद्यार्थियोंकी उच्च शिक्षाका प्रबन्ध भी आप लोगोंकी ओरसे किया जाता है। आप प्रजामें लोकप्रिय तथा प्रजाप्रेमी महानुभाव थे। आपका चरित्र बहुत ही उच्च तथा आदर्श था। आप बड़े सन्तोषी थे। आपका स्वर्गवास सन् १९२७ में हो गया। आपके बाबू सुरपतसिंहजी, महीपतसिंहजी तथा भूपतसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए।

बाबू सुरपतसिंहजी :—आपका जन्म सन् १८८७ में हुआ। वर्तमानमें आपही अपने परिवारमे सबसे बड़े तथा अपनी जागीरीके प्रधान संचालक हैं। आपका विहार तथा बंगालके जागीरदारोंमें अच्छा सम्मान है। आप विहार प्रान्तकी ओरसे सन् १९२६ में कौन्सिल आफ स्टेटके मेंबर चुने गये थे। आपने कौंसिलमें जाकर सार्वजनिक कामोंमें विशेष हाथ बटाया तथा बड़े लोकप्रिय रहे। आपके नरेन्द्रपतसिंहजी एवं वीरेन्द्रपतसिंहजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

बाबू महीपतसिंहजीका जन्म सन् १८८९ में हुआ। आप भी मिलनसार व्यक्ति हैं। आप भी जमीदारीके संचालनमें अपने ज्येष्ठ भ्राताको मदद कर रहे हैं। आपके योगेन्द्रपतसिंहजी, वारिन्द्रपतसिंहजी, कनकपतसिंहजी तथा कीर्तिपतसिंहजी नामक चार पुत्र हैं।

बाबू भूपतसिंहजीका जन्म सन् १८९७ का है। आप मिलनसार तथा सार्वजनिक स्पीरीट वाले व्यक्ति हैं। आप विहार जमीदारोंकी ओरसे सन् १९३० मे लेजिस्लेटिव एसेम्बलीमें चुने गये थे, जहांपर आपने सन् १९३४ तक रहकर सार्वजनिक देशहितके कार्य्य किये। आप भी असेम्बलीमें लोक प्रिय रहे। आपके राजेन्द्रपतसिंहजी आदि दो पुत्र हैं।

बाबू नरेन्द्रपतसिंहजीका जन्म सन् १९१६ में हुआ। आप मिलनसार हैं और आय० एस० सी० में पढ़ रहे हैं।

श्रीमहाराजबहादुरसिंहजी—आपका जन्म सन् १८८० मे हुआ। आप अच्छे शिक्षित, समझदार तथा योग्य सज्जन हैं। आप अपनी जमीदारीका सञ्चालन योग्यतापूवक कर रहे हैं। अपने पूज्य पिताजी द्वारा स्थापित किये हुए मन्दिर, धर्मशाला, स्कूल आदिकी सुव्यवस्था करनेका भार आपहीके जिम्मे हैं। आप भी उक्त संस्थाओंकी व्यवस्था बड़ी तत्परतासे कर रहे हैं। अपने पूर्वजोंकी कीर्तिको अक्षुण्य बनाये रखनेका आपको बहुत खयाल है। बङ्गालके जमीदारोंके अन्तर्गत आपका बहुत सम्मान है। आप एक अनुभवी एव मिलनसार महानुभाव हैं। जैन समाजकी ओरसे श्रीसम्मैदशिखरजी तथा चम्पापुरीजीकी व्यवस्थाका भार भी आप ही के सुपुर्द है। आप श्री जै० श्वे० सोसायटीके आनरेरी जनरल मैनेजर हैं। आप मुर्शिदाबादकी जैन समाजके प्रमुख कार्य्यकर्त्ता तथा सार्वजनिक स्पीरीटवाले महानुभाव हैं। आपके कुमार ताजबहादुरसिंहजी, श्रीपालबहादुरसिंहजी, महिपालबहादुरसिहजी, भूपालबहादुरसिहजी, जगतपालबहादुरसिहजी एवं कुमारपालबहादुरसिंहजी नामक छ. पुत्र हैं।

कुमार ताजबहादुरसिंहजी शिक्षित, मिलनसार तथा योग्य युवक हैं। आप वर्तमान में अलग रहते तथा अपने हिस्सेकी जमींदारीकी योग्यतापूर्वक व्यवस्था कर रहे हैं।

कुमार श्रीपालबहादुरसिंहजीका जन्म सं० १९६२ मेंहुआ। आप मिलनसार, शिक्षित तथा उत्साही युवक हैं। आप दिनाजपुर जिलेमें आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आप वर्तमानमें जमींदारीके संचालनमे बहुत योग दे रहे हैं। कुमार महिपालबहादुरसिंहजीका जन्म सं० १९६७ में हुआ। आप शिक्षित, विनम्र, मिलनसार तथा उत्साही नवयुवक हैं और जमींदारीके सञ्चालनमे योग दे रहे हैं। कुमार भूपालबहादुरसिंहजी तथा जगतपालबहादुरसिंहजीका क्रमशः सं० १९७१ तथा ७३ में जन्म हुआ। आप दोनों बन्धु मिलनसार हैं तथा जमींदारीके सञ्चालनमे योग देते हैं। कुमारपालबहादुरसिंहजीका जन्म सं० १९८१ में हुआ।

आपलोगोंका सारा परिवार बहुत ही प्रतिष्ठित तथा सम्माननीय माना जाता है। अपने-अपने जमींदारीके गाँवोंमें भी आपलोग प्रतिष्ठित समझे जाते हैं।

सँखलेचा

श्री लक्ष्मीलालजी सखलेचाका खानदान, जावद

इस परिवारके लोगोंका मूल निवासस्थान मेड़ता (मारवाड़) है। लगभग १०० वर्ष पूर्व बाघमलजी सखलेचा व्यापारके लिये जावद (ग्वालियर) आये। आप एक प्रतिभाशाली एवं साहसी व्यक्ति थे। अतः आपने थोड़े ही दिनोंमें व्यवसायमे अच्छी उन्नति कर ली। उन दिनों अफीम मालवेसे अहमदाबाद जाया करती थी। पर रेल मार्ग न होनेसे डाकुओंका बड़ा भय रहता था। आपने अफीम के बीमेका काम आरम्भ किया और अपनी जिम्मेदारी व प्रबन्ध से जावद व आसपासके नगरोंकी अफीम अहमदाबाद पहुंचाने लगे। अपनी दूरदर्शिता और सुप्रबन्धसे आपने कभी इस व्यवसायमें धोखा न खाया। आप उदार और गुप्तदानी व्यक्ति थे।

मानमलजी सखलेचा – बाघमलजीके कोई सन्तान न होनेसे सं० १९११ में जोधपुरसे मानमलजी सखलेचा गोद आये। आपने भी अपने पिताजीके व्यवसाय ही को जारी रक्खा। साथ ही जमींदारी व लेनदेनका काम भी आरम्भ किया। अपनी व्यवहार कुशलता व सद्व्यवहारके कारण ये जावदमें सबके प्रेमभाजन बन कर रहे। इन्हीं दिनों सं० १९३४ मे आपने अपने निवासके लिये एक सुन्दर हवेली बनवाई। मानमलजीके सन्तान जीवित न रहने-के कारण हमीरमलजीको गोद रक्खा। आपके पुत्र केसरीमलजी आजकल जावद में ही प्रमुख कपडेके व्यवसायी हैं। आप मिलनसार और सज्जन व्यक्ति हैं।

लक्ष्मीमलजी सखलेचा - हमीरमलजी को गोद लानेके बाद मानमलजीके सं० १९४५ में लक्ष्मीलालजी नामक एक पुत्र हुए। आप मिलनसार तथा सरल स्वभाववाले सज्जन हैं।
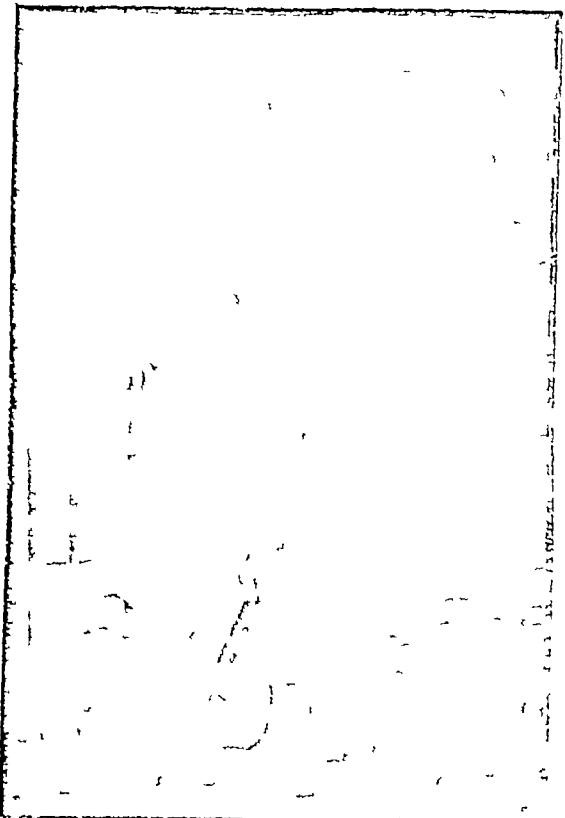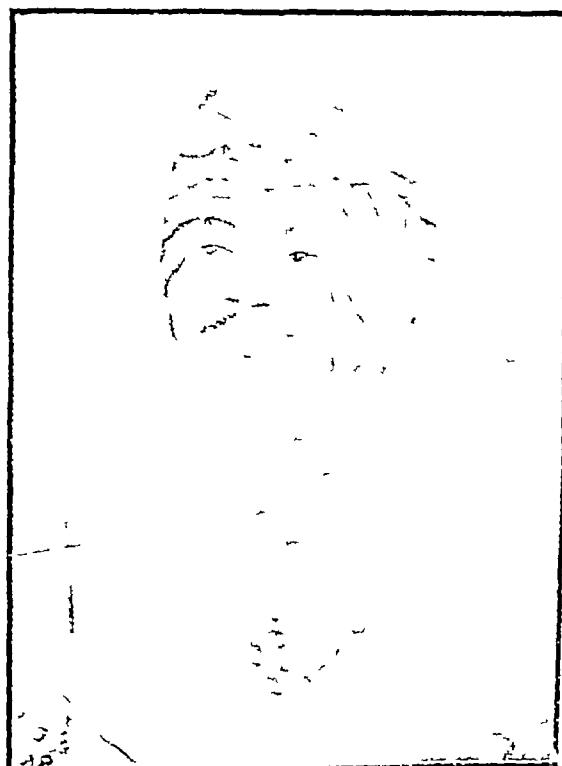
श्री बाबू महाराजबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद

कुमार श्रीपालबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद

कुमार महिपालबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद

कुमार भूपालबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद

बाबू कन्हैयालालजी बढेर, कलकत्ता

कुमार जगनपालबहादुरसिंहजी दूगड़, मुर्शिदाब

कुमारपालबहादुरसिंहजी दूगड, मुर्शिदाबाद
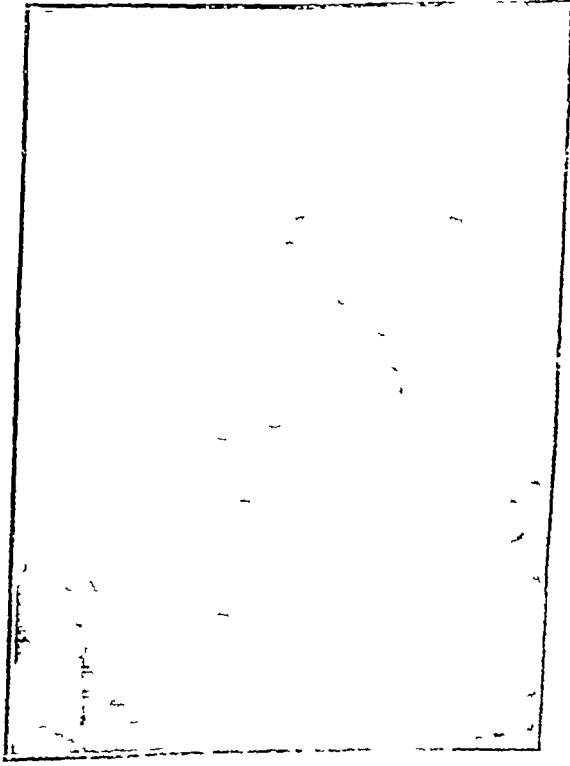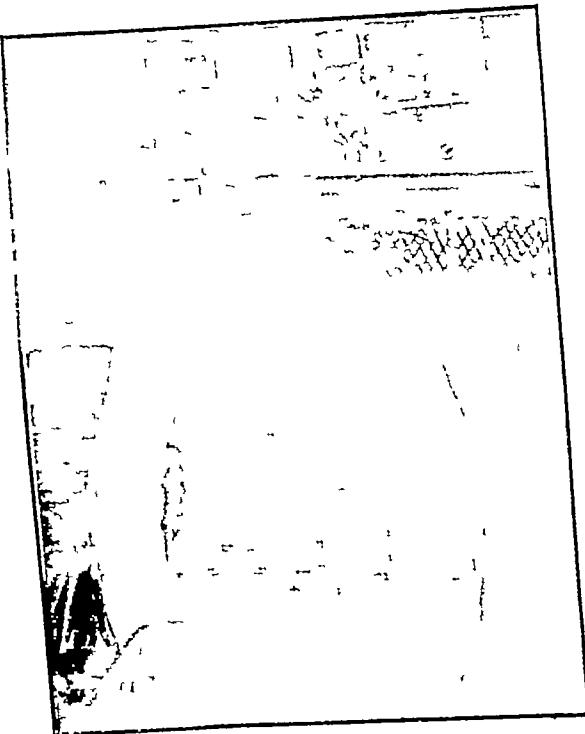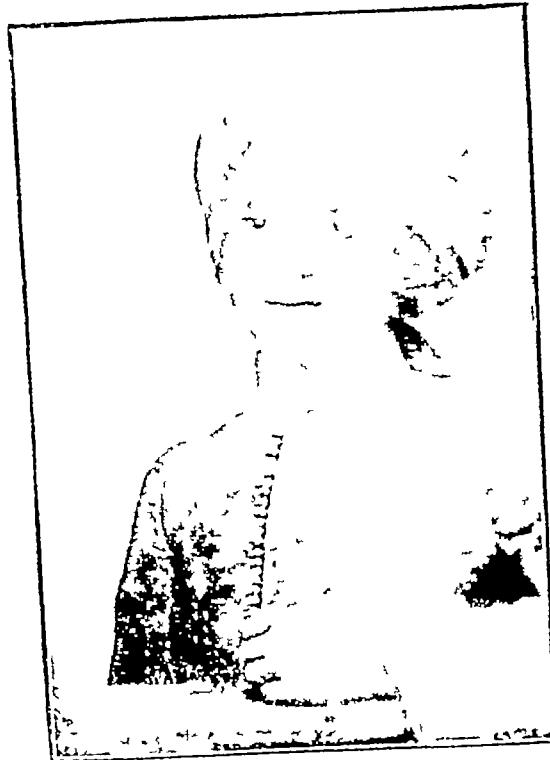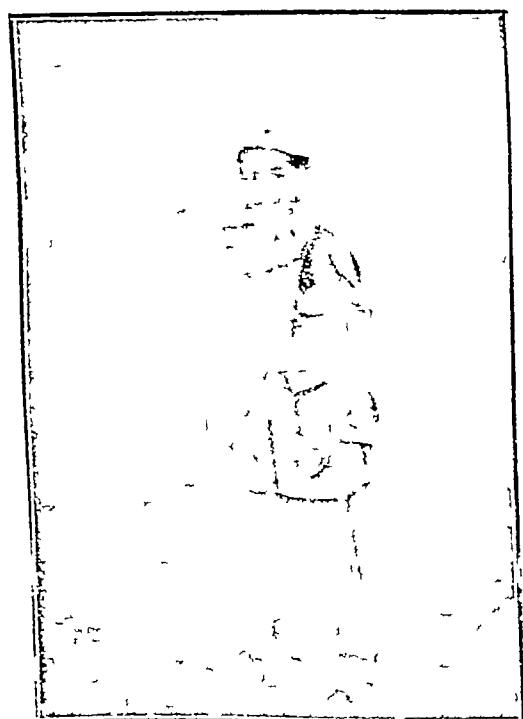
रूईके व्यापारमें आपको प्रारम्भ हीसे बड़ी दिलचस्पी है। आप ज्योतिष शास्त्र एवं बाजारके अन्य व्यवसायोंपर रूईकी भविष्यकी तेजी मन्दीके सम्बन्धमें अक्सर अखबारोंमें पहिले लेख लिखकर व्यापारियोंको सावधान कर दिया करते थे। अतः आप जावदसे रूईके प्रमुख केन्द्र स्थान बम्बईमें सं० १९८८ मे आये और "भविष्य-प्रकाश" नामसे रूईकी भविष्य-की तेजी मन्दी बतानेवाली पुस्तक प्रतिवर्ष प्रकाशित करने लगे। साथ ही आपने रूई, सोने चांदी आदिकी आढ़तका कार्य भी प्रारम्भ किया। इन ५-६ वर्षोंमें आपने परिश्रम तथा व्यवहार कुशलता के कारण व्यापारमें खूब प्रगति की है। साथ ही 'भविष्य-प्रकाश' का आदर भी व्यापारिक समाजमें खूब हुआ है।

इधर कुछ दिनोंसे आप ज्योतिष और गणित सम्बंधी विश्लेषणोंके आधारपर रूई आदि व्यापारिक वस्तुओंकी भविष्यकी तेजी मन्दी जाननेके लिये एक बड़े ग्रन्थ की तैयारी कर रहे हैं। यह ग्रन्थ लगभग २००० पृष्ठोंमें सम्पूर्ण होगा एवं व्यापार सम्बन्धी ज्योतिष साहित्यका अपने ढङ्गका पहला ही होगा।

आपके दो पुत्र चांदमलजी और सौभाग्यमलजी हैं। चांदमलजी जावदहीमें अपनी घरू जमींदारीकी देखरेख करते हैं तथा सौभाग्यमलजी बम्बईके सिडनहम कालेजमें B.Com में पढ़ रहे हैं। ये एक मेधावी युवक हैं। आरम्भ हीसे हमेशा अपनी कक्षामें प्रथम आते रहे हैं।

सिंघी

बाबू भँवरमलजी सिंघी, जयपुर

बाबू भँवरमलजी सिंघी मालीरामजीके पौत्र एवं इन्द्रचन्द्रजीके पुत्र हैं। आप बड़े योग्य प्रतिभाशाली लेखक तथा उत्साही युवक हैं। आप शिक्षित तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले व्यक्ति हैं। आपके विचार सुधरे हुए तथा नवीन ढङ्गके मँजे हुए हैं। आप बी० ए० पास तथा हिन्दीके रत्न हैं। बी० ए० आपने द्वितीय दर्जेमें १० वें नम्बर से तथा उत्तमाकी परीक्षा भी दूसरे दर्जेमें पास की। आपकी लेखन शैली नवीन ढङ्गकी और रोचक है। आपके भाव बड़े गम्भीर व सारगर्भित रहते हैं।

सार्वजनिक कामोंमें भी आप दिलचस्पीसे भाग लेते हैं। आप अखिल भारतवर्षीय युवक परिषदके ज्वाइण्ट सेक्रेटरी हैं। आप मध्यमा परीक्षाके परीक्षक भी हैं।

वेद

सेठ जगरूपजी अमीचन्दजी वेद मेहता का खानदान, जावरा

इस परिवारवाले मन निरार्णा राम (बीकानेर स्टेट) के [illegible]

स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। रासससे करीब १५० वर्षों पूर्व इस खानदानके लालमाजी जावरा आये तथा वहांपर गाँव इजारेका कार्य किया। इसमें आपको बहुत सफलता मिली। आपके कम्माजी तथा कम्माजीके जगरूपजी, अमीचन्दजी तथा जवरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ जगरूपजी तथा अमीचन्दजी दोनों भाई इस खानदानमें बड़े प्रतिभाशाली तथा प्रभावशाली सज्जन हो गये हैं। आप लोगोंने अपनी व्यापार चातुरीसे गांव इजारेके काममें तथा अफीमके व्यापारमें बहुत सी सम्पत्ति कमाई। आप उदार, मिलनसार तथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। जावरा स्टेटने आप दोनोंका स्टेटको आर्थिक सहायता पहुचानेके उपलक्ष्यमें काफी सम्मान किया था। आपके यहांपर विवाहके समय नवाब साहब स्वयं पधारते तथा पोशाकें इनायत किया करते थे। आप यहांके प्रतिष्ठित तथा वजनदार सज्जन थे। आपको जावरा स्टेटने कई बातोंकी माफी बक्षी थी। आपने जावरामें दुकानें, मकान, बगीचे वगैरह बनाकर अपना पूर्ण वैभव जमा लिया था। आपके इन कार्य्योंसे प्रसन्न होकर जावरा-स्टेटने आपको "नगर सेठ" का खिताब दिया तथा १५) सालाना होलीपर बक्षा जानेका हुक्म हुआ था जो आजतक बक्षा जाता है। आप लोगोंके नामसे आपका खानदान आज भी मशहूर है। आपने सरकारी कस्टमको ३ सालके लिये ठेकेसे भी लिया था। आपको जागीरी भी प्राप्त हुई थी। सेठ अमीचन्दने प्रतापगढ़, पीपलोदा आदि स्थानोंका पोद्दारा भी किया था। आपका स्वर्गवास सं० १९३९ में तथा जगरूपजीका सं० १९५० में हुआ। सेठ जगरुपजीके भगनीरामजी, गम्भीरचन्दजी एवं टेकचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगोंको ५००) सालाना जावरास्टेटसे आपके दिये गये लोनके तमस्सुकके मिलते रहे। सेठ गम्भीरमलजीके तखतमलजी नामक पुत्र हुए। सेठ तखतमलजीका जन्म सं० १९२० में हुआ। आप सेठोंके साथ व्यापारमें योग देते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९६० में हुआ। आपके हस्तीमलजी तथा सौभागमलजी नामक दो पुत्र हुए। सं० १९६८ में आप दोनों अलग २ होकर अपना २ व्यापार करने लगे।

सेठ हस्तीमलजीका जन्म सं० १९३५ में हुआ। आपके उमरावसिंहजी, रतनलालजी तथा शांतिलालजी नामक तीन पुत्र हैं। सेठ सौभागमलजीका जन्म स० १९४६ में हुआ। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने अपने हाथोंसे पुनः अपनी सारी स्थिति सम्हाली तथा परिवारके रुतबेको बनाये रक्खा। आप वर्तमानमें कपड़ेका व्यापार करते हैं। आपके सुजानलजी तथा सरदारमलजी नामक दो पुत्र हैं।

इस खानदान वालोंको "नगर सेठ" की पदवी आज भी चली आ रही है। आप ोगोंके यहां शादी व गमीके समय सरकार की ओरसे लवाजमा इनायत किया जाता है। ाह खानदान यहांपर प्रतिष्ठित माना जाता है।

———

भण्डारी

सेठ चुन्नीलालजी चौथमलजी भण्डारी, जामनवाले, भोपाल

यह परिवार मूल निवासी नागौर (मारवाड़) का है। वहांसे इस परिवारके पूर्वज सेठ शोभारामजी भण्डारीके पिता लगभग सवा सौ वर्ष पहले व्यापारके लिये आस्टा (भोपाल-स्टेट) में आये। वहांसे सीहोर गये तथा सीहोर से लगभग १०० साल पहिले आप भोपाल आये तथा वहां आपने अपना व्यापार जमाया। सेठ शोभारामजीके फौजमलजी, चुन्नीलालजी, चौथमलजी तथा परतापमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयोंमे सेठ फौजमल जी तथा चुन्नीलालजीने इस परिवारके व्यापार तथा इज्जतको विशेष बढ़ाया। आप लोगों-ने चैनपुरामें जो अब सुलतानपुराके नामसे मशहूर है, दुकान खोली। आपके जिम्मे सरकारी कोठेके व्यापारका काम होता था। भोपाल स्टेटकी ओरसे आप चैनपुराके खजांची मुकर्रर किये गये थे। भोपाल-रियासतमें आप प्रतिष्ठित पुरुष थे। सेठ फौजमलजीका संवत् १९४८ में, सेठ चुन्नीलालजीका १९५७ में, सेठ चौथमलजीका १९७१ में तथा सेठ परतापमल-जीका १९७८ में स्वर्गवास हुआ। इस समय सेठ फौजमलजीके पुत्र लाभचन्दजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं।

सेठ चुन्नीलालजीके फूलचन्दजी, गोड़ीदासजी, कल्यानमलजी तथा नथमलजी नामक ४ पुत्र हुए। इन भाइयोंमें सेठ गोड़ीदासजी भण्डारी इस समय विद्यमान हैं। आप चारों भाइयोंका व्यापार संवत् १९८६ में अलग २ हुआ है। सेठ गोड़ीदासजीका जन्म संवत् १९२३ को भादवाबदी १२ को हुआ। संवत् १९६७ तक आपके पास चैनपुराके खजानेका काम रहा। आप सयाने तथा समझदार पुरुष हैं। भोपालमें आपका खानदान नामी माना जाता है। आप के पुत्र श्री सरदारमलजीका जन्म संवत् १९५२ में तथा सिरेमलजीका जन्म संवत् १९५५ में हुआ है। आप दोनों भाई अपने व्यापार संचालनमें भाग लेते हैं। इस समय आपके यहां चुन्नीलाल चौथमलके नामसे साहुकारी हुडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

सेठ कल्याणमलजीके पुत्र छगनमलजी तथा मिश्रीलालजी विद्यमान हैं। इनमें मिश्री लालजी सेठ नथमलजीके नामपर दत्तक गये हैं। आपलोग भोपालमें व्यापार करते हैं।

श्रीमाल जातिका इतिहास

History of Shrimals.

इस विशाल देशके इतिहास को देखनेसे पाठकोंको मालूम होगा कि इसके अन्तर्गत अनेक राजवंशोंके उत्थान और पतन, आपसकी छोटी-छोटी बातोंमें घमासान युद्धों का प्रारंभ और समाप्ति तथा भयंकर घृणित फूटके परिणाम स्वरूप विनाशका चक्र चिर-कालसे चला आ रहा है। इस देशकी रमणीयता तथा धन धान्य परिपूर्णतासे आकर्षित होकर खैबर, खुर्रम आदि घाटियोंसे हजारों काबुल, कन्दहार, टर्की, फारस आदि देशोंके मुसलमान आक्रमणकारी सातवीं शताब्दीके बादसे यहां आने लगे और भारतीय वीरोंके पारस्परिक वैमनस्यसे लाभ उठाकर अपने पैरोंको यहांपर मजबूत जमाने लगे। इतिहास यह स्पष्ट तरहसे बतलाता है कि सातवीं शताब्दीके बादसे यहांपर आक्रमणकारियोंका तांतासा बन्ध गया और सर्वत्र जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ होने लगी। कई आक्रमणकारी तो विध्वंस करने ही आये थे। भारतीय वीरोंने भी इस विध्वंस मे योग दिया तथा मार काट, लूट खसोट, आग लगाना आदिका बाजार बहुत गरम रहा। कहने का तात्पर्य्य यह है कि इस विध्वंस मनोवृत्तिकेकारण भारतीय इतिहास और संस्कृति-को अकथनीय धक्का पहुंचा है। कई स्थानोंपर हम हमारी ऐतिहासिक सामग्रीके भण्डारोंको जलाने, प्राचीन कला व संस्कृतिके सुन्दर नमूनोंको नष्ट करने आदिका उल्लेख पाते हैं।

भारतका इतिहास आज भी अन्धकार में है। हमारे बहुतसे इतिहासकारोंने, कवियोंने तथा लेखकोंने जो थोड़ा बहुत परिश्रम किया भी तो उसे समयके कुचक्र और राज्यक्रांतियोंने जहांका तहां ही रख दिया। अब अर्वाचिन कालसे हमारे इतिहासकारों तथा पुरातत्ववेत्ताओं-का ध्यान इस ओर गया है। अब संतोपजनक गतिसे हमारे प्राचीन इतिहासकी खोज हो रही है।

जातीय इतिहास तो बहुत ही अन्धकारमे प्रतीत होते हैं। अभी तककी उपलब्ध प्रायः सभी सामग्रियोंको देखकर इतिहासका विद्यार्थी कभी सन्तुष्ट नही हो सकता। जाति विषयक सामग्री में से अधिकांश सामग्री तो ऐसी है जो अप्रामाणिक तथा जातिके प्रशंसक भाटों, भोजकों आदि द्वारा लिखी हुई है। शेष सामग्रीमे आपसमें बहुत ही गहरा मतभेद पाया जाता है।

श्रीमाल जातिके इतिहासमे भी यही बात है। इस जाति का न तो कोई प्रामाणिक इतिहास ही निकला है और न इस विषयमें खोज ही की गई है। इस जातिकी स्थापनाके विषयमें अभीतक जिन-जिन महानुभावोंने अपने मत प्रगट किये हैं उनमेंसे तीन मत प्रधान हैं जिनका उल्लेख हम नीचे करते हैं।

(१) पहला मत जैनाचार्य्यों एवं जैन ग्रन्थोंका है। जैनाचार्य्योंने अपने द्वारा लिखी गई पुस्तकोंमें श्रीमाल जाति की उत्पत्तिका भी स्थान स्थान पर उल्लेख किया है। इसी प्रकार जैन ग्रन्थोंमे भी बहुतसे स्थानोंपर इस तरह का वर्णन आया है। जैनाचार्य्यों एवं जैन ग्रन्थोंके रचयिताओं की सम्मतिसे श्रीमाल जाति की उत्पत्ति श्रीभगवान महावीरके निर्वाण पद प्राप्त

कर लेनेके ३० वर्ष पश्चात् अर्थात् विक्रम शताब्दीसे पांच शताब्दियो पूर्व हुई है। कई स्थानों पर इस बातका भी उल्लेख मिलता है कि श्री पार्श्वनाथ प्रभुके पाचवे पाट धर श्री स्वयं प्रभुसूरिजीने श्रीमालनगरमें सर्व प्रथम श्रीमाल बनाये। यह घटना भगवान महावीर स्वामीके निर्वाण पद प्राप्तिके ३० वर्ष पश्चात् घटित हुई है।

(२) दूसरा मत प्रशंसकों, भाटों एवं भोजकोंका पाया जाता है। इन लोगोका कथन है कि सं० १८२ में श्रीमालनगरमें श्रीमाल जातिकी स्थापना हुई।

(३) तीसरा मत इतिहासकारो का है जो सचाईकी कसौटीपर कस जानेके पश्चात् बनता है। इतिहासकार अभी अपने एक किसी निश्चित, प्रामाणिक निर्णयपर तो नहीं पहुंच सके हैं मगर बहुत खोज, परिश्रम तथा सारी परिस्थितियोंकी तुलना करनेके पश्चात श्रीमाल जातिकी उत्पत्ति विक्रमी सं० ८०० एव ९०० के बीचमें बतलाते हैं। उनका कहना है कि उक्त शताब्दीके पहले श्रीमालनगर में भीमसेन तथा उनके पुत्र उपलदेव, आसपाल और आसल नामके कोई राजा न हुए। स० ९०० के पश्चात एक जगह ऐसा मालूम होता हैं कि भीनमालके राजपुत्र उपलदेवने मडोरके पड़िहार राजाके पास जाकर आश्रय ग्रहण किया था। उसी राजाकी सहायतासे कुमार उपलदेवने ओशियां नगरीको बसाया जहांसे ओसवाल जातिकी उत्पत्ति हुई। इन्हीं उपलदेवके पिता भीमसेन श्रीमालनगर के राजा थे। उसी समय श्रीमाल जातिकी स्थापना हुई होगी।

नीचे हम उक्त तीनों मतोंका विस्तार पूर्वक विवेचन करते हैं।

जैनाचार्य्यों की सम्मतिसे श्रीमालजाति की स्थापना—

श्रीमाल जातिके विषयमें यह बात जो निर्विवाद सत्य है कि श्रीमालनगर से ही यह जाति निकली है। अतः हम सर्व प्रथम श्रीमालनगरका कुछ वर्णन देकर श्रीमाल जातिकी उत्पत्तिके विषयमें जैनाचार्य्यों के मतोंको संग्रहीत करेंगे।

श्रीमालनगर—

यह नगर अजमेरसे पालनपुर जानेवाली रेलवे लाइनके आबू रोड स्टेशनसे पश्चिमकी ओर ४० मीलकी दूरीपर बसा हुआ था। आज भी इस नगरके खण्डहर इसकी प्राचीनताके द्योतक हैं। यह एक ऐतिहासिक स्थान रहा है। इस स्थानके पास बहुत सा लड़ाइयां वगैरह भी हुई है।

श्रीमालनगरकी प्राचीनता—

यह नगर बहुत ही प्राचीन है। इस नगरके खण्डहर के पास बसे हुए भिन्नमाल (भीनमाल) के तालाब पर एक जैन मंदिर बना हुआ था। अब इस मंदिरके खण्डहर मात्र रह गये हैं। इन खण्डहरमें एक प्राचीन शिलालेख भी मिला है जो निम्न प्रकार है।

* यः पुरात्र महास्थाने श्रीमाले स्वयमागतः सदेषः श्रीमहावीरो देवा (द्रः) सुख सम्पदं ॥ १ ॥

यं शरणं गतः

तस्य वीर जिनेन्द्र (स्य) पूजार्थ शासनं नवं ॥ २ ॥

धारा पद्र महागच्छे पुण्ये पुण्ये कशालितां

श्री पूर्णचन्द्रसू (री) स्वस्ति स० १३१३ वर्ष ॥ आश्विन

पाठकोंको इस लेखसे मालूम होगा कि यह लेख सम्वत् १३१३ का खुदा हुआ है और इसके पहले तक हमारे आचार्य्योंकी यह धारणा थी कि भगवान महावीर स्वयं श्रीमालनगरमें पधारे थे। कई पुस्तकोंके अतर्गत ओशियां बसनेका कारण बतलाते हुए श्रीमालनगरका भी जिक्र किया गया है। श्रीमालनगर, जो अब भिन्नमालके नामसे मशहूर है, के राजा भीमसेन हुए। इनके पुत्र पंवारवंशीय उपलदेव † कारणवश अपने साथियोंको लेकर बाहर निकल गये और जोधपुरके पास ओशियां नामक नगर बसाया। इसी तरह श्रीमालनगरके विषयमें जैन जाति निर्णय, जैन जाति महोदय, श्रीमाल पुराण, स्कन्ध पुराण आदि कई ग्रन्थोंके अन्तर्गत वर्णन आया है। वैसे तो बहुतसे ग्रन्थोंमें बहुतसी इस तरहकी बातें भी लिखी हुई पाई जाती हैं कि श्रीमालनगरके चारों युगोंके नाम अलग अलग हैं और इसका एक दोहा भी बना हुआ है। हम उसे नीचे देते हैं।

‡ श्रीमाल मिती यन्नाम रत्नमाल मिति स्फुटं ॥

पुष्पमालं पुनर्भिन्नमालं चतुष्टये ॥ १ ॥

चत्वारि यस्य नामानि वितन्वंति प्रतिष्ठितं।

अहो नगर सौन्दर्यं महार्यं भिजगत्यपि ॥ २ ॥

इसी तरह इस नगरके विषयमें श्रीमालपुराणके ६ वें अध्यायके ३६-३७ श्लोकोंमें ऐसा कहा गया है।

श्रिय सुदिश्य मालाभिरावृता भूरि यं सुरैः

ततः श्रीमाल नास्यास्तु लोके ख्याति मिदपुरं ॥

---

* प्राचीन जैन लेख संग्रह दूसरा भाग लेखांक ४०२

† जैसा कि इस ग्रन्थके प्रथम भागमें लिखा हुआ है कि इस सम्बन्धमे दो और मत प्रचलित हैं। पहला यह है कि पट्टावली नं० ३ में भीमसेनके एक पुत्र श्रीपुंज था जिसके सुर सुन्दर और उपलदेव नामक दो पुत्र हुए। इसी प्रकारका उल्लेख श्रीआत्मानन्द जैन ट्रेक्ट सोसाइटीने अपने ट्रेक्ट नं० १० के ११ वे पृष्ठपर किया है। दूसरा मत यह है कि राजा भीमसेन के तीन पुत्र थे जिनके नाम क्रमशः उपलदेव, आसपाल एवं आसल थे।

‡ इन्द्रहंसगणी लिखित जैन गौत्र संग्रह पृष्ठ नं ६ पर देखिये।

मगर ऐतिहासिक दृष्टिसे इस तरहकी वातें विलकुल थोथी और अप्रामाणिक मालूम होती हैं। किन्तु इतनी सब वातोंके होते हुए इस नगरकी प्राचीनताके विषयमें किसीको भी सन्देह नहीं हो सकता। प्राचीन कालमें यह नगर बहुत ही समृद्धिशाली तथा उन्नतिशील था। कई पुस्तकोंमें इसका भी उल्लेख पाया जाता है। विमल चरित्र को भी पढ़नेसे पाठकोंको श्री मालनगर की प्राचीनताका ज्ञान हो जायगा।

भिन्नमाल नामकरण :—

हम लोग ऊपर लिख आये हैं कि राजा भीमसेनके उपलदेव, आसपाल और आसल नामक तीन पुत्र हुए। भीमसेन वाममार्गीय थे। इनके प्रथम दो पुत्र उपलदेव और आसपाल भी वाममार्गीय रहे। तीसरे पुत्र आसल जो श्रीमालनगरके राजा हुए जैन हो गये थे। राजा भीमसेन ने श्रीमालनगरका उत्तराधिकारी आसलको बनाया था। भीमसेन जबतक जीवित रहे श्रीमालनगरका राज्य करते रहे। इनके शासनकालमें जैन जनता गोड़वाड़, गुजरात आदि प्रान्तोंमें चली गई। इधर आसल और इसके जेष्ठ भ्रातामें किसी कारणवश साधारण बातोंमें कुछ मनमुटाव हो गया। अतः उपलदेव अपने छोटे बन्धु आसपाल तथा अपने मंत्रियों एवं सामंतोको लेकर किसी नये शहर बसानेकी खोजमें बाहर निकल गये। इन लोगोंने जाकर ओशियां नामक नगर बसाया। इस ओशियाँ पट्टणमें फिर श्रीमालनगरके * बहुतसे धनिक तथा व्यापारी जाकर बस गये।

इस तरह श्रीमालनगर एक दम सूना सा हो गया। एक स्थानपर एक ऐसा भी जिक्र है कि भीमसेनके एक भाई और थे जिनका नाम चन्द्रसेन था। इन चन्द्रसेन † ने अपने नामसे चन्द्रपुर बसाया। श्रीमालनगरके खाली हो जानेके कारण राजा भीमसेनने इस नगरको पुनः बसाया। राजा भीमसेनके बसानेके कारण इसका नाम श्रीमालनगरसे बदलकर भिन्नमाल (भीनमाल) रख दिया गया। तभीसे आजतक यही नाम चला आ रहा हैं। यह भीनमाल, श्रीमालनगरके बहुत ही पास बसा हुआ है।

श्रीमाल जातिकी उत्पत्ति :—

श्री पार्श्वनाथ भगवान तेईसवें तीर्थंकर थे। आपके चार पाट तक तो निग्रन्थ गच्छ-वाले पाटधर हुए। इसके पश्चात् पांचवें पाटधर श्री स्वयंप्रभुसूरिजी हुए। आप बड़े विद्वान, जैन सिद्धान्तोंके प्रकाण्ड पण्डित एवं प्रभावशाली आचार्य्य थे। अतएव निग्रन्थ गच्छका नाम विद्याधर गच्छ हुआ। आप विहार करते हुए श्रीमालनगर आये और वहांपर ९०००० नव्वे हजार घरोंको जैन धर्ममें दीक्षित किया। बादमें आंचल गच्छवालोंने श्रीमाल जैन बनाये ‡ जैन

---

* विमल चरित्रमें देखिये।

† देखिये जैन जाति महोदय तीसरा प्रकरण :—

‡ जैन जाति निर्णय पृष्ठ ६६ तथा ६९ पर देखिये।

जाति महोदयमें पृस्ठ ३० पर ऐसा लिखा हुआ है कि श्रीमालनगरके राजा जयसेन थे। इनको आचार्य्य श्री स्वयंप्रभुसूरिजी ने जैन बनाया था। इसी ग्रन्थके ७० पृष्ठपर यह पाया जाता है कि राजा जयसेन भगवान महावीरके उपासक थे। आगे जाकर इसी ग्रन्थके तृतीय प्रकरणमें १६ पृष्ठपर श्रीमालनगरका वर्णन दिया हुआ है। श्रीमालनगरमें बहुत धनीमानी सेठ निवास करते थे। इन सेठोंने एक समय आचार्य्य स्वयंप्रभुसूरिजीको आमन्त्रित किया। उस समय राजा जयसेन एक बहुत बड़े यज्ञ करनेकी तयारीमें था। उस जमानेमें यज्ञके समय सैकड़ों पशु बलि कर दिये जाते थे। जिस समय आचार्य्य देव श्रीमालनगर गये तो उन्हें मालूम हुआ कि निकट भविष्यमें यहांपर एक बहुत बड़ा यज्ञ किया जा रहा है जिसमें सैकडों अमूक तथा निरपराध पशु होम दिये जावेंगे। राजा जयसेन उस समय शैवोपासक था। आचार्य्य देवने राजाको इन पशुओंकी अकारण हत्या करनेके लिये फटकारा तथा अपने तप तेजसे राजा पर पूर्ण प्रभाव स्थापित कर दिया। इसके पश्चात् धीरे-धीरे आपने उसको बहुत ही सुन्दर ढंगसे जैन सिद्धान्त बतलाये और जन धर्ममें दीक्षित होकर प्राणि मात्र पर दया करनेकी शिक्षा दी। राजा जयसेन ने सामन्तों सहित जैन धर्म अंगीकार कर लिया और यज्ञके लिये इकट्ठे किये गये तमाम पशुओंको मुक्त कर दिया। तब आचार्य्यदेवने तमाम ब्राह्मणोंको एकत्रित कर प्रतिबोधा और उनके इस हिंसा कार्य्यको घोर निन्दा की। आपने जैन सिद्धान्तोंको इतनी सरलता एवं व्यवस्थित रूपसे समझाया कि जिसे सुनकर अनेकों ब्राह्मण जैन हो गये। जब राजा जयसेनके पुत्र भीमसेनके राज्यकालमें जैन लोग बाहर चले गये उस समय जो जैन ब्राह्मण बाहर गये थे वे श्रीमाली ब्राह्मण तथा जो राजपूत जैन बाहर चले गये थे वे श्रीमाल कहलाये। राजा जयसेनके चन्द्रसेन नामक एक और पुत्र थे। विमलप्रबन्ध एवं विमलचरित्रके अन्तर्गत श्रीमालनगर और श्रीमाल जातिके विषयमें ऐसा लिखा है।

श्रीकार स्थापना पूर्वं श्रीमाल द्वापरान्तरैः।
श्रीश्रीमाल इति ज्ञाति, स्थापना विहिताश्रियाः॥

इन पुस्तकोंमें इस लेखके अतिरिक्त और भी बहुतसे लेख हैं जिनमेंसे बहुतसे लेखोंमें "श्रीमालनगरसे निकलनेके कारण ही श्रीमाल नाम पड़ा" ऐसा उल्लेख है। श्रीमाल जातिकी गौत्रज लक्ष्मीदेवी है।

इन ऊपरके अवतरणोंको पढ़नेसे पाठकोंको भलीभांति मालूम हो जायगा कि आचार्य्यों एवं जैन ग्रन्थोंके रचयिताओंने निम्नलिखित तत्वोंपर विशेष जोर दिया है।

(१) श्रीमाल नगरमें स्वयंप्रभुसूरि का पदार्पण और जयसेनको साँमतोंसहित जैन प्रतिबोध।

(२) घटनाका विक्रमी सं० ४६७ तथा इसवी सन् ५२६ वर्ष पूर्व घटित होना।

(३) राजा भीमसेनके राज्यकालमें जैनोंका बाहर चला जाना और श्रीमाल नामसे संबोधित किया जाना।

बहुतसे लोगोंका एक और मत प्रचलित है। उनका कहना है कि श्रीमालनगरमें श्रीमल्ल नामका राजा राज्य करता था। यह राजा भी वैष्णव धर्मको पालनेवाला था। एक समयकी बात है कि राजाने एक यज्ञ करनेका निश्चय किया। इसमें सैकड़ों पशु बलि किये जानेके लिये इकट्ठे किये गये। उन्ही दिनों गौतम नामके एक तपस्वी जैनसाधु अपने साथ पांच सौ साधुओंको लेकर विहार करते हुए श्रीमालनगरकी तरफ निकल गये। वहांपर उनको यज्ञकी सारी बातें मालूम हुईं और उन्होंने राजा तथा प्रजाको निरपराध पशुओंपर क्रूर दृष्टि न डालनेकी सलाह दी। धीरे-धीरे गौतमका श्रीमालनगरमें प्रभाव पड़ता गया और उन्होंने भी इस हिंसा कार्य्यको एकदम मिटाकर सर्वत्र 'अहिंसा परमो धर्मः' की दुहाई फेरनेका निश्चय किया। कहा जाता है कि श्रीगौतम के अत्यन्त ही सुन्दर अहिंसाके भाषणोंको सुनकर राजा तथा राजाके सरदार बहुत प्रभावित हुए और हजारों व्यक्तियोंने उनसे जैनधर्मकी दीक्षा ली। उसी समय श्रीगौतमने हजारों ब्राह्मणोंको भी प्रतिबोध कर जैन बनाया था। वे ही ब्राह्मण लोग आगे जाकर श्रीमाली ब्राह्मण कहलाये। इस तरह श्रीमालनगरमें जैनधर्मका बड़ा भारी जत्था जम गया तथा जैनधर्म बड़ी तीव्रगतिसे फैलने लगा।

राजा श्रीमल्ल जैन सिद्धान्तोंके अनुसार प्राणि मात्रपर दया करता हुआ राज्य करने लगा। इनके लक्ष्मी नामक एक सुरूपा और सुलक्षणा पुत्री थी। एक समय सिरोहीके पंवार राजा भीमसेन ने श्रीमालनगर को घेर लिया। श्रीमल्ल राजाके पास युद्धकी पूर्ण तयारी थी। मगर वह व्यर्थमें हिंसा नहीं करना चाहता था। उसने इस पेचीदे मामलेको दूसरी तरहसे सुलझाया। वैसे वह अपनी सुरूपा पुत्रीके लिये योग्य पतिकी तलाशमें था ही। उसने इस स्वर्ण अवसरको न खोकर अपनी पुत्री लक्ष्मीका विवाह राजा भीमसेनके साथ कर दिया और श्रीमालनगर का राज्य दहेजमें दिया। यह वही भीमसेन राजा है। कालान्तरमें जब भीमसेनके तीन पुत्र हुए तब भीमसेनने अपने तृतीय पुत्र आसलको उसके नानाके राज्यका उत्तराधिकारी बनाया। इसके पश्चात् सारी घटना उसी प्रकार वर्णित की गई है जिस प्रकार हम पीछे लिख आये हैं। कई लोग यह भी कहते हैं कि श्रीमल्ल राजाने सबसे पहले जैन धर्म अंगीकार किया। इससे सब राजपूत लोग जिन्होंने श्रीमल्लके साथ जैन धर्म अंगीकार किया श्रीमल्लके नामके पीछे श्रीमाल कहलाये। मगर यह बात निराधार मालूम होती है। श्रीमाल जाति के नामकरण के विषयमें तो प्रथम कही हुई बात ही सच प्रतीत होती हैं कि जो राजपूत जैन श्रीमालनगरसे बाहर चले गये थे वे श्रीमाल कहलाये।

भाटों तथा भोजकों की सम्मति :—

दूसरा मत भाटों एवं भोजकों का है। इन लोगोंके अनुमानसे संवत् १८२ में श्रीमाल जातिकी स्थापना हुई है। इस विषयमें बहुतसे लोगोंकी यह धारणा है कि भाटों और भोजकोंकी सम्मति भी ठीक है। मात्र सम्वत्के लिखनेमे उन्होंने भूल की है। यह सम्वत् विक्रमी नहीं होते हुए नन्दीवर्द्धन का संवत् गिना जाय तो उनका समय ठीक उतरेगा।

सम्भव है उन्होंने नंदीवर्द्धन का संवत् लिखा हो और इन लोगोंमे अशिक्षा का दौर दौरा तो रहता ही है आगे जाकर कही नन्दीवर्द्धन तो भूल गये और विक्रमी संवत् की गणना करने लग गये। क्योकि धीरे धीरे नन्दीवर्द्धनका सम्वत् अप्रचलित सा होने लग गया था और विक्रमी सर्वसाधारणके उपयोगमे आने लग गया था। आज तो नन्दीवर्द्धन का संवत् एकदम लुप्त सा हो गया है।

शेष सब बातें करीब करीब वही मिलती हैं जो आचार्य्योंने अपने ग्रन्थोंमें लिखी हैं। ये लोग भी उन्ही भीमसेनके पश्चात्से श्रीमाल जातिके नामकरणका उल्लेख करते हैं।

इतिहासकारों का मत :—

ऊपर हम आचार्य्यों, जैन ग्रन्थो एवं भाटों, भोजकोके मतोंको दे चुके हैं। अब यह देखना है कि प्रामाणिक तौरसे श्रीमाल जातिकी स्थापना कबसे हुई है। उक्त दोनों मतोंमें हालां कि अपने-अपने समयका दोनों पक्षोकी ओरसे अनेक स्थानोंपर लिखा हुआ मिलता है मगर ऐतिहासिक प्रमाण एवं दलीलोंके सामने एक भी कथन मजबूती से नहीं टिकता। इस विषयमें ओसवाल जातिके प्रथम भागमे हम लोगोंने काफी प्रकाश डाला है। कारण कि ओसवाल एवं श्रीमाल जातिमें आपसमें बहुत घनिष्ट सम्बन्ध प्रारम्भसे ही रहा है। वैसे तो ओसवाल एवं श्रीमाल जाति एक ही पिताके पुत्रों से उत्पन्न हुई है। श्रीमाल जाति ओसवाल जातिसे कुछ पुरानी है। मगर जो ऐतिहासिक दलीले ओसवाल जातिके समय निर्णयमे सहायक होंगी वे श्रीमाल जातिका समय भी निर्दिष्ट कर सकेंगी।

बहुतसे लोग इस बातको मानते हैं कि राजा भीमसेनके समयमे जो जैन राजपूत बाहर चले गये थे वे श्रीमाल के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे। अतः हम लोगोंको यह देखना है कि राजा भीमसेन भीनमालके राजा कब हुए। दूसरी बात यह है कि श्रीमाल जातिके लोग जब जैन बने तब सर्व प्रथम उन्हें ओसवालोंके प्रसिद्ध आचार्य्य श्री रत्नप्रभु सूरिजीके गुरु श्री आचार्य्य स्वयंप्रभुसूरिजीने प्रतिबोधा था। जैन होनेके पश्चात् श्रीमाल-नगरसे बाहर चले जानेके कारण श्रीमाल कहलाये। इसके कुछ वर्ष पश्चात् ही उपकेश-पुरमें ओसवाल जातिकी स्थापना की गई तथा उन्ही भीमसेनके ज्येष्ठ पुत्र उपलदेव भी ओसवाल बने। ओसवाल जातिके प्रथम भागमें आधुनिक इतिहासकारोंके मतों को संग्रह करके तथा अनेक प्राप्त लेखोंसे अनुमान लगाकर उपलदेव व उपकेशपुर बसनेका समय निश्चय किया गया है। बस उसी शताब्दीमें उससे ४० वर्ष पूर्व श्रीमाल जाति स्थापित हुई है। अतः हम पाठकोंसे ओसवाल जातिकी उत्पत्तिके विषयमें संग्रहित ऐतिहासिक सामग्रीको पढ़नेका अनुरोध करेंगे।

श्रीमाल जातिके गौत्र—

सर्व प्रथम श्रीमाल जाति कुल १८ गोत्रोंमे गिनी जाती थी। मगर कालांतरमे नामी

पुरुषोंके नामसे, गांवोंके तथा धार्मिक कार्य्योंके नामसे अनेक नाम पड़ गये और जो आगे जाकर गौत्र बन गये। वर्त्तमान समयमे श्रीमाल जातिमें कुल १३५ गौत्र गिने जाते हैं। इन गौत्रोंके नाम हम नीचे देते हैं।

कटारिया, कहूंधिया, काठ, कालेरा, कादइया, कुराड़िया, काल, कुठारिया, कूकड़ा, फोड़िया, कोकगड़, कम्बोनियां, खगल, खारेड़, खौर, खोचड़िया, खौसडिया, गदइडघा, गलकटे, गपताणिया, गदइया, गिलाहला, गीदोड़िया, गूजरिया, गूजर, घेवरिया, घौघड़िया, चरड़, चांडी, चुगल, चड़िया, चंदेरीवाल, छकड़िया, छालिया, जलकट, जूंड, जूंडीवाल, जाट, झामचूर, टांक, टोकलिया, रीगड़, डहरा, डागड़, डूंगरिया, ढोर, ढोढा, तवल, ताडिया, तुरक्या, दुसाज, धनालिया, धूवना, धुपड, धांधिया, तांबी,नरट, दक्षणत, नायण, नांदरीवाल, निवहटिया, निदुम, निवहेड़िया, नागर, परिमाण, पचोसलिशा, पखड़िया, पसेरण, पन्चोभू, पंचासिया, पाताणी, पापड़गोत, पूरविया, फलवधिया, फाफू, फोफलिया, फूंसपाण, वहापुरिया, वरड़ा, वदलिया, वंदूभी, वांहकटे, वाईसभ्र, वारीगोत, वाहड़ा, विमनालक, वीचड़, वोहलिया, भद्रसवाल, भांडिया, भासोदी, भूवर, भंडारिया, भांडूगा, भोथा, महिमवाल, मउठिया, मरदूला, महतियाण, महकुल, मरहठी, मथुरिया, मसुरिया, माधोनपुरी, मालवी, मारमहरा, मांदोरा, मूसल, मांगा, मुरारी, मुदड़िया, रादिका, राकीवाण (राक्याण) रीहालिमा, लवाहला, लड़ारूप, संगरिप, लड़वाला, सांगिया, साथड़ती, सीधूड, (सींधड़), सुद्राड़ा, सोहू, सोठिया, हाडीगण, हेडाऊ, हीडोस्या, अंगरीप, आकोडूपड़, ऊवरा, वोहरा, साधरिया, पलहोट, घूघरिया और कूंचलिया।

इन उक्त १३५ गौत्रोंमें विभाजित श्रीमाल जाति भी एक समय एक वहुत वड़ी संख्यामें थी। मगर श्रीमालनगरसे निकलनेके वाद जो जत्था गुजरातमें चला गया वह वहींपर निवास करने लगा और मारवाड, गोडवाड़का जत्था मारवाड़ और गोडवाड़में ही वस गया। गुजरातके श्रीमालोंके धीरे २ गौत्र मारे गये। वहा पर ऐसा एक साधारण कहावत मशहूर है कि गुजरातमें गौत्र नही और मारवाड़में छोत नही। आज भी गुजरातमें ऐसे सैकड़ों घर विद्यमान हैं जो अपना गौत्र वगैरह तो नहीं जानते मगर अपने आपको श्रीमाल कहते हैं और अपना उत्पत्ति-स्थान उपरोक्त श्रीमालनगरको वतलाते हैं। हां, उन्होंने अपने विवाह संवंधाधिकी सुविधाके लिये अपनी जातिमें कुछ विशेष नाम और चिन्ह अवश्य रख लिये हैं। इधर जो श्रीमाल मारवाड़ गोडवाड़ आदि प्रान्तोंमें चले गये थे वे धीरे २ वहुत दूर २ तक फैल गये। उन्हींके वंशज आज भी झुंझनूं, जयपुर, चिड़ावा, देहली, कानपुर, भरतपुर, लखनऊ, भागलपुर, अजीमगंज, सिरोंज, मालवा, कलकत्ता आदि स्थानोंपर निवास कर रहे हैं।

श्रीमाल जातिके प्रसिद्ध पुरुष :—

श्रीमाल जातिके अन्तर्गत वहुतसे नामी तथा प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं जिन्होंने अपनी

समाज सेवा, धर्मसेवा तथा व्यापारिक प्रतिभाके कारण अपने और अपनी जातिके नामको विख्यातकर दिया है। इन लोगोंमें सांडाशा, टाकाशा, गोपाशा, वागाशा, डूंगरशा, भीमसेन, पुनशी, पेमाशा, भादाशाह, नरसिंह, मेणपाल, राजपाल, उद्दाशा, भोजराज आदि २ * के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त अनेक स्थानोंपर श्रीमाल जातिके विषयमे बहुत कुछ लिखा हुआ पाया जाता है। कहा जाता है कि विक्रमी आठवी शताब्दीमें भी श्रीमाल बड़े चमकते हुए और पूर्ण उन्नतिके शिखर पर थे। उसी समय आचार्य्य श्री उदयप्रभुसूरिजीने और बहुतसे अन्य लोगोको प्रतिबोध कर श्रीमाल बनाया था। अन्हिलपट्टण की स्थापनाके समय भीनमाल एवं चन्द्रपुरके अनेक श्रीमाल परिवारोंको वहांपर निवास करनेके लिये आमंत्रित किया गया था। आज भी उन श्रीमालोंके वंशज वहां पर निवास करते हैं।

इसी प्रकार सोलहवीं शताब्दीमें वेराट, जो अभी जयपुर-स्टेटमें है, के शासक एक श्रीमाल थे। इनका नाम इन्द्रजीत † था। इनके पिताका नाम राजा भारमल था। वैराटके एक शिलालेख से मालूम होता है कि उस समय राजा इन्द्रजीत का बड़ा प्रभाव था। आपने उस समय के प्रसिद्ध जैन आचार्य्य श्री हीरविजयसूरिजीको एक मंदिर की प्रतिष्ठा महोत्सव करानेके लिये वैराटमें आमंत्रित किया था। सूरिजीके कार्य्यों में अत्यन्त सलग्न रहने के कारण उन्होंने अपने शिष्य उपाध्याय कल्याणविजयजी को वैराट भेजा था जिन्होंने सारा प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किया। इन्हीं राज इन्द्रजीतजीके वंशज लाला नवलकिशोरजी खैरातीलालजी वाले आज भी देहलीमें निवास कर रहे हैं।

तदनुसार ही युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिजी ने पाक्षिक, चातुर्मासिक एवं संवत्सरिक पर्वोंके दिन "जयति हुअण" पढ़ने का शाश्वता आदेश बोहित्थ वंशकी संततिको दिया और उन्हीं पर्वोंके प्रतिक्रमणमें स्तुति बोलनेका आदेश श्रीमालोंको दिया था। इन्ही आचार्य्यने संबत् १६११ की माघ सुदी ७ को शाह वच्छराजके पुत्र चोलाको अमरसरमें दीक्षा दी। उसके साथ उसके बड़े भाई विक्रम ओर माता मीणादेवी ने भी दीक्षा ली थी। इन सब दीक्षा कार्य्योंको थानसिंह नाम के श्रीमालने बड़े समारोहके साथ सम्पन्न करवाया। इसी तरहके अनेक धार्मिक एवं सार्वजनिक कार्य्योंमें श्रीमाल जातिके महानुभावोंने उत्साह पूर्वक भाग लिया जिनके विषयमें आजकी बहुतसे लेख, पट्टावलियाँ आदि आदि विद्यमान हैं। खरतर गच्छ पट्टावली संग्रहमें पृष्ठ नं ७, ११, २३, २८, ३१, ४०, ४४, ४७, ५२, ५३ आदि आदि अनेक पृष्ठोंपर पट्टावलियां दी हुई हैं जिनसे मालूम होता है कि श्रीमाल जातिके धर्मभीरुओं ने अनेक स्थानोंपर धार्मिक कार्य्य किये और पूर्ण धर्म लाभ लिया।

---

* विशेष के लिये जैन जाति महोदय चौथा प्रकरण पृष्ठ ६६ देखिये।

† हीरविजयसूरि रास, सूरीश्वर आने सम्राट तथा श्रीमाली वाणियों ना जाति भेद नामक पुस्तकोंमें देखिये।

भीनमाल नगरमे श्रीमाल जातिके विषयका एक बहुत बड़ा भण्डार था जिसमें श्रीमाल जातिका पूरा पूरा इतिहास लिखा हुआ था। कहते हैं कि उसको मुसलमानोंने बारहवीं शताब्दीमें जलाकर नष्ट कर दिया। एक स्थानपर थोड़ी सामग्री और बच गई थी। वह सामग्री श्री राजेन्द्रसूरिजीको मिली। वहांसे वह कोरंट गच्छीय श्री पूज्यजीके पास गई और फिर वहासे यति श्री माणिकसुन्दरजीके हाथ लगी। मगर उसमे सिर्फ ओसवाल वंशावलियां ही मिली हैं।

मंदिर मार्गीय खरतरगच्छीय आचार्योंका इतिहास

हम ओसवाल जातिके इतिहासके प्रथम भागमे मदिर मार्गीय खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनराजसूरिजी तक तो विस्तार पूर्वक "आचार्य्यों का इतिहास" नामक शीर्षकमें लिख चुके हैं। आचार्य्य श्री जिनराजसूरिजी की मृत्युके पश्चात् आपके दो विद्वान शिष्य गद्दीपर बैठनेको उद्यत हुए। इसी समयसे एक शिष्य श्री रूपसूरिजीने तो अपनी गद्दी बीकानेरमें स्थापित की तथा दूसरी लखनऊकी गद्दीपर श्री रंगसूरिजी विराजे। तभीसे दो अलग अलग गद्दियां स्थापित हो गईं जो आज तक बराबर चली आ रही है।

आचार्य्य श्री रंगसूरिजी :—आप बड़े विद्वान, त्यागी एवं जैन सिद्धांतोंके अच्छे ज्ञाता थे। जनतापर आपका बहुत बड़ा प्रभाव था। यहां तक कि तत्कालीन मुगल सम्राट भी आप पर बडी श्रद्धा रखता था।

आचार्य्य श्री जिनचंद्रसूरिजी :—रंगसूरिजीके मृत्युपरात आप गद्दीपर विराजे। आप ओसवाल जातिके महानुभाव थे। आपने वैराठमें बड़े धूमधामसे एक प्रतिष्ठा महोत्सव कराया था। ऐसा कहा जाता है कि जिस समय प्रतिष्ठा कराई जा रही थी उस समय प्रतिमाजी वेदीमें विराजमान न हुई। सैकड़ों व्यक्ति परिश्रम कर करके थक गये मगर सब निष्फल हुआ। तदनन्तर आपसे निवेदन किया गया। आपने अकेले ही प्रतिमाजीको वेदीमें विराजमान करा दिया। इस घटनासे वहां पर प्रस्तुत विधर्मियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

आचार्य्य श्री जिनविमलसूरिजी :—आप योग्य एवं विद्वान आचार्य्य हो गये हैं। आपने विमल विलास एव विमल मुक्तावली नामक दो पुस्तकें भी लिखी हैं। खेद हैं कि ये पुस्तके अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है।

आचार्य्य श्री जिनललितसूरिजी—आप बड़े पण्डित, संस्कृत तत्वोंके ज्ञाता तथा सस्कृत भाषामें विद्वान थे। जैन जनतापर आपका अच्छा प्रभाव था। आप बड़े त्यागी थे। आपने प्रयत्न करके मुर्शिदाबादके जैन मन्दिरकी प्रतिष्ठा करवाई थी।

आचार्य श्री जिनअक्षयसूरिजी—आप जैन धर्मके मर्मज्ञ तथा विद्वान आचार्य हो गये हैं। एक समय काशीमें होनेवाले वादानुवादमें आपने जैन सिद्धान्तों एवं तत्वोंको रखकर जनतामें एक प्रकाश-सा फैला दिया था। आप अच्छे वक्ता तथा प्रभावशाली आचार्य थे।

आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी (द्वितीय) उक्त आचार्यके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात् आप गद्दीपर विराजे। आपने कई मन्दिरोंकी प्रतिष्ठा महोत्सव कराये। जयपुर और झुंझनू-में भी मन्दिरोंकी प्रतिष्ठाएं आपके द्वारा सम्पन्न हुईं। आप विद्वान तथा त्यागी आचार्य्य थे। आपके कुल ८४ शिष्य थे।

आचार्य श्रीजिननंदीवर्द्धन सूरिजी—आप बड़े त्यागी आचार्य्य थे। श्रावकोंकी आप पर बड़ी श्रद्धा थी। आप भी विद्वान तथा प्रभावशाली थे। आप जिस समय पालीताना तीर्थ यात्राके लिये रवाना हुए थे उस समय आपके साथ पाँच हजार व्यक्ति थे। इस प्रकार इतने बड़े संघको लेकर आप रास्तेमें कई मन्दिरोंकी प्रतिष्ठाएँ वगैरह करते हुए पालीतानाकी ओर बढ़ते गये। अनेक धार्मिक कार्य्योंको करते हुए हुए आपने यह तीर्थयात्रा समाप्त की।

आचार्य्य जयशेखरसूरिजी—आप आचार्य्य पद पानेके बाद केवल छः मासतक ही जीवित रहे। तदनन्तर आपका देहान्त हो गया। आपने भी प्रतिष्ठा महोत्सव कराये थे।

आचार्य्य श्री जिनकल्याणसूरिजीः -उक्त आचार्य्यके मोक्षगामी होनेके पश्चात् आप इस गद्दीपर विराजे। आप बड़े प्रभावशाली, विद्वान तथा त्यागी आचार्य्य थे। बहुतसे विधर्मी भी आपके त्याग की प्रशंसा किया करते थे। आप बड़े ध्यानी भी थे। बहुतसे अन्य मतावलम्बियों की भी आपपर बड़ी श्रद्धा थी। आपने कई मन्दिरोंकी प्रतिष्ठाएँ वगैरह कराईं। देहलीके नौघरेके मन्दिरका सं० १६१७ में आप ही के द्वारा जीर्णोद्धार कराया गया था। इसके अतिरिक्त आपने कानपुर, झूंझनूं और सम्मैदशिखरजी पर भी मन्दिरोंके प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किये। आपने हजारों स्थानोंपर व्याख्यान भाषण आदि देकर अजैनोंका ध्यान भी जैन धर्मके ऊपर आकर्षित किया था।

आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी—आचार्य्य श्री जिन कल्याणसूरिजीके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् आप उक्त पाटपर अधिष्ठित हुए। जिस समय आप आचार्य्य हुए एवं गद्दीपर विराजे उस समय आप केवल २० वर्षके थे। आचार्य्य पद प्राप्त कर लेनेके ७ साल बाद ही आप मोक्षगामी हो गये थे। मगर प्रारम्भसे ही आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले एवं होनहार प्रतीत होते थे। आप बड़े तेजस्वी एवं जैन शास्त्रोंके अच्छे ज्ञाता थे। आचार्य्य पदपर शासनारूढ़ होनेके पश्चात् आपने अपने प्रखर पाण्डित्य एवं विद्वत्ताका परिचय दिया। आप बड़े त्यागी, ज्ञानी एवं व्याख्यान देने में बड़े कुशल थे। कई समय आपने अपनी व्याख्यान चातुरीसे श्रोताओंको मुग्धकर अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था। आपने इतनेसे थोड़े समयमें सैकड़ो सभाएं की होंगी और हजारों भाषण दिये होंगे। आपने सं० १६३६ में देहलीके चेलपुरीके मन्दिरकी प्रतिष्ठा कराई थी।

एक समय काशीमें अनेक मतावलम्बी पण्डित इकट्ठे हुए थे। उन पण्डितोंकी सभा में आपने अपने पाण्डित्य पूर्ण भाषण द्वारा सारी सभाको मुग्ध कर दिया था। आपने उक्त सभामें जैनधर्मके सिद्धान्तों एवं अमूल्य तत्वोंको बडे ही अच्छे ढङ्गसे जनताके सन्मुख रक्खा

था। आपने चन्द्रमाला एवं चन्द्रकोष नामक दो ग्रन्थ भी लिखे हैं जो आज भी आचार्योंके भण्डारमें विद्यमान हैं। ऐसे ग्रन्थोंका प्रकाशन बहुत ही आवश्यक है। श्रीमाल समाजको इन ग्रन्थोंको शीघ्र ही प्रकाशित करना चाहिये।

आचार्य श्री का देहान्त मुर्शिदाबादमे हुआ था। मृत्युके कुछ समय पूर्व आपने अपने पासके सब लोगोंको मृत्युकी पहले ही सूचना देते हुए सामयिक वगैरहसे निपटकर पवित्र होनेकी इच्छा जाहिर की। आपने सामयिक वगैरह किया और उन सब कामोंसे निपटने के बाद ठीक उसी समय जिस समयके लिये आपने पहले कह दिया था आप मोक्ष चले गये।

आपके स्वर्गवास से जैन जनतामें शोक छा गया। आज भी जैन जनता आपको श्रद्धासे याद करती है।

आचार्य्य श्री जिन रत्नसूरिजीः—आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पश्चात् आप ही गद्दीपर विराजे। आप भी बड़े विद्वान, जैन शास्त्रज्ञ एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपने चिडावा, लखनऊ, कलकत्ता आदि कई स्थानोंपर मन्दिरोंके प्रतिष्ठा महोत्सव कराये और हजारों जैनों एवं अजैनोंको जैनियों के महान सिद्धान्तों एवं तत्वोंको समझाया होगा। देहली का लाला छोटेदासजी वाला मोट की मसजिदके पास का मन्दिर भी सम्वत १९७३ में आपके द्वारा प्रतिष्ठित कराया गया था।

आप बड़े प्रभावशाली एवं त्यागी पुरुष थे। आपने अपने व्याख्यानों द्वारा झूंझनूके कई ठाकुरोंको प्रतिबोध कर उनसे मदिरा मांस आदि छुड़वाया था। आपका स्वर्गवास सं० १९९२ के वैसाख बदीमें हो गया। वर्त्तमानमें आपके चार यति शिष्य विद्यमान हैं।

यति श्री सूरजमलजी विद्वान, अच्छे वक्ता एवं जन्त्र तन्त्रादिके ज्ञाता हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। "पाटलिपुत्र का इतिहास" "जिनदर्शन", "सागरोत्पत्ति", "दीवाली पूजन" आदि। आप वर्त्तमानमें २२ बांसतल्ला कलकत्तामें निवास करते हैं।

यति श्रीरतनलालजी शांति प्रकृतिवाले, उदार एवं धार्मिक सज्जन हैं। आपके आचार विचार उत्तम हैं तथा आप नियमके बहुत पक्के हैं। आपको मन्त्र जन्त्रादिका भी ज्ञान है। वर्त्तमानमें आप जयपुरमें रहते हैं।

यति श्री रामपालजी शांत, योग्य एवं विद्वान पुरुष हैं। आप बड़े विचारक हैं। आपने भी "प्राचीन स्तवनावली" "जिन गुण मणिमाला" "भावी विज्ञान" तथा "नवरत्न विधान" नामकी पुस्तकें लिखी हैं। आप वर्त्तमानमें स्तवन संग्रह और श्रीमाल जातिका इतिहास नामक ग्रन्थ लिख रहे हैं जो शीघ्र ही प्रकासित होगा। आपके लेख कई अखबारोंमें समय२ पर निकलते रहते हैं।

Leading families of Shrimals.

श्रीमाल जाति के प्रसिद्ध खानदान
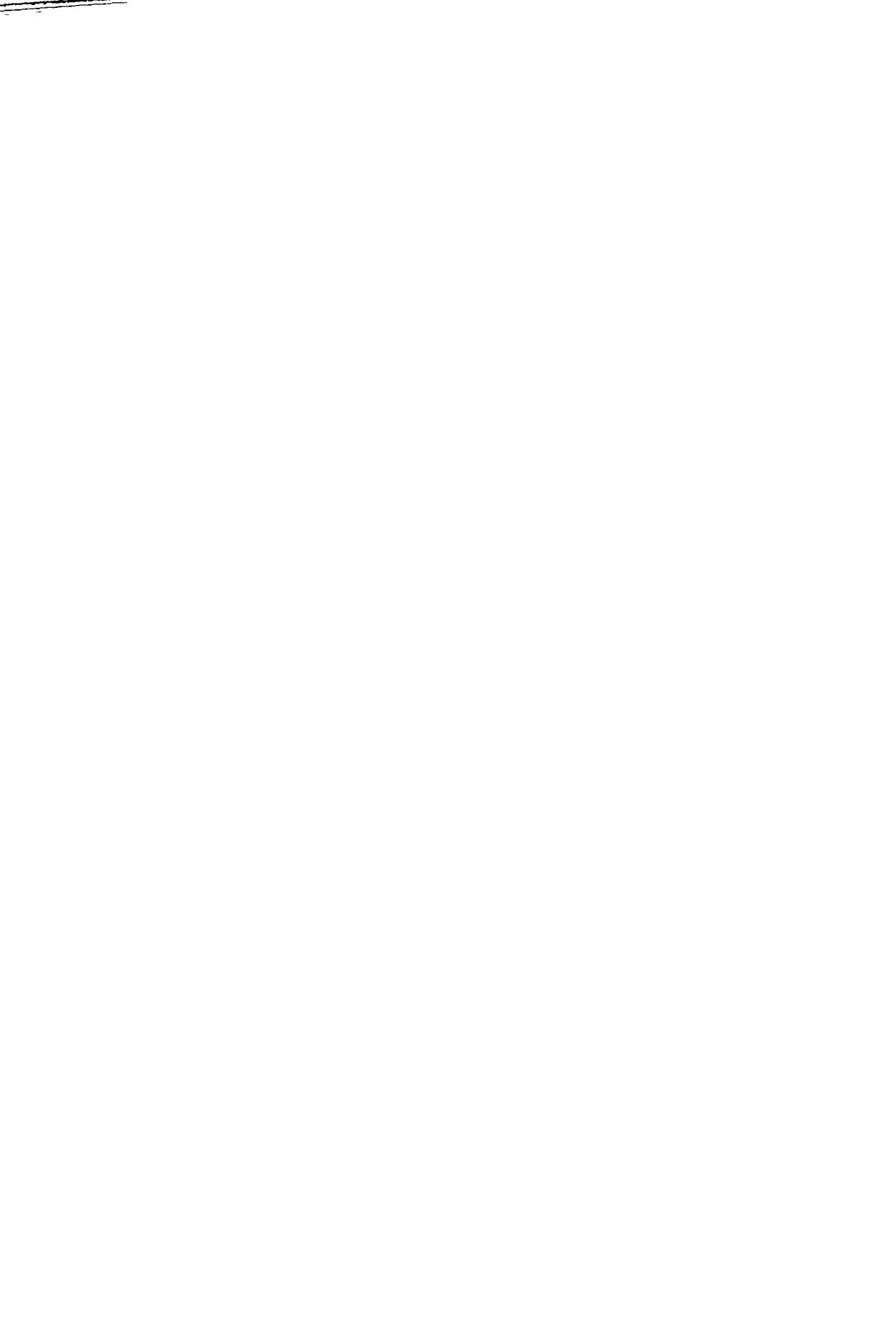
राय बद्रीदासजी बहादुर मुकीम तथा कोर्ट ज्वेलर, कलकत्ता

इस प्रसिद्ध परिवारका मूल निवासस्थान राजपूताना था। आप लोग सींधड़ (श्रीधर) गौत्रके श्वे० श्वे० जै० मन्दिर मार्गीय सज्जन हैं। राजपूतानासे इस परिवारके पूर्व पुरुष देहली चले आये। इस खानदानमें प्राचीन समयसे ही रत्नोंका व्यापार होता आ रहा है। देहलीमें लाला देवीसिंहजी प्रसिद्ध पुरुष हुए। आपके विजयसिंहजी एवं बुधसिंहजी नामक दो पुत्र थे।

लाला विजयसिंहजी तथा बुधसिंहजी बड़े नामी जौहरी हो गये हैं। आप दोनों बंधुओंने अवध सरकारके आग्रहसे देहलीसे अपना निवास स्थान लखनऊमे बनाया। आप दोनों बंधु प्रतिभाशाली तथा व्यापार चतुर थे। आपने अवधके नवाबके पुत्रोत्पत्तिके समय लाला गोकुलचन्दजी जौहरीके साझेमे छः दिनोंमें सवा लाख रुपयेका अश्व सिंगार आभूषण तयार करवाकर नवाब साहबको भेंट किये जिनको देखकर नवाब साहब आप लोगोंपर बहुत प्रसन्न हुए तथा आपको बहुतसा द्रव्य प्रदान कर सम्मानित किया।

आप दोनों बंधु बड़े धर्मात्मा व्यक्ति भी थे। आपकी प्रतिष्ठा कराई हुई बहुतसी मूर्त्तियां आज भी विद्यमान हैं। आपने लखनऊके मकानमें एक सुन्दर देरासर भी बनवाया था। लाला विजयसिंहजीके कालिकादासजी नामक एक पुत्र हुए जिनका छोटी वयमें ही स्वर्गवास हो गया। आपके बाबू द्वारिकादासजी तथा बाबू बद्रीदासजी नामक दो पुत्र हुए। लाला द्वारिकादासजीका भी छोटी उम्रमे अन्तकाल हो गया।

राय बद्रीदासजी मुकीम बहादुरः -आप उन उन्नतिशील एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियोंमेसे हैं जो अपनी योग्यता तथा अपने व्यक्तित्वके बलपर अपने नामको चमका देते है। आप कार्य्य कुशल तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले महानुभाव थे। आपका जन्म सं० १८८६ की मगसर सुदी ११ को हुआ। संवत् १९१० में आप लखनऊसे कलकत्ता चले आये तथा वहांपर स्थायी रूपसे निवास करने लगे।

आपका बाल्य जीवन :—रा० ब० बाबू बद्रीदासजीको बाल्यकालमे ही बहुत कष्टोंका सामना करना पड़ा था। आपके पिताजी व ज्येष्ठ भ्राताका स्वर्गवास हो जानेसे सारे परिवारके व्यवसाय व अन्य कार्य्यों के भारको आपको अपने कंधोंपर लेना पड़ा। आपने अपने शिक्षा कार्य्य समाप्त करनेके पश्चात् सारे व्यापारको अपने हाथमें लिया।

व्यापारिक जीवनः—आप अपने समयके भारतवर्षके प्रसिद्ध जौहरियोंमें गिने जाते थे। आपको जवाहरातकी परीक्षाका बहुत अनुभव था तथा आपने इसी व्यापारसे अथाह द्रव्य उपार्जन किया और अपने खानदानको भारतमे प्रसिद्ध कर दिया। सारे भारतवर्षकी ओसवाल तथा श्रीमाल जनता आज भी आपका नाम बड़े गौरवके साथ लेती है। भारतवर्षके वायसराय तक आपकी बहुत पहुंच थी और आप बड़े सम्मानकी दृष्टिसे देखे जाते थे। सं०

१९२५ के अन्तर्गत आपको प्रथम लार्ड लारेन्सके शासन कालमें सरकारी जौहरीकी पदवी प्राप्त हुई। सं० १९२७ में लार्ड मेयोने मुकीम व लार्ड नार्थबुकने आपको मुकीम और कोर्ट ज्वेलर बनाकर सम्मानित किया। आपको जवाहरातकी जानकारी बहुत थी और आप बहुतसे कीमती जेवरात रखते थे। गवर्नमेंटकी ओरसे राजा, महाराजा आदिको जो जेवर खिल-अत वगैरह दिये जाते थे वे आपके द्वारा बनाये जाते थे। आपका नाम दिन प्रतिदिन चमकता गया और आप क्या गवर्नमेंट, क्या राजे महाराजे सर्वत्र प्रसिद्ध हो गये। आपके जीवन कालमें जितने गवर्नर जनरल इङ्गलैंडसे यहाँपर आये वे सब आपको बहुत सम्मानित करते रहे। प्रसिद्ध देहली दरबारके समय लार्ड लिटनने आपको "राय बहादुर" के सम्माननीय खिताब व 'एम्प्रेस आफ इण्डिया' मेडल प्रदान कर आपके योग्यताकी कद्र की।

धार्मिक कार्य्य :—लाखों रुपयोंकी सम्पत्तिको धार्मिक आदि कार्य्यों में आपने बड़ी लगनके साथ व्यय भी किया। आप बड़े धार्मिक तथा सम्पूर्ण भारतकी श्वेतांबर जैन समाजमें अग्रगण्य थे। आपने कई स्थानोंपर मंदिर, दादावाड़ी आदि बनवाये तथा प्रतिष्ठा महोत्सव कराये। कलकत्तेका आपका बनाया हुआ जैन मन्दिर एक बहुत ही सुन्दर स्थान है। इस मन्दिरमें काच, मीनाकारी, सोना आदिका बहुत ही सुन्दर ढगका काम बना हुआ है तथा वेदीमें जवाहरात भी लगा हुआ है। यह भारतके प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे एक तथा कलकत्ते की दर्शनीय वस्तु है। इस मन्दिरके अन्तर्गत भारतीय कलाका एक बहुत ही अनुपम नमूना दृष्टिगोचर होता है। हजारों मनुष्य दूर दूरसे इसे देखनेके लिये आते हैं। विदेशोंसे आनेवाले टुरिस्टोंका तो यहाँपर तांता सा बंधा रहता है। इसके आस पास बहुत बड़ा बगीचा बना हुआ है। बगीचा सुन्दर, विशाल तथा मन्दिरको पूर्ण रूपसे शोभित करता मालूम होता है। सब दर्शनार्थी इस मन्दिरकी अनुपम छविकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा करते हैं। इसके बनानेमें लाखों रुपये लगे हैं। इस मंदिरकी बहुत प्रसिद्धि है। इसका नाम मुकीम जैन टेम्पल गार्डन है। जिस बाजारमें वह मंदिर है उस बाजारका नाम ही बद्रीदास टेंपल स्ट्रीट रख दिया गया है। इसके अतिरिक्त राय बद्रीदासजी बहादुरने श्री सम्मेदशिखरजी (पार्श्वनाथ पहाड़) पर एक और विशाल मंदिर बनवाया जो १८ सालोंमें बनकर तय्यार हुआ। इसके अतिरिक्त आपने अनेकों मंदिरों, दादावाड़ियों, पाठशालाओं व अन्य धार्मिक संस्थाओंमे मदद दीं। आपने कलकत्तेमें एक पाठशाला स्थापित की थी। कलकत्तेकी पाजरापोलके स्थापनाकी योजना आपनेही तयार की थी तथा आपने उसमे प्रधान रूपसे अग्र भाग लिया। यह पिञ्जरापोल आज तक बहुत सफलता पूर्वक चल रही है। सं० १९४२ में आपने सिद्धाचल तीर्थपर यात्रीके टेक्सको उठवा कर सालाना कुछ रकम नियत करानेमें बहुत प्रयत्न किया और सफल हुए। सं० १९५८ में आपने सपत्नीक १२ व्रतोंका प्रण लिया। इसके पश्चात् चौथा व्रत भी आपने लिया जिसे ३५ वर्षों तक पालते रहे। आपका बहुतसा समय धार्मिक कामोमें व्यय हुआ करता था। चौविहार, रात्रि भोजन निषेध आदिका आपको बड़ा नियम था।

स्व० राय बद्रीदासजी मुकीम बहादुर, कलकत्ता

बाबू रायकुमारसिंहजी मुकीम, कलकत्ता ।

बाबू राजकुमारसिंहजी मुकीम [illegible]

सार्वजनिक कार्य्यः—जिस तरह आपके व्यवसाय के व धार्मिक कार्य सजीव रहे उसी तरह आपने सार्वजनिक कामोंमें उत्साहके साथ भाग लिया। आप कलकत्तेकी व्यापारिक समाजके अगुआ तथा प्रसिद्ध पुरुष थे। आप ही सुप्रसिद्ध बङ्गाल नेशनल चेम्बर आफ कामर्स कलकत्ताके प्रथम वर्षके सभापति चुने गये थे। इसके अतिरिक्त आप ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन, हिन्दू युनिवर्सिटी, इम्पीरियल लीग आदि प्रभावशाली संस्थाओंके मेम्बर थे। गरीबों की सेवा करनेमे भी आपने भाग लिया। अकालके समय आपने गरीब जनताको मदद पहुंचाई। ऐसी अनेकों संस्थाओमे आपने सहयोग दिया और कई संस्थाओंके आप पथ प्रदर्शक रहे। जीते नीरोगी जानवरोंको मारनेकी जो सोसायटी बननेवाली थी उसको आपने प्रयत्न करके न होने दिया, सम्मेदशिखरजी पर सूअरकी चर्बी निकालनेका कारखाना खुलने वाला था लेकिन आपने अपने घरसे लाखों रुपये खर्च करके उक्त पहाड़को कोर्ट द्वारा धार्मिक करार करवा दिया और कारखाना नहीं चलने दिया।

इन सब कार्योंके अतिरिक्त आपने एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है जिसके लिये श्वेताम्बर जैन समाज आपका बहुत कृतज्ञ है। एक समय विलायत और गवर्नमेण्ट आफ इण्डियाने इस आशयका एक बिल पास कर दिया कि सम्मेदशिखर पहाड़के ऊपर पलटनवाले और आम लोग अपने रहनेके लिये बंगले वगैरह बना सकते हैं। इसपर आपने तन, मन, धनसे पूर्ण परिश्रम कर इस बिलको मंसूख कराने और सम्मैदशिखर पहाड़पर बंगले बनानेकी परवानगी को रद्द करानेकी बहुत कोशिश की। आपने इस सम्बन्धमें भारतके तत्कालीन वाइसराय तक पहुंचकर इस हुकुम को रद्द करवा दिया। इसी प्रकार एक समय किसी एक केसमें श्वेताम्बरियो का सम्मेदशिखर पहाड़ पर का हक कट गया था। आपने प्रयत्नकर इस सम्मैदशिखर पहाड़ को खरीदनेमें सफलता प्राप्त की थी। इसी प्रकार मक्षीजी वगैरह तीर्थोंमें आप सर्व प्रकारसे मदद करते रहते थे। आपके करीब सौ शागिर्द थे जिनमे से बहुतसे आज भी विद्यमान हैं और आपके पास शिक्षा पानेमें अपना गौरव अनुभव करते हैं।

सम्मान :—जनतामे आपका कितना सम्मान था यह पाठकोंको बतलानेकी आवश्यकता नही है। ऊपर लिखित अवतरणोंसे आपलोगोंको भली भांति मालूम हो जायगा। उच्च श्रेणीमें आपके सम्मानका जिक्र हम कर चुके हैं। आप दोनों देहली दरबारोमे बंगालके प्रतिनिधिके रूपमें आमन्त्रित किये गये थे। इन दरबारोंसे आपको मेडल आदि इनायत किये गये थे। इसके अतिरिक्त सं १९२१ में तत्कालीन अलवर नरेश महाराज शिवदानसिंहजीने आपको २१ परचेके साथ हाथी, गांव, पालकी वगैरहका सम्मान बक्षा। आपने उक्त गांवको मन्दिरके अर्पण कर दिया। इसी प्रकार हाड़ोतीकी ओरसे आपको पैरोंमें सोना पहननेका अधिकार प्राप्त हुआ था। आप दूसरी श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेसके सं० १९६० के बम्बई अधिवेशनके सभापति बनाये गये थे। जैन श्रेयस्कर मण्डलके सभापति, आनन्दजी कल्याणजीकी पेढ़ी के प्रति·

निधि आदि २ रहे। आपने कलकत्तेमें जैन एसोसिएशन ऑफ बंगाल नामक संस्थाकी स्थापना की थी। कई स्थानोंपर आपके द्वारा आपसी झगड़े निपटाये गये। आपकी सलाह वजनदार मानी जाती थी। कहने का मतलब यह है कि आप क्या व्यवसायिक क्षेत्रमें, क्या सामाजिक क्षेत्रमें और क्या सार्वजनिक क्षेत्रमें सर्वत्र उत्साह पूर्वक भाग लेते रहे और पूर्ण रूपसे सफल हुए। आप श्वेताम्बर जैन समाजके एक बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति, कलकत्तेकी हिन्दू समाजके नेता तथा गवर्मेन्टमें मानेता व्यक्ति थे।

स्वास्थ्य व स्वर्गवास :—आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। नियम पूर्वक रहनेके कारण आप ८५ वर्षकी आयुमें सं० १९७४ में स्वर्गवासी हुए। आपके स्वर्गवासके समय कलकत्तेकी जनताने एक स्वरसे शोक मनाया व शोक स्वरूप कलकत्ता, बम्बई अहमदाबाद आदि २ स्थानोंके बाजार बन्द रहे। हिन्दुस्तानके अनेको स्थानोंपर आपके अभाव में शोक सभाएँ की गईं तथा आपको अपनी श्रद्धांजलिया अर्पितकी गईं। इतना ही नहीं आपके स्वर्गवासके पश्चात् अपके पुत्रोंके पास भारतके वाइसराय, कमान्डर इन चीफ, कई गवर्नरों, नैपाल, काश्मीर, ग्वालियर, आदि बहुत रियासतोंके राजा महाराजाओंने शोकसूचक तार देकर पूर्ण सहानुभूति प्रगट की थी। आप अपने जीवनकी सभी लाइनोंमें पूर्ण यश प्राप्तकर स्वर्गवासी हुए। आपके बाबू रायकुमारसिंहजी एव राजकुमारसिंहजी नामक दो पुत्र हुए।

आपका दाह संस्कार आपकी इच्छानुसार तथा गवर्मेन्टकी खास आज्ञासे बगीचे में ही हुआ जो कलकत्तेके इतिहास में आजतक किसीका नहीं हुआ।

बाबू रायकुमारसिंहजीका जन्म सं० १९३६ में हुआ। आप विचारक तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपका यहांपर अच्छा सम्मान है। आप बड़े नेकचलन तथा सच्चे व्यक्ति हैं। आप द्वितीय अखिल भारतवर्षीय जैन कान्फ्रेंसके सेक्रेटरी भी रहे। इसके अतिरिक्त आपका अनेक सस्थाओंसे सम्बन्ध रहा है। आप कलकत्ता पींजरापोल, जैन श्वे० पचायती मदिर, जैन पौशाल आदि २ के ट्रस्टी हैं। आपके फतेकुमासिंहजी, जयकुमारसिंहजी तथा विनयकुमारसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। बाबू राजकुमारसिहजीका जन्म सं० १९३८ तथा स्वर्गवास सं० १९८६ में हुआ। आपके महेन्द्रसिहजी आदि तीन पुत्र हैं।

यह खानदान यहा पर बहुत प्रतिष्ठित माना जाता हैं।

सेठ चम्पालालजी फर्जनलालजी सींधड़, जयपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान हट्टूपुरा था। आप सीधड़ गौत्रके श्री जै० श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस खानदानमें सेठ किशनचन्दजी हुए। आप ही सबसे पहले हट्टूपुरासे जयपुरमें आकर निवास करने लग गये थे। आपके हरचन्दजी, माणकचन्दजी, उदयचन्दजी एवं शोभाचन्दजी नामक चार पुत्र हुए। आप लोगोंने अपने पिताजीके स्मारकमें जयपुरमें एक छत्री बनवाई है।
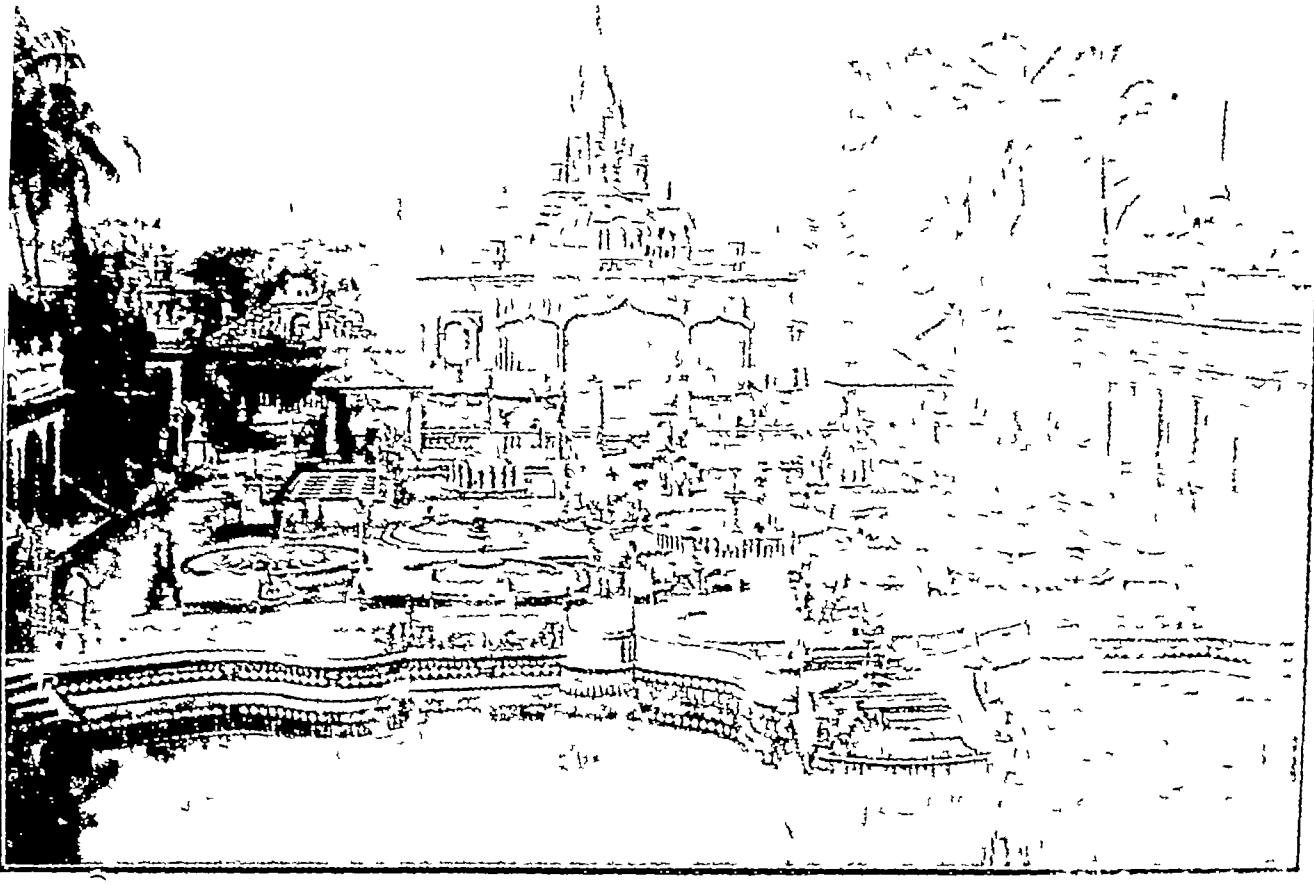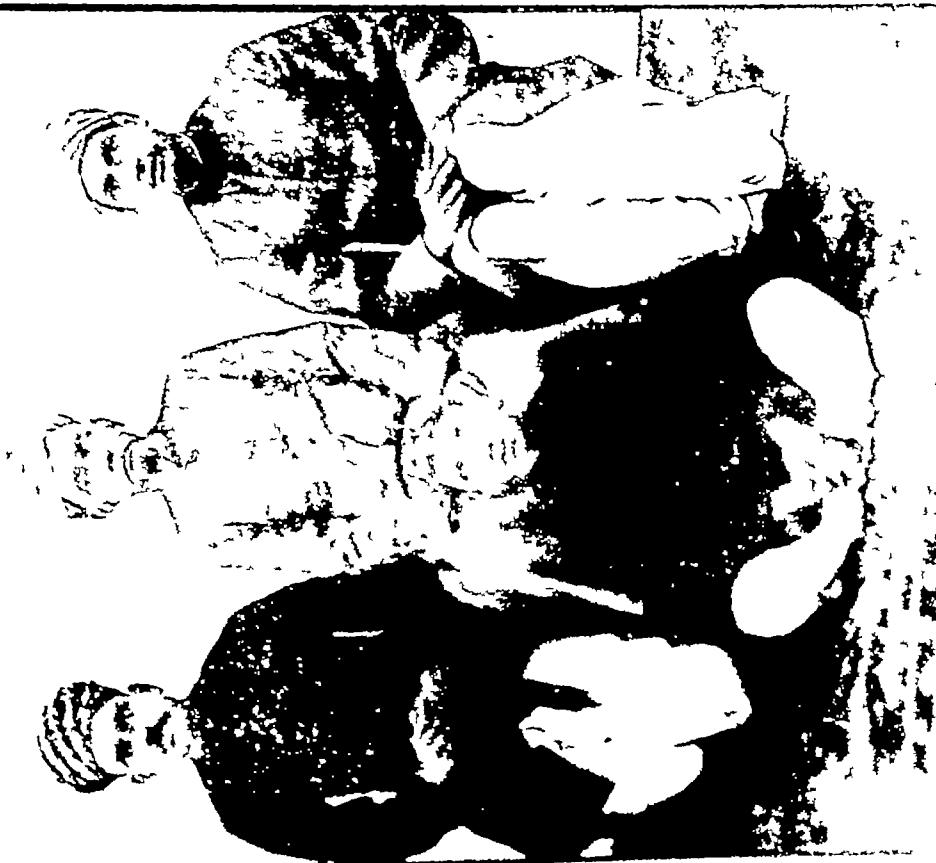
सेठ हरचन्दजी--आप बड़े भाग्यशाली तथा व्यापार चतुर पुरुष थे। आपके गर्भमें आनेके कुछ महीनों पश्चात् ही आपके पिताजीको तीन लाख रुपयोंका लाभ रहा था। आपने अपने व्यापारको तरक्कीपर पहुंचाया तथा मद्रास, कलकत्ता, मछलीनेटर, नागपुर, लट्टीकी हैदराबाद आदि २ स्थानोंपर १२ दुकानें स्थापित कीं। इन फर्मोंपर भिन्न-भिन्न नामोंसे कई प्रकारका बड़े स्केलपर व्यापार होता था। इनमें खासकर आपकी मद्रास फर्म बहुत ही प्रतिष्ठित थी। यह फर्म मद्रासमें सावकार पेठके व्यापारियोंके आपसी झगड़ोंके निपटानेमें पञ्चायती दूकान समझी जाती थी। आप लोगोंकी फर्म बड़ी मातवर थी। सेठ हरचन्दजी जवाहरातके व्यापारमें बहुत निपुण तथा चतुर पुरुष थे। आपके वहाँपर बहुत बड़े स्केलपर जवाहरात व वैकिंगका व्यापार होता था। आप स्वयं जवाहरातके व्यापारकी देखरेख किया करते थे। एक दिन हुण्डियोंकी मिति बहुत निकट आ गई थी अतः आपने एकही दिनमें छ लाखकी व्यवस्था करके सारा भुगतान किया। फिर आपने उसी दिन सब धनीमानी सराफोंको बुला कर यह प्रस्ताव पास करा लिया कि मुद्दती हुण्डीकी मुद्दतके आखिरी दिनके एक दिन पहले वतलाई जाय और उसका दूसरे दिन भुगतान हो।। इस तरहकी कच्ची और पक्की मितीकी प्रथा उस दिनसे निकल गई है जो आज भी जयपुरमें पूर्ववत् बराबर चल रही है।

सेठ हरचन्दजी जयपुरकी व्यापारिक समाजमें प्रतिष्ठित, नामी जौहरी तथा जयपुर स्टेटमें सम्माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आप वजनदार, अग्रसोची तथा समझदार व्यक्ति थे। आप बड़े धार्मिक पुरुष भी थे। आप हीने सबसे पहले सं० १८५५ में पूज्य भिक्खनजी महाराजके उपदेशसे तेरापन्थी धर्म अंगीकार किया। आपके ताराचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। आप अपने कामको संभालते रहे। आपके हीरालालजी तथा भैरूलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ हीरालालजीका स्वर्गवास सं० १९१९ में हुआ। आपके चांदमलजी, जीवनलालजी तथा गणेशलालजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें चांदमलजी इसी परिवारमे भागचन्दजीके नामपर व गणेशीलालजी भैरूलालजीके नामपर गोद चले गये।

सेठ जीवनलालजीका परिवार—आपका जन्म सं० १९०८ में हुआ था। आप सादे ढङ्गसे आनन्द पूर्वक रहते हुए सं० १९६५ में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चम्पालालजीका जन्म सं० १९३२ की फाल्गुन सुदी २ को हुआ। आप धर्मध्यानी व समझदार सज्जन हैं। आपके फर्जनलालजी तथा धनपतलालजी नामक दो पुत्र हैं। इनमें धनपतलालजी श्री भैरूलालजीके पुत्र गणेशीलालजीके यहांपर गोद गये हैं। आप दोनों बन्धुओंका जन्म क्रमशः सं० १९६२ की माह बदी ६ व सं० १९६७ के कार्तिकमें हुआ। आप दोनों बन्धु मिलनसार हैं। वर्त्तमानमें आप अपने २ जवाहरातके व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आप दोनों जयपुरके सुप्रसिद्ध जौहरी स्व० रतनलालजी फोफलियाके शागीर्द हैं। बाबू फर्जनलालजी तेरापन्थी समाजके मन्त्री रहे तथा वर्त्तमानमें जैन नवयुवक मण्डलके सदस्य हैं। आपके पन्नालालजी नामक एक पुत्र हैं। इसी प्रकार बाबू धनपतलालजीके सम्पतलालजी नामक एक पुत्र हैं।

सेठ भेरूलालजीका खानदान –आप बड़े धर्मध्यानी पुरुष थे। आपने पूज्य जीतमलजी महाराजके दो चातुर्मास करवाये थे जिसमें अपने स्वाधर्मी भाइयोंके उतरने आदिकी व्यवस्थामें करीब दस हजार रुपये व्यय किये होंगे। आपका स्वर्गवास सं० १६३८ में हुआ। आपके नामपर गणेशलालजी गोद आये सेठ गणेशीलालजीका जन्म सं० १६१५ के कार्तिकमें हुआ आप शिक्षित व्यक्ति थे। सं० १६४६ तक तो आपने मद्रास फर्म रक्खी पश्चात् उसे उठा दी। आपका स्वर्गवास सं० १६७६ की आषाढ़ सुद ६ को हुआ है। आपके नामपर उपर्युक्त धनपतलालजी गोद आये।

आपलोग मेसर्स चम्पालाल फर्जनलाल सींघड़के नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते हैं।

राक्यान

लाला नवलकिशोरजी खैरातीलालजीका खानदान, देहली

यह परिवार श्रीमाल जातिके गौरवशाली एवं चमकते हुए परिवारोंमेंसे एक है। इसके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान वैराट नगर, जो कि अब भी जयपुर स्टेटमें है, का था। जिस समय भारतके बादशाह मुगल सम्राट अकबर थे उसी समय इस खानदान वालों का वैराटमें बड़ा प्रभाव था। आप लोग वैराटके शासक थे। इसी खानदानके पूर्व पुरुष राजा श्री इन्द्रजीतजीके विषयमें आज भी वैराटमें एक शिलालेख मिलता है जिसमें राजा श्री इन्द्रजीतजी द्वारा वैराट नगरमें आचार्य श्री हीरविजयसूरिजी के शिष्य उपाध्याय श्री कल्याणविजयजीके द्वारा एक मन्दिरके प्रतिष्ठा महोत्सव करानेका उल्लेख है*।

इस खानदानके सज्जन श्रीमाल जातिके राक्यान गौत्रीय श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गीय हैं। इस परिवार वाले औरंगजेब बादशाह तक तो कुशलता पूर्वक शासन करते रहे। उस समय वहांके शासक श्री हुकमचन्दजी थे। आप पर किसी कारण वश औरंगजेबकी अप्रसन्नता हो जानेसे आप सब कुछ छोडकर वैराटसे श्याना (यू० पी०) चले आये तथा कुछ समय पश्चात् आप लोग माकड़ी चले गये व माकड़ीसे करीब १३० वर्ष पूर्व इस परिवारके लाला डालचन्दजी सबसे पहले देहली आये।

लाला डालचन्दजीने देहलीमें आनेके पश्चात् अपनी फर्मपर गोटे किनारीका व्यापार प्रारम्भ किया। आपने तथा आपके पुत्र लाला मगलसेनजीने इस व्यवसायमें सफलता प्राप्त की। इस व्यापारको आपके बाद आपके परिवार वाले भी करते रहे और अब उन्हींके खानदानके लाला कपूरचन्दजी, अमीरचन्दजी व मोतीलालजी क्रमशः दो गोटे किनारीकी दुकानों-

*हीरविजयसूरि रास पृष्ठ १५२ तथा सूरीश्वर अने सम्राट नामक पुस्तकमें देखिये।

स्व० लाला नवलकिशोरजी राक्यान, देहली

स्व० लाला खैरातीलालजी राक्यान, देहली

बाबू बाबूमलजी राक्यान, देहली

बाबू मिट्ठूमलजी S/o श्री खैरातीलालजी राक्यान देहली

का लाला प्यारेलाल अमीरचन्द व लाला प्यारेलाल मोतीलालके नामोंसे संचालन कर रहे हैं। देहलीमे आप लोगोंकी दुकान गोटे किनारीका व्यापार करनेवाली प्रधान फर्मोंमेसे एक है और आप लोग गोटे किनारीके व्यापारको सफलता पूर्वक चला रहे हैं। लाला मंगलसेनजीने देहलीके श्री नौघरे व चेलपुरी दोनों मन्दिरोंका इन्तजाम अपने हाथोंसे योग्यता पूर्वक किया तथा आपकेपश्चात् आपके पुत्र लाला कल्लूमलजी व फकीरचन्दजीने भी दोनों मन्दिरों तथा श्रीजीकी पोशाल का इन्तजाम किया। इन धार्मिक संस्थाओंका इन्तजाम अबतक भी इन्हींके परिवारवाले लाला खैरातीलालजी बड़ी योग्यता पूर्वक तथा सुचारु रूपसे कर रहे थे।

लाला सीतारामजीके पुत्र लाला पूरनचन्दजी भी माकड़ीसे देहली चले आये। लाला पूरनचन्दजीके परिवारवाले आज तक देहलीमें निवास कर रहे हैं। लाला पूरनचन्दजीके लाला नवलकिशोरजी, नन्हेमलजी एवं फकीरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे लाला फकीर-चन्दजीका छोटी आयुमे ही स्वर्गवास हो गया।

लाला नवलकिशोरजी :—आपका जन्म स० १६०५ में हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल एवं योग्य व्यक्ति थे। आपने अपने वहांपर सबसे पहले जवाहरातके व्यापारको प्रारम्भ किया और उसे इतना चमकाया कि आप यहांके प्रमुख एवं नामी जौहरियोंमें गिने जाने लगे। आपने अपनी व्यापार चातुरी एवं कार्य्यदक्षता से इस व्यवसाय में लाखोंकी सम्पत्ति उपार्जित की।

सम्पत्ति कमानेके साथ ही साथ आपने उनका सदुपयोग भी किया। आप बड़े धार्मिक एवं परोपकार वृत्तिवाले महानुभाव हो गये हैं। आपने देहलीके अन्दर यात्रियोंकी सुविधाके लिये एक धर्मशाला बनवानेकी अपने पुत्र लाला खैरातीलालजी व लाला बाबूमलजीको आज्ञा दी। लाला नवलकिशोरजीने भी हस्तिनापुरमें एक मन्दिर एवं धर्मशालाका जीर्णोद्धार कराया जिसमें काफी रुपया व्यय हुआ। इसी प्रकारके कई सार्वजनिक काम किये।

आप श्रीमाल एवं ओसवाल समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप देहलीकी जनतामें भी प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आपका सार्वजनिक एवं परोपकारके कामोंमें सहायता पहुचानेकी ओर भी बहुत लक्ष्य रहा। आप देहलीके नामी जौहरी, समाजमें प्रति-ष्ठित व्यक्ति व एक योग्य महानुभाव थे। आपने अपने जीवनकाल में बहुत सी यात्राये करीं तथा कराईं जिसमें काफी सम्पत्ति व्यय की। आपका स्वर्गवास सं० १६६४ के दूसरे वैसाखमें हुआ। आपके लाला खैरातीलालजी व लाला बाबूमलजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला खैरातीलालजी :—आपका जन्म सं० १६३४ के माघ शुक्ला ६ को हुआ। आप योग्य पिताके योग्य पुत्र थे। आप व्यापार कुशल, अनुभवी एवं मिलनसार सज्जन थे। आपको बच-पनसे ही व्यापारका बहुत शौक था तथा इसीसे आपने अपने पिताजी द्वारा चमकाये हुए व्यापारको योग्यता एवं सफलता पूर्वक संचालित किया। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण

एवं देहलीके प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। जवाहरातके व्यापारमें आपकी दृष्टि बारीक थी। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे इस व्यवसाय मे बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। इसके अतिरिक्त आपने अपने परिवारके रुतबे व सम्मानको बहुत बढ़ाया। आप देहली तथा बाहर की जैन समाजमें प्रतिष्ठित एवं माननीय व्यक्ति गिने जाते हैं। आप देहलीकी व्यापारिक समाजमें भी सम्माननीय समझे जाते हैं।

आप धार्मिक एव परोपकारके कामों में भी सहायता प्रदान किया करते थे। देहलीके मालीवाड़ेमें आपने अपने पिताजीकी आज्ञानुसार एक धर्मशाला बनवायी है, जिसमें करीब अस्सी हजार रुपये से अधिक व्यय हुआ होगा। यह धर्मशाला आज भी सुचारु रूपसे चल रही है। आपने श्रीजीकी पौशालका भी पुनर्निर्माण कराया जिसमे बीस हजार रुपयेसे अधिक आपने अपने पाससे लगाया। आपने मोठ की मसजिद पर स्थित छोटे दादाजीके स्थानपर एक सुन्दर जिन मन्दिरका निर्माण कराया। देहलीके नौघरे व श्रीचेलपुरीके मन्दिरोंका व मोठ की मसजिद की श्री दादावाड़ी तथा मन्दिरका और श्रीजीकी पौशालका प्रवन्ध भी आप बहुत योग्यता पूर्वक तथा सुचारु रूपसे करते रहे। इन सब संस्थाओं को आपके प्रबन्धने पुनर्जीवन दिया है तथा आपके प्रबन्धसे इन सबमें बहुत तरक्की हुई है। देहली की कई संस्थाओं को आपकी ओरसे सहायता तथा प्रोत्साहन मिलता रहता है। खेद है कि आपका हृदयकी गति रुक जानेसे मिती कार्तिक वदी १४ (दूसरी) शुक्रवार ता० १३नवम्बर सन् १९३६को रातके आठ बजे एकदम स्वर्गवास हो गया। आपकी मृत्युसे देहलीकी जनता ने बहुत शोक मनाया। आप बड़े सरल स्वभाववाले, नीतिज्ञ तथा मिलनसार सज्जन थे। आपके अन्दर एक अजीव प्रकारकी सहन शक्ति थी। आपके स्वभावसे सब मनुष्य सन्तुष्ट रहा करते थे। आपके मीट्ठमलजी, जवाहरलालजी, नेमचन्दजी, निहालचन्दजी तथा विमलचन्दजी नामक पांच पुत्र विद्यमान हैं।

लाला मिट्ठूमलजी एव जवाहरलालजी का जन्म क्रमशः संवत् १९६० तथा १९७३ में हुआ है। आप दोनों बन्धु बहुत मिलनसार हैं तथा व्यापार संचालनमे तत्परतासे सहयोग दे रहे हैं।

लाला बाबूमलजी.—आपका जन्म सवत् १९४२ मे हुआ है। अपने ज्येष्ठ भ्राताकी मृत्यु के पश्चात् सारे परिवारका भार आपके कंधोंपर पड़ गया है जिसे आप अच्छी तरह चला रहे हैं। आप धर्म स्नेही व्यक्ति हैं तथा हर एक धार्मिक कार्योंमें बहुत तत्परतासे भाग लेते रहते हैं। आप मिलनसार व्यक्ति हैं।

आपके छगनलालजी, हजारीलालजी, सरदारसिंहजी एव लखमीचन्दजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। इनमे छगनलालजीका जन्म सं० १९६९ में हुआ है। आप भी उत्साही तथा मिलनसार युवक हैं और व्यापार मे भाग ले रहे हैं। आपके शेरसिंहजी व बहादुरसिंजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं।

लाला नवलकिशोरजी खैरातीलालजीका परिवार, देहली
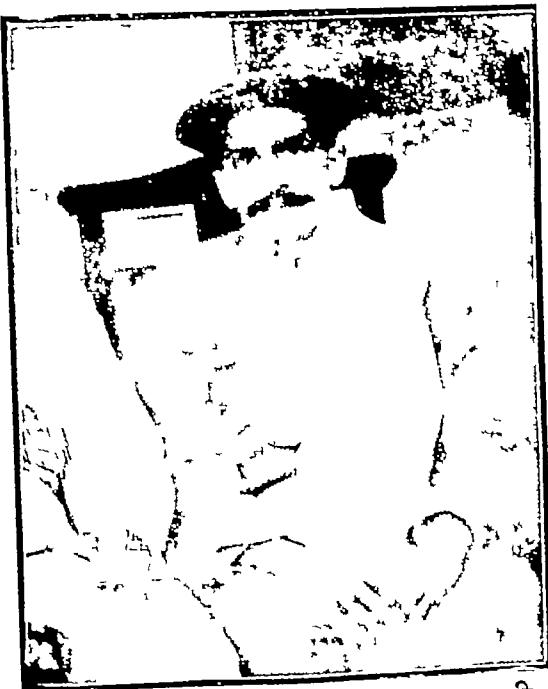
बाबू छगनलालजी S/o ला० बाबूमलजी
राक्यान, देहली

बाबू जवाहरलालजी S/o ला० खैरातीलालजी
राक्यान, देहली

लाला नन्हेमलजीः—आपका जन्म संवत् १९१५ में हुआ। आप पहले तो लाला नवलकिशोरजीके शामलात मे जवाहरातका व्यापार करते रहे। इसके पश्चात् आप अलग होकर अपना स्वतन्त्र रूपसे जवाहरातका व्यापार करने लगे। आप भी व्यापार मे कुशल तथा जवाहरातके व्यापारमे बारीक नजर रखनेवाले सज्जन थे। आपने अपनी हिकमतसे और कार्यचातुरीसे बहुत सी सम्पत्ति कमाई। आप देहलीके नामी जौहरी तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास संवत् १९८५ में हो गया। आपके लाला नत्थूमलजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला नत्थूमलजीका जन्म संवत् १९४७ में हुआ। आप अपने पिताजीके साथ व्यापार में योग देते रहे। आप भी बहुत मिलनसार सज्जन थे। आप बहुत सरल प्रकृतिके व धार्मिक पुरुष थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८७ मे हो गया। आपके सुमतिदासजी, शीतलदासजी, रतनलालजी, धनपतसिंहजी, हरकचन्दजी एवं प्रेमचन्दजी नामक छः पुत्र हुए। इनमे रतनलालजी की संवत् १९९१ में बहुत अल्पावस्थामें मृत्यु हो गई। आपका जन्म संवत् १९७४ मे हुआ था। आपने एफ० एस० सी० की परीक्षा भी प्राप्त कर ली थी। आप विद्याव्यसनी तथा उत्साही नवयुवक थे।

लाला सुमतीदासजी तथा शीतलदासजीका जन्म क्रमश सम्वत् १९६७ की पोस सुदी ३ व सं० १९७१ की पोस सुदी ५ को हुआ। आप दोनों बन्धु मिलनसार एवं उत्साही हैं। वर्त्तमान मे अपने फर्मके जवाहरातके व्यापारका सारा काम आज आप दोनो ही बड़ी सफलता पूर्वक चला रहे हैं। शेष सब पढ़ते हैं। लाला शीतलदासजी के सुरेन्द्रकुमारजी, महेन्द्रकुमारजी एवं राजेन्द्रकुमारजी नामक तीन पुत्र हैं।

यह सारा परिवार देहलीकी श्रीमाल एवं ओसवाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। लाला नवलकिशोरजी वाले मे० नवलकिशोर खैरातीलाल के नामसे तथा लाला नन्हेमलजी वाले मे० नन्हेमल नत्थूमलके नामसे अपना अलग अलग स्वतन्त्र रूपसे जवाहरातका व्यापार कर रहे हैं।

फाफू

राय सुखराज रायबहादुर का खानदान, भागलपुर

इस परिवारका इतिहास भी बहुत ही गौरवशाली और प्राचीन है। आपलोगोंका यों तो मूल निवासस्थान राजपूतानाका है, मगर आप लोग स्वाधीन अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहानके शासनकालमे राजपूतानासे देहली आये थे। आपलोग फाफू गोत्रीय श्री जैन श्वे० मन्दिर आम्नायको माननेवाले हैं।

इस खानदानमें राय मोहनजी बड़े प्रतापी पुरुष हुए। रायमोहनजीके पूर्वज भी देहलीमें मुगलसम्राट अकबर और शाहजहाके शासन काल मे उच्च पदोंपर अधिष्ठित थे।

राय मोहनजीः—आप दिल्लीमें सम्माननीय व्यक्ति हो गये हैं। तत्कालीन मुगल सम्राट जहांगीर के राज्य कालमें ही आपको "राय" का खिताब पुश्तहापुश्तके लिये इनायत हुआ था। आप बड़े योग्य तथा कार्य्यकुशल सज्जन थे। आप सम्राट द्वारा पांच हजार सेनाके नायक बनाये गये थे तथा एक बडी जागीर भी आपको इनायत की गई थी।

राय मोहनजी धार्मिक क्षेत्रोंमें भी विशेष कार्य्य करनेवाले व्यक्ति हो गये हैं। कहा जाता है कि आचार्य्य श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पांण्डित्य पूर्ण जैन धर्म व सिद्धान्तोंके प्रतिबोध और राय मोहनजीके प्रभावके कारण सम्राटने कई जैन धर्मके मन्तव्यों को स्वीकार कर लिया था। विशेषतः सम्राट जीवहिंसा न होने देनेके पक्षपाती हो गये थे। राय मोहनजीका प्रभाव बहुत ही बढ़ा हुआ था। आप के हरदेवजी नामक एक पुत्र हुए।

राय हरदेवजी :—राय हरदेवजी कर्त्तव्य परायण एवं परिश्रमी व्यक्तियोंमेंसे एक हैं। आपने अपने पैरोंपर खड़े रहकर अपनी सारी स्थितिको बनाया था। आप बड़े साहसी और धर्मशील तथा कर्त्तव्यशील व्यक्ति थे। जिस समय सम्राट शाहजहांके शासनकालमें उनके पुत्रोंके बीच राज्य प्राप्तिके लिये आपसमें झगड़ा होने लगा उस समय आप भी शाहजहांके दरबारी थे। सम्राट की मौजूदगीमें किसी भी पुत्र का पक्ष लेना अधार्मिक समझकर आप अपनी सारीसम्पत्ति अपने भाई अमृतलालजी को देकरबंगालकी यात्राके लिये रवाना हुए। घूमते २ आप सन् १६४८ में बिहारके पूर्णिया नामक स्थानमें आये और यहांपर साधारण स्केलपर अपना व्यापार प्रारम्भ किया। मगर जो व्यक्ति होनहार व चमकनेवाले होते हैं वे चाहे जिस परिस्थितिमें क्यों न हों शीघ्र ही अपनी प्रतिभा से उन्नत हो जनताके सन्मुख आ जाते हैं। इसी प्रकार की घटना राय हरदेवजीके साथ घटी। आपने अपनी व्यापार चातुरीसे व्यापारमें बहुत सफलता प्राप्त की और अपनी बहुतसी जमीदारी भी कर ली। आपने पूर्णिया में ही अपना स्थायी निवासस्थान बना लिया था। आपके शम्भुरायजी नामक एक पुत्र हुए।

राय शम्भुरायजी अपने व्यापारको सफलता पूर्वक संचालित करते हुए सन् १७३८ में स्वर्गवासी हुए। आपके मजलिसरायजी नामक एक पुत्र हुए।

राय मजलिसरायजी—आप इस खानदानमें विशेष प्रतापी, परोपकारी तथा गरीबोंके प्रति हमदर्दी रखनेवाले महानुभाव थे। कितने ही निधन परिवारोंको आपकी ओरसे सहायता दी गई होगी। आप बड़े उदार, लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपके पुत्र सलामतरायजी भी गरीबोंके प्रति प्रेम रखनेवाले तथा परोपकारी पुरुष थे। आप कार्य्य कुशल तथा योग्य व्यवस्थापक थे। आपने अपनी जमीदारीकी आय बढ़ाई व ब्रिटिश गवर्नमेंट का गहरा विश्वास हासिल किया। आपने कई जैन मंदिर बनवाये तथा जीव हिंसा न होने देने के लिये बहुतसे कार्य्य किये। आपने अपनी जमीदारीमें मछलीका बन्दोबस्त देना बिलकुल बन्द कर दिया था हालांकि इसके करनेसे आपकी आय भी कुछ घट गई थी। आप सन् १८३८ में स्वर्गवासी हुए। आपके लेखराजरायजी नामक एक पुत्र हुए।
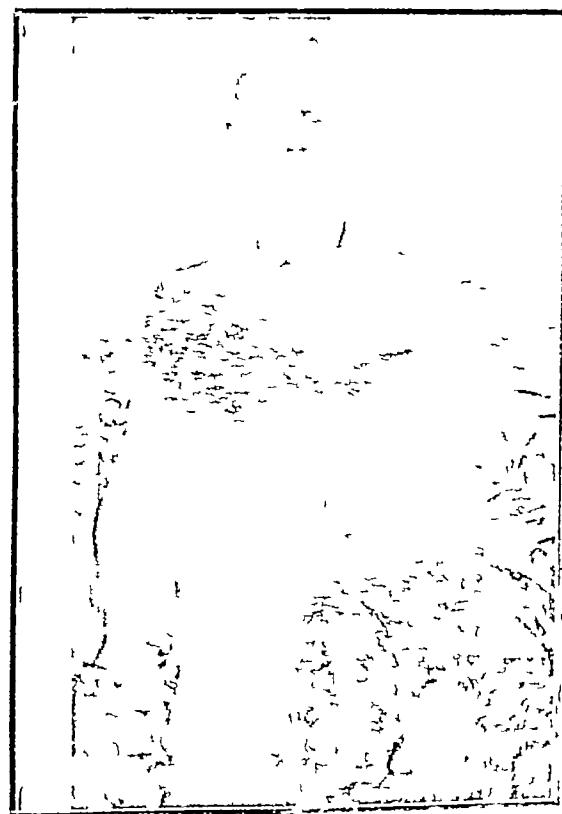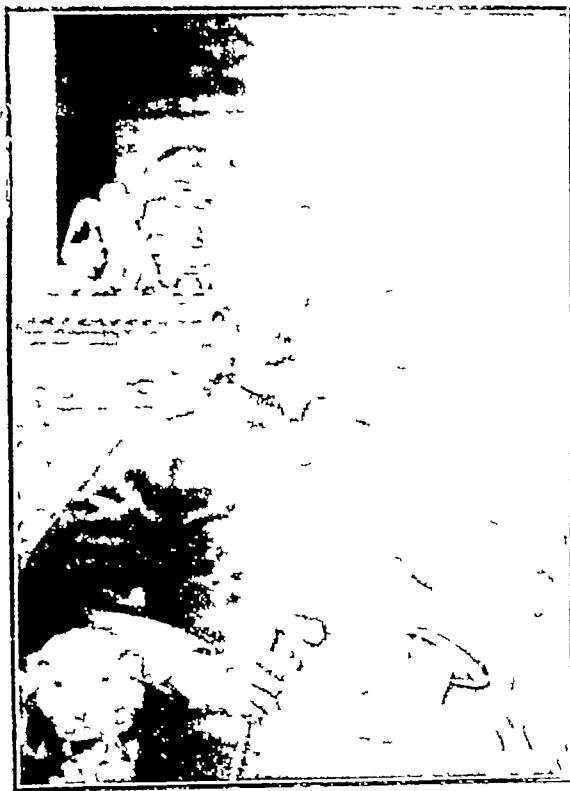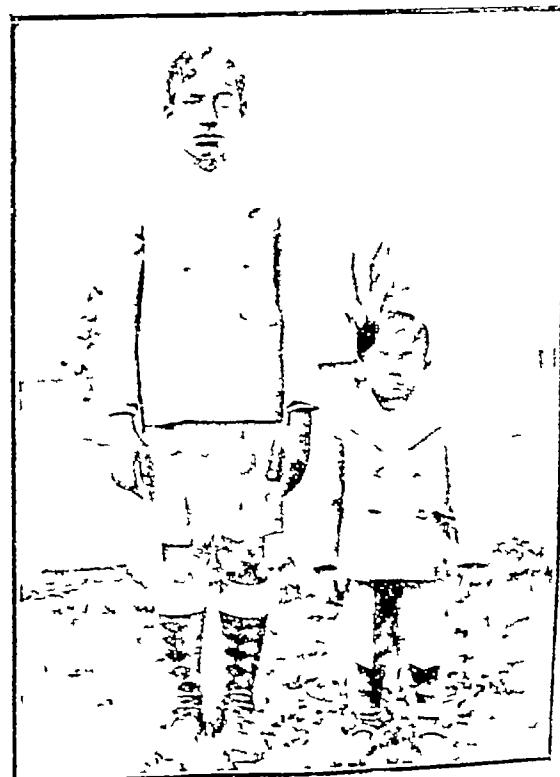
श्रीलेखराजरायजी :—आपका जन्म सन् १८३६ में हुआ। आपकी नाबालगीमें ही आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया था। अतः आपके स्टेट की सारी व्यवस्था कोर्ट आफ वार्ड ने की। बाबू लेखराजरायजी भी अपने परिवार सहित बिहार सब डिवीजनके राजगिर नामक स्थानपर चले गये। बालिग होनेपर आप अपने स्टेटकी व्यवस्थित रूपसे व्यवस्था करते रहे। आपका स्वर्गवास सन् १८८७ में हुआ। आपकी मृत्युके समय आपके पुत्र सुखराजरायजीकी उम्र केवल चार वर्षकी थी।

राय बहादुर सुखराजरायजी : - आपका जन्म सन् १८७७ में हुआ। आपकी अतीव बालक ऊमर होनेके कारण और अपने पतिकी मृत्यु हो जाने से आपकी सुयोग्य माताजीने अपनी स्टेट का सारा कार्य्य भार कोर्ट आफ वार्डके सुपुर्द कर राय बहादुर सुखराजरायजी की शिक्षाकी ओर विशेष लक्ष दिया। आपकी माताजी बड़ी धार्मिक तथा योग्य महिला हैं। आपके ऊपर भी आपकी माताजीके गुणों का पूर्ण असर पड़ा है तथा आपका जीवन कई अच्छे गुणोंसे परिपूर्ण रहा है। आपके माताजीकी वय करीब ८५ वर्ष की होंगी। आप वर्त्तमान मे भी जीवित हैं तथा धर्म ध्यानमें अपना समय बिताती हैं।

रा० ब० सुखराजरायजी ने सन् १८६७ में अपनी स्टेटका कार्य्य सम्हाला। आप नीतिज्ञ व्यवहार कुशल एवं मिलनसार सज्जन हैं। आप में व्यवस्थापिका शक्ति अच्छी है। अपनी स्टेटका कार्य्य भार आपने अपने हाथमें लेनेके बाद सारी स्टेटकी काया पलट कर दी है। आपने अपनी व्यापार चातुरी तथा योग्यतासे अपनी आय को बढ़ाया और सारे बिहारके अन्तर्गत अपना प्रभाव स्थापित कर दिया। आप ही सबसे प्रथम भागलपुर में आकर निवास करने लग गये। आपने भागलपुरमें बड़ा भव्य तथा दर्शनीय बङ्गला बनवाया है जिसका फोटो इस ग्रन्थमें दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त आपने अपनी स्थायी सम्पतिको बढ़ाया और जनतामे लोकप्रियता हांसिल की।

आपने बहुत उत्साहके साथ सार्वजनिक कार्योंमें हाथ बटाया। कई ऊंचे २ पदों पर रहकर आप जनताको सेवा करते आ रहे हैं। आप भागलपुर म्यु० के कौन्सिलर, डिस्ट्रिक्ट-बोर्डके मेम्बर व प्रांतीय कौंसिलके मेम्बर भी रह चुके हैं। आपकी इन सेवाओं के उपलक्षमें गवर्नमेंट ने आपको आनरेरी मजिस्ट्रेट भी नियुक्त कर सम्मानित किया था। इतना ही नहीं वरन् आप स्टेट कौन्सिलके मेम्बर, सेण्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली के मेम्बर तथा ई० आई० आर० की अडव्हायजरी कमेटी के मेम्बर हैं।

आपको विद्या प्रचारसे भी बड़ा प्रेम है। आपने प्रान्तीय विश्वविद्यालयको २००००) बीस हज़ार रुपये दिये। इसके अतिरिक्त आपने भागलपुर म्युनिसिपैलिटीको तीस हजार रुपये दिये। म्युनिसिपैलिटीने इसके उपलक्षमें लाजपत पार्क के बाजारका नाम आपके नामपर रखकर आपके प्रति कृतज्ञता प्रगट की है। अपनी जातिके लोगोको भी आपने बहुत मदद पहुचाई है। आप विचारशील तथा अनुभवी सज्जन हैं।

आपकी इन सब सेवाओं से प्रसन्न होकर ब्रिटिश गवर्मेण्टने आपको "राय बहादुर" की पदवीसे विभूषित किया। इसके अतिरिक्त देहली दरबारके समय आपको गवर्मेण्टने मेडल तथा सार्टिफिकेट आफ ऑनर भी इनायत किया था। आपका ब्रिटिश गवर्मेण्ट तथा भागलपुरकी जनतामें अच्छा सम्मान है। आप यहां के प्रतिष्ठित रईस गिने जाते हैं। आपकी बिहारमें बहुत बड़ी जागीरी है जिसका आप ही योग्यता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आपकी फर्मपर हुण्डी चिट्ठी व बैंकिंगका व्यवसाय भी होता है।

आपका स्वभाव सरल व सादा है। आप वायसराय की कौंसिलके मेम्बर भी थे। आपने नाथनगर में एक मकान बनवाकर तथा कुछ जमीन प्रदानकर एक हायस्कूल स्थापित किया है। इसी प्रकार सार्वजनिक कामोंमें आप हाथ बटाते हैं। आप बड़े धार्मिक पुरुष हैं। आपने नाथनगर में एक बहुत ही सुन्दर कांचकी जड़ाईका मन्दिर बनवाया है। यह मन्दिर भागलपुर के दर्शनीय स्थानों में से एक है। आपके रायकुमारसिंहजी, अभयकुमारसिंहजी तथा जयकुमारसिंहजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं।

बाबू रायकुमारसिंहजी—आपका जन्म सन् १८६७ में हुआ। आप योग्य, मिलनसार, शिक्षित तथा विचारवान युवक हैं। आप वर्त्तमानमें अपने पिताजीसे अलग रहते तथा अपने हिस्सेकी आई हुई स्टेट का योग्यतापूर्वक सञ्चालन कर रहे हैं। आपने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। आपके सुयशकुमारसिंहजी एवं सुदर्शनकुमारसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

बाबू अभयकुमारसिंहजी—आपका जन्म सन् १६०४ में हुआ। आप महत्वाकांक्षी तथा मिलनसार हैं। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण और आप अण्डर ग्रेजुएट तथा उत्साही युवक हैं। आपके नवकुमारसिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। बा० जयकुमारसिंहजी का जन्म सन् १६२४ का है। आप अभी पढ़ते हैं। बाबू अभयकुमारसिंहजी अपने पिताजीके साथ अपनी जमींदारी की व्यवस्थामें योग दे रहे हैं।

आपका खानदान भागलपुरमें बहुत ही प्रतिष्ठित समझा जाता है। राय सुखराजराय बहादुर की भागलपुर की कोठी बहुत ही सुन्दर बनी हुई है। इस कोठीके बराबर बिहारमें कोई भी दूसरी कोठी नहीं है।

नागर

श्री ठाकुर पेमाजी का खानदान, रिंगणोद

श्रीमाल जातिकी स्थापनाके समय पँवार जगदेवजीके वंशज श्रीपालजी भीनमालमे ही रहते थे। श्रीपालजीके सहदेवजी, मानसिंहजी एवं पासदंतजी नामक तीन पुत्र हुए। पासदन्तजीके शिवराजजी, शिवराजजीके अजदेवजी एवं भीमपालजी नामक पुत्र हुए। इनमेंसे अजदेवजीके रणजीतसिंहजी, मालमसिंहजी एवं रामसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। इसी
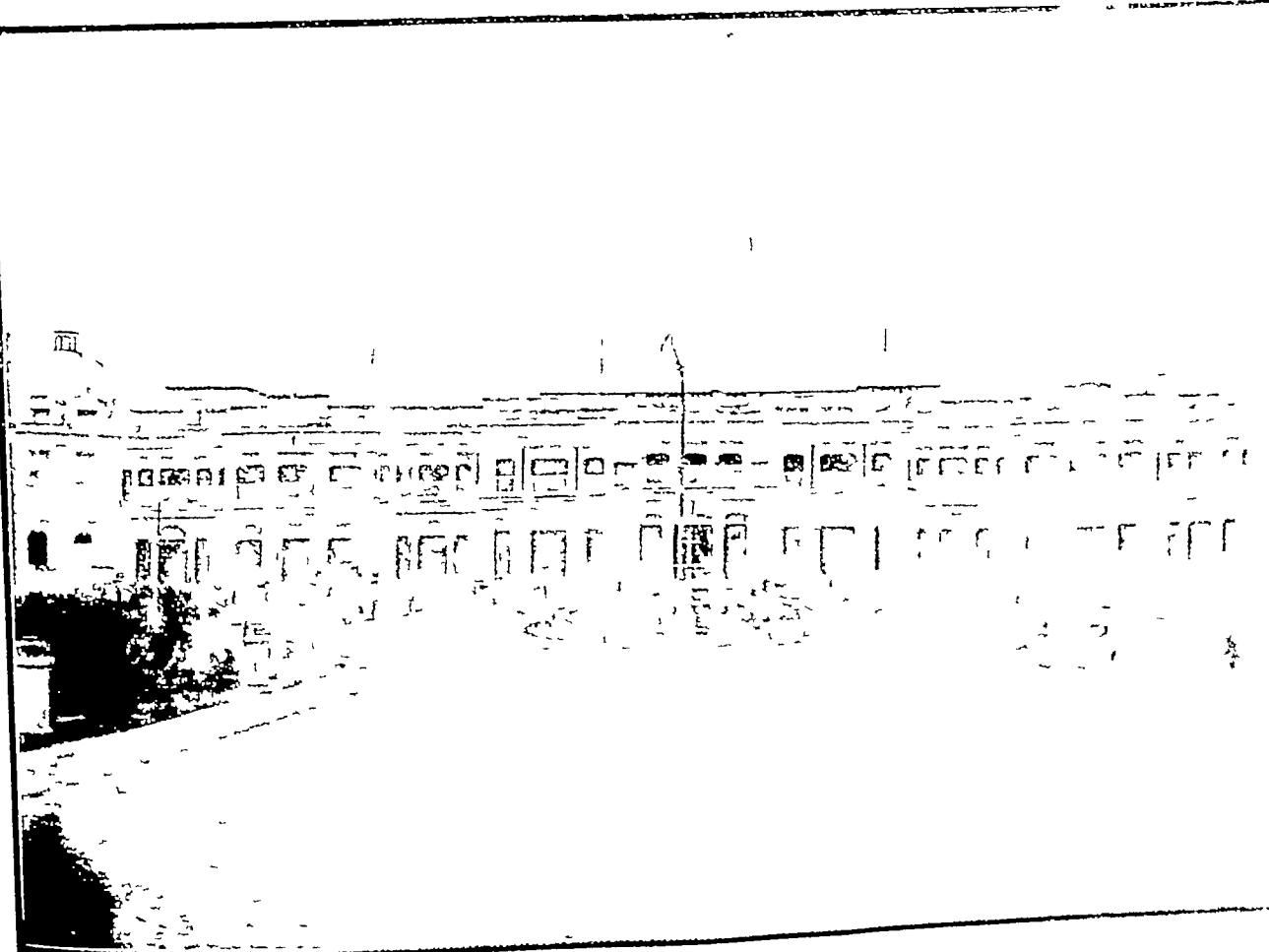
प्रकार भीमपालजीके मालाजी तथा पेमकरणजी, मालाजीके कोदूरमलजी, कोदूरमलजीके पृथ्वीराजजी तथा पृथ्वीराजजीके भेरुदानजी व चन्द्रसेनजी नामक दो सन्तानें हुईं। पेमकरण जीके सांवलजी एवं पीतोजी, सांवलजीके भोजाजी तथा भोजाजीके धनजी तथा रूपाजी नामक पुत्र हुए।

इस खानदानवाले चन्द्रसेनजी तक तो भीनमालमें ही रहकर अपना कार्य्य करते रहे। इसके पश्चात चन्द्रसेनजीके पुत्र सिंहमलजी भीनमालसे मांडो आये और वहांपर अपना रुतबा व प्रभुत्व स्थापित किया। अप बड़े कार्य्य कुशल तथा योग्य सज्जन थे। आपने तत्कालीन मुसलमान बादशाहके हुक्मसे मांडोकी अच्छी व्यवस्था की जिस पर प्रसन्न होकर बादशाहने आपको मंडलोईका खिताब बक्षा। आपके सागरमलजी तथा सागरमलजीके बेनाजी नामक पुत्र हुए। आपलोग मांडोकी योग्य व्यवस्था करते रहे। तदनन्तर बेनाजीके पुत्र नैनसीजी मांडोसे बाहर निकले और संवत १४१४ की वैसाख सुदी ५ को निनौरकोटड़ी नामक गांव बसाया जो आज भी प्रतापगढ़ स्टेटमें विद्यमान है। आपके पुत्र हतीजी भी गांवकी योग्यता पूर्वक व्यवस्था करते हुए स्वर्गवासी हुए। आपके पेमाजी, मन्नाजी, धनजी, हंसराजजी तथा मेघराजजी नामक पांच पुत्र हुए।

श्री पेमाजीः—आप बड़े वीर, पराक्रमी तथा साहसी व्यक्ति थे। उस समय भारतके बादशाह एक मुसलमान थे तथा निनौरकोटड़ी भी उन्हींकी सल्तनतमें था। यह गांव मन्दसौर जिलेमें पड़ता था। इसी जिलेके अन्तर्गत रिंगणोद नामक स्थानपर भील जातिके लोगोंने उपद्रव करना शुरू कर दिया तथा हाथी भीलके नेतृत्वमें शाही हुकुमकी अवहेलना करते हुए बगावत करना प्रारम्भ कर दी। इस बातपर मन्दसौरके सूबेदारने पेमाजीको योग्य एवं साहसी समझकर उनको इस भीलका दमन करनेके लिये भेजा। श्रीपेमाजी एक सेना लेकर रिंगणोद आये और यहांपर दोनों पार्टियोंमें एक लड़ाई होनेके पश्चात् पेमाजीने भील सरदार हाथीजीको परास्त करके मार डाला। इस युद्धमें करीब दो सौ आदमी मारे गये होंगे। आपके इस बहादुरीके कार्य्य से प्रसन्न होकर बादशाहने मन्दसौर के सूबेदारके मार्फत आपको रिंगणोद परगने में नौ गांव जागीरी व टांकेदारीमें बक्षकर सम्मानित किया। पेमाजी रिंगणोदमें निवास कर अपने गांवोंकी व्यवस्था करने लगे। तभीसे आपके खानदान वाले रिंगणोदमें ही निवास कर रहे हैं। श्री पेमाजीके भोजराजजी, भारमलजी, चन्द्रभानजी, रामचन्द्रजी तथा अभेराजजी नामक पांच पुत्र हुए। इनमेंसे भोजराजजीके वंशज रिंगणोदमें आज भी विद्यमान हैं। श्री भोजराजजीके दीपचन्दजी, मनोहरदासजी, लालचन्दजी, रूपचन्दजी एव पृथ्वीराजजी नामक पांच पुत्र हुए।

इनमेंसे श्री दीपचन्दजीके वंशज बड़े रावलेवाले के नाम से तथा श्री लालचन्दजीके वंशज छोटे रावलेवाले के नामसे मशहूर हैं।

बड़े रावलेका इतिहासः—जिस समय श्री पेमाजीकी जागीरी व टांकेदारी का उनके पौत्रोंमें

विभाजन हुआ उस समय बड़े रावलेको भतरावदा, चौकी, मातामेलखी, (निम्ब) मौजा कांकरवा व अन्य छोटी-छोटी सभी जागीरोंमें बराबर भाग मिला। इसके अतिरिक्त नगदी दामी, जमीदारीके लगा व सायरमें कुछ हिस्सा भी प्राप्त हुआ। इनमेंसे मौजा काकरवा आगे जाकर इस खानदानके भाई बँटेमें श्री भगवतीसिंहजी को मिला जिनके वंशज श्रीदुलेसिंहजी आज भी उपभोग ले रहे हैं।

श्री दीपचन्दजीके रामचन्दजी, रतनसीजी व भीमसीजी नामक तीन पुत्र हुए। आप लोगो में से श्री रतनसीजी तथा भीमसीजी गोद चले गये। श्री रामचन्दजीके रतनसीजी तथा श्री रतनसीजीके भीमसीजी गोद आये। श्री भीमसीजीके गोपीजी तथा गोपीजीके मलूकचन्दजी नामक पुत्र हुए। श्री गोपीजी तक आपलोग अपने ठिकानेकी योग्यतापूर्वक व्यवस्था करते रहे।

श्रीमलूकचन्दजी—श्रीमलूकचन्दजी वीर, पराक्रमी तथा दिलेर व्यक्ति थे। आपके यहां पर उस समय परगनेकी सारी लगान वसूलीका कार्य्य भी होता था। उस समय यहाके गिरासियों (डोड़िया राजपूत) ने लगान देना बन्द कर दिया। अत श्रीमलूकचन्दजीने उन्हें दबाकर लगान वसूल करना चाहा। इसमें डोड़िया राजपूतोंने बगावत शुरू कर दी और दानों पार्टियोंमें लड़ाई छिड़ गई। इसमें श्रीमलूकचन्दजी वीरतापूर्वक लड़ते हुए मारे गये। आपके नथमलजी एवं निहालचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

श्री नथमलजीके नामपर उदयचन्दजी गोद आये। उदयचन्दजीके हरिवख्शजी, हरिबख्शजीके अजबसिंहजी, किशनसिंहजी, परथीसिंहजी एवं भगवतीसिंहजी नामक चार पुत्र हुए। इनमेंसे श्री किशनचन्दजी नि.सन्तान गुजर गये तथा परथीसिंहजी गोद चले गये। शेष श्रीअजबसिंहजी एवं भगवतीसिंहजीमें अपनी जागीरी व टाँकेदारीको विभाजन हुआ जिसमें जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं मौजा काकरव, तथा कस्बा रिंगणोद, चौकी व मूंडलामें थोड़ी २ जागीरीका हिस्सा श्री भगवतीसिंहजी के खानदान वालोंको मिला जिसका उपभोग आज तक आपके वशज ले रहे हैं। शेष जागीरी श्रीअजबसिंहजीके खानदानवालोंके रही।

श्री अजबसिंहजीका खानदान:—श्री अजबसिंहजीके नामपर श्रीपरथीसिंहजी गोद आये। श्री परथीसिंहजीके सालमसिंहजी, सालमसिंहजी के लक्ष्मणसिंहजी तथा लक्ष्मणसिंहजी के बलवन्तसिंहजी व माधवसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। आपलोग अपने ठिकानेकी उत्तम व्यवस्था करते हुए अपने खानदानके सम्मानको कायम रखते रहे। आप लोगोंके विषयमें आज भी कई रंगडपने तथा साहसकी बातें प्रसिद्ध हैं। सम्वत १७३२ की श्रावण सुदी ११ शनिवारको रिंगणोद आदि स्थानोंपर देवास नरेश (जूनियर) का राज्य स्थापित हो गया। उस समयसे आजतक देवास स्टेटने इस खानदान वालों का पहले जैसा रुतबा व सम्मान कायम रखते हुए अपनी स्टेटमें सम्माननीय कुर्सी प्रदानकर सम्मानित किया है। इस खानदानके लोग भी

श्री ठाकुर रणजीतसिंहजी, रिंगणोद

श्री ठाकुर रघुनाथसिंहजी, रिंगणोद

बाबू कचरसिंहजी वकील, मन्दसौर

श्री ठाकुर दुर्जनसिंहजी, रिंगणोद

देवास नरेशके स्वामिभक्त एवं आज्ञापालक रह रहे हैं। आप लोगोंके वीरतापूर्ण कार्य्यों एवं स्वामिभक्ति की समय समयपर स्टेटने प्रशंसा की है और आपको कई प्रकारके सम्मान इनायत कर अपना कृपापात्र बनाया है।

श्रीबलवन्तसिंहजी बड़े वीर व्यक्ति थे। आपके केशरीसिंहजी नामक एक पुत्र हुए। श्री केशरीसिंहजी बड़े अच्छे स्वभाव वाले सज्जन थे। आप भी अपने ठिकानेका कार्य्य सुचारु रूपसे करते रहे। आपका स्वर्गवास सं० १९६७ में हो गया। आपके नामपर श्रीभगवती-सिंहजीके परिवारसे श्रीजुगलकिशोरसिंहजी के बड़े पुत्र श्रीरणजीतसिंहजी गोद आये।

श्री रणजीतसिंहजी—श्रीरणजीतसिंहजी का जन्म सम्वत् १९४३ की चैत्र बदी ५ सोमवार को हुआ। आप बड़े मिलनसार एवं सादगी पसन्द सज्जन हैं। वर्त्तमान में आप ही इस खानदानके जागीर व ठेकेदारीके मौजेके प्रधान सञ्चालक एवं योग्य व्यक्ति हैं। आप सफलतापूर्वक अपने ठिकानेका कार्य्य चला रहे हैं व अपने खानदानके सम्मानको ऊँचा उठा रहे हैं। आप रिंगणोद गांव तथा जागीरीके गांवोंमे ही नहीं वरन् सारी देवास स्टेटमें प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते हैं। आप कामर्स कमेटीके मेम्बर तथा रिंगणोदमे लोकप्रिय सज्जन हैं।

सार्वजनिक कार्य्योंमें भी आप दिलचस्पीसे भाग लेते हैं। आप देवास राज सभाके सरकारकी ओरसे नामीनेटेड मेम्बर, श्रीजैन श्वेताम्बर तीर्थ रिंगणोदके चीफ सेक्रेटरी, रिंगणोद म्युनिसीपॅलिटीके मेम्बर आदि हैं। गौ सेवासे आपको बड़ा प्रेम है। रिङ्गणोद परगनेके जागीरदारोंमें राजकीय दरबारके समय आपको सबसे पहली बैठक का सम्मान प्राप्त है। सन् १९११ के देहली दरबारके समय आप देवास सरकार के साथ देहली भी गये थे। आपके जसवंतसिंहजी, उमरावसिंहजी, विक्रमसिंहजी, रामसिंहजी एवं हरिसिंहजी नामक पांच पुत्र विद्यमान हैं। इनमें श्री कुँ० जसवंतसिंहजी गड़गुच्चा परगनेमें आनरेरी एडिशनल तहसीलदार हैं। श्री कुँ० उमरावसिंहजी यहींपर काम में योग देते हैं। शेष सब पढ़ते हैं।

श्री छोटे रावले का इतिहास:—श्रीलालचन्दजीसे इस खानदान का इतिहास प्रारम्भ होता है। आप बड़े वीर पुरुष थे। कई फारसीमें लिखी हुई सनदोंसे आपकी वीरताका पूरा २ परिचय मिलता है। आपके महासिंहजी, रायसिंहजी एवं धनजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे श्री महासिंहजी सरकारी कामके सम्बन्धमें ऊनी गये थे जहांपर वीरतापूर्वक लडते हुए मारे गये। आपके स्मारक में आज भी ऊनीमें एक छत्री बनी हुई है। श्रीधनजी के उदयचन्दजी एवं खानचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। खानचन्दजीके टोडरमलजी, राजमलजी एवं जसकरणजी नामक तीन पुत्र हुए। श्रीराजमलजी बड़े वीर तथा पराक्रमी व्यक्ति हो गये हैं। आप भी अपने पराक्रमको बताते हुए लड़ाईमें मारे गये। आपके स्मारकमें रिंगणोदमें आज भी एक भव्य छत्री बनी हुई है। श्रीराजमलजीके गुमानसिंहजी एवं मोहकमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। मगर आप दोनों बन्धु छोटी छोटी ऊमरमें स्वर्गवासी हो गये। अत. श्रीराजमलजीके नाम पर आपके छोटे भ्राता श्रीजसकरणजी गोद आये। श्रीजसकरणजी बड़े शूर थे। आपने

अपने खानदान के शत्रु राजपूतोंसे वीरता पूर्वक बदला लिया था। आपके पुत्र नाहरसिंहजी छोटी ऊमरमें ही गुजर गये। अत: जसकरणजीके नामपर हीरासिंहजी गोद आये। आप सब लोग अपने ठिकानेकी योग्यता पूर्वक व्यवस्था करते रहे।

श्री हीरासिंहजी :—श्री हीरासिंहजी इस खानदानमें बहुत ही प्रसिद्ध एवं कार्य्य कुशल व्यक्ति हो गये हैं। आप प्रभावशाली, पराक्रमी तथा बहादुर व्यक्ति थे। आपने अपने खानदान-के नामको पुन: चमकाकर अपना यश बढ़ाया व खानदानके रुतबे व सम्मानमें वृद्धि की। इसके अतिरिक्त आपने अपनी जागीरीकी नई सनदें हाँसिल कीं। आपकी योग्यता एवं कार्य्य कुशलता से प्रसन्न होकर देवास स्टेट ने भी आपको २० बीघा जमीन इनाम में प्रदान करके सम्मानित किया था। यह जमीन आज भी आपके खानदान वालोंके पास विद्यमान है। देवास स्टेटमें सम्मान प्राप्त करनेके अतिरिक्त आपने अपना परिचय इतना बढ़ाया था कि आपको सिन्धिया, होलकर आदि पराक्रमी पुरुषोंने भी परवाने देकर सम्मानित किया था। राजकीय सम्बन्ध में अपना एक खास स्थान प्राप्त करनेके साथ ही साथ आपने प्रजा में भी अपनी लोकप्रियता काफी बढ़ा ली थी। आपके जोरावरसिंहजी, जोरावरसिंहजी के भगवतीसिंहजी एवं भगवतीसिंहजीके किशोरसिंहजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग भी ठिकानेका कार्य्य संचालन कुशलता पूर्वक करते रहे।

श्री भगवतीसिंहजी :—श्री भगवतीसिंहजी बड़े प्रभावशाली एवं वजनदार व्यक्ति थे। आपका रिंगणोदकी जनतामें अच्छा सम्मान था। इसी प्रकार स्टेटमें भी आप प्रतिष्ठित व्यक्ति गिने जाते थे। आप बड़े धार्मिक एवं योग्य व्यक्ति थे। आपने पैदल रास्तोंसे चारो धामकी यात्राएँ की थीं।

श्री किशोरसिंहजी :—श्री किशोरसिंहजी का जन्म सम्वत् १६३२ में हुआ। आप बड़े व्यवस्था कुशल एवं उदार हृदयवाले व्यक्ति थे। आपने मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की थी। यह वह समय था जब कि चारों ओर अविद्याधंकार छा रहा था तथा पढ़े लिखोंकी संख्या बहुत कम पाई जाती थी। आप शिक्षित, व्यापार कुशल तथा अपनी प्रजाके अच्छे व्यवस्थापक थे। आपका रिंगणोद तथा बाहर बहुत सन्मान था। आपके कार्य्यों से देवास दरबार बहुत प्रसन्न रहा करते थे। आपकी मृत्युके पश्चात् देवास दरबारने आपके पुत्र श्रीरघुनाथसिंहजी के पास एक शोक पत्र भेजा था जिसमें आपकी व्यवस्थापिका शक्ति एवं शासन कुशलता की भूरि २ प्रशंसा की थी। आप देहली दरबारमें भी गये थे। आपका स्वर्गवास सं० १६८४ में हो गया। आपके रघुनाथसिंहजी, सज्जनसिंहजी, मदनसिंहजी एवं मोहनसिंहजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। इनमेंसे श्रीसज्जनसिंहजी तो गोद चले गये हैं।

श्रीरघुनाथसिंहजी :—श्रीरघुनाथसिंहजीका जन्म संवत् १६५६ में हुआ। आप शिक्षित, योग्य तथा कार्य्यकुशल व्यक्ति हैं। आपको इतिहास संकलनसे विशेष प्रेम है। आप इस समय अपने ठिकानेकी व्यवस्था योग्यता एवं सफलता पूर्वक कर रहे हैं। आपही इस समय

इस ठिकानेमें सबसे बड़े एवं प्रधान संचालक हैं। आपकी योग्यता एवं कार्य्य कुशलता व कानूनी जानकारीसे प्रसन्न होकर देवास स्टेटने आपको आनरेरी एडिशनल तहसीलदारके पदपर नियुक्त कर सम्मानित किया है। आप बड़े मिलनसार एवं विचारक सज्जन हैं। आपका रिंगणोद एवं बाहरकी जनतामें बड़ा सम्मान है। आप समाज सेवी तथा साहसी व्यक्ति हैं। रिंगणोदमें एक समय धाड़ा पड़ा। इस धाड़ेके समय आपने साहस पूर्वक धाड़ियोंका सामना किया व उनको खदेड़ दिया। इस साहसपूर्ण कार्य्यसे प्रसन्न होकर देवास सरकार ने आपको खिलअत प्रदान कर सम्मानित किया।

आप सार्वजनिक कामोंमें भी दिलचस्पीसे भाग लेते रहते हैं। आप रिंगणोदकी लायब्रेरी तथा क्लबके प्रेसिडेंट एवं लोकप्रिय सज्जन हैं। आपने अपने पिताजी द्वारा उद्घाटित मंदिरको पूर्ण करके उसमें प्रतिमाजी स्थापित करवाईं। कृषि शास्त्र का भी आपको अच्छा ज्ञान है। आपने अपने पिताजीकी मृत्युके पश्चात् सारे ठिकाने की व्यवस्था कुशलता पूर्वक की व हवेली वगैरह सारी नई बनवाई। यह हवेली संवत् १९७३ में पास की नदीकी जोरदार बाढ़के टक्करसे गिर गई थी। आप यहांकी कामर्स सभाके मेंबर हैं तथा देवास स्टेटकी राज सभाके मेम्बर भी रह चुके हैं। आपके व्रजराजसिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। श्रीमदनसिंहजी एवं मोहनसिंहजी इस समय उज्जैनमें व्यवसाय कर रहे हैं।

छोटे रावलेके अन्डरमें मौजा मेंहदी, मूंडला, माता मेलकी (निस्व) मौजा रनारा, व कसबा रिङ्गणोद पांती (निस्व) गांव हैं। इसके अतिरिक्त आपके हिस्सेमें थोड़ी थोड़ीसी जागीरी है। सायरमें कुछ हिस्सा भी था।

बड़ा रावला तथा छोटा रावला इन दोनों ठिकानोंको देवास स्टेटकी ओरसे निम्न लिखित सम्मान प्राप्त हैं।

दो चपरासी, छड़ी, हरकारा रङ्ग सूर्ख, मुहरसिक्का, नुकराई, एक पायगा, घोड़े दो, चंवर, दस्त नुकराई दो, म्याना रङ्ग सूर्ख वन्नाती नग एक आदि। इनके अतिरिक्त देवास स्टेटमें आप लोगोंको ताजीम भी प्राप्त है तथा खुशीके समय पोशाक भी अता फरमाई जाती है और शोकके समय पगड़ी व दुशाले बक्षे जाते हैं।

ठिकाना काकरवा का इतिहास :—जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं कि श्रीहरिबख्शजीके पुत्र श्री अजबसिंहजी व श्री भगवतीसिंहजी में भाई बांटेके अनुसार जागीरी व टांकेदारीकी जागीरीमें विभाजन हो गया। उस समय इस ठिकानेको कांकरवा गांव व रिङ्गणोद तथा मूंडलामें थोड़ी २ जागीरी मिली। श्रीभगवतीसिंहजी के भवानीसिंहजी, भवानीसिंहजीके प्रतापसिंहजी, नाहरसिंहजी एवं पर्वतसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए। श्रीप्रतापसिंहजी के नामपर प्यारसिंहजी गोद आये। इसी प्रकार प्यारसिंहजीके नामपर श्रीजुगलसिंहजी गोद आये। श्रीपर्वतसिंहजीके प्यारसिंहजी एवं जुगलसिंहजी नामक दो पुत्र हुए जो उक्त लिखे अनुसार गोद चले गये।

श्रीजुगलसिंहजी :—आप बड़े शुद्धाचरण वाले एवं धर्म प्रेमी सज्जन थे। आपका स्वभाव भोला था। आपने अपने ठिकानेकी ठीक व्यवस्था की। आपका स्वर्गवास सं० १९९८ में हो गया। आपके रणजीतसिंहजी एव दुलेसिंहजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं। इनमेंसे श्रीरणजीतसिंहजी तो श्रीअजबसिंहजी के परिवार वाले बड़े रावलेके ठाकुर श्रीकेशरीसिंहजी के नामपर गोद चले गये हैं।

श्रीदुलेसिंहजी :—आपका जन्म संवत् १९५२ की चैत्र वदी ५ को हुआ। आप साहसी, उत्साही एव मिलनसार व्यक्ति हैं। आप अपने ठिकानेकी सफलता पूर्वक व्यवस्था कर रहे हैं। आपको देवास सरकार ने एक चोरको पकड़नेके उपलक्ष में एक बन्दूक भी इनायत की हैं। आपके नरेन्द्रसिंहजी एवं नरभेसिंहजी नामक दो पुत्र विद्यमान हैं। श्रीदुलेसिंहजी वर्त्तमानमें कोर्ट आफ वार्डके आनरेरी असिस्टण्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं।

यह सारा खानदान देवास स्टेटके बहुत ही प्रतिष्ठित एवं प्रमुख खानदानों मे से एक है। श्रीमाल समाजमें इस खानदानका इतिहास चमकता हुआ रहा है। आपके पूर्वजोंने कई समय कई लड़ाइयों में वीरतापूर्वक लड़कर हंसते २ अपने प्राणोंको अपने स्वामी की स्वामिभक्ति में अर्पित कर दिये हैं। इस खानदानमें बड़े रावले वालों की रिङ्गणोद परगनेके ठाकुरोंमें पहले नम्बरकी बैठक व छोटे रावले वालोंकी दूसरे नम्बरकी बैठकका सम्मान प्राप्त है। इस खानदानके कई शहीदोंके स्मारकमें आज भी छत्रियां बनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त बहादुरीसे मर जाने वालों की धर्मपत्नियां सतियाँ हुईं जिनके स्मारक भी आज विद्यमान हैं। इस खानदानवालोंके पास आज भी बहुतसे रुक्के मोजूद हैं।

यह सारा खानदान हमेशासे अपने मालिक श्री देवास महाराज साहबका स्वामिभक्त तथा पूर्ण रूपसे सेवा करनेवाला रहा है।

सेठ गुलाबसिंहजी फतेसिंहजी नागर का खानदान, कानपुर

यह परिवार करीब १०० वर्षोंसे कानपुरमे निवास कर रहा है। आप लोग नागर गौत्रीय श्री जै० श्वे० मं० आम्नायको माननेवाले हैं। इस खानदान में लाला श्रीचन्दजी हुए।

लाला श्रीचन्दजी :—आप बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप उन दिनों गवर्मेन्टके ट्रेझरर थे। आप योग्य व्यक्ति थे। आपने कानपुरमें एक बहुत बड़ा मकान बनवाया। आप ही के बादसे आपके परिवारका इतिहास मिलता है। आपके उदयभानजी तथा उदयभानजीके ताराचन्दजी नामक पुत्र हुए।

लाला ताराचन्दजी अपने पुत्र निहालचन्दजीके साथ कानपुरमें मे० ताराचन्द निहालचन्द के नामसे बहुत बड़े स्केलपर कपड़ेका व्यवसाय करते थे। आपकी फर्म कानपुरमें कपड़े-

की वहुत बड़ी फर्म समझी जाती थी जिसपर कई यू० पी० के रईसोंके खाते वगैरह थे। आप दोनों पिता पुत्र व्यापार कुशल तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप दोनों ही ने अपने सारे व्यापारको सफलता पूर्वक संचालित किया। लाला निहालचन्दजीके नामपर माणिकचन्दजी गोद आये।

लाला माणिकचन्दजी बड़े धर्मात्मा तथा आरामप्रिय व्यक्ति थे। आपके स्वर्गवास हो जानेके पश्चात् आपके नामपर लाला गुलाबसिंहजी गोद आये।

लाला गुलाबसिंहजीः—आपका जन्म सं० १६२८ में हुआ। आप बड़े धार्मिक विचारवाले, कार्य्य कुशल एवं योग्य व्यक्ति हैं। कानपुरमें आपने एक दस हजार वर्ग गजका प्लाट घेरकर उसे गुलाबगञ्जके नाम से बसाया है जिससे आपको प्रति वर्ष बहुत बड़ी किराये-की आमदनी हो जाती है। आपने अपने खानदानके सन्मान व स्थाई सम्पत्तिको बहुत बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त आपने इसी गुलाबगंज के अन्तर्गत एक फते महाराज थिएटर नामक सिनेमा भी बनवाया है जो सफलता पूर्वक चल रहा है। इस सिनेमा का प्रसिद्ध नाम चित्रा है।

आप कानपुरकी जैन जनतामें प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपका गवर्मेन्टके कई बड़े २ अफसरों से मेल है। आप यू० पी०के चेम्बर आफ कामर्सके १५ सालो तक मेम्बर रहे तथा वर्त्तमानमें आप मरचेंट चेम्बर आफ कामर्सके मेम्बर हैं। आपके बाबू फतेहसिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। बाबू फतेसिंहजी का जन्म सं० १६५४ में हुआ। आप व्यापार कुशल तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। वर्तमानमें आप ही अपने सारे व्यवसाय को सफलता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आप बड़े फूर्तिले यथा योग्य हैं। आपके महाराजकुमारसिंहजी तथा लक्ष्मीनारायणसिंहजी नामक दो पुत्र हैं।

आप लोगोंके यहांपर किराया, बैङ्किग, जवाहरात तथा हुंडी चिट्ठीका व्यवसाय होता है। आपकी फर्म का नाम गुलाबसिंह फतेसिंह पड़ता है।

फोफलिया

श्री रतनलालजी छुट्टनलालजी फोफलियाका खानदान, जयपुर

इस खानदानके पूर्व पुरुषोंका मूल निवासस्थान देहली का था। आप फोफलिया गोत्र-के श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। इस परिवारमे सेठ खूबचन्दजी हुए। आप देहलीमे जवाहरातका व्यापार करते थे। आपका वहाँपर अच्छा सम्मान था। जयपुर नरेश सवाई जयसिंहजी जब देहली गये थे तब जौहरी खूबचन्दजीको अपने साथ ले आये थे। इनके अति-रिक्त जयपुर नरेशने जौहरी खूबचन्दजीको १०००) सालकी आय का एक गांव जागीरी में देकर तथा २) रोजकी तनख्वाह मुकर्रर कर बहुत सम्मानित किया। यह गांव तथा यह तनख्वाह

आपके खानदान वाले श्रीजवाहरलालजी के गुजरनेके पांच-सात सालों वाद तक बराबर मिलती रही। तत्पश्चात् स्टेटमें खालसे हो गई। सेठ खूबचन्दजीने जयपुरमे आकर अपने जवाहरातके व्यापारको सफलता पूर्वक चलाया। आपके वुधसिंहजी, विजयसिंहजी, चुन्नीलालजी तथा वहादुरसिंहजी नामक चार पुत्र हुए।

जौहरी वहादुरसिंहजी जवाहरातके व्यापारको बराबर करते रहे। आपके शत्रुसिंहजी एवं वख्तावरसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। श्रीवख्तावरसिंहजी भी जवाहरात का व्यवसाय करते थे। आपके जवाहरसिंहजी नामक एक पुत्र हुए। आप जयपुर नरेश स्व० श्रीराम-सिंहजी महाराज के साथ रहते तथा कसरत वगैरह किया करते थे। आप पर उक्त महाराजा की वड़ी कृपा रहती थी। आपके रतनलालजी नामक एक पुत्र हुए।

श्रीरतनलालजी—आपका जन्म सं० १९१९ में हुआ था। आप जवाहरातके व्यापारमे वहुत ही निपुण तथा अनुभवी सज्जन थे। जवाहरात के व्यापारमें आपकी इतनी सूक्ष्म दृष्टि थी कि आप कलकत्ता, वम्बई, मद्रास आदि दूर दूरके जौहरियोंमें प्रसिद्ध तथा वजनदार समझे जाते थे। आपने अपनी व्यापारिक प्रतिभासे अपने जवाहरातके व्यापारको चमकाया और लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जित की। आप वड़े प्रभावशाली और जयपुरकी जौहरी समाज-में वड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। आपका स्टेटमें भी बहुत सम्मान था। जयपुर नरेश जव कोई जवाहरात वगैरह खरीदते थे तव पहले सेठ रतनलालजीको वतला लिया करते थे। कई प्रसिद्ध-प्रसिद्ध जौहरी आपको गुरु कहकर पुकारते थे। आज भी जयपुरमें कई ऐसे प्रतिष्ठित तथा नामी जौहरी विद्यमान हैं जो आपके शिष्य रह चुके थे। आपका जयपुर की श्रीमाल एवं ओसवाल समाजमें अच्छा सम्मान था। आप प्रायः सभी सार्वजनिक कामोंमें सहायता प्रदान किया करते थे। आपका स्वर्गवास सं० १९९२ की कार्तिक वदी अम्मावस्या को हुआ। आपके नाम पर जोधपुरसे श्रीचम्पालालजी गोद आये।

सेठ चम्पालालजी का जन्म सं० १९३७ में हुआ। आप अपने पिताजी द्वारा जमाये हुए विस्तृत जवाहरातके व्यापार को सफलता पूर्वक करते रहे। आपका छोटी ऊमरमें ही स० १९६० में स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर वावू छुट्टनलालजी जोधपुरसे गोद आये।

वावू छुट्टनलालजीका जन्म संवत् १९६२ में हुआ। आप वड़े उत्साही तथा मिलन-सार युवक हैं। वर्त्तमानमें आप ही सारे फर्मके जवाहरातके व्यापार को योग्यता पूर्वक सञ्चालित कर रहे हैं। आप प्रायः सभी सार्वजनिक कामोंमें मदद दिया करते हैं। आपके जतन-मलजी, कानमलजी एवं मानमलजी नामक तीन पुत्र हैं।

आप लोगोंका खानदान जयपुरकी जौहरी समाजमें प्रतिष्ठित एवं मातवर माना जाता है। आप जयपुर में मे० रतनलाल छुट्टनलाल फोफलियाके नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं।

स्व० सेठ रतनलालजी फोफलिया जौहरी,
जयपुर
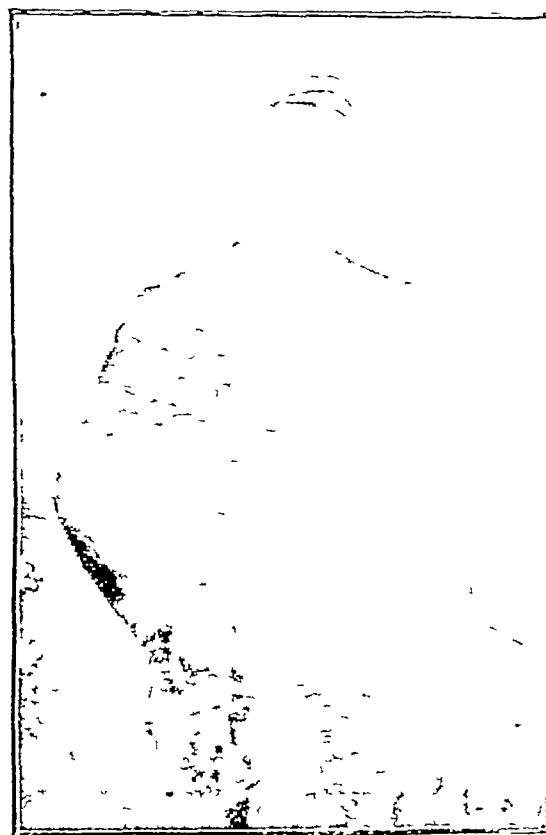
बाबू छुट्टनलालजी फोफलिया जौहरी,
जयपुर
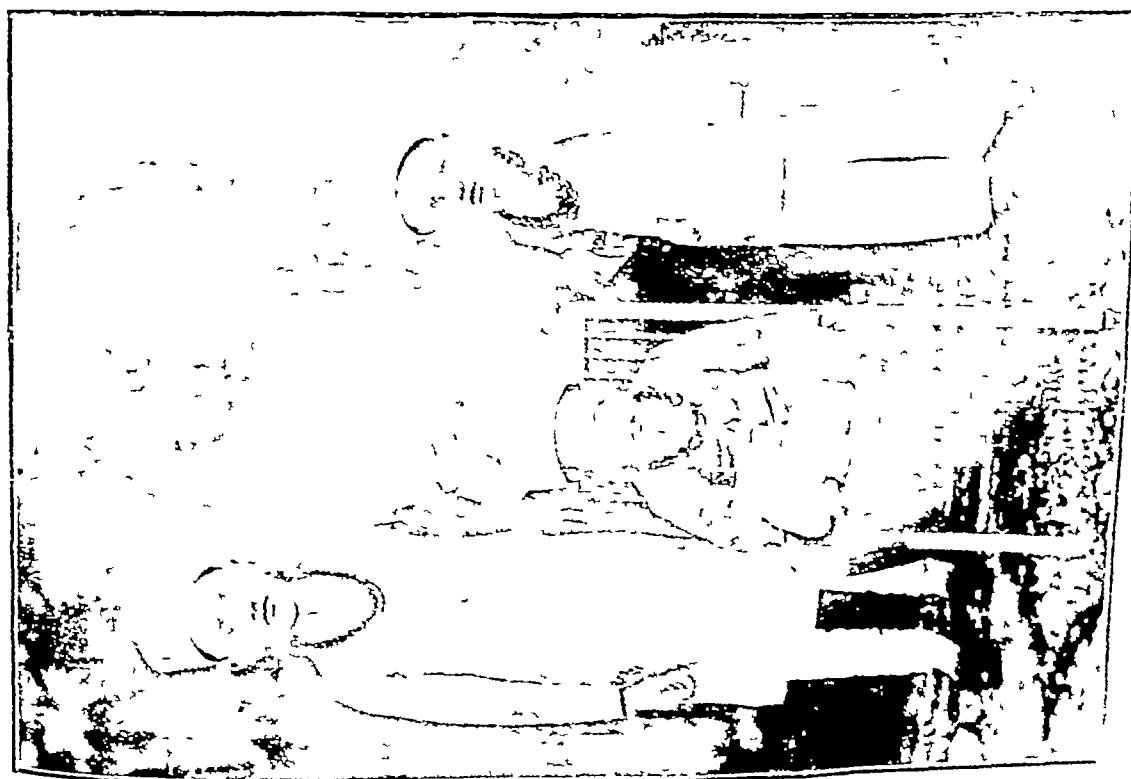
दाहिनी तरफ बाबू जतनमलजी, बाएं ओर ज्ञानमलजी, बीचमें मान-
मलजी S/o बाबू छुट्टनलालजी फोफलिया जोहरी, जयपुर

लाला शिखरचन्दजी फोफलियाका खानदान, लखनऊ

इस परिवार वाले लखनऊ निवासी फोफलिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानमे लाला रिद्धूमलजी हुए। आपने लखनऊसे कलकत्ते जाकर रिद्धूमल मन्नालाल के नामसे लाला मुन्नालालजी वड़दंतूके साझे में जवाहरातका व्यापार किया था जिसमें आपको अच्छी सफलता प्राप्त हुई। आपके शिखरचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला शिखरचन्दजीका जन्म सं० १९०७ में हुआ था। आप व्यापार कुशल, सज्जन तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप भी जवाहरातके व्यापारको करते रहे। मोती के काममें आपने आपने अच्छी दृष्टि तथा जानकारी प्राप्त कर ली थी। आपने कलकत्तेके अफीम चौरस्ते के मन्दिरमे अग्र भाग लिया था। आप कलकत्ता की श्रीमाल समाज की प्रगतिमें भाग लिया करते थे। आपका सं० १९६७ मे स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र इन्द्रचन्द्रजी का छोटी ऊमरमे ही स्वर्गवास हो गया। आपके नामपर श्री मुकुन्दलालजी भँसालीके पुत्र कपूरचन्दजी जोधपुर से गोद आये।

लाला कपूरचन्दजीका जन्म सं० १९६१ में हुआ। आप सन् १९१३ तक कलकत्ता रहे। पश्चात् लखनऊ चले आये। आप मिलनसार तथा शिक्षित सज्जन हैं। आपने सन् १९२७ में लखनऊ यु० से वी० काम० की परीक्षा पास की है। सन् १९३० से आप किंग जार्ज मेडिकल कालेज में सर्विस करते हैं। आप आल इण्डिया जै० श्वे० कान्फ्रेंस बम्बई की स्टैंडिंग कमेटीके एक सालतक मेम्बर रहे। लखनऊ की जै० श्वेताम्बर सभाके आजतक मन्त्री हैं। इसी प्रकार आपने जैन श्वे० पब्लिक लायब्रेरीके उत्थानमें बहुत योग दिया है। वर्त्तमानमे आप उसके ट्रेझरर हैं।

श्रीश्रीमाल

लाला हजारीमलजी श्रीश्रीमाल का खानदान, देहली

इस खानदानका मूल निवासस्थान अन्हिलपुरपाटन (गुजरात) का है। आप लोग श्रीश्रीमाल गौत्रके श्री जैन श्वे० मन्दिर मार्गीय हैं। अन्हिलपुरपाटन से आपलोग अहमदावाद तथा वहांसे करीब ३५० वर्ष पूर्व देहली आये। तभीसे यह खानदान देहलीमें निवास कर रहा है।

इस खानदानके पूर्व पुरुष सेठ रायचंदजीको बादशाह शाहजहाँ देहली लाये थे। आप जवाहरातका काम करते रहे। आपके नेमीचंदजी, नेमीचन्दजीके सूरजमलजी, सूरजमलजीके छगनलालजी एवं छगनलालजीके रोशनलालजी, किशनचंदजी तथा बिशनचंदजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें लाला रोशनलालजी के केशरीचंदजी एवं फकीरचंदजी नामक दो पुत्र हुए। आप सब लोगोंके समयमे आपके यहांपर जवाहरातका व्यापार होता रहा।

लाला केशरीचन्दजी—आपका जन्म सम्वत् १८८७ का था। आप व्यापार कुशल तथा प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। आपने जवाहरातके व्यापारको बहुत बढ़ाया। तदनन्तर सं० १९०८ से आपने बालमुकुन्दजी माहेश्वरीके साझेमें जोरोंसे जवाहरातका व्यापार शुरू किया। आप इस व्यवसायमें अच्छे अनुभवी थे। आपने इस व्यवसायमें लाखों रुपये कमाये। आप देहली की जनतामें लोकप्रिय, सम्माननीय तथा योग्य सज्जन हो गये हैं। आप सार्वजनिक एवं परोपकार के कामोंमें बहुत योग देते थे। आपने अपने सम्मानको बहुत बढ़ाया था। आपका सं० १९३५ की कार्तिक बदी ८ को स्वर्गवास हो गया। आपके लाला हजारीमलजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला हजारीमलजी—आपका जन्म सम्वत् १९१८ में हुआ। आप व्यापार कुशल, देहली के गण्यमान्य सज्जन, अनुभवी एवं उदार महानुभाव हैं। आपने अपने जवाहरातके व्यापारको इतना चमकाया कि आपकी फर्म देहलीकी खास २ प्रधान फर्मों में से एक है तथा बहुत ही प्रतिष्टित समझी जाती है। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपये उपार्जित किये हैं।

आप एक बड़े प्रभावशाली तथा वजनदार व्यक्ति हैं। आपकी सलाह बड़ी कीमती तथा आदर की दृष्टिसे देखी जाती हैं। देहली तथा पञ्जाब प्रान्तकी सैकड़ों संस्थाओंको आपकी ओरसे प्रोत्साहन मिला होगा। आप बड़े परोपकारी एवं गरीबोंके साथ हमदर्दी रखनेवाले महानुभाव हैं। देहलीकी जैन समाजमें आप अग्रगण्य तथा सार्वजनिक क्षेत्रमें बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

आपका धार्मिक जीवन भी बहुत प्रशंसनीय रहा है। आपके द्वारा देहली की प्रायः सभी संस्थाओं को सहायता मिलती रहती है। आपका नाम देहली तथा पंजाब प्रान्तमें बहुत मशहूर है। आप मिलनसार, बुद्धिमान एवं अनुभवशील सज्जन हैं। पेंचीदे मामलों के समयमें जब दो पार्टियोंमें कुछ झगडा पड़ जाता है तब आप तथा स्व० खैरातीलालजी मध्यस्थ नियुक्त कर दिये जाते थे। आप दोनों ही सज्जन बड़ी ही चतुराईसे सारे मामलेको निपटा देते थे। इस तरहके सैकडों झगड़े आपने निपटाये होंगे। आप वर्त्तमानमें वृद्ध हैं तथा पूर्ण शान्ति लाभ कर रहे हैं। आपने देहली गौशाला, दादाबाड़ी आदि संस्थाओंमें बहुत सहायता पहुचाई है। दादाबाडी का तो आपने ४० वर्षों तक प्रबन्ध करके उसे बहुत उन्नतिपर पहुचाया। आप जैन और अजैन सभी संस्थाओंको मदद पहुंचाते रहते हैं। आपके नाम पर गुजरातसे गोद आये हुए युवक पूनमचन्दजी का २६ वर्षकी वय में ही स्वर्गवास हो गया है।

आप लोगोंके शादी सम्बन्ध सब रीति रस्म आज भी गुजरातमें होते हैं। आप लोगोंका खानदान पाटन, देहली तथा पंजाबकी ओसवाल एवं श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है। आप लोग मे० रामचन्द्र हजारीमलके नामसे लाला बालमुकुन्दजी माहेश्वरीके वंशजोंके साझेमें जवाहरातकाबड़े स्केलपर व्यापार करते हैं। आप लोगों का सम्मिलित व्यापार बहुत सालोंसे चला आ रहा है। लाला हजारीमलजीके साढ़ूके पुत्र लाला बाबूमल-

लाला हजारीमलजी श्रीश्रीमाल, देहली

बाबू निहालसिंहजी [illegible], भागलपुर

श्री राजमलजी टाक जौहरी, जयपुर
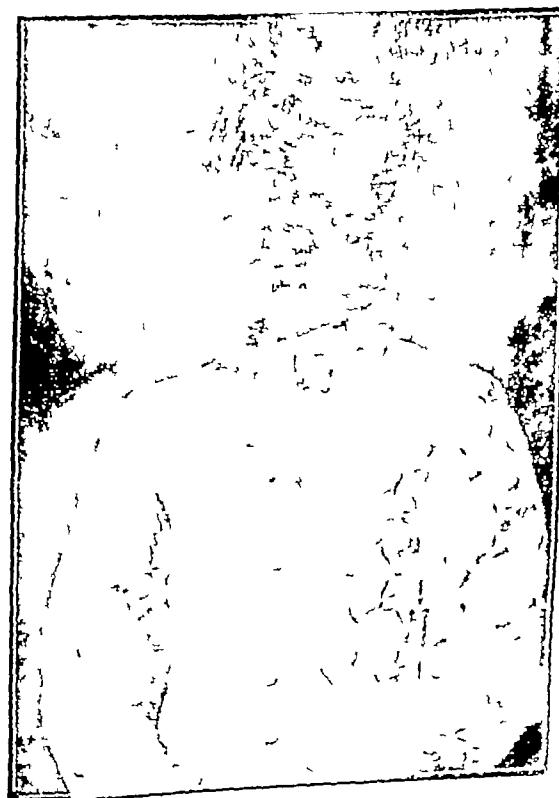
बाबू सुखलालजी जरगड़, जयपुर

जी योग्य, देशभक्त तथा सार्वजनिक स्पीरीटवाले सज्जन हैं। आप पर लालाजीका पूर्ण विश्वास है तथा आप ही सारे व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आप पांजरापोलके मेम्बर आदि २ हैं।

संघवी

श्रीशिवशङ्करजी मुकीम का खानदान, जयपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान देहली का था। आप लोग संघवी गौत्रके श्री जै० श्वे० मंदिर मार्गीय हैं। इस खानदानके श्री देवीदासजी देहली के बादशाहके जौहरी थे। आपके गोर्द्धनदासजी नामक पुत्र हुए।

श्रीगोर्द्धनदासजी :—आप देहलीके नामी जौहरी हो गये हैं। आपकी फर्म देहलीके जवाहरात के व्यापारियों में मातबर मानी जाती थी। आप मिलनसार एवं योग्य सज्जन थे। जयपुर नरेश मिर्जा राजा सवाई जयसिंहजीके पुत्र श्रीरामसिंहजीने संवत् १७१२ में आपको अपना भाई बनाया और पगड़ी बदलकर सम्मानित किया। इसके पश्चात् सं० १७२४ में में जब श्री रामसिंहजी जयपुरकी गद्दीपर विराजे तब सेठ गोर्द्धनदासजीको देहलीसे जयपुर आकर बस जानेका निमन्त्रण दिया। जयपुरसे बालकृष्णजी शेखावत इस निमन्त्रण पत्र को लेकर जयपुर गये थे। इसमें आपको लिखा गया था कि आप जवाहरातों और अमूल्य वस्तुओंको लेकर यहां आओ। इसके साथ ही साथ आप अपने योग्य कारीगरों को भी साथमें लेते आना। सेठ गोर्द्धनदासजी तब जयपुर चले आये। उक्त नरेश की आप पर बहुत कृपा रहा करती थी। कई समय आपको असली रुक्के प्रदान कर सम्मानित किया था। इनमेंसे हम कुछ यहांपर देते हैं।

"लिखतन रामसिंहजी अतर गोर्द्धनदास सूं पगड़ी बदली कंवरपदामें सो हमारे वंश ईनकी वाईनकी औलादकी गौर न करे तीने चीतोड़ मारको पाप संवत १७२६ काती सुदी ६"

इसी प्रकार आपको एक और रुक्का प्रदान कर आपको हांसलकी माफी और खास पोशाकका सम्मान बख्शा। वह इस प्रकार है।

"गोर्द्धनदासजीके म्हाको राम राम अत थे खातर जमा राख देस मै वनज करो थाने वा थांकी औलाद जो देस मै व हजूर मै व्यौपार करे त्यांने हांसल माफ फरमायो छे अर खास पौशाक थांकी फरमां छे सवत् १७३१ माह बुदी ३"

इस प्रकारके कई रुक्के प्रदान कर सेठ गोर्द्धनदासजीका बहुत सम्मान किया गया। सेठ साहब बड़े व्यापार कुशल तथा अनुभवी जौहरी थे। जयपुरमें आप स्थायी रूपसे बस गये तथा जयपुर नरेशने भी आपको स्टेट जुएलर बनाया और पुश्तहापुश्तके लिये मुकीम का खिताब प्रदान किया। आपके पूर्णचन्द्रजी नामक पुत्र हुए। आप तथा आपके पुत्र शिव-

चन्दजी अपने जवाहरातका व्यापार करते रहे। आप लोगोंने अपने सम्मान व रुतवेको बनाये रखते हुए स्टेट जौहरीका काम सफलता पूर्वक किया। संवत् १७७६ में महाराज सवाई जयसिंहजी ने प्रसन्न होकर सेठ पूर्णचन्द्रजीको एक खास रुक्का इनायत किया जिसमें लिखा था कि महाराजा साहबकी खास पोशाकका आधा कपड़ा पूर्णचन्द्रजीसे लेना और आधा दूसरे व्यापारियोंसे। उस समय जयपुर नरेश के खास पोशाकका कपड़ा जो लाते थे उनको कुछ निश्चित रकम तनख्वाहके रूपमें दी जाती थी। उस रकमकी आधी पूर्णचन्द्रजीको दी जानेका भी उस रुक्केमें जिक्र किया गया है। सेठ शिवचन्दजीका सं० १८४१ में स्वर्गवास हुआ। आपके नथमलजी नामक एक पुत्र हुए।

श्रीनथमलजी :—आप मिलनसार, जवाहरातके व्यापारमें कुशल तथा अनुभवी व्यक्ति हो गये हैं। आप लोग भी स्टेट जौहरीका व्यवसाय करते रहे। स्टेट जौहरीका कार्य्य आपके वंशज शिवशङ्करजी तक बराबर चलता रहा। श्री नथमलजीने अपने खानदानके सम्मानको पूर्ववत् बनाये रक्खा। आपको महाराज प्रतापसिंहजीने प्रसन्न होकर ५० बीघा जमीन मन-रामापुरा (जिला सांगानेर) में इनामके बतौर देकर आपका आदर किया था। आपको रुक्के भी इनायत किये गये थे। इतना ही नहीं वरन् जयपुर-स्टेटने आपको सं० १८४२ में भाग और मुकम्माबाद परगनों की चोधरायत व स० १८४४ में ६००) सालाना रेख का बुध-सिंहपुरा इनाममें दिया। यह गांव आपके जोवन कालतक रहा तथा उक्त परगनोंकी चौध-रायत और ५० बीघा जमीन आपके वंशज श्रीशिवशङ्करजी तक रही। पश्चात् खालसे हो गई।

सेठ नथमलजी जयपुरकी जनतामें सम्माननीय तथा योग्य व्यक्ति थे। आपका सं० १८६३ में स्वर्गवास हुआ। आपके बख्तावरमलजी, जसकरणजी, हुकुमचन्दजी, जोरावरमलजी एव महाचन्दजी नामक पांच पुत्र हुए।

श्रीबख्तावरमलजी—आप भी नामी स्टेट जौहरी तथा प्रतिष्ठावाले सज्जन थे। जयपुर नरेशने आपकी व्यापारिक चतुराईको देखकर आपको एक खास रुक्का इनायत किया था जिसमें ८६५) सालानाकी आय का एक गांव तथा तनख्वाह इनायत की जानेका जिक्र है। आप वजनदार व्यक्ति थे। आपके अभयचन्दजी, हरिशंकरजी, एव बल्देवजी नामक तीन पुत्र हुए। सेठ अभयचन्दजी भी अपने पूर्वकालीन व्यापार तथा सम्मानको बनाये रखते हुए सं० १९२१ में स्वर्गवासी हुए। आपकी मृत्युके समय जयपुर नरेश ने आपके खानदानवालोंको एक खास रुक्का प्रदानकर ६००) की जागीर बहाल की। आपके पुत्र मांगीलालजी पर तत्कालीन जयपुर नरेश महाराज रामसिंहजीकी बड़ी कृपा रही। आप भी सफलतापूर्वक स्टेट जौहरी का कार्य्य करते रहे। आपके नामपर श्रीशिवशंकरजी गोद आये।

श्रीशिवशङ्करजी—आपका जन्म सं० १९२७ में हुआ। आप बड़े योग्य, जवाहरातके व्या-पारमें निपुण तथा जनतामें अच्छे सम्माननीय व्यक्ति थे। आप स्टेट जौहरी रहे। आप यहां की जौहरी समाजमें माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपका स्वर्गवास स० १९८३ की फाल्गुन

वदी ६ को हुआ। आपके मानमलजी, दानमलजी एवं वसन्तीलालजी नामक तीन पुत्र हुए। आप तीनों भाइयों का जन्म क्रमशः सं० १९६१, १९६७ तथा सं० १९८४ में हुआ। आपलोग मिलनसार एवं सुधरे खयालोंके व्यक्ति हैं। जयपुरमें आपलोगों की अच्छी प्रतिष्ठा है। आपलोग मेसर्स मानमल मुकीम एण्ड संस के नामसे जवाहरात का व्यापार करते हैं। श्री-मानमलजी उत्साही तथा सार्वजनिक कामोंमें भाग लेनेवाले सज्जन हैं। आप जैनयुवक मण्डलके प्रेसिडेंट रहे तथा वर्तमानमे उसके आप व्हाइस प्रेसिडेंट हैं। इसी प्रकार जयपुर श्रीमाल सभाके प्रेसिडेंट, जुएलर्स एसोसिएशनके सेक्रेटरी तथा जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस के मेम्बर आदि हैं। आपके वीरेन्द्रसिंहजी, आनन्दकुमारजी तथा दानमलजीके सुरेन्द्रकुमारजी नामक पुत्र हैं।

यह खानदान जयपुरमे प्रतिष्ठित समझा जाता है। आपलोगोंको वंशपरम्परा के लिये मुकीम का टायटल प्राप्त है।

भांडिया

बुधसिंहजी भांडियाका खानदान, लखनऊ

इस खानदान वालोंका मूल निवासस्थान जयपुर का है। आप लोग भांडिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानमें लाला बुधसिंहजी हुए। आप जयपुरमें अच्छे जौहरी थे। आपके भगवानदासजी एवं पन्नालालजी नामक दो पुत्र हुए।

लाला पन्नालालजी :—आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप सं० १९११ के करीब जयपुरसे लखनऊ आये और यहांपर जवाहरातका व्यापार जोरोंसे प्रारम्भ किया। आप यहाँपर जयपुरवालोंके नामसे मशहूर थे। आप यहांके नामी जौहरी तथा मिलनसार महानुभाव हो गये हैं। आपने बहुतसे शागीर्द तैयार किये थे। आपका करीब ५० वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया है। आपके पुत्र अखेचन्दजीका जन्म संवत् १९१३ में हुआ। आप स्पष्ट वक्ता तथा अच्छे स्वभावके सज्जन थे। आप जवाहरात तथा लेन देनका व्यापार करते रहे। संवत् १९५१ मे आप स्वर्गवासी हुए। आपके कुशलचन्दजी, ज्ञानचन्दजी, गुलाबचन्दजी एवं सितावचन्दजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं।

लाला कुशलचन्दजीका जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप इस परिवारमे सबसे बड़े एवं योग्य पुरुष हैं। आप ही अपना जवाहरातका व्यापार सञ्चालित कर रहे हैं। लाला ज्ञानचन्दजीका जन्म संवत् १९४२ तथा स्वर्गवास संवत १९८१ मे हुआ। आप जवाहरातका व्यापार करते रहे। आपके पद्मचन्दजी, नगीनचन्दजी, फूलचन्दजी एवं पूरनचन्दजी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं। बाबू पद्मचन्दजीका जन्म सं० १९६६ मे हुआ। आप शिक्षित तथा धा०

एस० सी० पास ह। आप वर्त्तमानमे यहांपर वकालत कर रहे हैं। वावू फूलचन्दजी सं० १६-६२ में स्वर्गवासी हो गये हैं।

लाला गुलावचन्दजीका जन्म सं० १६४३ में हुआ। आप योग्य, शिक्षित, सुधरे हुए विचारोंके महानुभाव हैं। आपने बी० ए० एल०एल० बी० पास करके वकालत करना प्रारम्भ की। आप वड़े उत्साही तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाले महानुभाव हैं। आप उत्तरोत्तर वृद्धिको पाते रहे। वर्तमानमेंआप सब जज तथा असिस्टेण्ट सेशनजज हैं। लाला सितावचन्दजीका जन्म सं० १६५० का है। आप जवाहरातका व्यापार करते हैं। आपके रिखवचन्दजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। यह खानदान लखनऊकी ओसवाल एवं श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

राय बुधसिंहजी मुकीम का खानदान, कलकत्ता

इस परिवारका मूल निवासस्थान मारवाड़का था। आपलोग भांडिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय सज्जन हैं। करीव १५० वर्षोंसे आपलोग कलकत्तामे निवास करते हैं। इस परिवारमें वावू बुधसिहजी हुए।

वावू वुधसिंह—आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा योग्य व्यक्ति थे। आप हीने सर्व प्रथम अपनी फर्मपर जवाहरातको विलायत एक्सपोर्ट करना शुरू किया था। आप तथा आपके पिताजी दिल्लीके वादशाह तथा ब्रिटिश गवर्मेन्टके कोर्ट जुएलर्स थे। आप बड़े नामी जौहरी तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपको बादशाहने राय का खिताब इनायत किया था। आपका कलकत्तेकी जौहरी समाजमें अच्छा सम्मान था। आपके पिताजी भी बड़े प्रसिद्ध जौहरी थे। आपको पुश्तहापुश्त के लिये मुकीम का टायटल प्राप्त हुआ था। आजतक आपके वंशज मुकीम कहलाते हैं। वावू बुधसिहजीके जवाहरलालजी एव पन्नालालजी नामक दो पुत्र हुए।

वावू जवाहरलालजीका जन्म सं० १६०० मे हुआ। आप जवाहरातके व्यापारको करते रहे। आपका स० १६६० में स्वर्गवास हुआ। आपके मोतीलालजी, चुन्नीलालजी एवं माणकलालजी नामक तीन पुत्र हुए।

वावू मोतीलालजीका जन्म सन् १८५७ में हुआ। आपने करीव ५० वर्षों पूव मे० मोतीलाल मुकीम एण्ड ससके नामसे अपना जवाहरातका कार्य स्थापित किया। आप सफलता पूर्वक जवाहरातका व्यवसाय करते हुए सन् १६२१ की १८ जूनको स्वर्गवासी हुए। आपके प्यारेलालजी, सुन्दरलालजी एव कुन्दनलालजी नामक तीन पुत्र विद्यमान हैं।

वावू प्यारेलालजीका जन्म सन् १८६१ का है। आप कलकत्ताकी श्रीमाल समाजमें सर्व प्रथम बी० ए० हुए तथा आपहीने श्रीमाल समाजमें सर्व प्रथम वकालत शुरु की। आप

शिक्षित हैं। बाबू सुन्दरलालजी तथा कुन्दनलालजीका जन्म क्रमशः सन् १८९४ और १८९८ का है। आप दोनों बंधु मिलनसार हैं तथा मे० मोतीलाल मुकीम एण्ड संसके पार्टनर और जवाहरातका व्यापार करते हैं। बाबू सुन्दरलालजीके मनोहरलालजी तथा कांतिलालजी नामक दो पुत्र हैं।

बाबू खड्गसिंहजी भांडियाका खानदान, भागलपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान माकड़ी (यू० पी०) का है। आप लोग भांडिया गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस खानदानमें बाबू बख्तावरसिंहजी हुए। आपके उमरावसिंहजी तथा शेरसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। बाबू शेरसिंहजीके प्रतापसिंहजी, दिलीपसिंहजी, होशियारसिंहजी तथा खड्गसिंहजी नामक चार पुत्र हुए। इनमे यह परिवार खड्गसिंहजीका है। बाबू खड्गसिंहजी करीब ७० वर्ष पूर्व भागलपुर आये और यहींपर बस गये। आपका विवाह भागलपुरके प्रसिद्ध रईस राय सुखराज राय बहादुरकी बहनसे हुआ था। आपके निहालसिंहजी, इन्द्रसिंहजी, भँवरसिंहजी तथा कमरसिंहजी नामक चार पुत्र हुए।

बाबू निहालसिंहजी बड़े धार्मिक भावनाओं वाले व्यक्ति थे। आप रा० ब० सुख-राजरायजीके यहां पर सर्विस करते रहे। आपके पुत्र बाबू बहादुरसिंहजी वर्त्तमानमें विद्य-मान हैं तथा वहींपर सर्विस करते हैं। इसके अतिरिक्त आप अलग कपड़ेकी दूकान भी करते हैं। आपके कुशलसिंहजी नामक एक पुत्र है। बाबू इन्द्रसिंहजीका जन्म सं० १९४३ में हुआ। आप योग्य विचारशील एवं कार्य्य कुशल व्यक्ति हैं। आपके विजयसिंहजी, वीरेन्द्रसिंहजी, दीपसिंहजी, तेजसिंहजी, जितेन्द्रसिंहजी तथा हरिन्द्रसिंहजी नामक छः पुत्र हैं। इनमें बाबू विजयसिंहजीका जन्म सं० १९६० में हुआ। आपने सन् १९२३ में बी० ए० तथा १९२६ में बी० एल० पास किया। आप शिक्षित, देशभक्त तथा योग्य सज्जन हैं। कांग्रेसके कार्य्योंमें आप दिलचस्पीसे भाग लेते हैं। वर्त्तमानमें आप भागलपुर कोर्टमें सफलता पूर्वक वकालत कर रहे हैं। बाबू भँवरसिंहजीका जन्म सं० १९४५ का है। आप भी मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके राजसिंहजी, कुमारपालसिंहजी, ज्ञानपालसिंहजी तथा जगतपतसिंहजी नामक चार पुत्र हैं। बाबू कमरसिंहजीका जन्म सं० १९४७ मे हुआ। आप जिस समय एफ० ए० में पढ़ रहे थे उस समय आपका स्वर्गवास हो गया।

धांधिया

श्री फूलचन्दजी माणकचन्दजी धांधिया, जयपुर

इस खानदानके सज्जनोंका मूल निवासस्थान लखनऊ का है। आपलोग धांधिया गौत्रके श्री० जै० श्वे० म० मार्गीय हैं। इस परिवारमे सेठ बलदेवदासजी हुए। आप लखनऊमे

जवाहरातका व्यापार करते थ। आप वहाँसे करीब १२५ वर्ष पूर्व जयपुर आये और यहींपर स्थायी रूपसे बस गये। आपने जयपुरमे बहुत जवाहरातका व्यापार किया। आपके पुत्र गुलाबचन्दजीका जन्म सं० १८८२ का था। आप जवाहरातके व्यापारमें चतुर तथा व्यापार कुशल महानुभाव थे। आपने जयपुरमें जवाहरातका व्यापार किया तथा अपने व्यापारमें विशेष तरक्कीकर अपनी एक फर्म कलकत्तामें भी खोली थी। आपका स्वर्गवास सं० १६३५ में हो गया। आपके नामपर वसई जिला नारनौलसे लाला फूलचन्दजी गोद आये।

श्री फूलचन्दजी :—आपका जन्म सं० १६२२ में हुआ। आपके पिता श्री नानकचन्दजी वसई गांवमें कानूनगो थे तथा वर्त्तमानमें भी आपको पटियाला स्टेटमे जागीरी वगैरह है। सेठ फूलचन्दजी जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा योग्य महानुभाव हो गये हैं। आपने बंबई, कलकत्ता आदि स्थानोंपर लाखों रुपयोंके जवाहरात का लेन देन किया तथा इङ्गलैण्ड, अमेरिका आदि देशोंमें एजेण्टों द्वारा प्रचार करवाया था। जयपुरसे आप हीने सबसे प्रथम विलायत डायरेक्ट जवाहरात भेजना शुरू किया था। आप जयपुरके नामी जौहरी, कपड़द्वाराके जौहरी तथा प्रतिष्ठित महानुभाव थे। इसके अतिरिक्त स्व० महाराज श्री माधोसिंहजीके राज्यकालमें जयपुर स्टेटमें सं० १६७१ से १६७६ तक जो झाड़शाहीसे कलदार रुपयोंके एक्सचेञ्जका व्यवसाय हुआ वह सब आप होके द्वारा किया गया था। इसमें आपके हाथोंसे करोड़ोंका लेन देन हुआ होगा। आप राज्यमें सम्माननीय, जनतामें प्रतिष्ठित तथा अनुभवी सज्जन थे। आपने अपने व्यापारको चमकाया और सर्वत्र यश सम्पादित किया। वर्त्तमान एजंट गवर्नर जनरल कर्नल जी० डी० ओगिलवी की आप पर बड़ी कृपा रही। आप गरीबों के सहायक थे। आपका स्वर्गवास सं० १६८८ के वैसाख वुदि ८ को हुआ। आपके मानिकचंदजी, महतावचन्दजी एवं मोतीचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं।

श्री मानिकचन्दजीका जन्म सं० १६४८ में हुआ। आप योग्य तथा मिलनसार सज्जन हैं। आप ही वर्त्तमानमे अपने व्यवसायके प्रधान संचालक हैं। आपने सं० १६८८ में मे० माणिकचन्द एण्ड संस के नामसे एक फर्म खोली है जहाँपर जवाहरातका व्यवसाय होता है। अनेकों टूरिस्ट लोग यहासे दूर दूर जवाहरात ले जाते हैं। आपके पूनमचन्दजी एवं पदमचंदजी नामक दोनों पुत्र व्यापारमें भाग लेते हैं। श्री महतावचन्दजी एवं मोतीचन्दजीका जन्म क्रमश: सं० १६५२ एव १६५५ मे हुआ। आप लोग मिलनसार हैं तथा वर्त्तमानमे अपने व्यापारमे सहयोग दे रहे हैं। श्री महतावचन्दजीके अमरचन्दजी तथा हीराचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। अमरचन्दजी एम० ए० में तथा हीराचन्दजी बी० ए० में पढ़ रहे हैं। आप दोनों शिक्षित युवक हैं। अमरचन्दजीके मेहरचन्दजी तथा दौलतचन्दजी और हीराचन्दजीके परतापचन्दजी नामके पुत्र हैं। श्री मोतीचन्दजी के मिलापचन्दजी तथा कमलचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। आप दोनों पढ़ रहे हैं। इसी प्रकार पदमचन्दजीके ताराचन्दजी एवं सन्तोषचन्दजी नामक दो पुत्र हे।

आप लोग मे० फूलचन्द माणकचन्द के नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते हैं। इसके अलावा मे० माणकचन्द एण्ड संसके नामसे आपकी जवाहरात की एक और फर्म है। आपके यहांसे विलायत डायरेक्ट भी जवाहरात एक्सपोर्ट किया जाता है।

खारड़

बाबू खेड़सिंहजी खारड़ का खानदान, कलकत्ता

इस खानदानका मूल निवास स्थान महिम का है। आपलोग खारड़ गौत्रके श्री जैन श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस परिवारके सेठ खेड़सीजी वहांपर सरकारी नौकरी और जमीदारी का काम सफलता पूर्वक चलाते रहे। आपके पुत्र भगवानदासीके गोपालसिंहजी, जसवंतराय जी, मुत्सुद्दीलालजी तथा जगन्नाथजी नामक चार पुत्र हुए।

बाबू जसवंतरायजीका खानदान :—आपका जन्म सं० १९१६ में हुआ। आप व्यापार कुशल तथा साहसी व्यक्ति थे। आप मेहम से करीब ६० वर्ष पूर्व सबसे पहले कलकत्ता आये और यहांपर जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया। आपको इस व्यापारमें बहुत सफलता प्राप्त हुई। आप जवाहरातके व्यापारमे निपुण, यहां भी जौहरी समाजमें प्रतिष्ठित तथा योग्य व्यक्ति हो गये हैं। आपका सं० १९८३ में स्वर्गवास हुआ। आपके हीरालालजी, मुन्नीलालजी तथा रोबीलालजी नामक तीन पुत्र हुए।

बाबू हीरालालजीका जन्म सं० १९३४-३५ का है। आप बड़े मिलनसार तथा व्यवहार कुशल हैं। वर्त्तमानमें आपही अपने सारे जवाहरातके व्यापारको सँभाल रहे हैं। आप श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आपने जगन्नाथघाट रोड कलकत्तामे एक बहुत सुन्दर मकान बनवाया है। आपके छतरसिंहजी, अजितसिंहजी, विजयसिंहजी एवं कमलसिंह जी नामक चार पुत्र विद्यमान हैं जो अभी पढ़ते हैं।

बाबू रोबीलालजीका जन्म सं० १९४४ में हुआ। आप अपने ज्येष्ठ भ्राताके साथ जवाहरातका व्यापार करते हुए सं १९८६ मे स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र रतनलालजी करीब १० सालोंसे अपना अलग स्वतन्त्र व्यापार कर रहे हैं। बाबू रोबीलालजी भी अपने ज्येष्ठ भ्राता को जवाहरातके व्यापारमें योग देते हुए स्वर्गवासी हो गये हैं।

बाबू हीरालालजी हीरालाल खारड़के नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं।

सेठ सुजानमलजी खारड़का खानदान, जयपुर

इस परिवारके पूर्वजोका मूल निवासस्थान मेहम (जिला रोहतक) का था। आप लोग खारड़ गौत्रीय श्री जैन श्वे० तेरापथी हैं। महिममें आप लोगोंकी कोठी थी।

मगर जिस समय आप जयपुर आये उस समय उसे अपने सम्बन्धीको दे आये थे। करीब १५० वर्षों से यह परिवार जयपुरमें रह रहा है। इस परिवारके सेठ जीवसुखरायजी जवाहरातका व्यापार करते थे। आपके लक्ष्मणदासजी एवं हुकुमचन्दजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ लक्ष्मणदासजीका खानदान :—आप यहांके प्रतिष्ठित जौहरी तथा माननीय व्यक्ति हो गये हैं। आपके बहुतसे शागिर्द आगे जाकर नामी जौहरी हुए। आपने जवाहरातके व्यापार में काफी सम्पत्ति कमाई। आप प्रभावशाली तथा मिलनसार सज्जन हो गये हैं। आप अच्छे श्रावक तथा जैन शास्त्रोंके ज्ञाता थे। आपका स्वर्गवास सं० १९३० में हुआ। आपके देवदास जी, कुन्दनमलजी, चांदमलजी एवं नानूलालजी नामक चार पुत्र हुए। सेठ बलदेवदासजी जवाहरातके व्यापारको करते रहे। आपके सुखलालजी तथा नरसिंहदासजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ सुखलालजी बम्बईमें तथा नरसिंहदासजी जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते रहे। नरसिंहदासजीके पुत्र नथमलजी चांदमलजीके नामपर गोद गये।

सेठ कुन्दनमलजीका जन्म सं० १८९९ मे हुआ। आपने प्रथम सायरातमें मुलाजिमात की तथा फिर जवाहरातका व्यापार किया जिसमें आपको ठीक सफलता मिली। आपका सं० १९६१ में स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र अम्बालालजीका जन्म सं० १९४१ का है। आप जवाहरातका व्यापार करते हैं।

सेठ चांदमलजीके दत्तक पुत्र नथमलजीका जन्म सं० १९४६ में हुआ। आप सेठ नरसिंहदासजी तथा सेठ चांदमलजी दोनों घरोंके मालिक तथा मिलनसार सज्जन हैं। आप इस समय जवाहरातका व्यापार सफलता पूर्वक चला रहे हैं। आपके पुत्र मानमलजी मिलनसार युवक हैं तथा जवाहरातके व्यापारमें भाग लेते हैं।

सेठ नानूलालजीका जन्म सं० १९१० में हुआ। आप जवाहरातका व्यापार करते हुए सं० १९५० में गुजरे। आपके पुत्र मूलचन्दजी एवं लखमीचन्दजीमेंसे मूलचन्दजीका जन्म सं० १९४५ एव स्वर्गवास सं० १९६६ में हो गया। सेठ लखमीचन्दजीका जन्म सं० १९४० में हुआ। आप अपने जवाहरातके व्यापारको सफलता पूर्वक चला रहे हैं। आपके पूनमचन्दजी तथा कैलाशचन्दजी नामक दो पुत्र हैं। बाबू पूनमचन्दजी जवाहरातके व्यापारमें भाग लेते हैं।

सेठ हुकुमचन्दजीका खानदान:—आप अपने ज्येष्ठ भ्राता सेठ लछमणदासजीके साथ जवाहरातका व्यापार करते हुए अपने लेनदेनका व्यापार भी करते रहे। आप सं० १९१५ में स्वर्गवासी हुए। आपके कस्तूरचन्दजी तथा मानिकचंदजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ कस्तूरचंदजीका जन्म सं० १९०८ की भादवा वदी ४ का था। आप रा० ब० बद्रीदासजीके शागीर्द थे तथा आपने उनके साझेमें एक जवाहरातकी फर्म मांडले (ब्रह्मा) में खोली थी। इसमें आपको ठीक सफलता मिली। आप सं० १९६१ की आषाढ़ वदी ११ को स्वर्गवासी हुए। आपके सुजानमलजी एव मोमीलालजी नामक दो पुत्र हुए। सेठ सुजानमलजीका जन्म सं० १९३५ की चैत्र वदी ५ को हुआ। आप मिलनसार हैं तथा जयपुरमें जवाहरातका व्यापार

खारड परिवार, जयपुर

स्व॰ सरदारसिंहजी मेहमवार, देहली
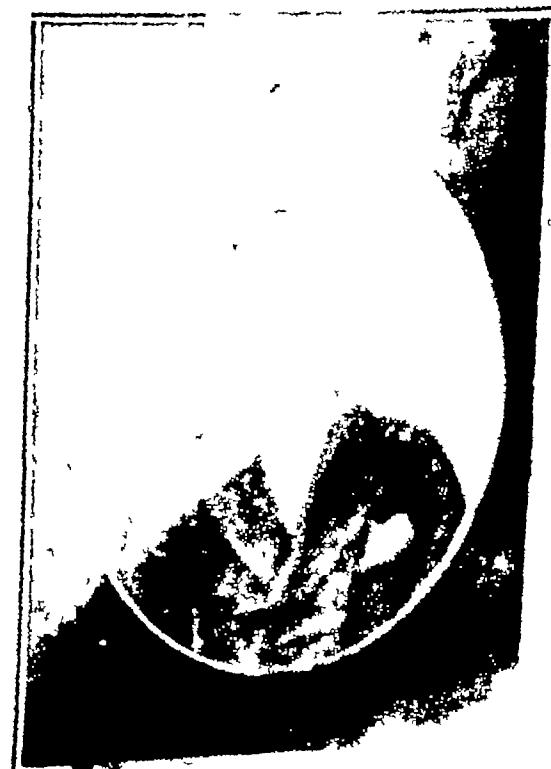
करते हैं। आप जैन शास्त्रोंके ज्ञाता और ढालें तथा स्तवनोंके जानकार हैं। आपके पुत्र मह-तावचन्दजी एम० सी० ब्रदर्सके नामसे जौहरीबाजारमें मनिहारीकी दुकान करते हैं। आप उत्साही तथा हिन्दीमें विशारद हैं। बाबू मोमीलालजी सं० १९६७-६८ से अलग होकर बम्बई-में अपना स्वतन्त्र जवाहरातका व्यापार करते हैं। आपके पदमचन्दजी, उत्तमचंदजी तथा सौभागचन्दजी नामक तीन पुत्र हैं।

सेठ माणकचन्दजीः—आपका जन्म सं० १९१२ की भादवा वदी ४ को हुआ। आप इस खानदानमें पुण्यात्मा तथा महान् पुरुष हो गये हैं। आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले महानुभाव थे। धर्म पर आपकी बहुत श्रद्धा थी। आपने संवत् १९३८ की फाल्गुन वदी ११ को लाडनूं में जैन-धर्ममें दीक्षा ली तथा संवत् १९३१ में सिंघाड़ोंके मालिक बनाये गये। तदनन्तर सं० १९५६ की चैत्र वदी २ को युवराज बनाये गये। आप तेरापन्थी धर्मके छठे आचार्य्य हो गये हैं। आपके विषयमें कई ग्रन्थोंमें बहुत कुछ प्रकाशित हो चुका है। आपका स्वर्गवास सं० १९५४ की कार्तिक बदी ३ को हो गया।

सेठ लक्ष्मणदासजी तथा हुकुमचन्दजीके परिवारवाले संवत् १९४५ से अलग होकर अपना स्वतन्त्र कारबार कर रहे हैं।

बदलिया

चौधरी दशरथसेनजीका खानदान, मन्दसौर

इस परिवार वालोंका मूल निवासस्थान देहली का था। आप बदलिया गौत्रके श्री वैष्णव धर्मको पालनेवाले सज्जन हैं। इस परिवारके पूर्व पुरुष श्री मजलिसरायजी करीब २२९ वर्ष पूर्व देहलीसे मन्दसौर आये और यहांपर गांवोंको बसानेकी आयोजनामें दत्तचित्त रहने लगे। आप लोग प्रभावशाली, कार्य्यकुशल तथा साहसी महानुभाव थे। आप लोगोंके द्वारा करीब ६० गाँव बसाये गये होंगे। आपके इन कार्य्यों से प्रसन्न होकर देहलीके बादशाह-ने आप लोगोंको एक सनद, ६० गांवोंमें कुछ दामी कुल १८००) सालाना तथा एक मौजा जमींदारीमें इनायत कर सम्मानित किया था। आप लोगोंका इन गाँवोंमें अच्छा सम्मान था। आपके पुत्र श्री राजमलजी तथा राजमलजीके पुत्र जीवराजजी अपने गाँवोंकी व्यवस्था करते रहे। उस समय इन गांवोंके कानूगोका दफ्तर भी आपके यहांपर रहता था। इन गांवोंकी व्यवस्था व लगान वसूलीका सारा कार्य्य आप होके मार्फत किया जाता था। आप लोगों का उस समय काफी सम्मान था। सेठ जीवराजजीके गुलाबसिंहजी नामक एक पुत्र हुआ।

सेठ गुलाबसिंहजी—आपके जीवन काल में उक्त साठ परगने ग्वालियर स्टेटके अन्तर्गत आ गये। तत्कालीन ग्वालियर नरेशने भी आप ही लोगोंके जिम्मे उन साठ परगनोंकी व्यव-स्था रक्खी तथा कानूगोका आफिस भी आपके यहांपर रखकर सम्मानित किया। [illegible]

राजरूपजी, राजरूपजीके गुलाबसिंहजी (द्वितीय), गुलाबसिंहजीके फतेसिंहजी, फतेसिंहजी-के नन्दलालजी एवं नन्दलालजीके दशरथसिंहजी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग अपने पुश्तैनी गांवोंके कामोंको योग्यतापूर्वक सञ्चालित करते रहे। आप लोगोंको पुश्तहा-पुश्तके लिये चौधरीका खिताब भी मिला था जो आजतक बराबर चला आता है।

श्री दशरथसिंहजी—आपका जन्म सं० १६२८ में हुआ। आप योग्य कार्य्यकुशल तथा अनुभवी व्यक्ति हैं। आपने अपने गांवोंकी व्यवस्था सफलतापूर्वक की। इसके अतिरिक्त आप ओकाफ कमेटीके मेम्बर रहे। आप यहांके प्रतिष्ठित, वजनदार तथा योग्य पुरुष समझे जाते हैं। आपको ग्वालियर सरकारकी ओरसे कई समय पोशाके, सर्टिफिकेट आदि भी इनायत किये गये हैं। इतना ही नहीं आप मन्दसौरके आनरेरी मजिस्ट्रेट भी बनाये गये थे। सं० १६-६६ तक तो गाँवोंकी सारी व्यवस्था उपरोक्त प्रकोरसे ही होती रही। इसके पश्चात् गवर्मेंटने सब गांवोंको अपने डायरेक्ट हाथमें कर लिया और सारी व्यवस्था भी गवर्मेंट द्वारा होने लगी। उसी समय आपका इनामी मौजा भी नम्बरदारी मौजा बना दिया गया। आप मन्दसौरमें प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली व्यक्ति हैं। आपके कचरसिंहजी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं।

बाबू कचरसिंहजी—आपका जन्म सम्वत् १६५७ में हुआ। आप शिक्षित, सुधरे हुए खयालों के तथा समाज सुधारक सज्जन हैं। आपने सम्वत् १६७५ में यहांकी वकालत परीक्षा पास करके मन्दसौरमें वकालत करना शुरू की। आप वर्त्तमानमें वहांके प्रमुख वकील तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आप ग्वालियर स्टेटकी मजलिसे आमके मेम्बर, डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेम्बर, कोआपरेटिव बैंकके डायरेक्टर तथा मन्दसौर म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर हैं। आपके अमरसिंह-जी नामक एक पुत्र विद्यमान हैं। यह खानदान मन्दसौरमें प्रतिष्ठित समझा जाता है।

लाला मुन्नीलालजी सिताबचंदजी बदलिया जौहरी, पटना

इस खानदान का मूल निवासस्थान बसई (शेखावाटी) का है। आप लोग श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर मार्गीय श्रीमाल जातिके सज्जन हैं। इस खानदानमें लाला चौकचंदजी हुए। आपके मुकुन्दरायजी, जगन्नाथजी तथा अनूपरामजी नामक तीन पुत्र हुए। इन भाइयोंमेंसे लाला जगन्नाथजी लगभग १५० वर्ष पहले बिहार प्रांतके मनेर नामक गांवमें आये तथा जमींदारी आदिका साधारण काम काज करते रहे। आपके दयाचंदजी तथा अमृतलालजी नामक दो पुत्र हुए। इस समय लाला दयाचंदजीका परिवार पटनामें तथा लाला अमृतलालजी का परिवार भागलपुरमें निवास कर रहा है।

लाला दयाचंदजीके पुत्र उत्तमचंदजी एवं पौत्र बाबू मुन्नीलालजी हुए। बाबू मुन्नी-लालजीने इस खानदानके व्यापार तथा सम्मानको खूब बढ़ाया। आपने बिहार प्रांतके कई रईसोंसे अपना जवाहरातके व्यापार का सम्बन्ध स्थापित किया और इस व्यवसायमें सम्पति

उपार्जन कर अपनी घरु जमीदारीको खूब बढ़ाया। रईसोंसे भी आपको थोड़े लगानपर जमीदारी प्राप्त हुई थी। आप बड़े धर्मालु तथा परोपकारी सज्जन थे। प्रत्येक निर्वाण उत्सव पर आप पावांपुरीजी जाया करते थे। यहां पर आपने एक धर्मशाला भी बनवाई थी। आस पासकी श्वे० जैन समाजमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपको विहारके रईसोंसे कई सर्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। आप सं० १९०० में स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर लखनऊसे बाबू सिताबचंदजी दत्तक आये। आपने भी अपने व्यापार तथा प्रतिष्ठाको बड़ी योग्यतासे संभाला, आप संवत् १९८३ में स्वर्गवासी हुए। आपके किशनचंदजी एवं बुधसिंहजी नामक दो पुत्र हुए। लाला किशनचंदजी संवत् १९५६ में स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्त्तमानमे लाला बुधसिंहजी विद्यमान हैं। आपका जन्म संवत् १९३४ में हुआ। आप भी अपनी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इस समय आपके यहां पर जवाहरात व जमीदारीका काम काज होता है। आपके विजयसिंहजी, जयसिंहजी, कमलसिंहजी, पद्मसिंहजी तथा श्रीपालसिंहजी नामक पांच पुत्र हैं। इनमेंसे प्रथम दो स्वर्गवासी हो गये हैं। शेष तीनों भ्राता शिक्षित तथा मिलनसार सज्जन हैं।

टांक

लाला उमरावसिंहजी टांक का खानदान, देहली

इस परिवार वालोंका मूल निवासस्थान भूरासर (जयपुर-स्टेट) का है। आप टांक गौत्रके श्री जै० श्वे०मं० मार्गीय हैं। इस परिवार वाले भूरासरसे चाटसू तथा चाटसूसे देहली में आकर निवास करने लगे। इस परिवारमें जौहरी हुकुमचंदजी हुए।

जौहरी हुकुमचंदजी :—आप देहलीसे लखनऊ गये तथा वहांपर अवधके नवाबके अन्डर में आपने सर्विस की। आप नवाब शुजाउद्दौला तथा उनके उत्तराधिकारी आसफउद्दौलाके राज्यकालमें अवधके एक प्रभावशाली कोर्ट जुएलर थे। आपको "राय" का खिताब भी इनायत किया गया था। आप उदार तथा मिलनसार महानुभाव थे। आपकी ईस्ट इण्डिया कं० के लखनऊ एजंट आनरेबल मि० पामर से अच्छी मैत्री थी। आपका जन्म सन् १७२८ तथा स्वर्गवास सन् १७८६ में हुआ। आपके टेकचंदजी नामक एक पुत्र हुए। आपका जन्म सन् १७५१ में हुआ था। आप लखनऊसे पुनः देहली चले गये तथा वहां पर जाकर आपने मुगल सम्राटके यहां पर सर्विस प्रारंभ की। आप देहलीकी कोर्टके जौहरी तथा "राव" के खिताबसे सम्मानित रहे। आपके हीरालालजी नामक एक पुत्र हुए। लाला टेकचंदजी का स्वर्गवास सन् १८३४ में हो गया।

लाला हीरालालजी :—आपका जन्म सन् १८०५ मे हुआ। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा कुशल व्यक्ति थे आप लार्ड डैलहौजीके विश्वसनीय जौहरी थे। आपने देहली

नरेश श्री सुदर्शन साहब की बहुत सेवाएँ की थीं। आपने प्रसिद्ध सन् १८५७ के गदरके समय ब्रिटिश गवर्मेंटको बहुत मदद पहुँचाई जिसके उपलक्ष्यमें आपको गवर्नमेंटने २५०००) पच्चीस हजार रुपया इनायत किया था। गदरके पश्चात् आप दिल्ली डिस्ट्रिक्ट कोर्टके असेसर रहे तथा सन् १८६२ में आप म्युनिसीपैलिटीके कमिश्नर चुने गये। इस पद पर रहकर आपने बहुतसे कार्य्य किये। आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा अच्छे जौहरी हो गये हैं। आपका सन् १८६६ में स्वर्गवास हो गया। आपके भोलानाथजी एवं रूपचंदजी नामक दो पुत्र हुए।

उक्त दोनों बन्धुओं का जन्म क्रमशः सन् १८२५ तथा १८३२ में हुआ। आप लोगोंने गदरके समय गवर्नमेण्टको मदद करवानेमें अपने पिताजी को सहायता की तथा नौघरेके मन्दिरको सजाया। आप लोगोका गवर्नमेण्टके उच्च अधिकारियोंमें तथा राजाओंमें अच्छा सम्मान था। आप लोगों का स्वर्गवास क्रमशः सन १८७९ तथा १८६९ में हो गया। रूपचंदजी के रिक्खामलजी नामक एक पुत्र हुए।

जौहरी रिक्खामलजीः—आपका जन्म सन् १८५६ में हुआ। आप सन् १८८७ में तत्कालीन व्हाइसराय द्वारा कोर्टके जौहरी बनाये गये तथा सन् १८८९ में ड्यूक आफ आडेनबर्गने भी आपको अपना जौहरी बनाकर सम्मानित किया। इसी वर्ष तत्कालीन कमान्डर इन चीफ द्वारा मुकीम बनाये गये। आपका गवर्नमेंटके उच्च पदाधिकारियोंमें और देशी राजाओं में अच्छा सम्मान था। आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण, प्रतिष्ठित तथा योग्य व्यक्ति थे। जिस समय एच० ई० एच० दी ड्यूक आफ कनॉट और ड्यूक आफ औडेनबर्ग भारतमें आये थे उस समय उक्त दोनों महानुभावोंने आपके घर जाकर आपको बहुत सम्मानित किया था। टेहरी नरेश स्व० कीरतिसिंहजी, अलवर नरेश स्व० मंगलसिंहजी, उदयपुरके स्व० महाराणा श्री फतेहसिंहजी, रामपुरके स्व० नवाब साहब, जोधपुरके स्व० महाराजा साहब, मांडीके दीवान पदजिवानन्दजी, उदयपुरके दीवान बलवन्तसिंहजी कोठारी आदि महानुभावोंकी आप पर कृपा रहती थी। टेहरीके महाराजा साहब तो जब जब दिल्ली आते तबर आपको बुलाते तथा बहुत आदर करते थे। आप इस प्रकार यश पूर्वक जीवन बिताते हुए सन् १९०८ में स्वर्गवासी हुए। आपने अपने नामपर अपने भानजे उमरावसिंहजी (जयपुरके कन्हैयालालजी फोफलिया के पुत्र) को दत्तक लिया।

लाला उमरावसिंहजीः—आप तीक्ष्ण बुद्धिवाले, बुद्धिमान सज्जन हैं। आप अपनी प्रारम्भिक शिक्षामें कई क्लासोंमें प्रथम तथा उच्च नम्बरोंसे पास हुए तथा आपको बहुतसे इनाम वगैरह प्राप्त हुए। आपने सन् १९०५ में बी० ए० पास किया। इस परीक्षामें फारसी भाषामें द्वितीय नम्बरसे पास होने पर आपको इनाम मिला था। आप सन् १९१० में एल० एल० बी० पास हुए और एम० ए० तक अध्ययन किया। आप कई भाषाएं जानते हैं तथा १९१० से देहलीके अन्तर्गत वकालत कर रहे हैं। आप यहाके एक प्रतिष्ठित वकील हैं तथा सफलता पूर्वक अपनी वकालत कर रहे हैं। आपको स्व० टेहरी नरेश और उदयपुर महाराणा

साहबकी ओरसे खिलअत वगरह प्राप्त हुई हैं। टेहरी नरेशने आपको अपनी यूरोप यात्रामें साथ ले जानेकी इच्छा प्रकट की थी। मगर बन्धनोंके कारण आपके पिताजीने आपको जाने की परवानगी नही दी। आपने सन् १९११ के सेन्सस मे, भारतकी ऐतिहासिक खोज आदि २ कार्योंमें बहुत भाग लिया है। इसके अतिरिक्त आप पब्लिक लायब्रेरी और रीडिंग रूमके दो समय प्रबन्धक चुने गये। वर्त्तमानमें भी आप प्रबन्धक कमेटीके मेम्बर हैं। आपका देहलीकी समाजमें अच्छा सम्मान हैं।

जौहरी हीरालालजी छगनलालजी टांक, जयपुर

इस परिवार वाले चाटसू निवासी टांक गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस परिवार वाले चाटसूके अन्तर्गत कपड़ेका व्यापार करते थे। आपलोग वहांपर प्रतिष्ठित समझे जाते थे। आज भी आप की चाटसूमें एक हवेली तथा दुकान बनी हुई है। सेठ दिलसुखरायजी सं० १९३५ मे स्वर्गवासी हुए। आपके हीरालालजी एवं छगनलालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ हीरालालजी एवं छगनलालजीका जन्म सं० १९०२ एवं वैशाख बदी ७ सं० १९१७ में हुआ। आप दोनों बन्धु व्यापार कुशल तथा साहसी थे। सं० १९४० मे आपलोग चाटसूसे बम्बई गये और वहांपर अपनी व्यापार चातुरीसे जवाहरातके व्यापारमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति कमाई। आप सं० १९५३ में बम्बईसे जयपुर चले आये और यहांपर भी जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया। सेठ छगनलालजी उत्साही तथा धार्मिक व्यक्ति थे। आपको जवाहरातके व्यवसायका बहुत ज्ञान था। आप दोनों भाइयों ने श्रीमालों के मन्दिरके पास जयपुरमें एक धर्मशाला भी बनवाई जो आज भी विद्यमान है। आप दोनों भाइयों का स्वर्गवास क्रमशः सं० १९६३ एव आषाढ़ सुदी १४ सं० १९६६ में हुआ। सेठ हीरालालजीके उमरावसिंहजी एवं छगनलालजीके राजरूपजी नामक पुत्र विद्यमामान हैं। आप लोग सं १९६७ से अलग २ होकर अपना स्वतंत्ररूपसे अलग व्यापार करते हैं।

श्री राजरूपजीका जन्म सं० १९६४ की श्रावण बदी १४ को हुआ। आप शिक्षित तथा मिलनसार व्यक्ति हैं तथा वर्त्तमानमें अपने जवाहरातके सारे काम काजको संभालते हैं। आप जैन नवयुवक मण्डलके सदस्य तथा कोषाध्यक्ष, श्रीमालोंके मन्दिरके मैनेजर, श्री० जै० श्वे० कन्या पाठशालाके सेक्रेटरी आदि २ हैं। आपके दुलीचन्दजी नामक एक पुत्र हैं। आप मे० हीरालालजी छगनलाल टांकके नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते हैं।

जरगड़

जौहरा कपूरचन्दजी कस्तूरचन्दजी जरगड़, जयपुर

इस परिवार वालोंका मूल निवासस्थान देहलीका है। आप लोग जरगड़ गौत्रके

श्री जैं० श्वे० मं० मार्गीय हैं। देहलीमें आप लोग जवाहरातका व्यापार करते थे। आप लोगोंका नाम वहांके नामी जौहरियोंमें था। कहा जाता है कि आप शाही जौहरियोंमेंसे थे। सुना है कि इस परिवार वाले जयपुर नरेश द्वारा २०८ वर्ष पूर्व देहलीसे जयपुर लाये गये हैं। आप लोगोंने जयपुर आकर भी देहलीके जवाहरातके व्यापारको चालू रक्खा। इस खानदानमें जौहरी कपूरचन्दजी हुए। आपने जयपुरमें जवाहरातका व्यापार किया। आपके कस्तूरचन्दजी नामक एक पुत्र हुए।

जौहरी कस्तूरचन्दजी :—आप जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपने अपने हाथोंसे बहुत जवाहरातका व्यापार किया। आप कर्नाटकके नवाबके भी जौहरी थे। आपके नामपर प्रथम शिवबख्शजी गोद आये। इसके पश्चात आपके मेहरचन्दजी एवं मूलचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। श्री शिवबख्शजीको कस्तूरचन्दजीने अपना हिस्सा व मकान वगैरह देकर अलग कर दिया। शेष दोनों बन्धु शामलातमें ही व्यापार करते रहे।

श्रीमेहरचन्दजी :—आप व्यापार कुशल तथा साहसी व्यक्ति थे। १२ वर्षकी अल्पायुमें आपके पिताजीका स्वर्गवास हो गया था। अतः छोटी ऊमरसे ही आपको अपना सारा कार्य्य सम्हालना पड़ा। आप योग्य तथा कार्य्य कुशल व्यक्ति थे। लाखोंकी सम्पत्ति कमा कर आपने अपने परिवारके सम्मानको बढ़ाया। आपने अपने यहांपर एक कारपेट फेक्टरी भी खोली थी। आप जयपुरकी जौहरी समाजमें प्रतिष्ठित तथा नामी जौहरी हो गये हैं। आप वजनदार तथा मिलनसार व्यक्ति हो गये हैं। आप गरीबोंके प्रति हमदर्दी रखनेवाले महानुभाव हो गये हैं। आपने एक "हिन्दू अनाथालय" भी खोला था। आप ही इसके संस्थापक थे तथा दो सालों तक इसे अपने खर्चेसे भी चलाया था। आप बड़े धार्मिक एवं धार्मिक संस्थाओंके सहायक थे। हमें जयपुरमें यह मालूम हुआ है कि जयपुरमें जैनियोंके प्रसिद्ध स्थान दादाबाड़ी में आपने अपने खर्चेसे सोनेका काम भी करवाया था। वहांपर फर्श बनवाई तथा हर समय दादाबाडीकी सहायता के लिये आप तयार रहते थे। आप माह सुदी ४ सं० १९८५ को स्वर्गवासी हुए। मृत्यु समय आप अनाथालय को ३१००) दान दे गये। यह अनाथाश्रम आज भी सुचारु रूपसे चल रहा है। आपके प्रतापचन्दजी एवं दौलतचांदजी नामक दो पुत्र हुए।

जौहरी प्रतापचन्दजी :—आपका जन्म सं० १९४४ के करीब हुआ था। आप व्यापार कुशल, धार्मिक भावनाओंके एव मिलनसार थे। आपने छोटी ऊमरसे ही व्यापारमें भाग लेना शुरू कर दिया था। आप जवाहरात और कालीन दोनोंके काम को देखते थे। मगर कारपेट फेकृरी में जीव हिंसा अधिक होती थी। इसलिये आपने कारपेट फेकृरीका काम बन्द कर दिया। आपने अपने यहांपर जेवर और जवाहरातका व्यापार बहुत किया। आपको कई राजा और रईसों द्वारा अपने अच्छे कामके लिये सर्टिफिकेट इनायत हुए थे। चौमू, ईडर आदि रियासतोंसे भी आपको सार्टिफिकेट प्राप्त हुए थे। आप स० १९८४ की मगसर बुदी २ को
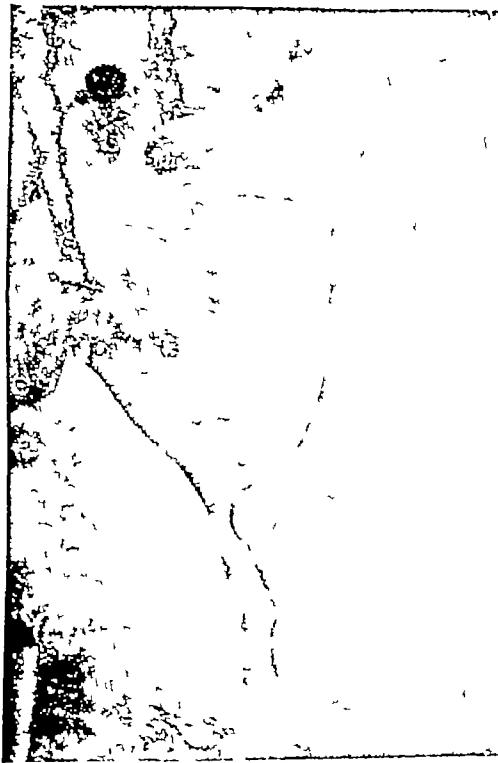
स्वर्गवासी हुए। आपके कैलाशचन्दजी एवं तिलोकचन्दजी नामक दो पुत्र हुए। इनमेंसे कैलाश-चन्दजी तो छोटी ऊमरमें ही गुजर गये हैं। बाबू तिलोकचंदजीका जन्म सं० १६७१ की फाल्गुन सुदी ११ को हुआ। आप बड़े उत्साही एवं मिलनसार नवयुवक हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने व्यापारको संचालित कर रहे हैं।

जौहरी दौलतचन्दजीका जन्म सं० १६५३ में हुआ। अपने ज्येष्ठ भ्राताकी मृत्युके पश्चात् आपने अपने सारे व्यापारको संभाला। आपके हाथोंसे भी व्यापारमें खूब वृद्धि हुई। आप व्यापार कुशल एवं जवाहरातके व्यापारमें निपुण थे। आपको ईडरके महाराजने अपना खास जौहरी बनाया था। इतना ही नहीं ईडरके महाराज और भोपालके नवाबकी ओरसे आपको सार्टिफिकेट भी प्राप्त हुए हैं जिनमें 'आपकी कीमत उचित है और माल उत्तम है' का उल्लेख किया गया है। आपने लाखों रुपयोंके जवाहरातका लेन देन किया होगा। आप यहां के एक प्रतिष्ठित जौहरी हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सं० १६८५ की कार्तिक सुदी ८ को हो गया।

वर्त्तमानमें तिलोकचन्दजी मे० कपूरचन्द कस्तूरचन्दके नामसे जयपुरमें जवाहरातका व्यापार करते हैं।

जौहरी सुगनचन्दजी सौभागचन्दजी जरगड़, जयपुर

इस परिवारवाले दिल्ली निवासी हैं। आप जरगड़ गौत्रके श्री जैन श्वे० स्था० आम्नाय को माननेवाले हैं। इस खानदानवाले सेठ सुगनचन्दजीके पिताजी दिल्लीसे जयपुर आये थे। सेठ सुगनचन्दजी कुशल जौहरी तथा होशियार व्यक्ति हो गये हैं। आपने जयपुरमें बहुत जवाहरातका व्यवसाय किया। आप योग्य एवं अनुभवी थे। आपने बहुतसी सम्पत्ति कमाई और अपने सम्मानको बढ़ाया। आप बम्बई गये हुए थे कि ५० वर्षकी आयुमें एका-एक स्वर्गवासी हो गये। आप जवाहरातके व्यापारमें बहुत निपुण थे। आज भी आपके बहुतसे शागीर्द अच्छे जौहरी गिने जाते हैं। आपके सौभागमलजी नामक एक पुत्र हुए।

सेठ सौभागमलजीने छोटी ऊमरसे ही जवाहरातका व्यापार शुद्ध कर दिया था। आपने अपने जवाहरातके व्यापारको बहुत बढ़ाया। दूर २ देशोंके लोग आपसे मिलते और जवाहरात खरीद कर ले जाते थे। आपको देहली दरबारके समय तत्कालीन वाइसरायने एक सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया था। इसी प्रकार सन् १६०२-३ की इण्डियन आर्ट मेन्यूफेक्चर एक्झीबिशनकी ओरसे भी आपको प्रथम नम्बरका मेरिट इनाम मिला था। आपको और भी बहुतसे प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए थे। आप सन्तोषी, समयके पाबन्द तथा धार्मिक व्यक्ति थे। आपके पुत्र इन्द्रचन्द्रजीका जन्म सं० १६३५ में हुआ। आप अपने पिताजी द्वारा स्थापित जवाहरातके व्यापारको सफलता पूर्वक संचालित करते हुए संवत् १६८५ की जेठ सुदी ८ को

स्वर्गवासी हुए। आप धार्मिक भावनाओंके माता पिता की आज्ञा पालनेवाले थे। आपके नाम पर जोधपुरकी पटवा फेमिली से श्री मिश्रीमलजी पटवाके पुत्र सुखलालजी गोद आये। सुख लालजीका जन्म संवत् १९७२ में हुआ। आप मेट्रिक तक पढ़े हुए हैं तथा मिलनसार युवक हैं। वर्तमानमें आप अपना व्यवसाय संचालित कर रहे हैं।

मेहमवार

लाला जवाहरलालजी मोतीलालजी मेहमवार, लखनऊ

इस परिवारका मूल निवासस्थान झूंझनू (जयपुर स्टेट) का है। आपलोग मेहमवार गौत्रके श्री जैन श्वे० मं० मार्गीय हैं। इस परिवारके लाला ठाकुरसीदासजीके पीरामलजी, चुन्नीलालजी एवं सालगरामजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमेंसे लाला चुन्नीलालजी सबसे पहले झूंझनूसे लखनऊ आये। आपने यहांपर जवाहरात व लेनदेनका व्यापार किया। आपके जवाहरलालजी नामक एक पुत्र हुए। आपलोग स्थायी रूपसे यहीं पर निवास करने लग गये।

लाला जवाहरलालजीका जन्म संवत् १८९३ के करीब हुआ था। आप बड़े धार्मिक, प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध जौहरी हो गये हैं। आपने लखनऊमें एक मन्दिर बनवाया व अपने खानदानकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आपने भी सफलता पूर्वक जवाहरातका व्यवसाय किया। आपका स्वर्गवास करीब ५० वर्ष पूर्व हो गया है। अपके नाम पर पालीसे सेठ बख्तावरमलजी के पुत्र मोतीलालजी गोद आये हैं।

लाला मोतीलालजीका जन्म सं० १९३५ में हुआ। आप व्यापार कुशल, अनुभवी तथा मिलनसार सज्जन हैं। आपने यहांपर आनेके बाद अपने व्यापारको सफलता पूर्वक संचालित किया और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आपने जमीदारी वगैरह भी खरीद की है। आप यहांपर प्रतिष्ठित तथा अपने फर्मके प्रधान संचालक हैं। आपके प्यारेलालजी, कुन्दनलालजी, जीवनलालजी, मोहनलालजी, सुन्दरलालजी एवं रतनलालजी नामक छः पुत्र हुए। इनमें लाला प्यारेलालजीका स्वर्गवास हो गया है। शेष सब बन्धुओंका जन्म क्रमशः १९५६, ६५, ७१ एवं ७२ में हुआ। आप सब लोग मिलनसार हैं तथा अपने व्यापारमे हाथ बटा रहे हैं बाबू रतन लालजी अभी पढ़ते हैं। आप लोगोंके यहांपर जवाहरात, बैंकिंग व लेनदेनका व्यापार होता है।

लाला जवाहरलाली सरदारसिंहजी मेहमवार, देहली

इस परिवारका मूल निवासस्थान झूंझनू (जयपुर-स्टेट) का है। आपलोग मेहम-वार गौत्रके श्री जै० श्वे० मं० मार्गीय हैं। झूंझनूसे यह परिवार देहली आकर यहीं पर स्थायी रूपसे निवास करने लगा। इस परिवारके पुरुष लाला मुन्नालालजी देहलीमें जवाहरातका

व्यापार करते थे। आप धार्मिक पुरुष थे। आपके लच्छूमलजी नामक एक पुत्र हुए। लाला लच्छूमलजीका जन्म सं० १८७० का था। आप अच्छे स्वभाव वाले तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप भी सफलतापूर्वक जवाहरातका व्यापार करते हुए सं० १६३५मे स्वर्गवासी हुए। आपने अपना एक मकान भी देहलीमें खरीदा था। आपके जवाहरलालजी नामक एक पुत्र हुए।

लाला जवाहरलालजीका जन्म सं० १६०७ में हुआ। आपका शरीर हृष्ट पुष्ट तथा सुन्दर था। आप भी जवाहरातका व्यवसाय करते हुए सं० १६६८ में स्वर्गवासी हुए। आपकी द्वितीय पत्नी श्रीपानकँवरबाई आज भी विद्यमान हैं जिन्होंने अपने मकानको दुवारा सुन्दर बनवाया और इसके अन्दर एक कुआ तथा एक मन्दिर बनवाया है। आपका अनूपशहर निवासी लाला हीरालालजीके पुत्र सरदारसिंहजी पर बड़ा प्रेम है। आप हीने सरदारसिंहजी का स्नेह पूर्वक लालन पालन किया है।

लाला सरदारसिंहजीका जन्म सं० १६२६ में हुआ। आप मिलनसार एवं योग्य व्यक्ति हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपने जवाहरातके व्यापारको संचालित कर रहे हैं। आपने १८ वर्षों-तक कलकत्तेमें आफीसोंकी दलाली कर बहुत व्यापारिक ज्ञान प्राप्त किया। आप कलकत्तेके लाला गणेशीलालजी कपूरचन्दजीके शागिर्द हैं। आपने अपने हाथोंसे जवाहरातका व्यवसाय किया है। आप मोती धोने व बनानेमें बड़े निपुण हैं। आपकी पेरिस तथा लन्दनमें बहुतसी आढ़तें हैं। आपने भी बाबू सुरेन्द्रकुमारजीका स्नेहपूर्वक पालन किया है। सुरेन्द्रकुमारजी उत्साही नवयुवक हैं।

जौहरी चन्दनमलजी गणेशीलालजी बेराठी, जयपुर

इस खानदानके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान वैराठीका था। आपलोग मेहमवार गौत्रके श्री जैन श्वे० मं० मार्गीय हैं। वैराठसे उठनेके कारण आप वैराठीके नामसे मशहूर हैं। इस परिवारमें सेठ केवलचन्दजीके पुत्र बलदेवजी हुए। आप ही सबसे पहिले वैराठसे जयपुर आये और यहांपर जवाहरातका व्यापार करके यहींपर बस गये। आप बड़े प्रतिष्ठित एवं योग्य व्यक्ति थे। आपको खेतड़ीसे मुसाहिबको पदवी भी प्राप्त हुई थी। आप यहांके अच्छे जौहरी हो गये हैं। आपके पुत्र देवीलालजी भी जवाहरातका व्यापार करते रहे। आपके चन्दनमलजी नामक एक पुत्र हुए।

श्रीचन्दनमलजीने अपने जवाहरातके व्यापारको बढ़ाया और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आपने बम्बई आदि दूर दूरपर स्थानोंमे जवाहरातका व्यापार कर नाम पाया। आप जयपुरके प्रसिद्ध जौहरी हो गये हैं। आपके गणेशीलालजी नामक एक पुत्र हुए। श्री गणेशीलालजीका जन्म सं० १६४० की भादवा सुदी ४ को हुआ। आपने भी अपनी व्यापार

चातुरीसे अपने जवाहरातके व्यापारको बढ़ाया और अपना सम्मान स्थापित किया। आप साहसी व्यापारी, थोक व्यापार करनेमें चतुर तथा सम्माननीय जौहरी हो गये हैं। आपने अपने हाथोंसे लाखों रुपये उपार्जित किये। आपका स्वर्गवास सं० १६८८ के वैशाख बदी ७ को हुआ। आपके नामपर जोधपुरसे बाबू लालचन्दजी गोद आये। बाबू लालचन्दजी का जन्म सं० १६७६ की श्रावण सुदी १० को हुआ। आप उत्साही नवयुवक हैं तथा अपने काम-काजको संभाल रहे हैं।

पटोलिया

पटोलिया परिवार, जयपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान लखनऊ का है। आप पटोलिया गौत्रके श्री जै० श्वे० तेरापंथी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस परिवारके पूर्व पुरुष बहादुरसिंहजी लखनऊसे करीब १५० वर्ष पूर्व जयपुर आये और यहांपर जवाहरातका व्यवसाय किया। आप यहां पर स्थायी रूपसे बस गये तथा हवेली वगैरह बनवाई। आपके जवाहरमलजी एवं चुन्नीलालजी नामक दो पुत्र हुए।

श्री जवाहरमलजी भी जवाहरातका व्यापार करते हुए अपने पुत्र मोतीलालजीको छोड़ स्वर्गवासी हो गये। जौहरी मोतीलालजीके भूरामलजी नामक एक पुत्र हुए।

जौहरी भूरामलजी :—आपका जन्म संन् १६०८ में हुआ। आप प्रभावशाली, योग्य, तथा वजनदार व्यक्ति थे। आप एफ० ए० तक पढ़े हुए थे तथा प्रारंभसे ही तीक्ष्णबुद्धि वाले व्यक्ति थे। प्रथम आप इंजिनीयरिंग डिपार्टमेंटमें सर्विस करते रहे। इसके पश्चात् आप नाबालगीके समयमें कपड़ द्वारा (प्राइवेट पर्स स्टेट ट्रेभरी) के सेक्रेटरी रहे। फिर आप अकाऊंट डिपार्टमेंटमें डिप्टी अकाउंटट जनरलके पदपर नियुक्त हुए। आप अपनी कार्य्य कुशलता एवं व्यवहार चातुरीसे उत्तरोत्तर पदवृद्धि करते रहे।

आप जयपुर स्टेटमें सबसे पहले मैनेजर होकर उनियारा ठिकाने की व्यवस्था करनेके लिये उनियारा भेजे गये। आपसे स्टेटके सभी उच्च पदाधिकारी तथा पोलिटिकल एजंट प्रसन्न रहा करते थे। जयपुर पोलिटिकल एजट मेसर्स डब्ल्यू० एच० वेनाल्ड, एच० पी० पीकाक, कर्नल ए० पी० थार्नटन आदिने आपकी व्यवस्थापिका शक्ति तथा अनुभव शीलता की बहुत प्रशसा की थी। सन्वरसाके महाराजाने भी एक पत्र द्वारा आपकी उनियारा ठिकानेके मेनेजर की नियुक्ति पर हर्ष प्रगट किया था। इसके अतिरिक्त कर्नल एस० एस० जेकाब आदिने आपको सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया था। आपका जयपुर स्टेटमें अच्छा सम्मान था तथा दरबारमें आपको कुर्सी प्राप्त थी। इसी प्रकार जनतामें भी आप सम्माननीय व्यक्ति थे। आपहोने सर्व प्रथम एक तेरापंथी साधुकी मृत्युके समय सरकारसे हाथी, घोड़ा, लवाजमा

वगैरह प्राप्त कर साधूजी के शव के जुलूस को अजमेर दरवाजेकी ओर निकाला था। आपका यहां की पंच पञ्चायतीमें अच्छा सम्मान था। आपका सं० १६३६ में स्वर्गवास हुआ। आपके सूरजमलजी, छगनलालजी तथा मगनलालजी नामक तीन पुत्र हुए।

आप तीनों भाइयोंका जन्म क्रमशः सं० १६३६, १६३८ तथा १६४१ में हुआ। आप तीनों भाई मिलनसार तथा उत्साही सज्जन हैं। बाबू सूरजमलजी एफ० ए० तक पढ़ कर बैंक ओफ बंगालकी सिराजगञ्ज शाखा पर ट्रेभरर नियुक्त हुए। फिर आपने अपने जवाहरात के व्यापारको शुरू किया। आप यहां पर वजनदार व्यक्ति माने जाते हैं। वैश्य महासभाके ज्वाइंट सेक्रेटरी भी आप रहे। आप उत्साही हैं। बाबू छगनलालजी पहले जवाहरातका व्यापार करते रहे। वर्त्तमानमें आप जयपुरमें चीफ कोर्टमें सफलता पूर्वक वकालत कर रहे हैं। श्री मगनलालजी जवाहरातके व्यापारमें निपुण थे। आपने बहुत जवाहरातका व्यवसाय किया। आपका स्वर्गवास सं० १६६२ में हो गया है। आपलोग मे० सूरजमल पटोलियाके नामसे जवाहरातका व्यापार करते हैं।

मूसल

जौहरी केशरीचन्दजी भँवरलालजी मूसल, जयपुर

इस परिवारका मूल निवासस्थान मालपुरा (जयपुर स्टेट) का है। आप लोग मूसल गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० आम्नायको माननेवाले हैं। इस परिवारके सेठ रुघनाथजी करीब १२५ वर्ष पूर्व मालपुरासे जयपुर आये तथा यहांपर स्थायी रूपसे निवास करने लग गये। आपने तथा आपके पुत्र मांगीलालजीने यहांपर लेनदेनका व्यापार किया। सेठ मांगीलालजी-का जीवन सादा, सदाचार पूर्ण तथा भजनानंदी था। आप संवत् १६५२ मे स्वर्गवासी हुए। आपके केशरीचंदजी तथा कन्हैयालालजी नामक दो पुत्र हुए।

सेठ केशरीचंदजी—आपका जन्म संवत् १६१५ में हुआ। आप जवाहरातके व्यापारमे विशेष कुशल थे। आपने सर्वप्रथम अपने यहांपर जवाहरातका व्यापार प्रारम्भ किया तथा अपने व्यवसायको बहुत बढ़ाया। जवाहरातमें आपकी दृष्टि अच्छी थी। आप यहाके प्रसिद्ध जौहरी तथा बाहर "मूसलजी" के नामसे मशहूर थे। आप बड़े धार्मिक, स्थानकवासी समाजमें प्रतिष्ठित तथा चार व्रत, रात्रि भोजन आदिको दृढ़तासे पालन करनेवाले महानुभाव थे। ३० वर्षोंतक आप भोजनादिके नियमोंको पालन करते रहे। आप सं० १६८१ की माह सुदी २ को स्वर्गवासी हुए। आपके भँवरीलालजी नामक एक पुत्र हुए। श्री कन्हैयालालजी भी अपने भाईके समान ही स्वभाव तथा आचरण वाले थे। आप भी जवाहरातके व्यापारमें योग देते रहे।

सेठ भँवरीलालजीका जन्म श्रावण वदी ४ सं० १६४६ को हुआ। आप आत्मसम्मान

वाले, मिलनसार तथा वजनदार व्यक्ति हैं। आपके धार्मिक विचार बड़े उन्नत हैं। आप जयपुर स्था० संघकी ओरसे अखिल भारतवर्षीय स्था० कान्फ्रेंसकी मैंनेजिङ्ग कमीटीके प्रतिनिधि चुनकर भेजे गये थे। जयपुर श्रीमाल समाजकी मैंनेजिंग कमेटीके आप मेम्बर भी हैं। आपका यहांपर अच्छा सम्मान है। वर्त्तमानमें आप ही अपने जवाहरातके व्यापारको सञ्चालित कर रहे हैं। जाति सेवा करनेकी आपमे विशेष लगन है। आपके गट्टूलालजी, मुन्नीलालजी, सरदारमलजी, फतेचन्दजी तथा बहादुरमलजी नामक पांच पुत्र हैं। गट्टूलालजी व्यापारमे भाग लेते हैं।

ढोर

जौहरी सरदारमलजी पूनमचन्दजी ढोर, जयपुर

इस परिवारवाले जौनपुर निवासी ढोर गोत्रके श्री जै० श्वे० म०मार्गीय हैं। आपलोग जौनपुरसे दिल्ली और दिल्लीसे सेठ दान्तरायजी करीब २०० वर्ष पूर्व सांगानेर आये। आप बड़े प्रसिद्ध आदमी हो गये हैं। आपके पूर्वज साह तोलाजी तथा उनके पुत्र मेहराजजी द्वारा सं० १४७६ के माघ वदी ११ की पधराई हुई श्री शांतिनाथ भगवानकी प्रतिमाजी आज भी जयपुर के नये मन्दिरमे विद्यमान है। इसी प्रकार संवत् १५११ के जेठ सुद ३ पर अजीतमलजी और सोहनपालजी ढोरने दो प्रतिमाएं पधराई थीं जिनका शिलालेख व प्रतिमाजी आज भी बनारसमें विद्यमान है। ये प्रतिमाएं जौनपुरसे १॥ मीलकी दूरीपर गोमती नदीके किनारेसे मिली हैं। श्री दान्तरायजीके पुत्र सेवारामजी सांगानेरसे जयपुर आकर रहने लगे। आपने यहांपर जवाहरातका व्यापार किया। आपके फकीरचन्दजी तथा जमनादासजी नामक दो पुत्र हुए। श्री जमनादासजीके घासीलालजी, गुलाबचन्दजी एवं गोपीचदजी नामक तीन पुत्र हुए। आप सब लोग जवाहरातका व्यापार करते रहे।

सेठ घासीलालजीका जन्म सन् १९०६ की मगसर सुदी १३ को हुआ। आप यहांकी श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा चौधरी थे। आप भी जवाहरातका व्यापार करते हुए स० १९८९ की भादवा सुद ९ को स्वर्गवासी हुए। आपके केशरीचंदजी, हजारीमलजी, श्रीचन्दजी, सरदारमलजी, मोमीलालजी तथा पूनमचन्दजी नामक छः पुत्र हुए। इनमें केशरीचन्दजी, हजारीमलजी एवं श्रीचदजीका स्वर्गवास हो गया है। तथा मोमीलालजी अपने काका गोपीचन्दजी के नामपर गोद चले गये हैं।

श्री सरदारमलजीका जन्म स० १९३६ मे हुआ। आप यहां पर प्रतिष्ठित व्यक्ति व श्रीमाल समाके पंच हैं। आप जवाहरातका व्यापार करते हैं। श्री पूनमचन्दजीका जन्म स० १९४३ की पौस सुदी १५ को हुआ। आप योग्य तथा मिलनसार हैं और अपने जवा- [illegible] के व्यापारको सफलता पूर्वक कर रहे हैं। आप श्री श्वे० जैन पाठशालाके सन् १९१० से

आजतक सेक्रेटरी हैं। इसके अतिरिक्त आप पांच सालों तक श्री जैन श्वे० कान्फ्रेन्सके प्रांतीय सेक्रेटरी भी रहे। आप उत्साही तथा सार्वजनिक स्पीरीटवाले व्यक्ति हैं।

जूनीवाल

जौहरी गुलाबचन्द्जी राजमलजी जूनीवाल, जयपुर

इस परिवारवाले देहली निवासी जूनीवाल गौत्रके श्री जै० श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदायको माननेवाले हैं। इस परिवारवाले देहलीमें जवाहरातका व्यापार करते थे। तदनन्तर इस परिवारके सेठ भवानीशङ्करजी जयपुर आकर अपना जवाहरातका व्यापार करने लगे। कहा जाता है कि आपको महाराज प्रतापसिंहजी देहलोसे लाये थे। सेठ भवानीशङ्करजीने जयपुरमें एक हवेली बनवायी और यहाँपर स्थाई रूपसे निवास करने लगे। जवाहरातके व्यापारमें बहुत सी सम्पत्ति उपार्जित कर आपने बहुत जायदाद भी खरीदी और अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की। आपने एक वैष्णव मन्दिर तथा एक बगीची भी बनवाई जो आज भी विद्यमान है। आपके पुत्र श्रीचन्द्जी भी बड़े स्केलपर जवाहरातका व्यापार करते रहे। श्रीचंदजीके लालजीमलजी, लालजीमलजी के गणेशलालजी तथा गणेशलालजी के फूलचन्द्जी नामक पुत्र हुए। आप सब लोग जवाहरातका व्यापार करते रहे।

सेठ फूलचन्द्जीने सर्व प्रथम तेरापन्थी धर्म अंगीकार किया था। आप भी जवाहरातका व्यापार करते हुए सं० १९५६ में स्वर्गवासी हुए। आपकी यहांपर अच्छी प्रतिष्ठा थी। आपके पुत्र गुलाबचन्द्जीका जन्म सं० १९३३ में हुआ। आप बड़े धार्मिक तथा सरल स्वभाव वाले व्यक्ति थे। आप भी जवाहरातके व्यवसायको करते हुए सं० १९८५ में स्वर्गवासी हुए। आपके राजमलजी, मानमलजी, दौलतमलजी, धनरूपमलजी एवं पदमचन्द्जी नामक पाँच पुत्र हुए। बाबू राजमलजी मिलनसार हैं तथा वर्त्तमानमें अपने जवाहरातके व्यवसायके प्रधान सञ्चालक हैं। आपके सरदारमलजी आदि दो पुत्र हैं। बाबू मानमलजी तथा दौलतमलजी जवाहरातके व्यापारमें भाग लेते हैं। धनरूपमलजी एफ० ए० में पढ़ते हैं। बाबू मानमलजीके कैलाशचन्द्जी तथा सन्तोषचन्द्जी नामक दो पुत्र हैं।

चंडालिया

श्री लक्ष्मीचन्द्जी श्रीमाल का खानदान, जयपुर

इस परिवारवाले देहली निवासी चण्डालिया गौत्रके श्री जै० श्वे० स्था० सम्प्रदायके अनुयायी हैं। यह परिवार देहलीसे कानपुर, कानपुरसे शुजालपुर, शुजालपुरसे सारंगपुर तथा सारंगपुरसे रिंगणोद आया और यहींपर स्थाई रूपसे निवास करने लग गया।

इस खानदानके पूर्व पुरुष जीवराजीके एवन्तीदासजी, एवन्तीदासजीके शोभाचन्दजी तिलोकचन्दखी तथा कपूरचन्दजी नामक तीन पुत्र हुए। इनमें शोभाचन्दजीके मेहरचन्दजी, खूबचन्दजी एवं मच्छारामजी नामक पुत्र हुए। इनमें खूबचन्दजीके पुत्र नीमचन्दजी सारंगपुर से शुजालपुर आये। आप प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप ही पुनः शुजालपुरसे रिंगणोद चले आये और यहांपर बड़े रावलेमें कामदारीका काम किया। आपका विवाह बड़े रावले ठिकाने में श्री बखतकुंअरवाईके साथ हुआ था जिसमें आपको १००) सालानाकी जागीरीकी जमीन बड़े रावलेकी ओरसे मिली थी। आपके पुत्र जगन्नाथजीके जुहारीलालजी, मिश्रीलालजी एवं लक्ष्मीचन्दजी नामक सन्तानें हुईं।

श्री जुहारीलालजी:—आप अनुभवी तथा मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने सं० १९५६ के दुष्कालके समय गरीबोंकी बहुत सेवा की थी। श्री लक्ष्मीचन्दजी साहसी तथा अच्छे व्यक्ति हैं। आप रिंगणोद पंचायत बोर्डके मेम्बर थे। आपने एक समय साहस पूर्वक जावरा नवाव साहबसे निवेदनकर रिंगणोदकी नदीमें मछलीकी शिकार न करनेकी प्रार्थना की थी। आपके हीरालालजी, पन्नालालजी, मोतीलालजी, राजमलजी, सौभाग्यमलजी, चांदमलजी एवं बाघमलजी नामक सात पुत्र हैं। इनमें राजमलजी जयपुर चले गये हैं। शेष सब बन्धु मिलनसार हैं।

लाला गिरधारीलालजी, लखनऊ

लाला गिरधारीलालजी श्री जै० श्वे० मंदिर मार्गीय सज्जन थे। आप बहुत ही योग्य, जवाहरातके व्यापारमें निपुण तथा अनुभवी महानुभाव हो गये हैं। आप बहुत प्रसिद्ध जौहरी तथा सम्पूर्ण श्रीमाल समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपके करीब २२५ शागीर्द थे जो आज भी आपकी जवाहरातके व्यापारकी निपुणताको याद करते हैं। आप जैन सिद्धान्तोंके जानकार, धार्मिक तथा मिलनसार महानुभाव थे। लखनऊके नबाबके यहांपर आपका बहुत सम्मान था। आपका नाम बहुत प्रसिद्ध था। आप लाला साहबके नामसे विशेष प्रख्यात थे। आपके पुत्र कन्हैयालालजी हुए। वर्त्तमानमें इस खानदानमें कोई भी विद्यमान नहीं है।
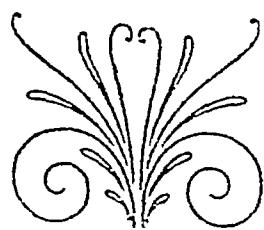
समाप्त

ग्रन्थके माननीय संरक्षक

ग्रन्थके माननीय संरक्षक

१—राय बद्रीदासजी मुकीम बहादुर, कलकत्ता

आप सारे भारतवर्षकी ओसवाल एवं श्रीमाल समाजके चमकते हुए रत्न, जौहरी समाजके शिरोमणि, श्वेताम्बर जैनोंके प्राण, ब्रिटिश गवर्मेन्टमे माननीय तथा कलकत्ता की हिन्दू समाजके नेता हो गये हैं।

२—श्री बाबू महाराजबहादुरसिंहजी दूगड़, मुर्शिदाबाद

आप योग्य, विचारशील तथा बंगाल प्रान्तके एक बड़े प्रतिष्ठित जमींदार हैं। आपकी ओरसे हम लोगोंको ग्रंथके प्रणयनमे सहायता प्राप्त हुई है।

३—श्री सेठ हीराचन्दजी सिंघवी, कालिन्द्री

आप एक धनिक, धार्मिक तथा सिरोही प्रान्तके माननीय व्यक्ति हैं। आपने भी हमको सहायता प्रदान कर उत्साहित किया है।

४—श्री हीरालालजी कोठारी, कामठी

आप सी० पी० मे प्रतिष्ठित तथा योग्य व्यक्ति हैं। आपने भी हम लोगोंको सहायता प्रदान कर उत्साहित किया है।

५—बाबू छुट्टनलालजी फोफलिया, जयपुर

आप उत्साही तथा मिलनसार युवक है। आपही वर्त्तमानमे अपने व्यवसायके प्रधान संचालक हैं। आपकी ओरसे भी हम लोगोको सहायता प्राप्त हुई है।

६—लाला फूलचन्दजी चोरड़िया, देहली

आप बड़े साहसी, पगडीके व्यापारमे कुशल तथा अतिथि सेवाप्रेमी सज्जन हैं।

७—बाबू रायकुमारसिंहजी, नाथनगर (भागलपुर)

आप मिलनसार, देशभक्त एवं सरल स्वभावके सज्जन हैं। वर्त्तमानमें आप ही अपनी स्टेटकी सारी व्यवस्था कर रहे है।

ग्रन्थके माननीय सहायक

सेठ केसरचन्दजी आनन्दरामजी बाँठिया, पनवेल (कुलाबा)

सेठ लालचन्दजी मूथा ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, गुलेदगुड्ड (बीजापुर)

बाबूरायकुमारसिंहजी मुकीम, कलकत्ता

सेठ कन्हैयालालजी जैन जमींदार ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, (कस्तला)

श्रीठाकुर साहब छोटा बड़ा रावला, रिंगणोद (देवास-स्टेट)

श्रीमोहकमचन्दजी सँखलेचा, हाथरस

सेठ कन्हैयालालजी गोठी, भरतपुर

सेठ धनराजजी पुंगलिया, जयपुर

जौहरी हीरालालजी खारड़, कलकत्ता

विषय-सूची